EXPOSITION

OF THE NIGAMAS OR THAT PORTION OF HINDOO SHASTRAS, WHICH THE DUKSHINAS OR RIGHT HAND SECT FOLLOW AS THEIR BOOKS OF REVELATION.

i. e.

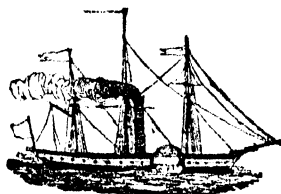
VEDAS, SOOTRAS, SMRITTIS, POORANAS &c.

FOR

THE USE OF REFORMERS IN INDIA.

BY

THE AUTHOR OF THE 'NIBANDHA SANGRAHA'



[illegible]:

Printed at "United Printing and General Agency Company's Press" by Ranchorelal Gungaram.

Samvat 1930 A. D. 1874.

Price One Rupee & half.

INTRODUCTION.

We dedicate the following pages to the thinking Public, who have curiosity to know the ancient mode of worship proclaimed by the revelation called Nigamas. The ancient practices of a nation are often buried in oblivion, but those of India are well preserved in its sacred literature. It is necessary that Reformers, in order to be successful, ought to possess a knowledge of the ancient literature, which the people have, through habit, ignorance and Priest-craft learned to venerate. The secrecy which is attached to the sacred literature of the Brahamans, principally arises from the ignorance of the language in which it is written and by its being to a great extent, out of vogue. The primeval sacrificial system, which is the basis of the ancient Vedic Religion is cruel, uncouth, as well as opposed to the ideas of the present age. It would not have been satisfactory to describe it without refering to authorities on each point asserted and discussed. The book therefore is filled with authentic extracts from Vedic literature, which is considered as revelation from the Most High. It has been hitherto a special privilege of the Brahmans to recite it by rote and offer sacrifices in a manner handed down from generation to generation, without understanding their purport or condition of civilization in which they were ordained. Various miraculous powers are attributed to the mantras and sacrificies and various stories, incul-

cating the holiness of. the Brahmans and power of their ritual are industriously circulated, in order to creat awe and respect among the ignorant masses. It becomes therefore necessary to unveil this ritual as far as the limits of a small book will admit and to place within the reach of the Reformers such portion of the ancient mode of worship as required notice. This it is hoped, may stimulate a further research, in those regions of antiquity, which appear to be utterly neglected in India by those, whom they concern most. The Religion of a nation greatly affects its destinies and progress. Adherence to the ancient prejudices combined with the thickly prevailing ignorance and a powerful priest-craft has produced baneful effects, such as early-marriages, miserable and forced widowhood, prevention of travelling to foreign countries, slavery of female sex, waste of money on useless objects, eleemosynary habits of one-tenth of the population, internal dissentions, want of fellow-feeling and patriotism and above all false worship of God. When reformers try to remove these effects, where do they stumble? At the religious difficulty.

TABLE OF CONTENTS.

सूची.

निगम प्रकाश.

एटले

वैदिक धर्मनो खुलासो.

"लो॰ हि॰ निबंध संग्रह" कर्ताए

धर्म सुधारणा इछिनारना उपयोग वास्ते

बनावी प्रसिद्ध कर्यो.

अमदावाद मध्ये

मामानी हवेलीमां युनाइटेड प्रिंटिंग अने ज. ए. कंपनी

"लिमिटेड"ना प्रेसमां रणछोडलाल हीराचंदे छाप्यो.

संवत १९३०. सने १८७४.

प्रस्तावना.

हिंदुधर्मनां त्रण भागछे. कर्मकांड, ज्ञानकांड अने भक्तिकांड. जे अग्निहोत्रि श्रौती याज्ञिक अने वेदिया ब्राह्मणछे ते कर्मकांडि केहेवाय छे. संन्यासी परमहंस इत्यादि ज्ञानी केहेवायछे. गोसावि माहाराज स्वामिरायण इत्यादि भक्त केहेवायछे. आ ग्रंथ ऊपरथी एम जणाशे के कर्मकांडमां दयादिक उत्तमगुण नथी अने अत्यंत मूढ, विवेक शून्य, ओछी बुद्धिना लोक मात्र आ मार्गनो स्वीकार करेछे एम बिजा मार्गना लोक बोलेछे. अने कर्मवाळा एम कहेछे के—

यावत्वर्णविभागोस्तियावत्वेदप्रवर्तते अग्निहोत्रंचयज्ञंच
तावत्कूर्यात्कलौयुगे ॥ हारितस्मृति.

कर्मकांडि कहेछे के ज्हां सुधि ज्ञातिभेद अने वेदने मानो त्यां सुधि यज्ञयाग करो. आ ग्रंथ उपरथी ज्ञान अने भक्तिमार्गनु उत्तमपणुं सिद्ध थशे एवी आशाछे. अने कर्मकांडनु लक्षण शुं ते पण ध्यानमां आवशे.

आ पुस्तक लखवानुं कारण एम छेके हिंदुस्तानमां हाल जे हिंदुधर्म चाले छे, अने तेना पेटामां अनेक प्रकारना संप्रदाय अने पंथ चाले छे, ते बधायनुं मुळ वेदमां छे, अने वेदनो आधार, *श्रावक लोक शिवाय, बधाय पंथवाळा माने छे. माटे वेदमां शुं छे, अने शा प्रकारनुं भजन छे, अने कीया कीया देव छे, ते जाणवा विशे घणा

---

* टीप. श्रावक, जैन, बौद्ध फकत ज्ञानकांडमां जे जे सारु होयछे ते ते माने छे- कर्मकांडने मानता नथी.

लोकोना मनमां अपेक्षा छे. वेदनां पुस्तको प्राचीन माहासंस्कृत भाषामां लखेलां छे, तेथी साधारण पुराणीक के शास्त्री पंडीतोथी तेनो अर्थ थतो नथी. सायनाचार्यादिक जे भाष्यकार थई गया तेमनो करेलो अर्थ जेने भाष्य कहेछे, ते ज्यारे हाथमां लेईए त्यारे वेदनो अर्थ थाय. वेदना प्रत्येक वाक्यने मंत्र एवी संज्ञाछे ते मंत्र ब्राह्मणो भणेछे पण तेनो अर्थ समजता नथी. घणा एक लोक तो एम कहे छेके, वेदनो अर्थ बहु गहन अने गुढ छे तेनो अर्थ थायज नहीं, अने घणा एक लोक एवुं कहे छे के, वेदनो मंत्र ब्राह्मण शीवाय कोईए भणवो नहीं, अने जे भणे तेने मोटी शिक्षा ठरावेली छे, वेदनो मंत्र कोई ब्राह्मण भणतो होय तो बीजी नातना लोकोए ते सांभळवुं नहीं, अने बधा हिंदु एम माने छे के वेदना मंत्रमां बहु मोटी शक्ति छे. तेनुं वर्णन ऋग् विधान ईत्यादि ग्रंथोमां कर्युं छे केटलाएक मंत्र भण्याथी वरसाद आवे छे, अने केटलाएक मंत्र भणतां अग्नि सळगी उठे छे, ए मंत्रवडे नाना प्रकारनां अस्त्र थाय छे, जेथी वायु, पर्वत, वरसाद, अग्नि प्रबळ थईने नाश करी नाखे छे एवा अस्त्रनां नाम ब्रह्मास्त्र, आग्नेयास्त्र, वायव्यास्त्र ईत्यादिक भारतादीक ग्रंथोमां वर्णन कर्यां छे. अने ते एकेक मंत्र मेळववा वास्ते, राजा लोक ब्राह्मणोने घेर सेवा करता. ए प्रमाणे अर्जुने पाशुपतास्त्र मेळव्युं, एवी कथा छे, तेथी ब्राह्मण लोक आ बधाय मंत्र पोतानी पुंजी समजीने गुप्त राखे छे, तेनो अक्षर कोईने बतावता नथी, तथा पुस्तक कोईने आपता नथी, ब्राह्मण शीवाय बीजी नातने वास्ते पुजा वीगेरे अनुष्टान करवुं होय तो पुराणीक श्लोक भणीने ते करे छे, ने वेदनो मंत्र बोलाय नहीं, कारण यजमान वेदनो अधिकारी न होय तो, तेना काममां

वेदनो उच्चार पुरोहित न करे, वेदनो अक्षर ए प्रमाणे घणा पवित्र गणेला छे,* ब्राह्मण होय तो, नाह्या विना मंत्रनो उच्चार न थाय, अने जम्या पछी पण न थाय, कदापि एम करे तो मंत्रनी शक्ति ओछी थाय छे. हालना ब्राह्मण एम समजे छे के जेवी जोइए तेवी चोखाइ न पाळ्याथी घणा एक मंत्रनुं सामर्थ जतुं रह्युं, केटलाएक कहे छे के, आ कळीयुगना पापथी मंत्रनुं अने मंत्रना अधिपती जे ब्राह्मण, ए बेनुं सामर्थ घटी गयुं छे.

वेदनां पुस्तको घणां प्राचिन छे, एमां कांइ पण संशय नथी, अने वेदना पूर्वे शुं हतुं ते मालुम पडतुं नथी. अने वेदना पछी जे जे ग्रंथ थया छे ते बधाय वेदना आधारथी थया छे. हाल जे ब्राह्मण वेद मुख पाठ करेछे, तेने वेदीया कहेछे, अने जे यज्ञ यागादीक क्रीया जाणे छे तेने श्रौति कहे छे, अने जे ग्रहस्थने घेर उपनयन विवाह, इत्यादिक संस्कार करावे छे, तेने याज्ञीक अथवा शुकल कहे छे. जे पुराण वांचे छे तेने पुराणीक कहे छे, धर्म शास्त्र इत्यादीक एक शास्त्रनो अभ्यास जेने कर्यो होय तेने शास्त्री कहे छे अनेक शास्त्रनो जेने अभ्यास कर्यो होय तेने पंडित कहे छे. ज्योतिषनो अभ्यास करे छे, तेने जोशि कहे छे. अने वैद्य शास्त्रनो अभ्यास करे छे, तेने वैद्य कहे छे. ए प्रमाणे जुदा जुदा प्रकारना ब्राह्मण छे. जे श्रौताग्निनी सेवा करे छे, तेने अग्निहोत्री कहे छे. अने जेने यज्ञ कर्यो होय ते दिक्षित एवी अडक धरावे छे. पूर्व युगमां बधाय ब्राह्मण अने क्षत्री अग्निहोत्री हता, घणुं करीने एक कुळमां एक अग्निहोत्र राखता. हाल ते चाल तुटी गइ छे, हवे कोकज ब्राह्मण अग्निहोत्री होय छे. तोपण

*टिप--तोपण सरकारी निसाळना शास्त्री बधाय नातना लोकोने वेद भणावे छे.

हिंदु राजा, ज्यां ज्यां छे, त्यां त्यां अग्निहोत्रनी वृद्धि करावे छे. अने अग्निनी सेवा वीन हरकत चलाववा वास्ते, नेमणुको अने गाम पण आपे छे. पूर्व युगमां स्त्रीयोने यज्ञो पवित धारण अने वेदाभ्यास करावता, पण हाल ते चाल छुटी गइ छे, कळीयुगमां स्त्रीओने उपनयनने ठेकाणे लग्न ठरावेलुं छे. अने स्त्रीओने शुद्र जेवी समजवी, तेथी हाल स्त्रीओने वेदाभ्यास अथवा गायत्री उपदेश करावता नथी.

वेदमां मुख्य धर्म, यज्ञनो बताव्यो छे. वेद मंत्रनो विनियोग यज्ञार्थ थाय छे. अने प्राचिन काळमां ब्राह्मण अने क्षत्री, अनेक प्रकारना यज्ञ, करता, तेथी अनेक देवताओ तृप्त थइने मनुष्यने जे जोइए ते आपता. गीतामां कह्युं छे के:—

सहयज्ञाःप्रजाःसृष्ट्वापुरोवाचःप्रजापतिः
अनेनप्रसविष्यध्वमेषवोस्तिष्टकामधुक् ॥
देवान्भावयतानेनतेदेवाभावयंतुवः ॥
परस्परंभावयंतःश्रेयःपरमावाप्स्यथ ॥
यज्ञाद्भवतिपर्जन्योयज्ञःकर्मसमुद्भवः ॥
कर्मब्रह्मोद्भवंविद्धिब्रह्माक्षरसमुद्भवं ॥
यज्ञशिष्टाशिनःसंतोमुच्यंतेसर्वकिल्बिषैः ॥

अर्थ.—ब्रह्मदेव, मनुष्य उत्पन्न कर्यो तेज वखत यज्ञ करवानी क्रीया बतावी, अने कह्युं के, ए क्रीया तमे करो तो तमने जे जोइए ते मळशे ने यज्ञ कर्याथी, देव तमारा उपर प्रसन्न थशे. अने तमने जे जोइए ते आपशे. यज्ञ कर्याथी वरसाद पडशे, अने यज्ञ क्री रीते करवो

ते वेदमां बतावेलुं छे, माटे वेदनो अक्षर छे, ते सर्वथी मोटा छे, ए प्रमाणे मनुष्यने उपदेश कर्यो.

भागवतमां कह्युं छे के, प्राचीन बर्हि राजाए घणा यज्ञ कर्‍या, तेथी एने घणा जीवोनी हिंसा करवी पडी. छेलीवारे नारदजीए उपदेश करीने यज्ञ बंध कर्या. प्राचीनकाळमां राजा भरत एणे बहु यज्ञ कर्या अने रामचंद्रजीए पण रावणना युद्धमां घणा जीव मरी गया ते पाप काहाडवाने वास्ते अश्वमेध कर्यो. ते कथा पुराणमां प्रसीद्ध छे. तेज प्रमाणे पांडवोए अश्वमेध कर्यो. ते कथा भारतमां छे. कळीयुगमां राजा जयसींगे जेपुरमां अश्वमेध कर्यो. एवी दंत कथा प्रसिद्ध छे. भरूचमां बळी राजाए दश अश्वमेध कर्या. ते ठेकाणे हाल लोक नहाय छे. तेने दशाश्वमेध क्षेत्र कहेवाय छे. एज प्रमाणे उत्कंठ महादेव पासे जाबाली ऋषिए यज्ञ कर्यो ते ठेकाणे खैरनाथ एवुं कहेवाय छे. ने त्यांथी भस्म नीकळे छे. ए प्रमाणे हिंदुस्तानमां हजारो ठेकाणे यज्ञ थएला तेना दाखला मळी आवे छे. तेथी पूर्व काळमां घणा यज्ञ थता एम जणाय छे.

वैदिक यज्ञमां घणी हिंसा करवी पडेछे, ए वातमां कंइ पण संशय नथी. कळियुगना आरंभे बौध मत उत्पन्न *थयुं ते घणा लोके मान्युं. ते मत वेदना वीरुद्ध हतुं. हिंसाने लीधे, बौधमत वाळाए वेदनी अने ब्राह्मणोनी घणी निंदा करी छे. अने अहिंसा, तप, सत्य, देहडंड, उपवास इत्यादी प्रतिपादन करी, लोकोने उपदेश कर्याथी वेदधर्म वातल पड्यो. पछी ब्राह्मणोए फरी कमर बांधी, एक मत

* टीप—ए प्रमाणे पुराणोमां इतिहास छे ते उपरथी लख्युं छे.

थयाने, वैदिक धर्मनुं स्थापन कर्युं. तोपण बौधधर्म बीलकुल रद्द थयो नथी. थोडो घणो चालेछे-अने बीजा प्रांत करतां मारवाड अने गुजरातमां बौधधर्मनुं जोर वधारेछे. तेथी ब्राह्मण दया धर्मथी चालेछे. अने यज्ञयागादिक क्रीया बिलकुल करतां नथी. पण हिंदुस्ताननां अन्य भागमां यज्ञ थाय छे. अने श्रोति ब्राह्मण पण घणा छे.

वेद मुळमां एक गणातो नहतो अनेक रूषीओ पासे अनेक मंत्रनो संग्रह हतो. ते बधाए श्री व्यासजीए भेगा कर्या. अने तेनां चार नाम पाड्यां. जे छंदरूपी वाक्यो हतां, ते जुदां काहाड्यां तेमां अनेक देवोनी प्रार्थना छे. तेनु नाम ऋग्वेद एवुं पाड्युं, अने ए भाग बधाय करतां प्राचीन जणाय छे. एमां जे देवोनुं वर्णन कर्युं छे ते राम कृष्णादिक पुराणना देव, हाल जे प्रसीद्ध छे, तेथी वेदना देव जुदाछे. अग्नि, वायु, सुर्य, रुद्र, विश्णु, इंद्र, वरूण, सोम, नक्त, पूषा, ईत्यादि वेदमां देव गणेला छे. अने तेमनी प्रार्थना वेद मंत्रमां करेली छे. जे गायन करवाना मंत्र हता तेनुं नाम, सामवेद पाड्युं. अने जेमां यज्ञ क्रीया बतावी छे. तेनुं नाम यजुर्वेद पाड्युं. यजमान एटले यज्ञ करनार अने, पुरोहित एटले मददतगार. अने चोथो वेद, अथर्वण, एमां अरीष्टशांति इत्यादि लखेली छे. पण सौथी ए वेद नूतन जणायछे. ए चारे वेद एटले संहिता अने ब्राह्मण ए अनादि छे. एवुं मानेलुं छे कोइ केहेछे के चारे वेद ब्रह्माना मुखमांथी प्रगट थया, कोई केहेछे के, ब्रह्मानुं मुख एटले ब्राह्मण तेमांथी निकळ्या. वेदने जोडेला बीजां नाहानां नाहानां पुस्तको छे, तेने उपनिषद कहेछे. तेमां केटलाएक खराछे ने केटलाएक नूतनछे वैदिक कर्मनी, ए ग्रंथमां नि-

र्चा करेली छे. अने बीजा बधा देव मुकीने, एकपर ब्रह्ममात्र मानेलु छे. अने घणुं करीने निवृत्ति मार्गनी प्रशंसा करीछे. आ ग्रंथमांथी वेदांत शास्त्र उत्तर मीमांसा निकळ्युं. अने बीजा वैदिक ग्रंथमांथी पूर्व मीमांसशास्त्र निकळ्युं छे. ए बे मत एक बीजाथी विरूद्धछे अग्निहोत्री याज्ञिक, इत्यादी कर्म कांडी, ब्राह्मण पूर्व मीमांस शास्त्रनो आधार लेछे. अने संन्यासी परमहंस इत्यादी, त्यागी, ब्राह्मण उतर मीमांस एटले वेदांत शास्त्रनो आधार लेछे. अने बधाय कर्म मुकीने फकत ब्रह्मनुं ध्यान करेछे. बीजा कोई देवने मानता नथी. ए मार्गने ज्ञांन मार्ग पण कहेछे. आ बे शिवाय त्रीजो मार्ग भक्ति मार्ग करीने सांप्रत चालेछे. तेमां चार संप्रदायना ग्रहस्थ त्यागी, बैरागी साधु ईत्यादिक गणाय छे. हरदास, पुराणिक, रामदासि, वारकरी, आ बद्दाय भक्ति मार्गवाळाछे. एने उपासना मार्ग पण कहेछे. उपासनाना पेटामां बे छे एक वाम मार्ग अने एक दक्षण मार्ग तेमां वाम मार्ग ए देवीनुं कहेवाय छे.अने दक्षण ए शिव, विष्णु इत्यादीकनुं कहेवाय छे. तेमां स्मार्त, शैव, वैष्णव, समर्पणी, सत्संगी, इत्यादिक गणाय छे. ए मार्गमां वैष्णव मात्र अहिंसाव्रत पाळेछे अने वाम मार्ग जे आगम अने तंत्रनो आधार लेछे तेमां ए व्रत पाळता नथी. अने जे वेदनो आधार लेछे ते पण अहिंसा व्रत पाळता नथी अनेक शास्त्रमां कोई ठेकाणे ज्ञाननी प्रशंसा करीछे. कोइ ठेकाणे भक्तीनी प्रशंसा करीछे. कोई ठेकाणे कर्मकांडनी प्रशंसा करीछे. अने दरेक मार्गना ग्रंथ घणाछे. माटे कीयो मार्ग सारो तेनो निश्चय करवाने घणी मुषकेल पडेछे. एटलुं खरू के कर्मकांड ए बहु प्राचिन छे. अने यज्ञयागना विधी केवळ, हिंदुस्तानमां चालता हता, एम नथी पण बीजा देशमां पण प्राचीन काळमां यज्ञयाग करता हता.

प्राचिन काळमां, जे ब्राह्मण हता, तेमने ऋषि एवुं कहेता. केटला एकने महर्षि, एवुं नाम छे. केटलाएकने, देवर्षि, केटलाएकने राजर्षि, छंदर्षि, एवां जुदां जुदां नाम छे. पण ऋषि ए शब्दनो अर्थ, ग्रंथ कर्ता एवो थाय छे. पण हालनां ब्राह्मण एम कहेछे के ऋषीनुं ज्ञान अद्भूत हतुं तेथी तेमने "अदृष्टार्थद्रष्टा" कहेछे. एटले जे कोइने मालम पडवानुं नहीं ते एमने मालम पडतुं हतुं. तेथी एमणे जे ग्रंथ बांध्याछे, ते वेद तूल्य गणायछे. अने ऋषी गया पछी जे ग्रंथ थया ते, पौरूष ग्रंथ कहेवायछे. ऋषीना ग्रंथने, आर्ष एवुं कहेवायछे. अने वेद ना ग्रंथने छांदस एवुं कहेवाय छे. ए बधाय ऋषी अनेक प्रकारना जनावरोनुं मांस खाता हता. एवुं एमना ग्रंथ उपरथी जणायछे. हाल म्लेछ, यवन, इत्यादिक मांस आहारीछे. पण एमना करतां आ बधाय ऋषीओ वधारे हता. कारण, हाल फ्रान्स देशमां घोडानुं मांस खावानो प्रचार, पड्योछे. पण अश्वमेध ऋषिओ हजारो वर्षथी करता आव्या छे' तेथी एवु मालम पडेछे के घोडो खावानो प्रचार ऋषि मंडळमां घणो हतो. पछी बौध अवतार थयो त्यारे, घणीक हिंसा बंध पडी, अने दयानो विस्तार थयो, अने सात्विक मार्ग वध्यो, अने बधा लोक निवृत्ति मार्गने वळगी पड्या. त्यारे कर्मकांडी ब्राह्मण, बहु ओशीयाळा थइ पड्या, अने पोतानुं कर्म ढांकवा वास्ते केटलीक मिथ्या वातो चलावी ते एवीके कोइ कहेछे, के,

॥ वैदिकीहिंसाहिंसानभवति ॥

एटले वेदमांनी हिंसा छे तेने हिंसा न गणवी,

यावेदविहिताहिंसानसाहिंसाप्रकीर्तिता ॥ भागवत टिका ११ स्कंद अ ५ श्लो. ११

यतूघ्राणभक्षोविहितःसुरायास्तथापशोरालभनंनहिंसा

भागवत ११-५-१३

देवतोद्देशेनयत्पशुहननंतदालंभनं ॥ टीका

बीजा कहेछेके,पूर्वेना,ऋषी जनावरो मारता,पण फरी जीवंत करवानुं तेमने सामर्थ्य हतुं,ते आपणे नथी माटे आपणे न करवी.बीजा कहे छे के, वेदमां हिंसा नथी अने जे हिंसानो अर्थ कहाडेछे,ते भूलछे. बीजा कहे छे के, मनुष्यने मांस खावानी इछा होय, ते तृप्त करवाने वास्ते यज्ञ विधि बताव्यो छे माटे ए विधि नथी, पण संकोच छे. बीजा केटलाएक, कहे छे के, कोइ कामनी सिद्धि करवी होय त्यारे हिंसा करवी पडे पण आपणे काम्य कर्म मुकी दइए तो, हिंसानी जरूर नथी. अने केटलाएक कहे छे के, वेदमां जे हिंसा लखी छे,ते पूर्व युगने वास्ते हती, पण कळीयुगने वास्ते नही. खरी रीते ए बधी तकरार तपाशीए तो, एमांनी एक पण खरी नथी, कारण जनावरोने मारीने ऋषिओ फरी जीवंत करता हता, ए वातनो दाखलो कोइ ठेकाणे मळतो नथी. अने बीजुं एम के जे युगमां घणी हिंसा चालती ते युगने कळी कहेवुं, अथवा जे युगमां दयानो विस्तार वधारे थयो, तेने कळी कहेवुं, आ एक मोटो संशय छे. अने वेद वाक्यनो निषेध पुराण वाक्यथी थाय नही. माटे ए तकरार पण बरोबर नथी. अने जे कहे छे के वेदनां वाक्य संकोचार्थ छे. ते पण खरू नथी कारण अनुस्तरणी इत्यादीक ठेकाणे मांस खावानुं नथी त्यारे हिंसा शावास्ते लखी छे. एनुं कारण जणातुं नथी, संकोच होय तो एवी हिंसा लखे नही. माटे ए कल्पना पण मिथ्या छे. अने वेदमां हिंसा नथी, एवुं

जे कहे छे, तेमने विशे एटलुंज कहेवाय के ते लोको वेदोर्थमां अभण छे. खरी वात एटलीज के बौधे दया धर्म चलाव्यो ते दहाडाथी ब्राह्मण लोकोए हिंसा शास्त्र संताडवाने वास्ते, अनेक योजना करी. ब्राह्मण अने क्षत्री ए बेउ जणाए पोतानो धर्म मुकी दीधो, अने लोभी थइने द्रव्यार्थे, गमे ते वातने मान्य करे छे. अने आ वात सत्य छे के असत्य छे ए विशे विचार करता नथी. ए प्रमाणे हालना ब्राह्मणोनी स्थीति छे. तेज प्रमाणे क्षत्री लोकोए पोतानो धर्म मुकी दीधो, एमनो धर्म एवो हतो के, पोताना देशनुं रक्षण करवुं, ते वात जइने पेटने अर्थे जे रोटलो आपे एनी नोकरी बजाववी, ते कहे के, भाइने के, बापने मारो; तोपण मारे. ए प्रमाणे स्थीती पाम्याथी बधो देश खराब थई गयो, अने सत्य अने देशाभीमान नाबुद थयो.

जे वखत दयाधर्म प्रगट थयो तारे हिंसानी बंधी थइ, पण केटला एक प्रांतमां ए चाले छे, ने केटलाएक प्रांतमां नथी चालतो, सारस्वत, मैथील, कान्यकुब्ज, गौड, उत्कल, ए पांचे गौड ब्राह्मण कहेवाय छे अने तेमनी वस्ती करांची, लाहोरथी कलकत्ते सुधी, आखा हिंदुस्तानमां छे. ते बधाय मच्छ मांसनो अहार नित्य करे छे. अने द्राविड, तैलंग, कर्णाटक, महाराष्ट्र, ए चार प्रांतमां, यज्ञ करती वखत मात्र, मांस खाय छे, नित्य खाता नथी. अने गुजरातमां कोइ कारणथी पण मांस खाता नथी. ए प्रमाणे आज वहीवट छे. दक्षणना जे वैष्णव संप्रदाइ ब्राह्मण छे ते लोटनो बकरो करीने तेनो यज्ञ करीने खाय छे, तेने पीष्ट पशु कहे छे. पण बीजा घणा ब्राह्मण प्रत्यक्ष पशुनो यज्ञ करे छे. ए प्रमाणे घणा ब्राह्मणोए, वडोदरामां अने करनाळी क्षेत्रमां यज्ञ कर्या छे. पुना, सतारा, काशी इत्यादि क्षेत्रमां घणा यज्ञ थाय छे.

तेमां कोइमां चार कोइमां आठ कोइमां पचीस एटलां पशु होमे छे. अने ए जनावरो शस्त्रथी मारता नथी कारण तेनुं रुधीर बहार पडवुं न जोइए. माटे गळु दाबीने मारे छे. ए काम बहु निर्दयपणानुं छे पण वेदाज्ञा समजीने करे छे. जे ठेकाणे श्रावक गुजराती के मारवाडी जे गाममां होय छे. ते ठेकाणे कोइ अग्निहोत्री यज्ञ करवा लागे त्यारे कोइए एने माल धीरवो नही के वेचवो नही एवो बांधो घाले छे. तेथी घणी हरकत पडे छे. तेथी अहंमदनगर जीलामां घणा एक गाममां श्रावकोनी वस्ती मोटी छे. ते ठेकाणे यज्ञ थतो नथी तेज प्रमाणे मुंबइमां पण गुजराती श्रावक ने वैष्णवोनी वस्ती वधारे छे, माटे ते ठेकाणे पण आज सुधी यज्ञ थयो नथी. पण ज्यांहां ब्राह्मणोनो जथो मोटो छे ते ठेकाणे यज्ञ थाय छे गया माहा महीनामां पुनामां वाजपेय यज्ञ थयो तेमां चोवीस बकरा होम्या अने मोटा मोटा नामांकित गृहस्थो अने वेदीया ब्राह्मण शास्त्री पंडितो भेगा थया हता. एवुं वर्तमान पत्रथी खबर प्रसिद्ध थइ छे.

धर्मना आधार बे जणाय छे. एक तर्क, अने बीजो, कथा, ज्ञानी लोक छे, ते तर्कथी, ईश्वरने समजे छे. अने अज्ञानीछे तेमने वास्ते, रोचनार्थ, अनेक प्रकारनी कथा रचेली ते वांचीने ते प्रमाणे भजन करेछे. तर्कने फक्त बुद्धिनो आधार छे. अने कथाने आधार पुस्तकनो. पछी पुस्तक लखनारनी जेवी आबरु ते प्रमाणे ते पुस्तकनी मान्यता थाय. जगतमां पुस्तक लखनार घणा थयाछे. अने ते एकेक देशमां एकेक ज्ञातिमां एकेक संप्रदायमां मानीताछे. ब्राह्मण कहेछे के ऋषिनां करेलां पुस्तक ते बधाय करतां मोटां. कारण के परमेश्वर ऋषिमां प्रेरणा करता हता, ते प्रमाणे ऋषि लखता. श्रावक कहेछे

के, तिर्थंकरना पुस्तको मोटां, मुसलमानो कहेछे के पेगंबरनां पुस्तको मोटां. आ बधां पुस्तको मेळवतां एकबीजाने मळतां नथी. त्यारे धर्म कोने कहेवो अने पाखंड कोने कहेवो एनो निर्णय करतां बहुज कठण छे. धर्म छे ते बे प्रकारना छे. एक. स्वभाविक, अने सांकेतिक, स्वभाविक धर्म छे ते स्वतःप्रमाण छे. अने बद्धाय पुस्तकोमां ते मळे छे. अने, सांकेतिक, धर्म मात्र मळतो नथी. स्वभाविक धर्म एटले सत्य, दया, न्याय, शम, दम, तितीक्षा, इत्यादि, ने कोइ पण ना पाडतुं नथी. अने, सांकेतिक धर्ममां घणीए तकरारो छे. हिंदु कहेछे के श्रावण मासमां उपवास करवा ने मुसलमान कहेछे के रमजानमां करवा, ए प्रमाणे देश देशना, सांकेतिक धर्म, अने आचार जुदाछे. आ बधायनुं तत्व जे ज्ञानी अने विवेकी छे, ते मात्र जाणेछे, अने जे लोक अज्ञानी होयछे, ते एक बीजानी साथे अभिमानथी, लढामरेछे. अने एकबीजानी निंदा, अने द्वेष, करेछे, अने सार, असारनुं विचार करता नथी.

हालना ब्राह्मण घणा अज्ञानी थयाथी पोताना शास्त्रमां शुं छे ते जाणता नथी अने पोतानुं ज्ञान वधारता नथी तेथी त्रण हजार वरस उपर हिंदुस्तानमां जेटलुं ज्ञान हतुं, तेटलुंज, कायम रह्युंछे. तेनुं कारण जे आगळ ऋषियो लखी गया, तेमां कांइ भूल नथी, तेथी कांइ वधारवानुं रह्युं नहीं, एवी समजण पड्याथी लोको आगळ डगलां भरता नथी.

धर्मशास्त्रमां एवुं कह्युं छे के, यज्ञ कर्याथी देश अने भुमि पवित्र थाय छे. अने कीया देशमां यज्ञ करवा अने कीया देशमां न करवा एनी विगत लखी छे. तेमां गंगा यमुनानो कांठो ए सौथी श्रेष्ठ गणाय

छे ते ठेकाणे, पूर्व युगमां घणा यज्ञ थएला, तेथी ते देशने पुण्य भूमि कहे छे. हाल केटला एक लोक एम कहे छे, के यज्ञ करवो नहीं अने जे कर्ममां हिंसा आवे छे, ते कर्म न करवुं, पण जे ऋषिना बांधेला ग्रंथ छे ते आधारथी ब्राह्मणने ब्राह्मणपणुं मळे छे. अन्न प्राशन मौंजिबंधन, लग्न, अंत्येष्टि, आ बधाय संस्कार श्राद्धतर्पण श्रावणी इत्यादिक कर्म खरा अने, बाकीना यज्ञादिक कर्म, मिथ्या ए केम थशे. एकज ऋषिना ग्रथमांनो एक अध्याय खरो ने एक अध्याय खोटो, ए केम कहेवाशे, अने कदापि एम होय तो तेनो पाठ पारायण करवामां पुण्य छे के नहीं? ज्यारे वर परणवा सारू घेर आवे छे त्यारे मधुपर्क करवानी चाल अद्यापि चाले छे. ने उत्सर्जन पक्ष लेइने गोदान करे छे. तेज प्रमाणे शूलगवने ठेकाणे वृषोत्सर्ग करे छे. अने श्राद्धमां, मांसने ठेकाणे, मांष एटले, अडद ले छे. पण कर्मनो त्याग करता नथी बद्धाय पृथ्वी उपर भरतखंडने कर्म भूमि कहे छे, तेनुं कारण, आ देश शिवाय, बीजे ठेकाणे यज्ञ याग थता नथी तेथी ते देश पवित्र थएला नहीं, माटे ब्राह्मणोने, बीजा देशमां जवानी पण मनाइ छे.

शास्त्रमां एवुं गणेलुं छे के बार मासनुं एक वर्ष थाय छे अने एवां केटलांएक वर्ष जाय, त्यारे एक युग कहेवाय, अने च्यार युगनो महा युग अने एवा बोहोतेर महायुग जाय, त्यारे एक मन्मन्तर थाय छे अने चौद मन्मन्तर जाय त्यारे, एक कल्प कहेवाय. कल्प, एटले ब्रह्मदेवनो एक दीवस केटलाएक ब्राह्मण एम कहे छे के, कोई शास्त्र आ कल्पमां चालवानुं, अने कोई शास्त्र बीजा कल्पमां चालवानुं, एवो कल्पभेद बतावे छे. प्रण ए वात खरी जणाती नथी केवळ अनुवाद टाळवाने वास्ते ए कल्पना करेली छे. वेदनो एक भाग एक कल्पमां,

अने त्रीजो भाग बीजा कल्पमां,चालवानो,एवुं कहीएतो, वेदनो कोइभाग रहेवानो नथी. अने वेदमां यज्ञ विधी वीना कोइ भाग पण छेज नही. कोइ कहेशे के ज्ञानकांड तो उपनिषद भाग छे, तेमां यज्ञनो विधी बतावेलो नही. पण यज्ञनी निंदा करेली नथी, वळी एम कहेलुं छे के यज्ञ कर्याथी देहनी, ने चित्तनी शुद्धि थाय छे. अने ते कर्या पछी सन्यास लेवो माटे घणा एक लोक यज्ञ संपादन करीने, पछी संन्यास ले छे.

यज्ञोदानंतपश्चैवपावनानिमनीषिणां ॥ गीता ॥

शतयज्ञ जे माणस करे, तेने इंद्रपद मळे छे. एटले ते माणस स्वर्गनो राजा थाय छे. अने जे यज्ञ करे तेने स्वर्ग मळे छे. एवी कथा पुराणोमां घणे ठेकाणे लखी छे. अने केटलाएक राजा, शतयज्ञ करवा लाग्या, त्यारे इंद्रने बीक लागी, के आपणुं राज्य जशे, तेथी ते आडो पड्यो, एवी पण कथा छे. पण हाल जे लोक यज्ञ करे छे, ते फलाणे दिवसे स्वर्गे जशे एवुं कांइ जणातुं नथी. कारण कोई यज्ञ कर्या पछी दश वर्ष जीवे छे, वीस वर्ष जीवे छे, ने कोई पचास वर्ष जीवे छे, पछी की वखत जता हशे ते कोण जाणे.

आ कळीयुगमां जेम जेम ब्राह्मण उतरता गया, तेम तेम स्त्रीओनो अधीकार ओछो करता गया. प्रथम लग्न कर्या विना ब्रह्मवादी स्त्रीओ रहेती हती; एवां उदाहरणो पण घणां छे. गर्गी, मैत्रेयी, वडवा, आ ऋषि कन्याकुमारी हती शास्त्रमां लख्युं छे के.

द्विविधाःस्त्रियोः । ब्रह्मवादिन्यः । सद्योवध्वश्च ।

तत्रब्रह्मवादिनीनामुपनयनमग्नींधनंवेदाध्ययनंस्वगृहेभि

क्षाचर्यैति । सद्योवधूनांमुपास्थितेविवाहेकथंचिदुपनय नमात्रकृत्वाविवाहःकार्यः । हरितस्मृति ।

पुराकल्पेषुनारीणांमौंजीबंधनमीष्यते ॥

अध्यापनंचवेदानांसावित्रीवचनंतथा ॥

वर्जयेदजिनंचीरंजटावल्कलमेवच ॥ यमस्मृति ।

ते बंध करीने, सर्व स्त्रीओने परणाववी अने तेमने शुद्र प्रमाणे दास समजवी, एवुं ठराव्युं. अने धणी मरे त्यारे एमने वाळ उतराववा के धणीना मडदा साथे बळी मरवुं. जनावरनी अनुसरणी करता, ते स्त्रीनीज करवा लाग्या. तेथी जुलम, अने अन्याय, बहु वधी गयो.

अथर्वण वेदमां संहितानुं कांड नव अनुवाक त्रण अने प्रपाटक वीसमां पुनर्विवाह करे ते पंचोदन होम करे एवुं लख्युं छे ते मंत्र निचे लख्या छे.

यापूर्वपतिंवित्वाथान्यंविन्दतेपरं ॥

पंचौदनंचतावजंददातोनवियोषतः ॥ २७ ॥

समानलोकाभवतिपुनर्भुवापरःपतिः ॥

यारेजंपंचौदनंदक्षिणाज्योतिषंददाति ॥ २८ ॥

अथर्वसंहिता

प्राचीनकाळमां लग्न करवानुं महुरत कहाडता नहोता एवुं आश्वलायन अने बौधायन सूत्र उपरथी मालम पडे छे.

सार्वकालमेकेविवाहम् आश्वलायन

सर्वेमासाविवाहस्य   बौधायन

अने नहानी छोडीने लग्न पण करता नहता एवुं मनुंना वचनथी मालम पडे छे.

आज्ञातपतिमर्यादामज्ञातपतिसेवनाम्
नोद्वाहयेत्पिताबालामज्ञाताधर्मशासनम् ॥

हिरण्यकेशी सूत्रमां एम लख्युं छे के लग्न थया पछी चोथे दिवसे चतुर्थी कर्म एटले गर्भाधान करवुं एवो विधी लख्यो छे तेथी एम मालम पडे छे के कन्यानी उमर लग्ननी वखत गर्भाधान लायक जोइए नहीतो चतुर्थ कर्म शी रीते थशे.

प्राचीनकाळमां त्रीवर्णमां कन्या आपवा लेवानो अने अरसपरस जमवानो चाल हतो भृगुऋषिनो पुत्र शुक्र तेनी दीकरी देव यानी एय याती राजाने आपी हती एटले ब्राह्मणनी कन्या क्षत्रीने आपी अने घणां स्मृतियोमां ए विशे घणुं लखेलुं छे. पछी आ बधी बाबतनो संकोच थयो अने स्त्रीओने दास्यत्वमां लाववा विशे घणोज प्रयत्न थयो अने जे स्त्रीओने पहेलो अधिकार हतो ते सर्व हरण करी लीधो अने स्त्रीओने शुद्र समान ठराव्युं.

अतःपरंप्रवक्ष्यामीस्त्रीशूद्रपतनानिच॥ जपस्तपःस्तिर्थयात्राप्रव्रजामंत्रसाधनं॥देवताराधनेचैवस्त्रीशूद्रपतनानिषड्॥

अत्रिस्मृती १३४

आ देशमां प्रथम कीरात अने निषाद एटले भील कोळी इत्यादि लोक रहेता तेने केटलेक ठेकाणे दस्यु राक्षस ए पण नाम आप्यां छे. जेम जेम आर्य लोकोनी वस्ती थइ तेम तेम जुना लोको हठता गया

अने जे वधारे केळवणी पामेला अने बुद्धिवाळा हता ते आगळ पडता गया अने जे आर्य लोकोमां जे जे रुढी हती ते रुढीनो विधी थइ गयो. जे प्रमाणे बोलवामां जे रुढी चाले छे ते रुढी लेइने व्याकरण शास्त्रना नियम बंधाय छे कह्युं छे के.

प्रयोगशरणाःवैयाकरणाः

एज प्रमाणे जे रुढी चालती होय अने जे रुढी लोकोने मान्य छे ते रुढी लेइने धर्मशास्त्रवाळा विधी ठरावे छे कह्युं छे के

शास्त्रात्रुढीर्बलियसी ॥

हरेक शाखानुं सूत्र जोतां जेटलुं सूत्रमां कर्म लख्युं छे तेटलुं कोई करतुं नथी केटलाएक अनुष्टानो बीजी रीते करे छे केटलाएक लांबा थया छे ने केटलाएक टुंका थया छे ते विशे एम कहे छे के.

अकरणात्मंदकरणंश्रेयं ॥

कर्मकांडने मूळ आधार वेद अने सुत्र ए बे छे पण ए बेनो अर्थ कोई करतो नथी अने घणुं करीने रुढी मार्ग प्रमाणे चाले छे.

मनुष्यने प्रथम अज्ञानकाळ होय छे, पछी पराक्रम काळ आवेछे, तेमा मोटा मोटो वीर पराक्रमी राजा थईने देशनुं नाम वधारी दे छे त्यार पछी लोक विचार काळमां आवे छे, अने विचार करतां करतां जराकाळ आवे छे तेमां अवळा विचारमां पडीने देशनो नाश थई जाय छे. हाल हिंदुस्ताननना लोक चोथी स्थितीमां छे हाल कोई जाणतो नथी के आ देशमां पूर्वे शी शी विद्या हती अने शो शो सुधारो हतो अने वेदशास्त्रमां शुं छे ते कोई जाणतो नथी जुना उदाहर्णो जोईने एम बोले छे.

कृष्णद्वैपायनस्यगृहीतनैष्टिकब्रह्मचर्यस्यविचित्रवीर्यदारे

ष्वपत्योत्पादनप्रसंगः

युधिष्टिरस्यकनीयानिर्जितभ्रातृजायापरिणयनं

वासुदेवार्जुनयोर्निषिद्धमातुलदुहितृरुक्मिणीसुभद्रापरिण

यनं ॥ इतिधर्मव्यतिक्रमः ॥ तेजसानांनदोषः ॥

ख्यातःशक्रोभगांकोविधुरतिमलिनोमाधवोगोपिजारः ॥

वैश्यापुत्रोवसिष्टःसरुजदयमःसर्वभक्षोहुताशः ॥

व्यासोमंछोदरीयःसलवणजलधिपांडवाजारजातः ॥

रुद्रप्रेतास्थिधारीत्रिजगतिवसतीकस्यदोषोनजातः ॥

तेजस एटले जबरजस्त तेने रुढी तोडतां दोष नथी पण आज तेजस माणसनो आभाव थयो छे अने लोक असत्य बोलनारा कपटी अने आपसमा लढनारा बहु थया छे तेनु कारण विद्वानोनो घटारो बहु थयो कह्यूं छे के.

शास्त्रेणहीनाःकवयोर्भवंतिकवित्वहीनाश्चपुराणभट्टाः॥

पुराणहीनाःकृषिमाचरंतिकृषित्वहीनाश्चभवंतिसंताः ॥

आ कारणथी अज्ञान बहु उत्पन्न थयुं अने विवेक बीलकुल जतो रह्यो जे मूर्ख माणस छे ते डाह्यो गणाय छे अने दुराचारी छे ते सदाचारी गणाय छे अमथो ज्ञातीनो अभिमान वध्यो अने वेदनो अर्थ शुं छे ते कोई जाणतुं नथी सूत्रनी कोइने खबर नथी रुनु सूत्र थाय छे ते मात्र जाणे छे धर्मशास्त्र कोई समजतो नथी ब्राह्मणोयु भणतर

पोपट जेवुं भणे छे अने लोकोने कनडवानी इछा राखे छे तेथी अदावतो घणी उत्पन्न थइ प्रत्येक मनुष्यने एवी इछा छे के बीजा लोकोए आपणा कबजामां रहेवुं अने ते लोकोए आपणो हुकम मानवो एज कारणथी सासु वहुनी लढाईओ थाय छे. गोर जजमाननी थाय छे, राजा ने रईयतनी थाय छे आवा कारणथी कळीयुगमां घणीक रीतो बगडती गई विधवाए वपन करवुं ए विषे कोई ठेकाणे शास्त्र आधार वेदमां के स्मृतिमां जणातो नथी तैतीर्य अरण्यकमां बे अध्यायमां पितृमेध एटले अंत्येष्ठिनी पद्धती लखी छे, पण तेमां वपननो अने सतिनो कोई ठेकाणे दाखलो नथी तोपण ए रूढी चाली कारण विना कांई पण रूढी चालती नथी एम कह्युं छे के.

अकारणमनुद्दिश्यनहिमंदोपिप्रवर्तते ।।

अर्थ.

कारण विना मूर्ख पण नियम करतो नथी.

त्यारे आवा नियम करवानुं कारण शुं हशे ते केहेवाने घणुं मुषकेल छे वपन विषे एक वाक्य निर्णय सिंधुमां लख्युं छे.

विधवाकबरीबंधंभर्तृबधायजायते ।।
शिरसोवपनंतस्मात्कार्यंविधवयासदा ।।

पण ए वचन कांहानुं छे, तेनो पतो नथी अने, क्षेपक, अने कल्पित छे एम जणाय छे, अने घणे ठेकाणे ए मान्य नथी मनू अने याज्ञवल्क्ये ए विषे कांई लख्युं नथी कदाचीत यवन मुसलमान हिंदुस्तानमां संचार करवा लाग्या त्यारे ए जबरदस्तीथी स्त्रीओने पकडीने लेई जता एवुं देवल स्मृतिथी मालम पडे छे कारण ए ऋषी सि-

धुं नदीने कांठे रहेता अने तेना ग्रंथमां आवी स्त्रीयोने शी रीते शुद्ध करवी ए विचार लख्यो छे तेथी एम लागे छे के ते वखतमां कंई पण मोटुं संकट उत्पन्न थयुं हशे तेथी आवो ठराव थयो छे.

कलौनान्यगतिस्त्रिणांसहानुगमनादृत ॥ ऋग्वेद
वादात्साध्वीस्त्रीनभवेदात्म ॥ घातिनी ॥ निर्णयसिंधु ॥

बीजे ठेकाणे एवुं लख्युं छे के

सहानुगमनंशस्तंवैधव्यस्याथपालनम् ॥

अमेरिकामां, जे वखत जमीदार लोकोए, गुलाम वेचाथी राख्या त्यारे एवो कायदो करवो पड्यो के गुलामोनी फरीयाद के साक्षी कोइ कोर्टमां सांभळवी नहीं अने गुलामनी कमाइ ते धणीनी कमाइ, अने गुलाम नासे तो, सरकार पकडीने धणीने आपे, तेज प्रमाणे धर्मशास्त्रमां स्त्रीयोनो अधिकार कहाडी लीधो अने तेमने दास्यत्व आप्युं त्यारे तेमने बंधन करवा वास्ते विधवा धर्म लखवा पड्या ते नीचे प्रमाणे.

एकाहारोसदाकार्यःनद्वितीयोकदाचन ॥
पर्यंकशायिनीनारीविधवापातयेत्पतिं ॥
नैवांगोद्वर्तनंकार्यंस्त्रियांविधवयाक्वचित् ॥
नाधिरोहेदनड्वाहंप्राणैःकंठगतैरपि ॥
कंचुकंनपरीदध्यात्वासोनाविकृतंवसेत् ॥
तांबुलाभ्यंजनंचैवकांस्यपात्रेचभोजनं ॥
यतिश्चब्रह्मचारिश्चविधवाचविवर्जयेत् ॥

बीजुं वृत बंधनने ठेकाणे लग्न ठराव्युं तेथी वृत बंधननो काळनो अति देश लेइने लग्ननो काळ टुंको कर्यो तेथी एवो ठराव कर्यो के

अष्टवर्षाभवेत्कंन्यानववर्षातुरोहिणी ॥

दशवर्षाभवेत्गौरीअतउर्ध्वारजश्वला ॥

अष्टमेवर्षेब्राह्मणोउपनयेत् ॥

सर्व शास्त्रनुं आदीकारण, अनुभव, अने तर्क ए बे छे आ बेथी शास्त्र बंधाय छे वैद्यशास्त्र, ज्योतिशशास्त्र, धर्मशास्त्र इत्यादिकनुं मूळ एज छे. पण लोभी के स्वार्थी मनुष्य ज्यारे शास्त्र उभु करवामां सामेल थाय छे त्यारे अनुभव अने तर्क बाजुए मुकीने स्वार्थी अने लोकहित नाशक कानुं, शास्त्रमां घाली दे छे तेथी लोकोनो बिगाड थाय छे आ देशने चार काळ थया प्रथम अज्ञानकाळ हतो तेमां श्रद्धा वधारे पण विचार ओछो तेथी हिंसा कर्याथी देव तृप्त थाय छे अने जे देव नहीं तेने देव केहेता अने ते देव एवा के मनुष्य पासेथी खावा मागे छे एवुं ते काळमां धारेलुं, पछी पराक्रम काळ आव्यो तेमां रामचंद्र युधिष्टर अने विक्रम जेवा पराक्रमी राजा थया तेमणे आर्य लोकोने बहु सुख अने मोटापणुं आप्युं त्यारपछी षट् दर्शन वाळा निकळ्या ते वखतमां विचार काळ प्राप्त थयो ते वखतमां कर्मकान्ड उपरनी श्रद्धा निकळी गइ अने मानसिक शास्त्र बहु वधी गयुं तप, देहदंड, उपवास, इत्यादिक धर्ममां पेठापछी जराकाळ आव्यो तेमां विचार उंधो पड्यो अने पराक्रम नष्ट थयुं हवे जेमना हाथमां कायदा करवाना हता तेमने स्वार्थ बुद्धिथी के पोताना अज्ञानथी एवा कायदा कर्या के लोकोनुं सर्व द्रव्य हरण कर्युं अने लोको आपणा भक्ष छे एम समजीने

नाना तरेहथी लोकोने खाइ गया अने हजारो कायदा एवा कर्या के लोकोमांनो संप उठी गयो अने अदावतो वधी अने भारे बेडीओ लोकोना पगमां एवी सज्जड करी मुकी छे के तेथी लोकोनी हाल चाल अने विचार बंध पड्यो छे अने पोताने वास्ते जे खोराक करी मुक्यो हतो ते अने पंडे पारका लोकोनो भक्ष थया. ए स्थितीमां आ देश हाल पड्योछे. पृथ्वी उपर घणा देश छे पण हिंदुस्तान जेवा हजारो वरसथी परतंत्र थएलो देश जणातो नथी अने कदाचीत आ देशने स्वतंत्रता मळवानो वखत आवेतो अहींआंना लोक पोतानां स्वतंत्रता रक्षण करशे एवुं पण लागतुं नथी.

जे बेडीओ ऊपर लखी छे तेमांनी थोडि हेठे बतावीछे.

१ द्विजस्याब्धौतुनौयातुशोधितःस्याप्यसंग्रहः ॥

२ शिरसोवपनंतस्मात्कार्याविधवयासदा ॥

३ स्त्रीशूद्रसमानधर्माः ॥

४ दत्ताकन्यानदीयते ॥

५ क्वचित्गाणीपतिव्रता ॥

अर्थ.

१. ब्राह्मण, क्षत्री, वाणीए नावमां बेसवुं नहीं. २. विधवाए वाळ राखवा नहीं. ३. स्त्री अने शुद्र ए बंने बराबर छे. ४ कन्याने पुनरः विवाह न करवो. ५. जे स्त्री गायन करे ते पतिव्रता रहेशे नहीं इत्यादि नियम बांध्याथी हिंदुलोकोनुं पराक्रम जतुं रह्युं, १ हिंदुस्तानना त्रण तरफ दरियोछे अने उत्तर तरफ हिमालयछे माटे वहाणमां बेठा सिवाय परदेशमां जवाय नहीं अने परदेशमां गया विना ज्ञान के वेपार

बधवानो नथी, आ प्रमाणे नियम अंग्रेज लोकोए कर्यो होत, तो आ देशमां वहाण शिवाय शी रीते आवे अने आ देशमां मोटुं राज्य मेळव्यार्थी एमने जे अपरमित सुख मळ्युं छे, ते शी रीते मळत, माटे दरीयामां जवुं नहीं एवो नियम जे माणसे ठराव्यो ते माणस अत्यंत मूर्ख हशे एवुं जणायछे. हवे ए खरुं के हजारो लोक वाहाणमां बेशीने फरेछे अने मस्कत वगेरे ठेकाणे पण वेपार करेछे पोरबंदरना तथा कछमांडवीना वाणीया आफ्रीका खंडमां घणा छे; मारीच बेटमां हिंदु घणाछे तेज प्रमाणे काबुल, कंदहारमां, अने इरानमां पण घणा हिंदुओ वसेछे तेथी सदरहु नियम कोइ पाळतुं नथी ए खरुं छे तोपण केटलेक प्रसंगे स्वार्थी ब्राह्मण कोइने छळ करवानो धारे तो सदरहु वचन तेमने टेको आपेछे, अने घणाखरा लोक अज्ञानीछे तेथी खरु शुं अने खोटु शुं एनो विचार थतो नथी, लोकोनो गाडरीयो प्रवाहछे. माटे महीपतराम रूपराम जेवा विलायत जइ आव्या ते काम मोटु धैर्यनुं अने साहसनुं कर्युं अने एवुं काम करनारा घणाज थोडा हशे ते बाबत तेमनी तारीफ करवानी तो बाजुपर रही अने आज चौद वरस सुधी न्यातना लोक लढ्याज करेछे अने सदरहु वचन काढीने एकबीजाने टेको आपेछे, पण ए विशे कोइ विचार के विवेक करता नथी आवा लोक ज्ञानशून्य थया छे.

२. बीजो नियम विधवाना केश काढवा विशे छे ते पण केटलाएक लोक मानता नथी. उत्तरहिंदुस्तान, गुजरात, द्रविड देशमां अने दक्षणमां पण मानता नथी.

३. त्रीजो नियमथी स्त्रीयोने शूद्र बराबर ठराव्या तेथी ऊपनयन गयुं ने बधाय स्त्रीनुं विवाह करवो एम थयुं तेथी बाळलग्न उत्पन्न

थयुं अने लोक अल्पायू अने निर्बळ थया तेथी आखा देशनुं सत्यानाश गयुं जेने कन्या होय ते फीकरमां पडेछे अने वर सोधवा लागेछे पछी बीजवर मळे के केवळ नानुं बाळक मळे के वृद्ध मळे तो तेनो विचार न करतां परणावेछे.

४. चोथो नियम बांध्यो के, जे रांडे तेने फरी परणाववी नहीं, एवुं ठराव्याथी पाप बहु वध्युं अने बाळहत्या अने गर्भपात अपरमित थयां छे, शास्त्रमां ए विशे अनेक मत छे ते बधाय स्मृत्यर्थ सारमां एकठा कर्या छे ते नीचे प्रमाणेः—

मृतेन्यस्मैप्रदातव्यामृतेसत्पपदात्पुरा ॥
पुरापुरूषसंयोगान्मृतेदेयेतिकेचन ॥
ऋतावदृष्टेकन्यैवपुनर्देयेतिकेचन ॥
आगर्भधारणात्कन्यापुनर्देयेतिचापरे ॥

आवा एनेक मत थयाथी निश्चय शो ते ठराववाने मुश्केल पडेछे प्राचीनकाळमां आठ प्रकारना विवाह हता तेनां नामः-

१ ब्राह्म २ दैव ३ आर्ष ४ प्राजापत्य ५ आसुर ६ गांधर्व ७ राक्षस ८ पैशाच ॥

अने तेर प्रकारना पुत्र हता तेनां नाम.

१ औरस २ पुत्रिकासुत ३ क्षेत्रज ४ गुढज ५ कानिन ६ पौनर्भव ७ दत्तक ८ क्रीत ९ कृत्रिम १० स्वयंदत ११ सहोढ १२ सोपविद्ध १३ द्वामुष्यायन

आमांथी बे राख्या छे ने बीजा बधा काढी नाख्या छे.

वेदमां घणे ठेकाणे पुनर्विवाहनी आज्ञा छे अने भारथमां दमयंतिनुं आख्यान प्रसीद्ध छे तेज प्रमाणे—

पद्मपुराणमां अध्या ८४मां दिव्या देवीनी कथाछे ते हेठे लखीछे

उज्वलउवाच॥ प्लक्षद्वीपेमाहाराजआसीत्पुण्यमतिःसदा॥
दिवोदासेतिविख्यातःसत्यधर्मपराणः॥१॥तस्यापत्यंसमुत्पं
नंनारीणांमुत्तमंतदा ॥ दिव्यादेवीतिविख्यातारूपेणाप्रतिमा
भुवी ॥२॥ पित्राविलोकितासातुरूपलावण्यसंयुता ॥कस्मै
दयामयाकंन्यासुवरायमहात्मने ॥३॥ इतिचिंतापरोभूत्वा
समालोच्यनृपोत्तमः॥रूपदेशस्यराजानंसमाहुयनृपोत्तमं॥४॥
कन्याददौमाहात्मासौचित्रसेनायधीमते ॥ तस्याविवाहका
लस्यसंप्राप्तेसमयेनृप ॥५॥ मृतौसौचित्रसेनस्तुकालधर्मेण
वैकील॥दिवोदासस्तुधर्मात्माचिंतयामासभूपतिः॥६॥ब्राह्म
णान्ससमाहुयपपृछनृपनंदनः॥ अस्याविवाहकालेतुचित्र
सेनोदिवंगतः॥७॥ अस्यास्तुकीदृशंकर्मभविष्यंतब्रुवंतु
मे ॥ब्राह्मणाउचुः॥ विवाहोजायतेराजन्कंन्यायास्तेवि
धानतः॥८॥पतिर्मृत्युप्रयात्यस्यानोचेत्संगकरोतिच ॥
महाव्याध्यभिभूतश्चत्यागंकृत्वाप्रयातिच॥९॥ प्रव्राजितो
भवत् राजन्धर्मशास्त्रेषुदृश्यते ॥ नस्याद्रजस्वलायावद
न्येष्वपिविधीयते ॥१०॥ विवाहेतुविधानेनपिताकुर्यान्नसं

शयः ।। एवंराजासमादिष्टोधर्मशास्त्रेषुकोविदैः ।।११।।
विवाहार्थंसमायातइंद्रप्रस्थेद्वीजोत्तमैः।। पुनर्दत्तातदातेन
रूपसेनायभूभुजे ।।१२।। यदायदामहाभागोदिव्यादेव्या
श्वभूमिपः।। चक्रेविवाहंतद्भर्त्ताम्रियतेलग्नकालतः।।१३।।
एकविंशतिभर्त्तारः कालेकालेमृतास्तदा ॥ तस्यास्तुरू
पसंश्रुत्यराजानोमृत्युनोदिताः।।१४।।संग्रामंचक्रिरेमुढाः
स्तेमृताःसमरंगणे ।।

अर्थ—दिवोदास करीने एक राजा हतो तेनी कन्या दिव्या देवी करीने हती तेने चित्रसेनना राज पुत्र साथे परणावी एटलामा वर मरी गयो त्यारे ब्राह्मणोनी सभा करी राजाए पुछ्युं के हवे शी रीते करवुं, त्यारे ब्राह्मण बोल्या के, कन्या वरने घेर वळावी नहीं त्यां सुधी कांई पण विघ्न आवेतो पुनर्विवाह थाय, ते सांभळीने राजाए पोतानी कन्याने चित्रसेन कुंवरने फरी आपी, पण ते वर तरतज मरी गयो, ए प्रमाणे ए कन्यानां एकवीस वार लग्न थयां.

कन्याने ग्रह अनिष्ट होयतो लग्न पहेलां कुंभ विवाह करवो एवुं लख्युं छे ते कुंभ फोडेथी एक धणी मरी गयो एम समजायछे ए प्रमाणे लोक करेछेपण कुंभ विवाह पछी जे लग्न थाय छे ते पुनर्विवाह केम न कहेवाय.

९ प्राचीन काळमा स्त्रीयोने नृत्य गायन शीखावता ते चाल हाल बंध पड्योछे अर्जुन विराट राजाने घेर ब्रहंनटा थईने रह्यो हतो ते जनानखानामां गायन शीखववा वास्ते रह्यो हतो, एज प्रमाणे बार व-

रस सुधी ब्रह्मचर्य पाळीने विद्याभ्यास करवानी चाल हती ते पण बंध थईछे. जनोई देता पेहेलां विवाह करी मुकेछे, अने ब्रह्मचर्य बीलकुल पाळताज नथी, कन्यानी जनोई मुदल काढी नांखी, अने भायडानी राखीछे ते अमसती नामनी राखीछे, पण विद्याभ्यास करवानो जे मुळ हेतु, तेनुं कशुए ठेकाणुं नथी. मनुस्मृतिमां लख्युं छेके त्रीस वरसनी उमरनो पुरूष होय त्यारे बार वर्षनी कन्या परणाववी.

त्रिंशद्वर्षोवहेत्कन्यांहृद्यांद्वादशवार्षिकीं ॥

आ शिवाय त्रीवर्णमां कन्या अने अन्न व्यवहार हतो, ते हाल बंध पड्यो छे, एटलुज नहीं पण ब्राह्मण ब्राह्मणमांज वांधा पड्या छे, ते एक बीजानुं जमता नथी ने कन्या आपता नथी, तेथी घणी अडचणो पडीछे, कोई नातमां कन्यांनी छतछे ने कोई नातमां अछतछे, अने ए वांधाने लीधे गायकवाड जेवो मोटो राजा होय तेने पण भीखारी कन्या सोधवी पडेछे, कारण के सिंधीया के होलकरनी कन्या एना कामनी नथी, तेथी भीखारीनी कन्या ज्यारे परणे त्यारे ते कन्यानो मान पण रहेतो नथी अने धणी वगर परणेली रांडो राखे तो तेमना टोळामां राणीने पण हींडवुं पडे, अने दासी करतां दासी थईने रेहेवूं पडे. अने मोटाना घरमां नाहानो आदमी आवी कन्यानी हीमायतथी मोटुं पद पामेछे, तेथी बहु बगाड थाय छे, तेथी सुभाषितकार लखे छेके,

शालकोग्रहनाशाय वित्तनाशायकुंजरः ॥

बरोबरीनी पदवीना ग्रहस्थोनी सगाई थाय तो मोटो उपयोग थाय छे. हाल हिंदुस्ताननी माहाराणीनो दिकरो रूसना बादशाहनी

कन्या परण्यो अने आवी प्रकारनी कन्यानुं अपमान थाय नहीं, अने कदाचित नातनी अडचणने लीधे ए राणीनो दीकरो कोइ सोजरनी कन्या परणत तो ते कन्यानुं मान रहेत नहीं अने तेनो बापभाइ घरमां पेशीने कन्याना हीमायतथी, राज्यनो बीगाड करत, अने बराबरीनी कन्या परण्याथी बंने राज्य मजबुत थइ गयां माटे ए विचारपण ध्यानमां राखवा लायक छे.

ब्राह्मणोनी उपजीविका कर्म उपर छे कोइ माणस. शांतिक, पौष्टिक, इष्टापूर्त, यजन, याजन, कर्म करे तो ब्राह्मणोने पैसा मळे, जे वखत बौधधर्म चाल्यो, ते वखत ब्राह्मणो सामा थया तेनुं कारण एज के, तेमनी उपजीविका बंध पडी, तेथी ब्राह्मणोने बहु क्रोध आव्यो, गमे ते मार्ग चाले अने तेमनी उपजीविकाने कांइ धक्को न लागतो होय तो ते सामा थता नथी प्राचिनकाळमां ज्यारे ज्ञानमार्ग निकळ्यो, त्यारे लोक सन्याशी थवा लाग्या, त्यारे एवी गोठवण हती के, बधाए कर्म करीने वृद्ध थाय त्यारे वानप्रस्थ अने संन्यास गृहण करता, तेथी ज्ञानमार्गवाळानो अने ब्राह्मणोनो झाझो वांधो पड्यो नहीं, पछी भक्ति, मार्गवाळाये एवुं ठराव्युं के भजन शिवाय बीजुं कांई कर्म करवानी जरुर नथी, अने कर्मकांन्डीनो मोक्ष स्वर्गमां हतो ते ज्ञानमार्गीए एवुं ठराव्युं के, स्वर्ग तो थोडा दिवस चालवानुं छे, माटे एवुं नश्वरफळ विशे प्रयत्न करवो नहीं, ज्ञानमार्गीवाळानो मोक्षने सायुज्य मुक्ति कहे छे एटले आत्मा अने ब्रह्म एक थई जाय अने ज्योतिमा ज्योती मळे त्यारे जुदुपणु कांईज रहे नहीं अने पाणीमां मींठुं पडे अने एक थई जाय छे ते प्रमाणे ज्ञानमार्गीवाळाए मुक्ती मानी छे, पछी भक्तिमार्गीवाळाए एवुं ठराव्युं के स्वर्ग अने सायुज्यता, ए बे

कामना नथी, अने मोक्ष तेनुं नाम छे के ज्यां भगवाननुं सांनिध्य अने सेवानुं लाभ मळे अने जे ठेकाणे गयाथी फरी मृत्यु लोकमां, न अवतरीए तेनुं नाम मोक्ष,

तुकाराम कहेछे.

हेचिदानदेगादेवा॥तुझाविसरनव्हावा॥नलगेमुक्तिधनसंपदा॥संतसंगदेईसदा॥गुणगायीनआवडि॥हेचिमाझीसवेजोडि॥तुकाह्मणेगर्भवासी॥सुखेघालावेआह्मांसी ॥१॥

यद्गत्वाननिवर्वंतेतद्धामपरमंमम ॥ गीता॥ अ०१५

एवुं स्थान प्राप्त थवाने वास्ते भक्ति शिवाय बीजुं साधन नथी ए लोक तो कर्मने निर्दयपणुं गणे छे अने ज्ञानने लुखु गणे छे§ भक्त लोक कर्मने के वर्णने गणता नथी जे मोटा मोटा भक्त थई गया तेमां अनेक जातीना लोक हता विदुरजी ए शुद्र हतो, अजामेळ ए पापी ब्राह्मण हतो, नाभाजी ढेड हतो, तेने भक्तमाळ ग्रंथ रच्यो छे, रोहीदास चामडीओ हतो, चोखामेळ ए भंगी हतो, नामदेव दरजी हतो, कबीर ताई हतो, एकनाथ अने नरसिंह मेहेतो, ए ब्राह्मण हता तुकाराम वाणीयो हतो आ बधाए कर्म मुकीने भक्त थया हता एमांना केटलाएक परोपकारार्थ ग्रंथ रच्या छे त्यारे ब्राह्मण केहेवा लाग्या के आवा प्राकृत ग्रंथ करशे त्यारे अमारी वृति डुबी जशे, पछी अमने कोण पुछशे एम समजीने भक्तो साथे ब्राह्मणनुं वैर चालतुं ने चालतुं आवे छे, तुकारामनी जोडे रामेश्वरभट बहु लड्यो अने तुकारामना करेला पुस्तक भीमा नदीमा नाखी दीधा, तेज प्र-

§ तुकाराम कहेछे.—आह्मानकोब्रह्मज्ञान ॥ आह्मिभाविकहोजन.

माणे गीताना टीकाकार ज्ञानेश्वरना जोडे ब्राह्मणोये बहु वैर बांध्युं, अने एकनाथने पैठणना ब्राह्मणोए घणी वार ज्ञात बाहार मुक्यो ए बधी कथा भक्तिवीजय ग्रंथमां लखी छे तेथी एम जणाय छे के, भक्तनुं अने ब्राह्मणनुं मोटुं वैर छे तेनुं कारण एटलुंज के कर्म उपर भक्त श्रद्धा राखता नथी. हालमां ब्राह्मणनी वृत्ति बहु टुटी गई छे तोपण केटलाक लोक एमने हजी माने छे, ब्राह्मण लोक जमवाना बहु लोभीया छे, कांई पण जमवानुं होय तो २० गाउथी दोडतो आवे, ने कोईना घरमां माणस मरी गयुं होय तो तेनुं बारमुं तो पहेला दीवसथी गणतो रहे, के फलाणा दीवसे बारमुं आवे छे, बीजुं कांई मोटुं काम होय तेनो विचार करवो होय ते वीशे बोलाव्यो होय तो कोई पण ना आवे, दक्षणा के कांई जमवानुं होय तो वगर तेडे पण जाय, ब्राह्मण शीवायना जे बीजा लोको छे तेमने पण आ ब्राह्मणनो गुण लाग्यो छे तेपण कांई मोटुं सार्वजनीक काम होय तो बोलावतां पण ना आवे अने जमवानुं होय के लग्नकार्यनो वरघोडो होय तो वाणीया कणबी पण जरूर आवे आवा प्रसंगे भेगा थवानुं ए पोतानो धर्म जाणे छे, बीजुं कांई काम होय तो ते भूली जाय ने ध्यानमां रह्युं नहीं अमारूं शुं काम छे एम कहीने जाय नही. कबीर साहेब कहे छे के.

ब्राह्मणभंगीरावळाचवथाकाहियेकाग ॥
कहेकबीरएचारोजणनोमुरदाउपरलाग ॥

ब्राह्मण लोकोए पोताने वास्ते मोटुं राज उभु कर्युछे ज्यांजाय त्यां एमनु सनमान,वगर पराक्रमे वगर गुणे थायछे, ज्यां सुधी यज्ञयाग चालता हतां, त्यां सुधी ए बाबत घणा मोटा ग्रंथ लख्या छे, केटला

एक कहेछेके अमे घनान्त वेद भण्या छीए कोई कहेछे के अमे सोमान्तश्रौत भण्या छीए एवु कर्मकान्डनो विस्तार कर्यो छे.—

ज्यारे कर्मकान्ड बेठुं त्यारे एमणे बीजी युक्ति सोधी कहाडी ते एवीके नदिओ अने गाम अने तळाव ईत्यादिक जे वेदमां नहि तेनो माहात्म लखवा लाग्यां अने ते कथा जेम जेम जुनी थई तेम तेम पक्व थईने फळ आपवा लागी ए प्रमाणे काशी, प्रयाग, गया, गोदा, रेवा, पुष्कर, जगन्नाथ श्री नाथ ईत्यादिकना हजारो माहात्म लख्यां अने ए टंकशाल हजी जारीछे पंढरी माहात्म पचास वर्ष उपर लखी गयुं छे, डाकोरनु माहात्म चार वरस ऊपर लखी गयुंछे पावकाचळ माहात्म एटले पावागढनी जात्रानु माहात्म श्रीस्थळ माहात्म एटले सीतपुरनु माहात्म थोडा वरस उपर लखी गयुंछे एज प्रमाणे ज्ञाती ज्ञातीना माहात्म लख्यांछे. जेवां के नागरखंड, औदिच्य प्रकाश, राइक पुराण, ईत्यादिक हजारो माहात्म प्रसिद्ध छे ए ग्रंथोमां लखनाराओए घणी धूर्तता करी छे.*

---

*जांहां तांहां कळि आव्यो छे अने लोकोनी श्रद्धा ब्राह्मणना लेख उपरथि उठी जशे माटे बद्धाय लोकोए गफलतमां रहेवुं नहि अने श्रद्धा छोडवी नहीं छोडशो तो नर्कमां जशो एवी वातो घणे ठेकाणे लखी छे. कळि बुद्धि बगाडेछे अने नर्कमां नाखे छे माटे हुशियारीथी रहेवुं. जे भाग्यवान हशे तेज ब्राह्मणना लेख उपर विश्वास राखशे पापी जीव हशे ते मात्र राखे नहीं एवि धमकावणी पाने पाने लखीछे.

नविश्वासंकरिष्यंति देवेषुब्राह्मणेषुच ॥

तेज प्रमाणे केटलाएक मास तिथि योगवार इत्यादिकनुं माहात्म लख्युं छे तेने व्रत पर्वणी कहे छे व्यतीपात सोमवार पुर्षोत्तममास कपिलाषष्टि महोदय विगेरे ते जेम जेम जुना थता जायछे तेम तेम वधारे मानवामां आवे छे करोडो रूपीआ खरचीने लोक काशी यात्रा करेछे पर्वणी अने व्रत उपर दान पुण्य करेछे, तेथी माहात्म लखनारनो प्रयत्न व्यर्थ गयो नथी एतो उघाडुं छे अमेरिकामां गुलाम उपर घणी कमाइ करता पण ते काळ गयो. पण आ बधायनी अवधी एवी जणाय छे के ज्यां सुधी लोक अज्ञानी छे त्यां सुधी एमने एम चालशे ए वात ब्राह्मणोना मनमां सारी रीते वेसेछे माटे जेटलो प्रकाश थाय अने विचार वधे ते वात तेमने सारी गमती नथी. पण हालना काळमां ए बाबतमां प्रतिकार थाय एवुं नथी.

ब्राह्मणोने शोको घणो थई छे, ब्राह्मण जमाडवाने ठेकाणे आखाडाना बावा अने मंदिरना साधु जमाडे छे ब्राह्मणोने ए वात सारी लागती नथी. ब्राह्मणोना मनमां आ वर्णसंकर साधु कांहांथी आव्या हमारी परंपरा प्राप्त मोटाई घणा ग्रंथमां वर्णन करेली ते जती रही. के शुं पण लोक कहेछे के ब्राह्मणमां तपतेज नथी. संसारी अने

कर्मभ्रष्टाभविष्यंति चतुर्वर्णाकलौयुगे ।।
राजानोधर्महीनाश्च पीडयिष्यंतितेप्रजाः ।।
अधर्मवल्लभोलोको धर्मद्वेषीचमत्सरी ।।
भविष्यंतिकलौविप्राआचारश्रुतिवर्जिताः ।।
द्यूतमद्यरतानित्यंसर्वव्यसनिनःसदा ।।

जैमिनीअश्वमेधेकालिधर्मप्रकरणे ।।

लोभीयाने जमाडवामां शुं पुण्य? ते करतां तीर्थवासी,त्यागी,तपोनीधी, बावा जमाडीये तो शुं खोटुं. एवा घणा बांधा पड्या छे. साधु जे थया छे ते ईश्वर अलौकिक कामो भक्तने वास्ते करे छे एवुं माने छे.

ज्ञानीनुं ब्रह्म निर्गुण छे ते काई ए करतुं नथी. पोत पोताना कर्म प्रमाणे फळ थायछे. ज्ञाननुं फळ सायुज्यता छे एम समजीने ज्ञान मार्गवाळा कोइनी प्रार्थना के भक्ति करता नथी भक्तिवाळा परमेश्वरने कर्ता अने सगुण समजे छे अने परमेश्वर भक्तनुं हित करे छे एम समजे छे. तुकाराम नामनो प्रख्यात साधु दक्षणमां थयो तेना वचनो दक्षणी भाषामां छे ते निचे लख्या छे.

पडताजडभारी ॥ दासेआठवावाहरि ॥
मगतोहोउनेदिशीण ॥ आडघालिसुदर्शन ॥
कोठेनदिसेपाहाता ॥ उडिघालिअवचिता ॥
हरिच्यादासाचिंता ॥ हेतोअघटितवार्ता ॥
आह्माघालिपाठीकडे ॥पुढेकळिकाळाभिडे ॥
हाकेसरशिउडि ॥ घालोनीयस्तंभफोडि ॥
ऐसाकृपावंतकोण ॥ एकभगवंतावाचून ॥
तुकाह्मणेकृपानिधी ॥ आह्माउतरीनावेमधी ॥१॥
वेदाचातोअर्थआह्माशिचठावा ॥ येरानीवाहावा भारमाथा ॥१॥
संध्याकर्मध्यान ॥ जपतपअनुष्टान ॥

अवघेघडेनाम ॥ उच्चारिता ॥१॥

जैसाबोलेतैसाचाले ॥ त्याचिवंदावीपाउले ॥१॥

मायबापकेवळकाशि ॥ तेणेनजावेतिर्थाशी ॥१॥

आलितिर्थपर्वणि ॥ न्हाल्याभठाझालेधणि ॥१॥

अवघ्यापापेघडलायेक ॥ उपासकशक्तिचा ॥१।

भावेगावेगीत ॥ शुद्धकरूनियाचित्त ॥

नामघेतावाटचालि ॥ यज्ञपाउलापाउलि ॥१॥

सांडोनियारामराम॥ब्राह्मणह्मणातिदोमदोम॥१॥

दयातिचेनाव ॥भूताचेपालण ॥आणिनिर्दळण ॥

कंटकाचे ॥१॥

धन्यतेचिप्राणी ॥ क्षमादयाजाचेआंगी ॥

यमधर्मसांगेदूता ॥ तुह्मानाहीतेथेसत्ता ॥

गदाचक्रघेउनीहरि ॥ उभाअसत्याचेद्वारी ॥

जेथेदयाक्षमाशांति ॥ तेथदेवाचिवसति ॥

तुकाह्मणेत्रिविधताप ॥ मगजातिंआपोआप ॥१॥

ज्ञानेश्वरनीवाणि.

योगयागविधी ॥ येणेनोहोसिद्धि ॥ वायाचिउपाधी ॥

दंभधर्म ॥ वेदशास्त्रप्रमाण ॥ श्रुतिच्चेवचन ॥ एकनारा

यण ॥ सारजपा ॥ जपतपकर्म ॥ क्रियानेमधर्म ॥ वाउगाचिश्रम ॥ व्यर्थजाय ॥ हरीपाठ

एवा भक्तोना वाक्यो बहु छे ते लखता पार आवे नहीं. हासिल एटलु चके प्राचिनकाळनुं माहात्म उपर हालना ब्राह्मणोए अभिमान राखवो नहीं प्राचिन अभिमान उपर लक्ष राखीने बद्धा क्षत्रि राजा नाश पाम्या अने हजि खराब थायछे तेज प्रमाणे प्राचीन मोटापणुं बतावीने ब्राह्मण मोटा थवा चाहे छे पण ए कशा कामनुं नथी. प्राचीनकाळमां अज्ञान बहु हतुं ते हाल गयुं माटे अज्ञानना आधारे मोटापणुं मेळवेलुं ते प्रकाशमां रहेवानुं नथी. आजना काळप्रमाणे जे सुधारो अवश्य छे ते चलावामां ब्राह्मण लोके मदद करवी. उत्तमगुण अने विद्या संपादन करवाने वास्ते लोकोने सदुपदेश करवो, देशमां संपनुं रक्षण करवुं. ए प्रकारे चालशे तोज एमनु महत्व कायम रेहेशे. इंग्रेज लोक राज्य रीतिमां अने कायदा विगेरे करवामां महाधूर्त कहेवाय छे कारण के हरेक ठेकाणे बार आना पोतानी नातनो स्वार्थ अने चार आणा देशि लोकोनो स्वार्थ राखे छे एम केहेवाय छे पण ब्राह्मणोना कायदा तपासिये तो पोताना स्वार्थ पंदर आना अने बिजानो स्वार्थ एक आनो राख्यो छे एम स्पष्ट जणाय छे. ज्यां त्यां कथामां ब्राह्मणोना श्रापथि हजारो राजा बळि गया मरी गया परमेश्वरने पण ब्राह्मणोनि बिहिक अने परमेश्वर विष्णुने ब्राह्मणोए लात मारी तो पण परमेश्वर एमने पगे लाग्या. एवि कथा प्रसिद्ध करिने पोतानुं महात्म अपरीमित वधार्युं पण ते वात थई गइ. आज तेवो काळ नथी ए नक्की समजवुं जोईए.

ब्राह्मणोने ग्रहण गणवानि रीत मालुम पडि ते उपरथी ते पर्व-

काळ ठरावीने लाखो रूपिया ते उपर हजारो वरसथी कमावे छे. कांइ पण युक्ति भूल्या नथी. कोइनो बाप मरी जाय तो, तेनो छोकरो सज्जा लोटो विगरे ब्राह्मणने आपे तो स्वर्गमां मरनारने तेटलुं मळशे एवुं ठराव्युं तेथी मरनारने पछवाडे हजारो दान करेछे. परमेश्वरना आडतिया ब्राह्मण थयाछे अहिंया आप्युं के स्वर्गमां भलामण पोहोचे छे अने तरत जमाखर्च पडेछे. आ वातनु सार एटलुंज के जे वखत एक बाजु बहु धूर्त ज्ञानी अने जबरदस्त होयछे अने बिजी बाजु अशक्त अज्ञान अने कमजोर होयछे ते वखत पोतानो स्वार्थ थाय तेटलो करी लेवाने कोई भूलतो नथी ए साधारण अने स्वभाविक वात छे, पोतानो स्वार्थ भूलनारो एवो परमेश्वर भक्त कोकज हशे. घणा एवा नथी तोपण हमे एवा छिये एवुं पाखंड करनारा घणा होयछे.

भागवतमां ऋषभदेवनि कथा छे ते उपरथी एम जणायछे के अहिंसा विषे उपदेश करवामां प्रथम वैष्णव हता. नारदजी वैष्णवमां गणायछे. ए पण यज्ञ न करवानो उपदेश करता. पछि इश्वरने माननार अने नास्तिक ए बे पंथ थया पछि जे ग्रंथ थया ते पोत पोताना जुदा थया. ए मानवाने आधार छे जैमिनि अश्वमेध ए ग्रंथ कोई वैष्णवनो लखेलो छे तेमां लखे छे के अश्वने भिमसेने मार्यो ते वखत कपूरनो ढगलो थयो अने लहु निकळ्युं नहीं पण दूधनी धारा चालि पछि व्यासजी कपूर होम करवा लाग्या ते वखत इंद्र देव आविने उभो रह्यो. तेथी एम मालूम पडेछे के ए क्रूर विधी छपावानी मतलबथी लख्युं हशे. वेद अने सूत्रमां एवो प्रयत्न करेलो नथी. तेथी सूत्र सुधि हिंसा बाबत तकरार नहोति एम जणाय छे. ऋषभदेव, बौध विष्णुना अवतार गणेला छे. वैष्णव धर्मनुं मूळ दया धर्ममां छे

एम लागेछे. हिंसानी तकरार उभि रह्या पछिना ग्रंथनुं रूपज जुदु छे.

हिंदुस्तानना पंडित विद्वज्जन केहेवाय छे पण एमनि विद्या लोकोना काममां आवती नथी, उद्यम, धंधा वधारवामां ए विद्या मदद करती नथी उलटी धंधा भागवामां मदद करेछे माटे विद्वद्जन ए पद ब्राह्मणोने घटे छे के नहि ए मोटो विचार छे. खरी उपयोगनी विद्या कहिये तो शिल्प, नाविक शिल्प, सैन्यविभुकल्प, भूगोळ इत्यादिकनो ठेकाणोज नथी. राजा लोक विद्वज्जनोनो संग्रह बहु करेछे पण जेम जेम आ संग्रह वधेछे तेम ते राजानो सत्यानास जाय छे एनुं शुं कारण हशे?

मूळ दया धर्म प्रतिपादन करनारा वैष्णव हता तेमां जे नास्तिक थया तेमणे जगतनुं कारण कर्म स्विकार्युं. तेमनुं केहवुं एम छे.

ब्रह्मायेनकुलालवन्नियमितोब्रह्मांडभांडोदरे ॥ विष्णुर्येन दशावतारगहनेक्षिप्तोमहासंकटे ॥ रूद्रोयेनकपालपाणि पुटकेभिक्षाटणंकारिता ॥ सूर्योभ्राम्यतिनित्यमेवगगनं तस्मैनमःकर्मणे ॥१॥

प्राचीन काळमां पांच कर्म चालतां हतां ते कळीमां न करवा विशे नीचे लख्या प्रमाणे वचन पराशर ऋषिनुं छे

अग्निहोत्रंगवालंभं संन्यासंपलपैतृकं ॥
देवराच्चसुतोत्पत्तिकलौपंचविवर्जयेत् ॥

अर्थ.

आग्निहोत्र, गायनी हिंसा, संन्यास, ने श्राधमां मांसनुं भक्षण, अने दीयर साथे परणावुं.

पराशर ऋषि वैष्णव हता ए ऋषिए जे स्मृति करी छे तेमां हिंसानो निषेध बहु कर्यो छे विष्णुपुराण ए ऋषिनुं करेलुं छे अने भागवत पंथमां ए ऋषि मुख्य गणाय छे.

प्रल्हादनारदपराशरपुंडरीकव्यासांबरीषशुकशौनकभीष्मदाल्भ्यां ॥रुक्मांगदार्जुनवसिष्ठविभीषणादींपुण्यानिमांपरमभागवतंस्मरामि॥

अग्निहोत्र बंध कर्युं तेनुं कारण हिंसा बंध करवानुं हशे एम जणाय छे कारण अग्निहोत्र उत्पन्न कर्या पछी पशुयाग प्राप्त थायछे माटे हिंसा बंध करवाना मतलबथी हिंसानुं मूळ काढी नाख्युं एम जणाय छे केटलाएक लोक कहे छे के मंत्र संरक्षण करवाने वास्ते यज्ञ करवो जोईए अने जे वैष्णव लोक पिष्ट पशु करे छे ते पण एम कहे छे के हिंसा न करवी पण यज्ञ करवो कारण यज्ञ कर्याथी मंत्रनुं रक्षण थायछे. आवी फीकर शा वास्ते राखवी पडे छे ते समजतुं नथी, कारण युगना आरंभे ब्रह्मदेव ऋषियोने मंत्र आपे छे एवुं पण लख्युं छे.

युगांतेतर्हितान्वेदान्सेतिहासान्महर्षयः ॥
लेभिरेतपसापूर्वमनुज्ञातास्वयंभुवः ॥

एम छतां पण मंत्र रक्षणने वास्ते अध्यायन पारायण, यज्ञ इत्यादिक कर्म चाले छे.*

---

*जुनागढना दिवान गोकुळजी जालाए सांख्यायनी ऋग्वेदि ब्राह्मण छे ते हाल अग्निहोत्रि थया छे. अमदावादनो सदरअमीन

गोपाळराव मैराळ ए ग्रहस्थ वडोदरामां प्रसीद्ध हता, तेमनो भत्रीजो नारायणराव पांडुरंग एमने नर्मदाने कांठे वेळु करीने गाम छे, ते गाममां सात यज्ञ कर्या, अने तेमां लाखो रुपीया खरच कर्या एवी कीर्ती छे अने ए प्रमाणे घणा लोक आज करे छे. ते विशे गुजरात शिवाय बीजा देशमां वांधो लेता नथी क्षत्री राजा नथी माटे अश्वमेध करता नथी एम कहेवायछे. जे ब्राह्मणना कुळमा त्रण पुरुष सुधी यज्ञ न थयो होय तेने दुर्ब्राह्मण कहेछे, अने ते बाबत प्रायश्चित करवुं पडे छे.

गवालंभ एटले गायनी हिंसा ए वेदमां घणी लखी छे भागवतमां आलंभन शब्दनो अर्थ देवार्पण समजवो हिंसानो न समजवो एवु लख्युं छे मनु अने याज्ञवल्क्य स्मृति सुधी गवालंभ कायम राख्युं छे, त्यार पछी पुराणमां अने नाटक ग्रंथमां पण ए विधी लखेलो छे तेथी ए निःषेध कर्याने बहु वर्ष थयां नथी एम जणाय छे, तैतिर्य ब्राह्मणमां अने शतपथ ब्राह्मणमां नीचे लखेलो मंत्र मळे छे.

गव्यान्पशूनुत्तमेहन्नालभते।। आग्रंथनु पृष्ट १६-३०

ए वेदाज्ञाथी मधुपर्क विधी उत्पन्न थयो राजा घेर आवे के वर घेर आवे तो, उत्तमज दहाडो कहेवाय, तेवा प्रसंगे गो पशु विधान लख्युं छे, ते मनु अने याज्ञवल्क्य सुधी कायम रह्युं, पछी तेनो निषेध पड्यो ते कळीना कारणथी पड्यो कळी एटले बौध धर्मनी तकरार

भाउ मैराळे पण अग्निहोत्र लिधू छे. कुलाबाना बाबाजी दिवानजी ना दिकरा धुंडी राजविनायक उर्फ भाउ साहेब बिबलकर ए वर्सोवरस एक बे यज्ञ करीने घणा रुपैया खर्चे छे ए साप्रतकाळनो प्राचीन वार्हिछे, एने नारद कोण मळशे ते कोण जाणे ?

तोपण उत्सर्ग विधी चाले छे, ब्राह्मण लोको तेनी सरत भुली जता नथी अने विधी न थाय तो न थाय, पण तेनी सरत राखवामां अने ते विधीना पुस्तको भणवामां पुण्य जाणे छे.

मधुपर्क करवानी रीति ब्राह्मणमां हती एमज नहि पण अन्य देशमां प्राचिनकाळमां ए प्रमाणेज हतुं एवुं बायबलनो पेहेलो ग्रंथ "जीनीसीस" एटले ऊत्पत्ती प्रकरण तेना अध्याय अढारमांनो सातमो श्लोक एमां इब्राहिम पेगंबरे एज प्रमाणे अर्ध्य, मधुपर्क कर्यानो दाखलो लख्योछे.

आश्वलायन सूत्रमा अने बीजा सूत्रमां मधुपर्कनी विधी वांचीए तो गवालंभ मात्र लख्युं छे, बीजो कांइपण विधी जणातो नथी.

३ कळीमां संन्यास लेवो नहीं एवुं लख्युंछे तेनुं कारण एवुं जणायछे के आ काळमां लोको संन्यास लेइने तोफान अने पाखंड करशे तेज प्रमाणे थयुं छे घणाक संन्यासी वाममार्गी होय छे अने घणां एक ढोंगी होयछे त्यागीनो धर्म बीलकुल साचवता नथी अने उळटा लोभी थायछे, अने लोकोने बहु पीडा करे छे शंकराचार्य स्वामीए ब्राह्मणने संन्यासी कर्या एटलुंज नहीं, पण शुद्र सुधी चार वर्णमां संन्यासी कर्या ते गोसावी कहेवाय छे तेज प्रमाणे वैष्णव लोकोमां वैरागी त्यागी कहेवाय छे. अने भजन शिवाय बीजुं कांइ कर्म करता नथी एमनी कर्मनी पटल पद्धती जुदी छे कोइ मरे त्यारे भंडारो करे छे बीजुं कांइ कर्म करता नथी एमनी गायत्री पण जुदी छे अने केटलाक घरबारी कहेवाय छे ते घर धंधा पण मांडे छे.

४ "पलपैत्रीक" एटले श्राधमां पितृ निमित्य मांस खावानुं. ए विशे पण एम जणाय छे के प्राचीन काळमां बधाय लोक हिंसक हता

अने मृगया करीने जीवता जे जनावरो मारीने लावता तेने देवने अर्थे होमीने बाकी खाता एवी वैदिक काळमां चाल हती एम जणाय छे. त्यारपछी स्मृतिना वखतमां ए चालनो अपकर्ष थयो ते एटले सुधी के जे विधी नियमीत थया हता, ते सीवाय कोइए मांस खावुं नही स्मृतिओमां एवो निबंध करेलो जणाय छे. पछी पुराण थया तेमां पण विधीमां मांस खावानी छुट छे, माटे वैष्णव लोक आवा पुराणने तामसी गणे, छे अने जे पुराणमां दया धर्म प्रतिपादन कर्यो छे तेने सात्विक पुराण कहे छे. वैष्णव लोको सात्विक धर्मने भागवत धर्म पण कहे छे. श्रीमदभागवतमां सात्विक धर्मनुं प्रातिपादन वधारे कर्युं छे माटे वैष्णव लोकोने ए पुराण बहु पसंद पड्युं छे, कारण हालनी रीतभातथी ते बहु मळतुं आवे छे श्राद्ध विशे निर्णयसिंधुमां वचन लख्युं छे ते नीचे प्रमाणे,

यत्रमातुलजोद्वाहीयत्रवैवृषलीपतिः ॥
श्राद्धंनगछेतद्विप्राकृतंयत्रानिरामिषं ॥

अर्थ.

मामानी कन्या परणी होय ते के शुद्रनी कन्या परणी होय एवा माणसने घेर श्राद्ध खावा जवुं नहीं अने जे श्राद्धमां मांस नहीं ते श्राद्धमां कोइ ब्राह्मणे जमवा जवुं नहीं श्राद्ध विशे भागवतमा लख्युं छे के.

नदद्यादामिषंश्राधंनचाद्याध्धर्मतत्ववित् ॥
मुन्यन्नेस्यापराप्रीतीयथानपशुहिंसया ॥

भागवतस्कं० ७

अर्थ.

श्राद्धमां मांस खवराववुं नहीं कोदरा बावटाथी श्राद्ध करवुं सारुं पण पशु हिंसा करीने श्राद्ध करवा वास्ते कोइ धर्म जाणनारो कहेतो नथी माटे अन्नथी पितृनी तृप्ति थाय छे तेवी पशु हिंसाथी थती नथी.

पण श्राद्धमां मांस आपवा विशे बहु वचनो छे तेनुं कारण जे वखत मांसनो नित्य अहार करता ते वखत श्राद्धमां पण खाता रामचंद्रजीए रामायणमां कह्युं छे के

वयंयदन्नापितरस्तदंन्ना:

अध्यात्मरामायण

अर्थ.

जे आपणे अन्न खाइए ते पितृने आपीए मूळमां मरण क्रियानो मतलब एटलो छे के जे माणस मरी गयो तेने खावाने कोण आपशे एवी कल्पनाथी एनां सगा वहालां तेने पाणी अने पिंड आपता हता, अने एम जाणता हता के तेथी तेनी भूख, तरश जशे, अने मरनार सुखी थशे, ते उपर ब्राह्मणोए मोटुं विधान रच्युं अने तेनो त्रयोदशा मासिक, सांवत्सरी इत्यादी श्राद्ध कल्पना करी तेमां अनेक दान दाखल कर्यां, केटलाएक जंगली प्रदेशमां कोइ मरी जाय छे, त्यारे तेना वारस तेना छेडामां जार बांधे छे, ने तेमां पैसो घाले छे, अने पछी दाटे छे, अने त्यांहां आगळ एक माटलुं पाणीनुं मुके छे. जंगली अज्ञानी लोक एवी रीते उत्तर कार्य करे छे, ते प्रमाणे हिंदुलोकोनी असलमां चाल हती तेनो सुधारो करीने अंतेष्टि कर्म लख्युं, मुळ आश्वलायन सूत्रमां जोता ए विधी टुंको छे, अने सूतक मुद्दल नथी.

हालमां देवरोत्पत्तिनो एटले क्षेत्रज पत्र नीयोग विधीथी उत्पन्न

करवानो निषेध कर्यो छे ते निषेध गोत्रनुं निषेध थयुं ते वखत आ निषेध थएलो जणाय छे. अने विधवाए ब्रह्मचारीने पेठे रहेवुं ए ठराव तेना अंते करवो पड्यो. ऋग्वेद संहितामां सातमा अष्टकमां आठमा अध्यायमां अढारमां वर्गमां देवरोत्पत्तिनो लेख छे ते मंत्र नीचे लख्यो छे.

कोवाशयुत्राविधवेवदेवरंमर्यंनयोषाकृणुतेसधस्थआ ।।

निरुक्त.

देवरःकस्मा । द्वितियोवरउच्ते ॥

ऐतरेय ब्राह्मणमां लख्युं छे के.

नैकस्याबहवःसहपतयः

भाष्य

सहेतियुगपद्बहुपतित्वनिषेधोविहितोनतुसमयभेदेन ॥

अर्थ.

एक स्त्रीए एककाळे एकथी वधारे धणी करवा नहीं पण एक मरी गयो होय तो बीजो करवाने हरकत नथी.

नीयोग एटले जे स्त्रीने संतान थतुं न होय तेने बीजा पुरुषने घेर मोकलवी अने तांहां संतति थया पछी धणीने घेर आवे ते पुत्रनुं नाम "क्षेत्रज" ए प्रमाणे पांडव क्षेत्रज पुत्र हता एवुं भारथमां लख्युं छे मनु स्मृतिमां द्वादश पुत्रनां नाम बताव्यां छे ते

औरसःक्षेत्रजःश्चैवदत्तःकृत्रिमएवच ॥

गुढोत्पंनापविद्धश्चदायदाबांधवाश्चषट् ॥

कानीनश्चसहोढश्चक्रीतपौनर्भवस्तथा ॥
स्वयंदत्तश्चशौद्रश्चषडदायादबांधवः ॥

मनु अ० ९ श्लोक १५९

रामानुज ब्राह्मण द्रविड देशमां छे तेमां बे पंथ छे "तिंगळे" अने "वडघळे" तेमां तिंगळ ब्राह्मण जे छे तेमने वैदिक आचार मुकी दीधो छे यज्ञमां पशुनो वध करता नथी, अने वडघळे छे ते करे छे, तेज प्रमाणे गुजराती ब्राह्मण पण यज्ञ करता नथी विधवानु वपन करवा विशे श्रुती स्मृतिमां वचन नथी गोसावीजी आपस्तंभ सूत्री तैलंग ब्राह्मण छे तेमना कुळमां वपननी चाल नथी हिंदुस्तान अने दक्षणमां ए चाल थोडी छे. स्त्रीना वाळ न उतराववा ते विषे शास्त्र नीचे प्रमाणे.

विद्वद्विप्रनृपःस्त्रीणांनेष्यतेकेशवापनं ॥ मयूख
सर्वान्केशान्समुधृत्यछेदयेदंगुलद्वयं ॥ एवंनारीकुमारीणांशिरसोमुंडणंस्मृतं ॥

यम, पराशर, आपस्तबं,

स्त्रीयोनु स्वातंत्र काढी लेईने तेमने दास कर्यां त्यारे नीचे लख्या प्रमाणे ठराव थयो.

नस्त्रीस्वातंत्र्यमर्हति ॥ नस्वातंत्र्यंक्वचित्स्त्रियः॥

अर्थ.

बइरीओने कांइ प्रकारनी पण मुखतीआरी नथी तेमने सर्वकाळ परतंत्र रहेवुं.

वेदमूळमां कांइ एक वखते थएलो ग्रंथ जणातो नथी जुदा जुदा काळमां जुदा जुदा ऋषीना जुदा जुदा मंत्र छे ते एक पुस्तकमां संहितारूपे जोवामां आवेछे. वेद ए शब्द बीजा ग्रंथने पण लगाडवानो चाल छे जेमके गांधर्ववेद, धनुर्वेद, आयुर्वेद, अने भारथ पण पांचमो वेद कहेवायछे. वेदना अक्षरने मंत्र कहेवाय छे तेनो सार जोतां तेमां प्रार्थनाछे ते परमेश्वरनी होय के बीजा देवनी होय कटलाएक देवना मंत्र कर्मना बोधक छे ते मंत्रने विधि कहेछे विधि एटले लखेली रुढी अने रुढी एटले जेने वेदादिकनो आधार नथी. तेने केवळ रुढी केहेछे, मूळ जे ऋषि हता ते क्षत्रीने घेर यज्ञादिक कर्म करता तेथी ते धर्माध्यक्ष थया, पछी तेमने लोकोना मनमां एम ठसाव्युं के सर्व देव अमारा कबजामां छे अने मंत्रथी जे देवनुं आवाहन करीए ते हाजर थाय अने जेनुं वीसरजन करीए ते विदाय थाय अने जे अमे कहिए ते ते करशे, ए सिद्ध करवाने वास्ते हजारो ग्रंथ लखी गयाछे, सूर्य उगेछे ते, ब्राह्मण संध्या करेछे माटे उगेछे, एवुं भारतमां कह्युं छे, ए समजुत जेम जेम मजबुत थती गइ तेम तेम धर्माध्यक्षनो अमल बहु जबरदस्त थइ गयो, भागवतमां कह्युं छे के, भगवान श्री कृष्ण बोल्या के अग्नि, सूर्य, इत्यादिकनो कोप थयो तो हुं बीतो नथी पण ब्राह्मणनो कोप थाय तो मने बहु बीक लागेछे, ते विशे वचन.

नाग्न्यर्कसोमानिलवित्तपाख्यात् ॥

शंकेभृशंब्रह्मकुलावमानात् ॥

भागवत.

ऋषि ए शब्दनो अर्थ. गानारो के फरनारो एम थाय छे पण रुढीमां अर्थ ग्रंथ करता थाय छे अने प्राचिनकाळमां बधा देशनां धर्माध्यक्ष पाखंडी अने ढोंगी हतां अने ते राजाने पण गुलाम करीने राखतां हतां, अने क्रिस्चयन् धर्मनो धर्माध्यक्ष पोप करीने छे तेना पाशमांथी यूरोप खंड हजी छुट्युं नथी, ए लोकने पापनी माफी आपे छे, स्वर्ग चढवानो दाखलो आपे छे, अने नर्के जवानो पण दाखलो आपे छे तेथी घणा भोळा लोक, मरती वखते एनो आशिर्वाद लेवाने वास्ते हजारो रुपीआ आपे छे बधा लोकोने ए पहोची शके नहीं माटे केटलाएक मुखत्यार फरवा मोकले छे, ए न्यात बहार मुके तो कोइथी एनो संग्रह न थाय मोटो बादशाह लाख फोजनो धणी होय तो एना आगळ हाथ जोडीने उभो रहे, जेवो धर्माध्यक्षनो जुलम अन्य देशमां छे तेज प्रमाणे आ देशमां पण छे तेनुं कारण एम छे के ज्यां धर्माध्यक्षनो अधिकार वधे छे त्यां एमना तरफथी एवो बंदोबस्त थाय छे के बीजो कोइ भणे नही लोक जेटला अभण रहे तेटलो एमनो फायदो माटे बधी विद्या गुप्त राखवानी तजविज करे छे.

ब्राह्मण क्षत्री अने वैश ए त्रण जणाने द्विज एवी संज्ञा छे, आ त्रण जणानो अधिकार समान छे.

ब्राह्मणःक्षत्रियोवैश्याःस्त्रयोवर्णाद्विजातयः॥
चतुर्थएकजातिस्तुशूद्रोनास्तितुपंचमः ॥ मनु.

केटलीक म्लेच्छजाति मूळमां क्षत्री हता एम लख्युं छे.

शकायवनकांबोजातास्ताक्षत्रियजातयः ॥
वृषलत्वंपरिगतःब्राह्मणानामअदर्शनात् ॥ भारत

पौण्ड्रकाःश्चोंद्रद्राविडाःकांबोजायवनाःशका ॥
पारदापल्हवाश्चीनाःकिरातादरदाखशाः ॥
शनकैस्तुक्रियालोपाइमाक्षत्रियजातयः॥
वृषलत्वंगतालोकेब्राह्मणादर्शनेनच ॥

मनु.

अर्थः—शक, यवन, अने कामभोज, ए क्षत्री जातना छे, पण ब्राह्मणनुं एमना उपरनो अमल उठी गयो, तेथी ए भ्रष्ट थया छे प-छी पुनड्रक, अंध्र, द्रविड, कामभोज, यवन, शक, पारद, पलव, चीन, किरात, दरद, खस, ए बधाओ क्षत्री जातीना छतां ब्राह्मणनो अने एमनो मेळाप न रह्याथी भ्रष्ट थया छे. शत पथ ब्राह्मणमां क्षत्रीओनुं श्रेष्टपणुं वर्णन कर्युं छे ते निचे प्रमाणे.

एतानिदेवताक्षत्राणिइंद्रोवरूणःसोमोरूद्रः
तस्मात्क्षत्रंपरंनास्तितस्माब्राह्मणःक्षत्रियात्
अधस्ताउपास्तेराजसूये

शतपथ ब्राह्मण

अर्थ.

इंद्र, वरुण, सोम, रुद्र, ए बधा देव क्षत्री छे, माटे क्षत्री श्रेष्ट छे, राजसूय यज्ञमां क्षत्री उपर बेसे छे अने ब्राह्मणने निचे बेसवुं पडे छे. उपरना मंत्रमां केटलाएक देव क्षत्री कह्या छे पण लिंग पुराण-मां लख्युं छे के.

ब्राह्मणोभगवानरूद्रोक्षत्रियःपरमोहरिः॥

वैश्यःपितामहश्चैवइंद्र·शूद्रश्चजायते ॥

क्षत्रिय ज्यातमां दारु पीवानी चाल हती एवुं वेद उपरथी मालम पडे छे, ऐतरेय ब्राह्मणमां क्षत्रीने राज्याभिषेक करवानो विधी आठमी पंचीकाना वीसमाखंडमां लख्यो छे ते ठेकाणे निचे प्रमाण मंत्रछे.

इत्यथास्मैसुराकंसंहस्तंआदधाति स्वादि
ष्ठया०तांपिबेत् ऐ०८-२०

अर्थ

राजानी हाथमां दारुनो लोटो आपवो अने स्वादिष्ट या मंत्र भणीने ते पीवो,

आ प्रमाणे अनेक राजाने राज्याभिषेक थया छे तेमना नाम. अने तेमना गोरना नाम. वेदमां लख्या छे तेमां परिक्षीतीनो पुत्र जन्मेजयने राज्याभिषेक थयो ते वात पण निचे मुजब लखी छे.

तुरःकावषेयोजनमेजयंपारिक्षितंमभिषेच
ऋग्वेदब्रा०८-२१

ए उपरथी एम मालम पडे छे के जन्मेजय राजा थया पछी ए वेद लखी गयो हशे, एवी कल्पना थाय छे. आ लोक एवुं कहे छे के वेदनो केटलोएक भाग आसुरी अने राक्षसी लोकोने वास्ते छे, पण ए कल्पना केवळ अज्ञानी लोकोनी छे एने कशो आधार नथी केटलाएक कहे छे के गतगोष्टिनुं वर्णन जे लख्युं छे ते भविष्यनुं छे, अने ए प्रकारे करीने वेदने अनादित्व अने निश्चल प्रतिपादन करेछे पण ते बरोबर बेसतुं नथी. प्राचिनकाळमां ब्राह्मण लोकोमां एवो अभिमान हतो के जे कोई वात करवा आवे तेने मा कहेवी नहि. तेज

प्रमाणे धर्मनो अभिमान एवो हतो के युद्धने वास्ते जे बोलावे तेने ना कहेवी नहीं आ अभिमान आज रह्यो नथी. पूर्वे शंकराचार्य वल्लभाचार्य इत्यादि मोटा आचार्य थया, तेमने दिग् विजय कर्यो ते ए प्रमाणे वाद करवाने ब्राह्मण गामे गाम उभा रहेतां माटे थएलो, पण आज कोई दिग विजय करवा निकळे तो तेने कोई गाममां जवाब मलशे नहीं. त्यारे दिग विजय शानो थाय एनुं कारण ब्राह्मणो बधाय जड, मूढ थया कोई पासे विद्या नथी अने अभिमान पण नथी अने कोई राजा उत्तेजन आपे एवो नथी, कपट वधी गयुं ने मूर्ख छतां प्रतिष्टा मेळववानी आशा ते शी रीते मळे धर्म सभा के पर्षद कोई ठेकाणे रही नथी शिक्षा के शाळा रहि नथी ओशिआळपणुं बहु वधी गयुं,, ने स्वतंत्रपणुं डुबी गयुं तेने लीधे ब्राह्मण न्यातिमां कांइ जीव के उमेद रही नथी.

ब्राह्मणोने प्राचीनकाळथी पिशाच्योनी बहु बीक हती कोई पण कर्म करवुं होय तो प्रथम पिशाच्य नसाडवानो उपाय करवो पडेछे. संध्यामां मंत्र भणे छे ते नीचे प्रमाणे.

अपक्रामंतुभूतानिपिशाचाःसर्वतोदिशं

श्राद्धमां वेद मंत्र भणे छे ते.

पिशंगभृष्टिमंभृणंपिशाचमिंद्रसंभृणा ॥ सर्वंरक्षोनिवर्हया ॥ ऋग्वेद

वेदशास्त्रमां मंत्र कामना बोधक अने कर्म बोधक आवे छे तेनो नमुनो नीचे प्रमाणे.

भियंदधानाहृदयेषुशत्रवःपराजितासोअपनिळयंतां ॥

ऋग्वेद.

द्विषंतंमह्यंरन्धयन्मोअहंद्विषतेरधं ॥

अर्थ.

हे सूर्य मारा शत्रुनो नाश कर.

अहि १ श्वसर्वान्जंभयंन्सर्वाश्वयातुधान्यः

यजुर्वेद रुद्री.

अर्थ

हे रुद्र सर्प अने पिशाच्य एनो नाश कर.

हृद्रोगंममसूर्यहरिमाणंचनाशय ॥ ऋग्वेद.

अर्थ—हे सूर्य मारो कमळानो रोग नाश कर.

उर्वारुकमिवबंधनान्मृत्योमुक्षीयमामृतात् ऋग्वेद

अर्थ—हे त्र्यंबक मने मृत्युथी उगार.

पुराणमां केटलाएक कथाओ छे अने ठेकाणे ठेकाणे प्रार्थना छे ते नीचे लख्या प्रमाणे.

चोरान्मारयमारयममशत्रूनुच्चाटय

उच्चटय । कुठारेणभिंधिबाणैःसंताडय

खट्वांगेणविपोथय ॥ शिवकवच । स्कंदपुराण.

वेदमां विरुद्ध वचन आवे छे तेनां उदाहरण नीचे लख्यां छे.

गृत्समदऋषिःऋग्वेदसंहिता

अष्टक २ अ० ६ वर्ग २४ ऋ ५

दिवोदासायनवतिंचनवेंद्रःपुरोऽयैरच्छंबरस्य ॥

गृत्समदऋषिः ऋग्वेदसं २-६-१३

अध्वर्यवोयःशतंशम्बरस्यपुरोबिभेदाश्मनेवपूर्वीः ॥

परुछेपोदैवोदासिऋषिः

ऋग्वे० २-१-१९

भिनत्पुरानवतिमिंद्रपूरवेदिवोदासायमहिदाशुषेनृतो व

ज्रेणदाशुषेनृतो ॥ अतिथिग्वायशंबरंगिरेरुग्रोअवा

भरत् ॥

अर्थ.

इंद्र नामनो राजा हतो तेनो मित्र दीवोदास हतो तेना तरफथी शंबर नामनो दैत्य हतो तेनी जोडे इंद्र घणी वार लड्यो ते विशे कथा वेदमां घणे ठेकाणे आवे छे केटलेएक ठेकाणे इंद्र छे ते परजन्याधिपति देव छे एम पण कहेलु छे शंबरासुर दैत्यनां नवाणु गाम इंद्रे उजड कर्यां एवुं एक मंत्रमां छे बीजा मंत्रमां सो गाम उजड कर्यानी वात छे अने त्रीजा मंत्रमां नेवु गाम उजड कर्यानी कथा छे.

इंद्रनु पराक्रम नीचे लखेला मंत्रमां घणुं वर्णन कर्युं छे तेनु पहेलुं वचन लख्युं छे तेमां एवुं लख्युं छे के इंद्रने मद्य बहु भावे छे माटे ते अग्निमां रेडो.

गृत्समदऋषिः

अ० २ अ० ६ वर्ग १३

अध्वर्यवोभरतेंद्रायसोममामत्रेभिःसिंचतामद्यमंधः॥

ए इंद्रेत्रीक द्रुक यज्ञमां मद्य बहु पीधुं अने तेना मदमा सर्प मारी नाख्यो एवुं एक मंत्रमां छे ते नीचे प्रमाणे.

त्रिकद्रुकेष्वपिबत्सुतस्यास्यमदेअहिमिंद्रोजघान ।।

गृत्समद २-६-१५-१

बीजे ठेकाणे सापने अने वींछीने पथराथी मारी नाखवा विशे वेदमा लख्युं छे आ मंत्रथी सापनुं अने वींछीनुं वीष उतारे छे.

इयतकःकुषुंभकस्तकंभिनद्मयश्मना

अगस्ति २-१-१६-१५

अश्विन देवनी प्रार्थना कुतरानो नाश करवाने वास्ते छे ते नीचे प्रमाणे.

अगस्तिऋषि.

ऋग्वेद २-५-२९-२४

जंभयतमभितोरायतःशुनोहतंमृधोविदथुस्तान्यश्विना

गीतामां कह्युं छे केः—

यज्ञोदानंतपःश्चैवपावनानिमनीषिणां

यज्ञ एटले इश्वर भजन, दान एटले परोपकार, तप एटले इंद्रिय दमन, ए मुख्य अर्थ छे पण पक्षपात मताभिमान थाय छे त्यारे नवा नवा अने अनुकूळ पडे एवो अर्थ करे छे. मूळ कर्मनो अर्थ देवतानुं पूजन. तेनो परिणाम निर्दयपणा उपर गयो. तेज प्रमाणे ज्ञान एटले अनेक देवोने मुकी एक इश्वर जाणवो अने भूत दयाथी सम दृष्टि राखवी. तेनो अपभ्रंश थइने अघोरी कौल वाम इत्यादि मार्ग ज्ञान मार्गमां निकळ्या. अने ए मार्ग मूळ हेतुथी भ्रष्ट थयो. तेमज भक्ति एटले इश्वरनी उपासना ते ठेकाणे हजारो कल्पित देव उत्पन्न थया तप

एटले इंद्रिय निग्रह ते ठेकाणे ऊर्ध्वबाहु थाकेसरी पंचाग्नी तापनार ए निकळया अने तपनो हेतु भ्रष्ट थयो कह्युं छे के.

अनाचारेणमालिन्यंअत्याचारेणमुर्खता ॥
विचाराचारयोर्योगःसदाचारःसउच्यते ॥

विचार नष्ट थयाथि अने लोक मनस्वी अने निरंकुश थयाथि दया मैत्रीन्याय जतो रह्यो. लोक स्वछंदि थया ब्राह्मण, लोकोने सन्मार्ग न बतावता उपद्रव करवा लाग्या तेथी लोक अ संतोषि थइने केटला एक ब्राह्मणनुं गोरपदु काढवाने यत्न करे छे नडियादमां सुतार लोके सरावबुं नहीं एवो ठराव कर्यो छे कारण पांच रुपीया आपतां गोर छुटको करे नहीं. तेज प्रमाणे पुनामां जोति गोविंदराव लोकोनी संमति मेळवे छेके ब्राह्मण पासेथी कांइ पण कर्म करवुं नहीं. आ बधाए तोफानो ब्राह्मणोना उन्मादथी थाय छे. जेम जेम ज्ञान वधशे तेम तेम बराबर ओळखाशे.

वेदना मंत्र भाग क्रूर छे पण उपनिषद भाग सात्विक छे अने ते त्यागी अने संन्यासीनुं शास्त्र छे एम कहेवाय छे तेना उदाहरणो निचे लख्या पमाणे.

सत्यंवद । धर्मंचर । स्वाध्यायान्माप्रमदः।
अन्नंबहुकुर्वीत । कुशलान्नप्रमदितव्यं ।

तैतीर्यअरण्यक प्रपाठक ७

अर्थ.

सत्य बोल, धर्म रीते चाल, भणवा विषे गफलत न कर. अन्ननी वृद्धि कर, सुखनो त्याग न कर.

दैवीवागनुवदतिस्तनयित्नुदददइति । दाम्यतद त्तदयध्वमिति । तदेतत्त्रयं १ शिक्षेदमंदानंदया मिति ॥ बृहदारण्यक १४-५-२

अर्थ.

देव, मनुष्य, अने असुर, आ त्रण जणाए पोताना गुरु प्रजापतिने प्रश्न कर्यो के अमारो धर्म शो ते उपरथी प्रजापतिए त्रण वखत द, द, द, एवुं बोल्यो अने पुछयुं के तमे आ त्रण दनो अर्थ समज्या त्यारे तेमणे कह्युं के अमे समज्याके दम दान अने दया त्यारे प्रजापति बोल्या के आज प्रमाणे चालो आज तमारो धर्म ते वखत आकाश वाणी ते प्रमाणे थइ यजुरवेदनुं शत पथ ब्राह्मण चौद कांडनुं छे तेनुं छेलुं कांड "बृहदावण्यक" कहेवाय छे तेना पांचमा अध्यायमां बीजा ब्राह्मणमा ए कथा छे श्रावकना कल्पसुत्रमां ए कथा दाखल करी छे.

ओषधिभ्योअन्नं तैतिरीयआरण्यक प्र० ८

अर्थ.

औषधी एटले वनस्पति ए मनुष्यनुं अन्न छे.

तस्यैवंविदुषोयज्ञस्यात्मायजमानःश्रद्धापत्निशरीरमिध्महृदयंयूपःकामआज्यंमन्युःपशुःस्तपोग्निर्दमःशमयीता ॥

नारायणउपनिषद

अर्थ,

ज्ञानीनो यज्ञ शी रीते थाय छे तेनी विगत. आत्मा छे ते यज्ञ

करनारो छे हृदय छे ते यूप, एटले जनावर बांधवानो खीलो अने आपणी श्रद्धा छे तेज पत्नि छे, होमवाने वास्ते घी जोइए ते आपणी वासना छे, मारवाने वास्ते जनावर जोइए ते आपणो क्रोध छे, अग्नि जोइए ते आपणुं तप अने जनावरने मारनारो जोइए ते आपणो दम एटले विवेक छे.

ए उपनिषदमां उपर लख्या मुजब घणी लांबी विगत लखी छे अने तप रूपी यज्ञ बताव्यो, आ उपनीषदनुं नाम प्राणाग्निहोत्र छे.

सदरहु प्रमाणे वेदनां वाक्यो छे, अने स्मृतिओमां पण केटलांएक वाक्यो सारां छे तेनां उदाहरणो.

शतेषुजायतेशूरोसहस्रेषुचपंडितः ॥
लक्षेषुजायतेवक्तादाताभवतिवानवा ॥
नरणेनिर्जितेशूरोविद्ययाचनपंडितः ॥
नवक्तावाक्यदक्षेननदातादानकृद्भवेत् ॥
इंद्रियाणांजयेशूरोधर्मंचरातिपंडितः ॥
सत्यवादिभवेत्वक्तादाताभूतहितेरतः ॥

व्यासस्मृति.

अर्थ.

सोमा एक शूरो, हजारमां एक पंडित, लक्षमां एक भाषण करनार अने दाता तो विरलाज होय छे, रणमांथी जीते ते शूरो नही, अने बहु भण्यो ते पंडित नही, अने बहु भाषण करे ते वक्ता नही, अने बहु दान करे छे ते दाता नही, इंद्रियो जीते ते शूरो कहेवाय,

अने रीते चाले छे ते पंडित कहेवाय, अने सत्य बोले ते वक्ता कहेवाय, अने सर्व जीवनी दया जेना मनमां छे ते दाता कहेवाय.

द्वाविमौपुरुषोलोकेसूर्यमंडलभेदिनौ ॥
परिव्राट्योगयुक्तश्चरणेचाभिमुखोहतः ॥
यत्रयत्रहतेःशूरःशत्रुभिपरिवेष्टितः ॥
अक्षयान्लभतेलोकान्यदिक्लीबन्नभाषते ॥
जितेचलभतेलक्ष्मी, मृतेचापिसूरांगनां ॥
क्षणविध्वंसिनीकायाकांचितामरणेरणे ॥

पराशरस्मृति.

अर्थ.

सन्यासी अने रणमां जे शुरा मरे, ते बे जणा सूर्य लोकमां जाय छे, शत्रुना हुमलामां जे सूरो बीक राखतो नथी, ते रणमां मरे तो मुक्ति पामे छे, आ शरीर छे ते गमे ते प्रकारे पण नाश पामशे, माटे सुरा पूरुषे विचार करवो के, आपणे जीतीशुं तो मृत्युलोकनुं सुख मळशे, अने मरीशुं तो स्वर्गनुं सुख मळशे, माटे मरणनी चिंता राखवी नहीं.

मयुखमां बृहस्पतिनुं वचन लख्युं छे ते नीचे प्रमाणे.

केवलंशास्त्रमुद्दिश्यनकर्तव्योहिनिर्णयः ॥
युक्तिहीनेविचारेतुधर्महानिःप्रजायते ॥

अर्थ.

केवळ शास्त्र जोईने निर्णय करवो नहीं युक्तिथी तपासवुं अने

युक्ति मुकशो तो धर्म डुबशे.

यथैवात्मापरस्तद्वद्द्रष्टव्यःसुखमिछता: ॥

सुखदुःखानितुल्यानीयथात्मनितथापरे ॥

दक्षस्मृति

अर्थ.

जेवो पोतानो आत्मा सुख मागे छे तेज प्रमाणे पारकानो आत्मा सुखनी इछा राखेछे पोताने सुख दुख थाय छे तेज प्रमाणे पारकाने पण थाय छे एम समजवुं.

आत्मौपम्येनसर्वत्रसमंपश्यतियोर्जुन ॥

सुखंवायदिवादुःखंसयोगीपरमोमतः ॥

गीता अ० ६

अर्थ.

पोताना प्रमाणे पारकाने समजवुं पोताने सुख ते पारकाने सुख ने पोताने दुःख ते पारकाने दुःख ए प्रमाणे समजशे तेने योगी कहेवो.

वृद्धौचमातापितरौसाध्वीभार्यासुतःशिशुः ॥

अप्यकार्यशतंकृत्वाभर्तव्यामनुरब्रवीत् ॥ गौतमस्मृति

अर्थ.

माता अने पीता वृद्ध होय तो, स्त्री सुशील होय तो, अने पूत्र नाहानो होय तो, सो धंधा करीने तेमनुं रक्षण करवुं.

भरणंपोष्यवर्गस्यप्रशस्तंस्वर्गसाधनं ॥ दक्ष ॥

अर्थ.

आपणा उपर जे निर्वाहने वास्ते वळगला छे तेमनुं पोषण करवुं ए स्वर्गनुं साधन छे.

सदरहु उदाहरणोथी एम मालम पडशे के शास्त्रमां केटलांएक वाक्यो सारां छे प्राचीन ग्रंथोनो घणो भाग निरूपयोगी छे पण प्राचीनकाळमां लोकनी शी स्थीती हती ते जणाववाने वास्ते वेदनो घणो उपयोग छे अने वेदनुं संरक्षण ब्राह्मण लोकोए कर्युं ते विशे आपणे एमनो पाड मानवो जोईए वेदनी हजारो शाखा अने करोडो बीजा ग्रंथ छे ते हाल कांइ उपयोग पडे एवा नथी हिंदुलोकोने घणा काळ सुधी फुरसद, अने निर्भय, अने खावा पीवानी समृद्धी हती, तेना अंदर अनेक ग्रंथ उत्पन्न थया ते तपासतां एवुं मालम पडेछे के वेरूळ, अजंठा, घारापुरी, कनेरी, कारला, अने शीवनेरी ईत्यादि ठेकाणे मोटा मोटा डुंगर कोरीने माहाल बनाव्याछे ते उपर करोडो रूपीआ खरच कर्या हशे, पण ते विहारनो कोइने उपयोग नथी, माटे जोनारने आश्चर्य लागेछे के, आ पर्वतमां गुफाओ शुं करवा करी हशे, ते प्रमाणे आ संस्कृत ग्रंथ जोतां एवुं आश्चर्य लागेछे के आ ग्रंथ शा वास्ते बनाव्या छे, जे काळे ए बनाव्या ते वखत ए ग्रंथनो उपयोग घणो हशे, एम धारवुंज जोइए, नहीं तो ग्रंथ बनाववानी मेहेनत कोण करे, माटे जे वखत ए ग्रंथ बनाव्या ते वखत ए ग्रंथ बनावनार, देवोनी पेठे, पुजाया हशे, अने ए बनावनार अने तेमनी संततीए लाखो रूपीआ ए ग्रंथ उपर रळ्या हशे एमां संशय नथी, घणां वरससुधी ए ग्रंथ उपर लोकोनो आधार रह्यो नदीयोना अने गामना माहातमो लखवानो धंधो घणां वर्ष सुधी चाल्यो. पिंड करवा

ते लोटना करवा के भातना करवा डाभ डाभी बाजुए मुकवा इत्यादि निरुपयोगी तकरारोमां घणो काळ गयो छेली वारे भक्तिमार्ग निकळ्यो तेमां कर्मकांडनी घणी नींदा थइ अने ठराव्युं के—

तपःपरंकृतयुगेत्रेतायांज्ञानमुच्यते ॥
द्वापरेयज्ञमेवाहुदानमेकंकलौयुगे ॥

अर्थ.

कृतायुगमां तप करता हता त्रेतायुगमां ज्ञानी थया. द्वापरयुगमां यज्ञ करवा लाग्या अने कळिमां दान करवुं एज मुख्य छे.

यस्मिन्नृभिःप्रहुतंश्रद्धयाऽहमश्नामिकामंनतथाऽग्निहोत्रे॥
भागवत स्कंद ५ अ० ५ श्लोक १३

अर्थ.

भक्तिथी पुजा करे छे तेथी परमेश्वर तृप्त थाय छे अग्निहोत्रथी थतो नथी.

यथातरोर्मूलनिषेचनेनतृप्यंतितत्स्कंधभूजोपशाखाः ॥
प्राणोपहाराच्चयथेंद्रियाणांतथैवसर्वार्हणमच्युतेज्या ॥

अर्थ.

एक अच्युत परमेश्वरनुं भजन कर्याथी सर्व देवनी तृप्ति थाय छे उदाहरण जेमके वृक्षने मूळमां पाणी रेडता सर्व शाखा तृप्त थाय छे पेटमां अन्न घालतां सर्व इंद्रियनी तृप्ति थाय छे ते प्रमाणे.

कृतेतुध्यायतेविष्णुंत्रेतायांयजतोमखैः ॥
द्वापरेपरिचर्यायांकलौतद्धरिकीर्तनात् ॥ भागवत

रामनाम्नैवमुक्तिस्यात्कलौनान्येनकेनचित् ॥
विप्राद्द्विषड्गुणयुतादरविंदनाभपादार ॥
विंदविमुखाःश्वपचंवरिष्ठं ॥ भागवत ॥

अर्थ.

कळियुगमां भगवाननुं भजन कर्या विना बीजो धर्म नथी विद्वान ब्राह्मण अने ढेड भक्त होयतो, भक्त मोटो समजवो.

प्राचीन काळमां ब्राह्मण उत्तर कुरुमां एटले हिमालयनी पेली तरफ रहेता एवुं वेद उपरथी जणाय छे

येकेचपरेणहिमवंतंजनपदाउत्तरकुरुवउत्तरमद्राइति॥
ऐ० ८-२४

यदाब्राह्मणोत्तरकुरून्जयेमथ ॥
ऐतरेयब्राह्मण पं० ८ खं २३

घणा एक शास्त्रमां मामानी कन्या न करवी एवुं लख्युं छे ने मामानी कन्या अने भाइनी कन्या एमां कांइ झाझुं अंतर नथी पण वेदमां लख्युं छे.

तृत्पांजुहुर्मातुलस्येवयोषांभगस्तेपैतृष्वसेयीवपामिव ॥
ऋग्वेद

सदरहु मंत्रना आधारे मामानी कंन्या करवानो वहीवट चाले छे, आज सुधी लोक अज्ञान हता, तेथी बधाय लोकोनो मत एवो बंधाइ गयो हतो के, कोइ वातपर शंका के प्रश्न करवो नही जे रुढी चालती हशे ते प्रमाणे चालवुं तेमां वांधो के संशय कोइए लेवो नही.

पछी तेमां सारुं होय के नरतुं होय, पृथ्वी उपर जुलम बे प्रकारना छे, एक धर्माध्यक्षनो अने एक राजानो, ए प्रमाणे जुलम जे माणस उपर थाय, ते माणसनी मदद बधाय लोकोए करवी जोइए कोइ माणसना मंदिरना अधिकारी जोडे तकरार पडे छे त्यारे मंदिरना अधिकारी तेने दर्शन बंध करे छे. आवा प्रसंगे जे माणसनुं दर्शन बंध थाय छे, ते अन्यायथी थयुं होय तो बीजा बधाए कहेवुं जोइए के ज्यां सुधी आ माणसनो छुटको नहीं थाय, त्यां सुधी अमे कोइ दर्शन करवाना नथी, तो मंदिरना अधिकारी पगे लागीने ए माणसनो छुटको करशे, पण लोकोमां आटली, भत दया अने परोपकार बुद्धी अने न्यायनो अभिमान नथी, तेथी गमे तेवी रीतनो जुलम करे तो नभे छे, अने एज प्रमाणे केटलाएकने, महाजन बहार करे छे, केटलाएकने न्यातीं बहार करे छे, केटलाएकने चोराशी बहार करे छे, ते वखतमां आवा माणसना जोडे कोइ उभो रहेतो नथी, अने बधाय एम जाणे छे के, लोभथी के लुच्चाइथी आ जुलम थयो छे, अने पांच पचास रुपीआ आपे तो तेनो छुटको थाय छे, तोपण ते माणसने छोडाववाने वास्ते कोइ उभो रहेतो नथी, तेथी जुलमनो प्रवाह चाले जाय छे, लोकोए एम समजवुं जोइए के, जे माणस रुढी वीरुद्ध चालतो हशे तेमां छेक अनिती न होयतो, तेनी बाजु लोकोए पकडवी जोइए, अने एम थाय तो जुलम बहु ओछो थशे. पण लोकोमां ए बुद्धी नथी, तेथी पचास भेंसो मोटी बळवान होय, अने भरवाडनो छोकरो आठ वर्षनो होय तो लाकडी लेइने एमने हांकी जाय छे, अने भेंशोने खबर पडती नथी के हमारु बळ केटलुं अने आ छोकरानुं बळ केटलुं, ए अज्ञानथी, छोकरानी लाकडीनी बीक सम-

जी जनावरो नाशी जाय छे, हाल ए अज्ञान काळ, सारी केळवणीथी दुर जवा लाग्यो छे, अने चिन्ह जोवामां आवे छे, लोकोना मनमां विचार अने प्रकाश वधारे थयो छे. वेदशास्त्र पुराणमांथी एवो सिद्धांत निकळे छे के, इश्वर एक छे, पण रुढी मार्गमां ए वात कोइ मानतुं नथी हजारो देवोनी पुजा चाले छे. मोहोथी बोले छे एक, अने करे छे एक, ए पाखंड बंध करवाने वास्ते घणा लोक प्रयत्न करे छे. एज मतलबथी प्रार्थना समाज अने प्रार्थना मंदिरो उत्पन्न थयां छे.

ब्राह्मण अढार वर्णना गुरु कहेवाय छे पण पोतानो स्वार्थ खोळवामां आटला भुली गया के बीजाना अर्थ उपर बीलकुल लक्ष रह्युं नही तेथी मन मानि तेवी वातो लखी अने चकले चकले पुराणीक वीगेरे उपदेश करवा लाग्या के पृथ्वीनो आधार शेषछे, दहीं, दुध, घी इत्यादिकना सागर छे अने कोइने देशबहार जवा न दे तेथी लोकोनुं शौर्य अने औदार्य, अने ज्ञान बीलकुल जतुं रह्युं. जतुं रह्युं एटलुंज नही पण वीपरीत ज्ञान थयुं तेथी जे केवळ जंगली लोक जे कांइ समजता नथी तेमना करतां हिंदु लोक नीचा पड्या अने एवी योग्यता पाम्या के हजारो वरस सुधी परदेशी लोकोनां खासडां खाइने दास्यत्वमां रहेवुं ज्यां सुधी हिंदुस्तानमां परदेशना लोक आव्या नहता त्यारसुधी गमे तेम चाल्युं पण हाल हिंदुस्तान बधुं उघाडुं पड्युं घणा देशना लोक आ देशमां आव्या तेथी ब्राह्मणनुं भोपाळुं ऊघाडुं पड्युं अने उपहास थवा लाग्यो के आ बधी तकसीर ब्राह्मणोने माथे नांखवानुं कारण एवुं छे के:—

शिष्यापराधेतुगुरोर्हिदंडः॥

चेलो बगडे ते दोष गुरुने माथे आवेछे ए साधारण न्याय छे प्रथम

धर्म बगडयानो त्यारपछी राज्य बगडवानो ए पण साधारण नियम छे तेज प्रमाणे जे वखत सुधारो थशे तेनो पण नियम एमज छे के प्रथम धर्म सुधरशे ने पछी राज्य सुधरशे एनुं कारण धर्मनी सुधारणाथी राज्यनी सुधारणा करवी मुशकेल छे कारण राजा बळवान छे अने धर्माध्यक्ष निर्बळ होय छे माटे जे लोक धर्म सुधारणा करवाने तैयार नथी तेमनाथी राज्य सुधारणा कदापी थाय नही.

अढार पुराण छे अने तटलांज उप पुराण छे तेमानुं एक कालीका पुराण करीने छे तेमांनो छासटमो अध्याय बलिदान विषय छे तेमांना केटलाएक श्लोक नीचे लख्या छे आ पुराण आगममां समजवुं तेनो नीश्चय थतो नथी. तोपण उप पुराण छे अने ए बधो अध्याय भगवाननुं वचन छे एम लख्युं छे माटे अहींयां दाखल कर्यो छे ते उपरथी घणी हींसानुं प्रतिपादन थएलुं मालम पडशे. माणसनो बळी पण लख्यो छे हरएक किल्लामां आगळ माणस बळी आपेला तेनी जगाओ आज सुधी पुजाय छे. वेदमां नरमेध लख्यो छे तेमां डोसियो अने भाणेज पण लख्यो छे.

तैतिरीयब्राह्मणे ३ कान्डे
४ प्रपाठके १९ अनुवाके

आशायैजामिम् प्रतिक्षायैकुमारिम्

प्रमुदेकुमारीपुत्रम् आराध्यैदिधिषूपतिं

भाष्य.

आशायैजामिं । निवृत्तरजस्कांभोगायोग्यांस्त्रियं ।

प्रतिक्षायै । कुमारीं । अनूढाम्कन्यामालभते । प्रमुदे । दुहितुःपुत्रं । आराध्यै । दिधषूपतिं । द्विर्विवाहंकृतवतीस्त्रीतस्याःपतिं ।

एवा अनेक प्रकारना मनुष्यनो यज्ञ वेदमां आवे छे.

राजस्थानमां केटलाएक मंत्र शास्त्री ढोंगी लोक कार्य सिद्धिने वास्ते हत्या करे छे एवुं सांभळवामां आवे छे तेनुं मूळ शास्त्रमां मळे छे खातमुहूर्त करवामां शेषअनंत वराह देवोनी पूजा करे छे तेमां बळीदान लख्युं छे. ए सर्व अज्ञान मूलक छे. एमां संशय नथी एवा हत्या चाहनारा देव खोटा अने तेमना भक्त पण पाखंडी छे एवो निश्चय थायछे.

॥ रुधिराध्याय ॥

श्रीभगवानुवाच ॥ पक्षिणः कच्छपाग्राह्यामत्स्यानवविधामृगाः॥ महिषोगोधिकागावःछागोवभ्रश्चशूकराः॥ खरश्चकृष्णसारश्चगोधिकाशरभोहरिः॥शार्दूलश्च नरश्चैवस्वगात्ररुधिरस्तथा॥ चंडिकाभैरवादीनांब लयंपरिकीर्तिताः ॥ बलिभिःसाध्यतेमुक्तिर्बलिभिः साध्यतेदिवं ॥ बलिदानेनसततंजयेच्छत्रूनृपान्नृपः॥ कालितंत्रमितिप्रोक्तधर्मकामार्थसाधनं ॥ पूजनादात्रिरादेवीसर्वान्कामांददातिच ॥ मत्स्यानांकच्छपानांतुरु

धिरैःसततंशिवा ॥ मांसैकंतृप्तिमाप्नोतियाहैमासास्तुत्री
नथा ॥ कृष्णसारस्वरुधिरैःशूकरस्यचशोणितै ॥
आप्नोतिसततंदेवीतृप्तिर्द्वादशवार्षिकी ॥ अजाविकाना
रुधिरैःपंचविंशतिवार्षिकी ॥ माहिषाणांचखड्गाणांरुधि
रैःशतवार्षिकी ॥सिंव्हस्यशरभस्याथसगात्रस्यचशो
णितैः॥ देवीतृप्तिमवाप्नोतिसहस्रंपरिवत्सरान् ॥ कृ
ष्णसारस्यमांसेनतथाखड्गणचंडिका ॥ वर्षान्यंचश
तान्येवतृप्तिमाप्नोतिकेवलां ॥ नरेणबलिनादेवीसहस्रं
परिवत्सरान् ॥ मंत्रपूतंशोणितंतुपीयूषंजायतेसदा ॥
तस्मातुपूजनेदद्याद्बलेःशीर्षसलोहितं ॥ यज्ञार्थेपशवः
सृष्टास्वयमेवस्वयंभुवा ॥ अतस्त्वंघातयिष्यामितस्माद्य
ज्ञेवधोवधः॥ पात्रंरुधिरदानायकर्तव्यंविभवावधी ॥
घातयेच्चंद्रहासेनतेनमंत्रेणसंस्कृतं ॥ काणंपंगुचापिवृद्धं
रोगिणंचगलद्व्रणं ॥ क्लीबंहीनांगमथवाविद्धलिंगकुलक्ष
णं ॥ स्त्रियंनदद्याच्चांडालिंदत्वानरकमाप्नुयात् ॥ न
ब्राह्मणबलिंदद्याच्चांडालमपिपार्थिवः ॥ राजपुत्रस्तथा
मात्यःसचिवःसौरिकादयः ॥ दद्युर्नरबलिंभूपःसंप
त्प्याविभवायच ॥ महिषस्यशिरःछिन्नंसप्रदीपंशिवाः

पुरः ॥ हस्ताभ्यांयः समादाय अहोरात्रंतुतिष्ठति ॥
साचिरायुः पुनर्मूर्तिरिहभुक्त्वामनोरमान् ॥ नरस्यशी
र्षमादायसाधकोदक्षिणेकरे ॥ वामेसरुधिरंपात्रंगृहि
त्वानिशि जाग्रतः ॥ यावद्रात्रंस्थितोमर्त्योराजाभवति
चैवही ॥ मृतेममपुरंप्राप्यगणानामधिपोभवेत् ॥ क्षण
मात्रंबलिर्यःशिरोरक्तंकरद्वये ॥ गृहित्वाचिंतयेद्दे
वींपुरस्तिष्ठतिमानवः ॥ सकामानिहसंप्राप्यदेवीलोके
महीयते ॥ शिरश्छित्वाबलिंदद्याकृत्वाचम्यनुमंत्रितः॥
रक्तमाल्यधरंकृत्वारक्तवस्त्रधरंतथा ॥ तेनोत्तरशिर
स्कंतंकृत्वाखड्गेणछेदयेत् ॥ बलिदानाच्चतुर्वर्गफलमां
प्नोत्यसंशयं ॥ कथितोरुधिराध्यायउपचारान्शृणुष्व
मे ॥ इतिकालिकापुराणेबलिदानेषट्षष्टितमोध्यायः॥
आमिषंपरमान्नंचदधिसर्पिःसशर्करं॥महादेव्यैनिवेद्याथ
बलिमेधफलंलभेत् ॥ देवीलोकेचिरंस्थित्वाराजाक्षिति
तलेभवेत् ॥ दीर्घायुर्बहुभोगीचपुत्रपौत्रसमन्विताः ॥

कालिका पुराण.

सदरहु उपरथी एक प्रश्न नीकळे छे ते एवो के पृथ्वी उपर अ-
नेक शास्त्र छे ते देश देशना लोक पकडी रह्याछे तेमांथी खरु कीयुं

एनो निश्चय बुद्धि विना कोण करशे अने कदापी एम कहीए के बीजा देशना शास्त्रनी आपणे शी जरूर छे आपणा देशमां जे शास्त्र छे तेज खरू एम कहीए तो ब्राह्मण लोकोए लखेलां शास्त्र तपाशीए तो तेमां केटलाएक नठारा छे अने केटलाएक साराछे त्यारे तेमां कीयां मान्य करवा ते बुद्धीने आधारे रहेलुं छे तेथी धर्मनो आधार बुद्धी छे एम जणाय छे शास्त्र अनेक प्रकारनां छे अने एक बीजाने वीरुध छे एकमां दारू पीवो ने मांस खावुं एम लख्युं छे ने बीजामां एनो निषेध कर्यो छे त्यारे एवा शास्त्रनो आधार थाय नहीं माटे युक्ति थकी सार असार विचार करीने जे योग्य मालम पडशे तेज लेवुं एवो निश्चय थाय छे पवित्र मन अने सात्विक बुद्धि अने निर्मळ अंत:करणथी जे इश्वरी ज्ञान प्राप्त थाय छे तेज धर्मनी मर्यादा छे.

मनुष्य मात्र अशक्त प्राणी छे तेथी आपणे साथे इश्वर छे ए मान्या विना चालतुं नथी अने इश्वर भक्तिनी प्रेरणा मनुष्यनी बुद्धिने स्वभाविक छे अने मनुष्य मात्रनी निती अने न्याय संरक्षण थवाने वास्ते इश्वरनी बीक अने इश्वरनी भक्ती अवश्य छे माटे जगतमां बधाय लोक इश्वर छे ए वात कबुल करे छे श्रावक, बौध, इत्यादिक लोक इश्वरने मानता नथी तोपण केटलाएक माहा पुरुषो केवल्य गती पाम्या छे एम समजीने तेमनेज प्रभु करे छे अने तेमनीज उपासना करे छे.

तर्कने कथाना आधारथी अनेक देवोनी कल्पना करी छे केटलाएक कहे छे के रामकृष्ण, हनुमान इत्यादिक देव छे केटलाएक पंचमहाभुतादिक एटले पाणी, अग्नि, सूर्य, वायु, इत्यादिकने देव कहे छे ए बधाय देव उपकार बुद्धिथी कल्प्या हशे पण सर्वसास्त्रनुं सांधांत ए

मज छे के परमेश्वर एकज छे, अने एने कोई सहीयारी नथी, अने जोडीदार नथी. उपनीषदादिक जे सारशास्त्र छे तेमां ए प्रमाणे निश्चय छे अनेक देवने तो अल्प बुद्धि लोक माने छे, अने मूर्त्ति करवी ए पण अल्प बुद्धिनुं काम छे.

अग्नौक्रियावतांदेवोदिविदेवमनीषिणां ॥
प्रतिमास्वल्पबुद्धिनांसर्वत्रसमदर्शिनां ॥१॥

मूर्त्तिनी कल्पना करी एटले तेमां अनेकत्व आवे छे एके भायडानी कल्पना करी तो एके बायडिनी करी एक अष्टभुजानी करे तो एक चारभुजानी करे एम करतां करतां अनेक देवनी धारणा थायछे गामोगाम ने रानोरान ने नातोनात जुदा जुदा देव थया छे माटे अनेक देवोनी कल्पना मिथ्या जणाय छे.

कर्मकांडमां जेटलुं देह संरक्षणार्थ कर्म छे तेटलु अवश्य छे गीतामां कह्युं छे के.

शारीरंकेवलंकर्मकुर्वन्नाप्नोतीकील्बिषं ॥

केवल शरीर कर्म छे ते बंधन करतुं नथी अने बाकी बधुं छे ते मोक्षनुं प्रतीबंधक छे माटे करवानी जरूर नथी अने गीतामां ब्राह्मणना नव प्रकारना धर्म कह्या छे तेमां मानसीक धर्म बधाय कह्या छे ते एवा के.

शमोदमःस्तपःशौचंक्षांतिरार्जवमेवच ॥
ज्ञानंविज्ञानमास्तिक्यंब्रह्मकर्मस्वभावजं ॥

एथी एम जणाय छे के यज्ञादिकनी अवस्यकता नथी.

न्याय अने भूत दया मनुष्यना स्वभावमां अवश्य छे ज्ञातिभेद ए व्यवहारीक छे परमार्थमां ज्ञातिथी कंई पण फायदो थतो नथी विद्या, वैभव, पराक्रम, सद्गुण, अने सत्कर्मथी मात्र उंच नीचनो भेद पडेछे ते मात्र खरो बाकी बधो काल्पित छे असलमां चार ज्ञाती हती तेनी चारसो थई तेनो आधार जोतां कशो नथी अने ते स्वार्थ बुद्धीथी वंश परंपरा थइ गइ ज्ञातीनो निर्णय गीतामां कर्यो छे के.

चातुर्वर्ण्यंमयासृष्टंगुणकर्मविभागशः॥

गुण कर्म प्रमाणे ज्ञाती समजवी एज अभीप्राय खरो हाल लोकोमां अज्ञान बहु वधी गयुं तेथी मेहनत करीने जे पैसा रळे छे ते बद्धा वरा अने लगनमां खरचे छे अने जे छोकराना लगनमा हजार रुपीया खरचे छे तेम पांच रुपीया तेने विद्या भणाववामां खरचता नथी तेथी निरुपयोगी माणस घणा पेदा थाय छे एवा अनेक नठारा रुढी मार्गथी लक्ष्मी, विद्या, ने शक्ति त्रणे गयां तेथी आगळ जे लोक कहेता के हिंदुस्तानमां देव रहेता पण आज जोतां देव तो रह्या नथी पण पिशाच रह्या छे.

देव बे प्रकारना छे एक मंत्रोक्त अने बीजा लिंगोक्त ए बधाय देव कल्पनीक छे माटे सर्व कर्मना अंते तत्व तत्वनो उच्चार करेछे.

"तत्सब्रह्मार्पणमस्तु"

एम बोले छे. मंत्रनो अर्थ देवनी प्रार्थना एज मुख्य छे. यज्ञमां त्रण प्रकार छे १ प्रशंसा २ यजन ३ गायन ए त्रण त्रण वेदथी थाय छे ते ए प्रमाणे । ऋग्भिःशंसति । यजुर्भिर्यजति । सामेन गीयते । शूद्र ज्यारे मोटा थया त्यारे शूद्र कमलाकर विगेरे ग्रंथ ब्राह्म-

णोए लख्या अने तेने आधारे शुद्रनुं गोरपदु करवा लाग्या. म्लेछ मोटा थया त्यारे तेमनुं गोरपदु करवानी आज्ञा करी. व्रतराज ग्रंथमां लख्युं छे यवन म्लेछ इत्यादिक व्रत करे तो तेमने अधिकार छे.

क्वचित्म्लेंछानामप्यधिंकारोहेमाद्रौदेविपुराणे ।। वैश्यैःशूद्रैर्भक्तियुक्तैर्म्लेछैःरन्यैश्चमानवैः ।। स्त्रिभिश्च कुरुशार्दुलतद्विधानमिदंशृणु ।।

यवन चंद्रिका करीने बीजो ग्रंथ छे तेमां यवन लोकोए जे कर्म करवुं ते लख्युं छे. पण हाल म्लेछ लोकोमां क्रिस्तियन अने मुसलमानी धर्मनी वृद्धि थवाथी ते लोक मूर्ति पूजक अने तेत्रिसकोटि देवने पुजनारा हिंदु लोकोने मानता नथी तेथी ब्राह्मणोनो उपाय नथी.

श्रावक धर्ममां स्त्रियोने संन्यासी करे छे अने पारशियोमां स्त्रियोने जनोइ दे छे. आ अधिकार ब्राह्मण लोकोए काढी नाख्यो अने स्त्रि जाति उपर घणो जुलम कर्यो तेथी स्त्रि जे रत्न कहेवाय छे ते जारनां दाणानी किंमते वेचाय छे औदिच्य ब्राह्मण विगेरे ज्ञातमां एथी वधारे कंन्यानी किंमत नथी. लोकोने शिखवावानी बंधी करी अने परदेशमां जवानी बंधी कर्याथी अज्ञान बहु वध्युं तेथी हजारो वरसथी मुसलमानी धर्मना आरब मोगल तुर्क अफगान इत्यादि लोक अने क्रिस्तियन धर्मना युरोपियन लोक करोडो आव्या पण हिंदु लोक ए आव्या पहेला हता तेवाज हजी छे एमने कशी खबर नथी हिंदु लोक स्वभावथी शांत छे क्रूर नथी पण अज्ञानथी घणो अन्याय करेछे सति एज बाळता कंन्याएज मारता नर वळी एज करताएमने ठेकाणे लाववाने वास्ते इंग्रेज सरकार निर्माण थयुं छे तेथी घणो सुधारो थतो जाय

छे पण हाल देशी राजा छे तेमां एक पण एमनी बराबरी अद्यापि करी शकता नथी. बधाय देशी राजा मूर्ख गणाय छे, एमने सुशिक्षा लागतीज नथी एवो कमनो योग छे.

वेदमां केटलाएक मंत्रना ऋषी क्षत्रिय अने शूद्र छे कक्षिवत् अने विश्वामित्र ए क्षत्रि हता कवष ऐलुष ए शूद्रदासी पुत्र हतो एनि कथा ऐतरेय ब्राह्मणमां छे.

केटलाएक प्राचिन आचार नरमेध, गोमेध, अश्वमेध, अनुस्तरणी, नियोग, शूलगव, दियरवटु, द्वादश पुत्र, पलपैतृक, माहाव्रत, मधुपर्क, इत्यादि अनुष्ठानो बंध थयां छे तोपण ते अनुष्ठानना मंत्र पठण अने पारायण करवामां लोक पुण्य समजे छे. मूळ विधि न थाय तो तेनो प्रत्याम्नाय करे छे बाळवामां मांसना पिंडने ठेकाणे लोटनो पिंड करे छे. त्यारे जे कर्म करवुं नही ते कर्मनी कथा अने मंत्र वांचवामां अने तेनो पर्याय करवामां पुण्य छे के नही ए विशे घणो संशय छे अने यज्ञमां पशु बहुज क्रुरपणाथी मारवां अने तेना मांसनो होम करवो, अने भक्षण करवुं ए केटलाएक लोकोने गमतुं नथी तेज प्रमाणे गोमुत्र, छांण, दुध, अने घी, एकत्र मेळवीने पीतां, देह शुद्ध थाय छे ए पण समजवाने मुषकेल छे. तेज प्रमाणे तांत्रीक मत, अति विपरीत छे, ते छानी रीते काशी इत्यादि शेहेरोमां बहु चाले छे अने शीवनी पुजाओ लिंग रुपे थायछे. ते वात वैष्णव लोको मान्य करता नथी अने लिंगनुं दर्शन के तिर्थ प्रसाद लेता नथी, काशीए जाय तो विश्वेश्वरनुं दर्शन करता नथी अने हींगळाज माता छे त्यां गोसावी लोक दर्शन करवा जाय छे पण चार संप्रदायना वैष्णव लोको जता नथी, तेनुं कारण एम बतावे छे के ए माता आगळ हींसा थाय छे

माटे अमे दर्शन करता नथी एम कहे छे. सेहेजानंदस्वामीए शीक्षा-पत्रीमां, एम लख्युं छे के जे देवने मद्य मासनुं निवेदन थाय छे, ते देवनुं दर्शन सत्संगीए करवुं नहीं, पुष्टीक मार्गवाळा मरजादी अने समर्पणीए अनन्य भक्ति करे छे. अने शिवलिंगनो तीर्थ प्रसाद लेता नथी, मध्व संप्रदाइ छे ते शिवनी मूर्ति होय तो दर्शन करे छे, अने लिंग अपूज्य गणे छे. होम हवन करवानो कुंड करे तो तेना उपर योनी चिन्ह करे छे ए पण तांत्रीक विषय छे तेज प्रमाणे चंडीपाठमां मद्य मांसनुं प्रतिपादन कर्युं छे, तोपण तेनो पाठ हवन चाले छे. तेपण वैष्णव लोको मान्य करता नथी. पशुने ठेकाणे कोळुं नारळ कापे छे, अने मंत्र जनावरनो भणे छे. तिंगले रामानुंज विधवानुं वपन करता नथी गुजराती मारवाडी ब्राह्मण यज्ञ करता नथी आ प्रमाणे केटलीए सुधारणा थती आवी छे अने केटली एक थवानी छे ते उपर आज लोको लक्ष देवा लाग्या छे. कामाक्षी देवी ए योनी भाग छे एम कहेवाय छे. पुराणमां एवी कथा छे के दक्ष प्रजापतिए पार्वती बळी मुआं त्यारे तेना ककडा करीने पृथ्वि उपर फेकी दीधा ते कोइ ठेकाणे हाथ कोइ ठेकाणे पग, कोइ ठेकाणे मुख, कोइ ठेकाणे नाभी पड्याथी ते ठेकाणे उग्र पीठ थयुं, तेमां कामाक्षी मिनाक्षी मातापुर तुळजापूर कलकता विंध्या वासीनी इत्यादि उग्रपीठ गणाय छे. जेवां शिवनां ज्योति लिंग तेवां ए देवीनां पीठ गणाय छे. पण ए बधायमां मद्य मांस खपे तेथी संन्यासी गोसांइ कानफटा नाथपंथी वाममार्गी, कौलीक, अघोरी एमनां ए मोटा धाम छे. वैष्णव लोको त्यांहां जता नथी. हाल परमार्थ प्रतिपादक शास्त्रथी लोकोने सन्मार्गे वळगाडवं एवी जेनी बुद्धि होय अने ढोंग पाखंड अने दंभनो

नाश थाय, एवी जेनी इच्छा हशे एने भूतदया, देशाभिमान, न्याया-भिमान, स्थापन करवाने वास्ते जे चाह छे तेमणे आ ग्रंथनो कांइ पण उपयोग पडशे तो आ ग्रंथ करवामां जे श्रम लीधा छे तेनुं सार्थक थशे.

आ ग्रंथमां मूळ ग्रंथनां वाक्यो लख्या छे ते कलकत्तामां अने बनारसमां जे ग्रंथ पंडितोए शुद्ध करीने छाप्या छे, ते उपरथी लीधा छे, तेनुं कारण के, तेनी मतलब लखीए, तो असलमां ते प्रमाणे छे के नहीं, एवो संशय आवे, माटे असल ग्रंथनां वाक्यो दाखल कर्यां छे तेथी ए संशय रहेशे नहीं, अने आज कळीयुग समजवुं के न समजवुं ए विशे. शास्त्रमां अंदेशो छे, पण कोई कहे के हाल कलीयुगज छे, तो बीजो प्रश्न उत्पन्न थाय छे के, कलीयुग थई रहेशे, त्यारे आ ग्रंथमां बतावेलां बधांय कर्म पुनरपि चालतां करशो, अने करीशुं, एम कहेशो तो आयुगने कळीयुग कहेवुं के, पेला युगने कहेवुं ए मोटो सवाल छे, एनो जवाब सत्य रीते कोई देशे एवी आशा छे.

आ शिवाय बीजा केटलाएक प्रश्न छे ते "आगम प्रकाश" नामनो ग्रंथ प्रगट थशे तेमां लखवामां आवशे.



निगम प्रकाश ग्रंथनी अनुक्रमणीका.

। कृष्ण यजुर्वेदांतर्गततैतिरीय ।

ब्राह्मण एने आपस्तंभ शाखानुं ब्राह्मण कहेछे तेमांना वाक्यो.

प्रकरण	विषय	पृष्ठ.
	ओळीयु.	२३
६६	आ वेद उपर भाष्यकार थया छे तेमनां नाम.	२४
६७	पशुना पाश छोडवानो मंत्र १	२४
६८	पशुने युपने बांधवानो मंत्र २	२४
६९	पशुनु प्रोक्षणना मंत्र ३-४ ५	२४
७०	वपायाग. ६	२४
७१	अश्वमेधमां अश्व अने राणीनुं संवेशन विधी ७	२५
७२	उपहासिक भाषण ८-९-१०	२५
७३	अश्वमेधनुं वर्णन ११-थी ३१ सुधी अनेक पशुनुं विधान.	२५
७४	पुरुषमेध ३२	२७
७५	पितृमेध ३३	२७
७६	पशु शब्दनो अर्थ.	२९
७७	गंगा यात्रानु फळ अश्वमेध जेवु छे	२९
७८	भरथ राजाए पण बावन अश्वमेध कर्या तेनी वेदमां तारीफ.	३०

शतपथ ब्राह्मण.

७९	एकादश पशु विधान ३	३०
८०	शतपशु विधान.	३०
	गो पशु विधान.	३०

अथर्वणवेदनुं.

८१	पशु विभाग.	३०
८२	यज्ञक्रम.	
८३	स्त्री कींवा शुद्र वेद भणवो नहीं ते विशे भागवतनुं वचन.	३१

प्रकरण	विषय	पृष्ठ.
११८	शुलगव.	५०
११९	श्राद्ध विधि.	५०

स्मृती.

पुराण.

भारत.

रामायण.

प्रकरण	विषय	पृष्ठ.

शंकर विजय.



निगमप्रकाश ग्रंथना परिशिष्टनी अनुक्रमणिका.

भारत.

विविध विषय.

निगमप्रकाशनी प्रस्तावनानी अनुक्रमणिका.

नीगम प्रकाश.



वैदीक कर्मकान्ड.

हिंदुस्तानमां प्राचीनकाळथी वेदमां लखेलो धर्म चाल्यो आव्यो छे. अने वेदना अभीमानी अने धर्माध्यक्ष जे ब्राह्मण वेदने घणुंज मान आपेछे अने केटलाएक वेदनुं पारायण करावीने सांभळेछे, ने केटलाएक मरती वखते वेदनो घोष करावेछे, अने ब्राह्मणनुं मान पण वेद भण्यार्थीज छे. भगवान श्रीकृष्ण एम बोल्या छे के:—

देवाधीनंजगत्सर्वंमंत्राधीनंचदैवतं
तेमंत्रब्राह्मणाःधीनांब्राह्मणोममदैवतं

वेदना अधीकारी ब्राह्मण बीजा कोइ वर्णने वेद भणवानो अधीकारी नथी कारण मनु कहेछे के:—

अविद्वांश्चैवविद्वाश्चब्राह्मणोदैवतंमहत्
प्रणीतश्चाप्रणीतश्चयथाग्निर्दैवतंमहत् ॥

मनु. अध्या ९ श्लोक ३१७

बीजे ठेकाणे एवुं लख्युं छे के:—

पृथिव्यांयानितीर्थानितानिसर्वानिसागरे
सागरेसर्वतीर्थानिपदेविप्रस्यदक्षिणे

आ आधारथी केटलाएक धर्म नीष्टलोक ब्राह्मणना जमणा प-

गनो अंगुठो पाणीथी धोइने ते पाणी पीएछे. ते वखत जे श्लोक बोलेछे ते नीचे मुजब:—

आधिव्याधीहरंनृणांमृत्युदारिद्रनाशनं
श्रीपुष्टिकीर्तिदंवंदेविप्रश्रीपादपंकजं ॥१॥
विप्रौघदर्शनाक्षिप्रंक्षियंतेपापराशयः
वंदनात्मंगलावाप्तिर्दर्चनाअच्युतंपदं ॥२॥
समस्तसंपत्समवाप्तिहेतवेसमुत्थितापः
कुलधूमकेतवः॥ अपारसंसारसमुद्रसेतवः
पुनंतुमांब्राह्मणपादपांसवः ॥३॥
आपद्घध्वांतसहस्रभानवःसमीहितार्थापण
कामधेनवः॥ समस्ततीर्थांबुपवित्र
मूर्तयोरक्षंतुमाब्रांह्मणपादपांसवः ॥४॥

ब्राह्मणनुं शील गुण केवा छे ते जोवानी जरूर नथी कारण:—

दुःशीलोपिद्विजःपूज्योनतुशुद्रोजितेंद्रियः
कःपरित्यज्यगांदुष्टांदुहेच्छीलवतींखरीं ॥

पाराशर धर्मशास्त्र अ० ८ श्लोक २९

ब्राह्मणने भोजन आपवानुं पुण्य शास्त्रमां बहु मोटुं वर्णन कर्युंछे.

ब्राह्मणस्यमुखंक्षेत्रंनिरूपरमकंटकं

वापयेत्सर्वबीजानीसाकृषीःसार्वकामिकी

पाराशर०अ०१ श्लोक ५५

वेदमां ब्राह्मणनुं माहात्म हेठळ लख्या प्रमाणे वर्णन करेलुंछे.

यावतीर्वैदेवतास्ताःसर्वावेदविदिब्राह्मणेवसं
न्तितस्माद्ब्राह्मणेभ्योवेदविद्भ्योदिवेदिवेनमस्कुर्या
न्नाश्लीलंकीर्तयेदेताएवदेवताःप्रीणाति ॥

तैत्तिरीये आरण्यके २ प्रपाटक १५ अनुवाक ९ मंत्र

अर्थ—सर्वदेव ब्राह्मणना शरीरमां रहेछे, माटे नीत्य ब्राह्मणनो सनमान करवो. ने तेनी नींदा न करवी. तेथी तेने आंगे रहेला देव बधा प्रसंन थायछे. बीजे ठेकाणे वळी एम लखेछे के—

ब्राह्मणोस्यमुखमासिन्

तै०आ०३ प्रपाठक १२ अनुवाक १३ मंत्र.

एटले ब्राह्मण छे, ते परमेश्वरना मुखमांथी उत्पन थया छे.

ब्राह्मणनुं कर्म अेवुं लख्युं छे केः—

वेदोदितंस्वकंकर्मनित्यंकूर्यादतंद्रितः
तद्धिकुर्वन्यथाशक्तिप्राप्नोतिपरमांगतिं

मनु०४--१४

वेदमेवसदाभ्यस्येस्तपस्तद्विजोतमः
वेदाभ्यासोहिविप्रस्यतपःपरमिहोच्यते

मनु०२--१६६

अर्थ—वेदमां लखेलुं कर्म हमेशां करवुं तेथी ब्राह्मणनी सदगती थायछे. वेद भणवो एज ब्राह्मणनुं मुख्य तप छे.

बीजे ठेकाणे एवुं लख्युं छे केः—

सत्यंसत्यंपुनसत्यंमुधृत्यभुजमुच्यते

वेदाच्छास्त्रपरंनास्तिनदेवःकेशवात्परं

अर्थ—वेदथी बीजुं शास्त्र नथी अने वीष्णु शिवाय बीजो मोटो देव नहीं ए वीचार व्यासजी कहेछे.

वेदनी जे नींदा करेछे तेमने नास्तीक गण्याछे. वेदना नाम घणांछे. १. वेद २. श्रुती. ३. छंद. ४. ब्रह्म. ५. आमनाय. ६. मंत्र. ७. त्रीवीध्या. ८. निगम. ईत्यादी. अे ग्रंथ मुख्य गणायछे. तेथी उतरता सुत्र अने संहीता आ बेने स्मृतीयो कहेछे. ए ग्रंथमां बे धर्मछे. एक प्रवृती अने नीवृती. प्रवृतीनुं बीजुं नाम कर्म कान्ड. अने नीवृतीनुं बीजुं नाम ज्ञान कान्ड ए बीशे शास्त्रमां अभीप्राय नीचे लख्या मुजबछेः—

नमांसभक्षणेदाषोनमद्येनचमैथुने

प्रवृत्तिलक्षणोधर्मोनिवृत्तिस्तुमहाफला ॥ मनु.

लोकेव्यवायामिषमद्यसेवाजंतोस्तिनित्या

नहितत्रचोदना ॥व्यवस्थितिःस्तत्रविवाह

यज्ञसुराग्रहेरासुनिवृत्तिरिष्टा ॥ भागवत ॥

सन्यासाःत्कर्मयोगश्चनिःश्रेयसकराउभौ

तयोस्तुकर्मसन्यासात्कर्मयोगोविशिष्यते ॥ गीता ॥ ५-२

यज्ञदानतपःकर्मनत्याज्यंकार्यमेवतत् ॥ गीता ॥ १८-४

ए प्रमाणे केटलाक शास्त्रमां निवृत्तिने वरीष्ट कहीछे. ने केटलाक शास्त्रमां प्रवृत्तिने वरीष्ट कहीछे. सर्व ग्रंथमां श्रुतीनु प्रमाण मोटुं गणायछे. कारणः—

श्रुतिस्मृतिपुराणांनांविरोधोंयत्रजायते
तत्रश्रौतंप्रमाणंतुद्वयोर्द्वैधेस्मृतिर्वरा ॥
पुराणश्चखल्विदंनशक्नोतिश्रुतिंस्मृतिश्चबाधितुम् ॥
श्रुति० ॥ इत्यादिव्यासस्मरणात् ॥

गोभिलियसूत्र १ प्र. ४ कांड.

जुदा जुदा युगना जुदा जुदा धर्मछे. एम समजीने कर्म कान्डने ठेकाणे उपासना कान्ड उत्पन कर्योछे तेमां बे तडछे अेक दक्षण अने बीजु वाम. ते उपरथी केटलाएक कर्मने पुर्व युगनां कर्म कहेछे. पण कळीयुगना ३६००० वर्ष सुधी पुर्वयुगनो संध्यांश गणायछे. एमानां ४९७२वर्ष गयांछे माटे बाकीनां रह्यां ते वीत्या सुधी पुर्व युगनां धर्म चालवाना तेनुं प्रमाणः—

कृतंत्रेताद्वापरंचकलिश्चेतिचतुर्युगं
दिव्यैर्द्वादशभिर्वर्षैःसावधानंनिरूपितं
चत्वारीत्रीणीद्वेचैकंकृतादिषुयथाक्रमं
संख्यातानिसहस्त्राणीद्विगुणानिशता
निच॥ सध्यांशयोरंतरेणयःकालःशतसं

ख्ययोः॥ तमेवाहुर्युगंतज्ज्ञायत्रधर्मोविधीयते॥

भागवत ३ स्कंध.

श्रीधरीव्याख्या.

युगस्यादौसंध्याअंतेसंध्यांशःउक्तानिशतानीसंख्या-
गवालंभादिधर्मविशेषोयत्रविधीयतइत्यर्थः ॥

विजयध्वजी व्याख्या.

शतसंख्ययोःसंध्यासंध्यांशयोरंतस्थोयःकालःतत्र
तत्तद्युगधर्मोविधियते

सहस्त्रमेकंवर्षाणांततःकलियुगंस्मृतं
तस्यवर्षशतंसंधिःसंध्यांशश्चततःपरम् ॥ भारत-वनपर्व.

ए प्रमाणे अन्य पुराणमां पण अेज वात लखीछे. माटे कर्मकान्ड ते शुं अे वीषे विचार उत्पंन थायछे.

हरेक कर्मने आरंभे संकल्प थायछे तेमां—

श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं

आ मुजब बोलायछे. अने अंते

तत्सत्ब्रह्मार्पणमस्तु

ए प्रमाणे ब्रह्मार्पण बोलेछे. श्रृती एटलेः—

मंत्रब्राह्मणयोर्वेदा

मंत्रसंहीता अने ब्राह्मण. ते ब्राह्मणना पेटामां कर्म ब्राह्मण अने आरंण्यक अे बे मळीनें वेद कहेछे. स्मृतिमां सुत्र अने धर्मशास्त्र सं-

होता ए बे, तेमां मुत्र एतो वेद तुल्य गणायछे तेथी उतरती स्मृतीयो तेमां मनुस्मृती मुख्य गणायछे. कारण श्रुतीमां मनुनुं वर्णन कर्युं छे ते ए प्रमाणेः—

मनुर्वैयत्किंचिदवदतद्भेषजंताया ।। छांदोग्यब्राह्मणे ॥

मन्वर्थविपरितानुयास्मृतिःसानशस्यते ।। बृहस्पतिः

वेदना मंत्रवडे करीने ब्राह्मणोने श्राप अने आशीर्वाद आपवानुं बहु मोटुं सामर्थ हतुं एवुं पुराणोमां लख्युंछे. जेमके ब्राह्मणना श्रापथी सगरराजानो वंश बळी गयो; दुर्वासना श्रापथी विष्णुने अवतार लेवा पड्या; दक्षना श्रापथी शीवनो यज्ञभाग बंध थयो; गौतमना श्रापथी इंद्र दुःख पाम्यो; मान्डव्य ऋषीना श्रापथी यमने त्रास पड्यो; अगस्तीथी समुद्र सुकाइ गयो; जन्हु ऋषीए भागीरथीने पगमां घाली; परिक्षतराजाने एक ब्राह्मणनो श्राप थयो तेथी ते सात दीवसमां मरी गयो; दशरथने श्राप थयो तेथी रामनो जन्म थयो; यादवकुळने अेक ब्राह्मणनो श्राप थयो तेथी तेओ बधा मरी गया; जमदग्नीना श्रापथी सहस्रार्जुन मरी गयो; वामनना श्रापथी बळी पाताळे गयो; नहुषराजा सर्प थयो; अने वेनराजा श्रापथी दग्ध थयो. आ प्रमाणे हजारो कथा अने ब्राह्मणनुं महात्म श्रुती, स्मृती, पुराणमां लख्युं छे. ब्राह्मणनो द्वेष न करवोः—

ब्रह्मद्वेषो कुलक्षयः

ब्राह्मणनी हत्या करवी ए महापातकमां गण्युंछे. ब्राह्मणनी मीलकत कोइ राजा कींवा चोरे लेवी नहीं. बधाए ब्राह्मणनी सेवा करी सनमान करवुं. दान करवुं ते पण ब्राह्मणने करवुं. ब्राह्मणनुं प्रतापालन

करवुं ए राजानो धर्म; पृथ्वी उपर ब्राह्मण देव गणायछे तेथी तेमने भूदेव कहेछे.

ब्राह्मणनो देह सोळ संस्कारथकी पवीत्र थायछे. अने ए संस्कार थया पछी तेने द्वीज कहेछे. द्वीज एटले फरी अवतार थएलो; पेहेला जन्मना उत्पन्न करता माता पीता अने गायत्री तथा गुरू बीजा जन्मना उत्पन्न करता; ए द्वीज थया पछी ब्राह्मणने श्रुत्युक्त कर्म एटले वेदमां कहेला कर्मनो अधीकार मळेछे. प्रथम ऋगवेदनो ऐतरेय ब्राह्मण लेइने तेमां स्वर्ग प्राप्त्यर्थ जे वीधी लखी छे तेनु नाम यज्ञ. बधा यज्ञनी प्रकृती अग्नीष्टोम अने ए प्रकृती उपरथी वीकृती घणी थायछे तेना नामोः—

सप्तसंस्था.

१ सोळशी २ अतिरात्र ३ वाजपेय
४ अत्यग्नीष्टोम ५ अप्तुर्याम ६ उक्थ ७ ज्योतिष्टोम

उत्तर क्रतु.

१ सत्र २ राजसूय ३ सर्वतोमुख ४ पौंडरीक

इत्यादि.

दाक्तर हौ साहेबे. ऐतरेय ब्राह्मण शुद्ध करीने छाप्युंछे. ते केळवणी खातामां चालेछे. तेमां यज्ञमंडपनो नकशो बतावेलोछे तेमां अग्नीनु स्थापन, ऋत्विजनु वर्णन एटले नेमणुको शी रीते थायछे ते बताव्युंछे:—ते आ प्रमाणे.

अग्नी	पुरोहित	पात्रे वस्थाने	अनुष्टाने
१ आहवनी	१ अध्वर्यु	१ इध्मा	१ *दीक्षणीयईष्टि

२ गार्हपत्य	२ प्रतिप्रस्थाता	२ बर्ही	२ प्रायणीयइष्टि
३ दक्षीणाग्नी	३ आग्नीध्र	३ धृष्णी	३ आतिथ्यइष्टि
४ शामित्राग्नि	४ उन्नेता	४ स्रुचा	४ घर्म
	५ होता	५ चमस	५ अग्निषोमिया
	६ मैत्रावरूण	६ ग्रावण	६ पशु
	७ ब्राह्मणाछंसी	७ स्वरु	७ सुत्या
	८ नेष्टा	८ उपरव	८ प्रातःसवन
	९ पोता	९ द्रोणकलश	९ माध्यानसवन
	१० आछावक	१० वायव्यकलश	१० तृतीयसवन
	११ उद्गाता	११ ग्रह	११ सोमपान
	१२ प्रस्तोता	१२ इडसुनु	१२ आश्विनपशु
	१३ प्रतिहर्ता	१३ स्वधीति	१३ ऐंद्राग्नपशु
	१४ सुब्रह्मण्य	१४ पुरोडाश	१४ अवभृत
	१५ ग्रावस्तोता	१५ पुतभृता	१५ वरूणेष्टि
	१६ ब्रह्मा	१ यज्ञशाला	१६ वपायाग
	१७ सदस्य	२ महावेदि	१७ पशुउपाकरण
	१८ शमिता	३ बहिर्वेदी	१८ पश्चालंभनं
	१९ सोमक्रयी	४ अंतर्वेदी	
		५ शामित्रशाला	
		६ चात्वाल	
		७ संचार	
		८ प्राग्वंश	
		९ सद	
		१० मार्जालिया	

११ आग्निध्रीयागार

१२ पत्नीशाला

१३ द्वार

१४ प्रतिग्वर

१५ यूप

१६ हविर्धान

१७ शालामुखी

१८ घर्म

ए प्रमाणे यज्ञनी क्रीया अने सामग्री बतावीछे. द्वीतीयपंचीकाने आरंभे एवुं लख्युं छेके:—

१ यज्ञेनवैदेवाउर्ध्वाःस्वर्गलोकमायंस्ते
बिभयुरिमन्नोदष्ट्वामनुष्याश्चऋष
यश्चानुप्रज्ञास्यंतीति

द्वितीय पंचिका प्रथम खंड

मतलब:----देवयज्ञ करीने स्वर्गे गया तेथी मनुष्य अने ऋषीए यज्ञ करवो अने युप स्थापन करवो. युप एटले यज्ञार्थ जे पशु आण्यो होय तेने बांधवानो थांभलो. पछी ते पशुने शमन करवानी आज्ञा लखीछे:—

२ दैव्याःशमितारआरभध्वमुतमनुष्याइत्याह०
उदीचीनांअस्यपदोनिधत्तात्सूर्यंचक्षुर्गमयता
द्वातंप्राणमन्ववःसृजतांदंतारिक्षमसुंदिशः

श्रोत्रपृथिवींशरीरं०

अन्वेनंमातामन्यतामनुपितानुभ्राता

सगर्भ्योऽनुसखासयुथ्यइतिजनित्रैरे

वैनंतत्समनुमतमालभंत. ६ खंड

ए प्रमाणे आ वेद मंत्रथी पशुना माबाप पासेथी आ पशु अमने आपो एवी प्रार्थना करे छे त्यार पछी अध्वर्यु जे मुख्य पुरोहित तेनी आज्ञाथी पशुने शामित्र शालामां लेइ जइने उत्तर तरफ एना पग राखीने शमीता एने मुष्टी वडे एनो जीव ले छे, त्यार पछी स्वधीती एटले सुरो अने इडा सुनु एटले लाकडाना ढीमचा उपर ते पशुने लेइ तेने फाडी तेनुं मांस कहाडे छे एनो होम करीने जे बाकी रहे तेनी बधा पुरोहीतमां वहेंचण करे छे ते निचे प्रमाणे.

३ अथातःपशोर्विभक्तिस्तस्याविभागं

वक्ष्यामो.हनुसजिव्हेप्रस्तोतुः०७पंचिका१ खंड

यज्ञ पशुने देवताओ स्वर्गमां लेइ जाय छे. ते विशे एवुं लख्युं छे के.

४ तंदेवाअब्रुवन्नेहिस्वर्गंवै.त्वा

लोकंगमयिष्वामइति २ पं ६ खंड

पशुने फाडीने एना अंग कहाडवा विशे एवुं लख्युं छे के

५ वपामुत्खिदतादंतरेवोष्माणंवारय

ध्वादिति० श्येनमस्यवक्षः कृणुता

तूप्रशसा बाहुशलादोषणीकश्यपे

वासाऽछिद्रेश्रोणीकवषोरुस्त्रेकपर्णा
ऽष्ठीवंताषडविंशतिरस्यवंक्रयस्ताअ
नुष्टयोच्चावयताद्गात्रंगात्रमस्यानुनं ६ खंड

अर्थः—छातीमांथी कबुतर जेवो गोळो काढवो अने कोहोवाडी जेवो पाछळना पगमांथी बे ककडा कहाडवा अने आगळना पगमांथी बे तीर जेवा कहाडवा, अने बे खभामांथी काचबा जेवा बे कहाडवा, अने केहेड आखी कहाडवी, अने ढींचणमांथी बे ढाल जेवा कहाडवा, अने आ पांशळीओमांथी अनुक्रमे २६ वीस ककडा कहाडवा अने ते वधा आखा थवा जोइअे अने जे कांइ मळमुत्र इत्यादीक पदार्थ निकळशे ते भोंयमा दाटवाने वीशे लख्युछे के.

६ उवध्यगोहंपार्थिवं ६ खंड

होतार हेठळ लख्या प्रमाणे बोलेछे.

७ अध्रिगोशमीध्वंसुशमीशामिध्वंशमीध्वमाध्रिगा३उ
इंतित्रिर्ब्रूयात् खंड ७

अर्थ—सारीपेठे मारो, बाकी राखशो नहीं. ए प्रमाणेछे.

रक्त राक्षसने आपवानु कह्युं छे.

८ यदस्नारक्षःसंसृजतादित्याह. खंड ७

पछी वपाहोम आ प्रमाणे लख्यो छे.

९ तस्यवपामुत्खिद्याहरांतिं
तामध्वर्युःस्रुवेणाभिधारयाह खंड १२

आ आख्यान जाणवानुं फळ एज छे के आयुष्य वृद्धि थाय छे.

१० सर्वमायुरेतियएवंवेद २ पं० ७ खंड

वपायागनुं फळ नीचे लख्या प्रमाणे लख्युं छे:—

११ वपायामेवहुतायांस्वर्गोलोकः

प्राख्यायतः २ पं खंड १३

१२ सोऽग्नेर्देवयोन्यांआहुतिभ्यः

संभूयहिरण्यशरीरऊर्ध्वःस्वर्गलोकमेति

२—१४ खंड

पशुनो वीभाग करवो ते लख्या प्रमाणे ३६ वीभाग करवा जोइए, अने एम करे ते स्वर्ग लोकमां जायछे, अने ए प्रमाणे वीभाग करवानी रीती देवभाग ऋषीए ठरावी. ते मरी गया पछी कोइ देवे गीरजा ऋषीने बतावी तेनो अभ्यास करवो ते वीशे एवुं लख्युंछे के:—

१३ तत्स्वर्गाश्चलोकानाप्नुवंति

प्राणेषुचैवतत्स्वर्गेषुलोकेषु

प्रातितिष्ठंतोयीत०एतां

पशोर्विभक्तिंश्रौतऋषिदेव

भागोविदांचकार०गिरिजा

यबाभ्रव्यायऽमनुष्यःप्रोवाच ७ पं० १ खं.

हरीश्चंद्र नामे एक राजा हतो तेने पुत्र हतो नहीं माटे वरुण देवनी आज्ञा थकी अजीगर्त ऋषीनो पुत्र शुनःशेप वेचाथी लेइने तेने

मारीने यज्ञ करवानुं धार्युं हतुं ते वीशे वीगतवार कथा वेदमां कहीछे:—

१४ हरिश्चंद्रोहवैधसऐक्ष्वाको

राजाऽपुत्रआस०७पं०खं०१३-१४-१५-१६

सदरहु ग्रंथमां जेटला यज्ञ लख्याछे ते बधायमां हींसा आवेछे. ए वीशे मच्छ पुराणमां कह्युंछे के:—

हिंसास्वभावोयज्ञस्य

आ प्रमाणे चारे वेदमां श्रेष्ट जे ऋगवेद तेनुं वर्णन थयुं. पछी कृष्ण यजुर्वेद जेने तैतीर्य कहेछे अने शुक्ल यजुर्वेद एटले जेने वाजसनीय कहेछे तेनो वीचार करीशुं. प्रथम तैतीरिय ब्राह्मण वांचतां एम मालुम पडेछे के आ वेदमां यज्ञयागनी क्रीया बहुज वधारीछे. अने यज्ञ अनुष्टानमां चारे वेदनो खप पडेछे तेमां यजुर्वेदनो खप घणो अने यजुर्वेद भणेलो जे ब्राह्मण होय तेनेज अध्वर्यु नीमवामां आवेछे. तैतीरिय ब्राह्मणमां हेठळ लख्या प्रमाणे लख्युंछे के:—

१ दैव्याःशमितारउतमनुष्याआरभध्वं

३ कांड ६ अध्याय ६ अनुवाक

२ अध्रिगोशमीध्वमूसुशमीशमीध्वम्

शमिध्वमध्रीगो ३-६-६

सायनाचार्यभाष्य

३ क्रुरंकर्मेतिमत्वातदुपेक्षणंमाभू

दितिपुनःपुनर्वचनम् ॥

जे प्रमाणे ऋगवेद ब्राह्मणमां पशु मारवाने साRू आज्ञा लखीछे तेज प्रमाणे उपरना वेदवाक्यमां लखीछे. तेनो मतलब के आ नीर्दयपणानुं काम छे तोपण अवश्य करवुं. बीजां वाक्यो नीचे लख्या प्रमाणे मळेछे:—

४ द्यावापृथिव्यांधेनुमालभन्ते
वायव्यंवत्समालभन्ते

१ कांड २ अध्याय ५ अनुवाक.

५ एषगोसवः २---७---५

६ प्रजापतिपशूनसृजत। एतेनवैदेवाजत्वानि
जित्वा। यंकाममकामयन्तमान्पुवन् २-७-१४

७ प्राजापत्योवाअश्वः। यस्याएवदेवतायाः
आलभ्यते। तयैवेन १समर्धयति ३-८-३

८ यदेनूएकादशिनाःपशवाआलभ्यंते ३-९-२

९ नानादेवत्याःपशवोभवंति। आरण्यान्
लोकादशीनआलभ्यन्ते। अस्मैवैलोकाय
ग्राम्यापशवआलभ्यन्ते॥ ३-९-३

१० ग्राम्या१श्चारण्या१श्चउभयान्पशुनालभंते३-९-३

११ तेजसावाएषब्रह्मवर्चसेव्यृध्यते।
योअश्वमेधननयजते।

१२ यदजावयश्चारण्याश्चएतेवैसर्वे
पशवः।यद्गव्याइति । गव्यान्पशु
नुतमेहन्नालभते ॥ ३-९-९

१३ शुनःश्चतुरक्षस्यप्रहन्ति ।
सैध्रकमुसलभवति । ३-८-४

१४ पशुभिर्वाएषव्यृध्यते । योअश्वमेधेन
यजते। छगलंकल्माषंकिकिदिवं
विदिगयमिति। त्वाष्ट्रान्पशूनालभते । ३-९-९

१५ तानेवोभयान्प्रीणाति ३-९-१०

१६ ब्राह्मणेब्राह्मणमालभते ३-४-१

१७ यदष्टादशेनआलभ्यंन्ते ३-९-१

अर्थ—द्यावा पृथ्वी देवताने वास्ते धेनु एटले गायनो यज्ञ थाय छे. वायु देवताने वास्ते वाछडानो यज्ञ थायछे. आ प्रमाणे गायनो यज्ञ थायछे. प्रजापती देवे पशुने उत्पन्न कर्यां ते पशु लेइने बीजा देवे यज्ञ कर्या तेथी तेमनी मनकामना पूर्ण थई छे. प्रजापती देवताने घोडो योग्य पशु छे माटे ए देवताने सारु घोडानो वध थाय छे ए तेम करवाथी समृद्धी मळेछे. एकादश एटले अगीआर पशुनो पण यज्ञ थायछे. अनेक प्रकारना देवछे तेमने अनेक प्रकारनां पशु यज्ञमां अपायछे. अरण्य पशु दश पण थायछे. ग्राम्य पशु पण यज्ञमां आवेछे. गाममां तथा वगडामां बन्ने ठेकाणे रहेनारा पशु यज्ञने

सारू वध करवा योग्यछे. अश्वमेध यज्ञ जे करेछे तेनुं तेज वधेछे. वगडानां पशु लेइने यज्ञ करवो ते करतां गाय वीशेश योग्यछे माटे सारो दिवश होय ते दिवशे गायज लेवी. कुतरू लाकडीथी मारीने अश्वना पग तळे नाखवुं. जे अश्वमेध यज्ञ करेछे तेना घरमां पशुनी वृद्धी थायछे. बकरानुं बच्चुं, तीतर पक्षी, धोळो बगलो, अने काळां टपका वाळा घेटा. ए सघळां त्वष्टा देवताने सारू यज्ञमां लेवायछे. तेणे करीने आ लोकमां तथा परलोकमां सुख मळेछे. ब्रह्म देवताने सारू ब्राह्मणनो पण यज्ञ थायछे. अराढ पशुनो पण यज्ञ थायछे. यजुर्वेदना ब्राह्मणनी अनुक्रमणिका जोतां नाना प्रकारना यज्ञवीधी मालुम पडेछे तेमांथी केटलाएक प्रकरण नीचे दाखल कर्यांछे.

संस्कृत नाम.	अर्थ.
१ सौत्रामणी.	१ मद्यनो यज्ञ.
२ सुराग्रहण मंत्र.	२ मद्य पीवानो मंत्र.
३ ऐंद्रपशु.	३ इंद्र देवताने वास्ते बकरानो वध करवो.
४ गोसव.	४ गायनो यज्ञ.
५ अत्पुर्याम.	५ एक प्रकारना यज्ञनु नाम छे.
६ वायवीयश्वेतपशु.	६ वायु देवताने सारू बकरानो वध.
७ काम्पपशु.	७ मनोरथ पूर्ण थवाने सारू पशु यज्ञ.
८ वत्सोपाकरणं.	८ वाछडानो वध करवानो.
९ पौर्णमासेष्टि.	९ पुनमने दिवशे करवानो यज्ञ.
१० नक्षत्रेष्टि.	१० नक्षत्रदेवताने वास्ते करवानो यज्ञ.
११ पुरूषयज्ञ.	११ मनुष्य यज्ञ.

१२ वैष्णवपशु.	१२ वीष्णु देवताने सारू बकरानो यज्ञ.
१३ ऐंद्राग्र पशु.	१३ इंद्राग्नी देवतानेसारू बकरानो वध.
१४ सावित्रपशु.	१४ सूर्य देवने सारू बकरानो वध.
१५ अश्वमेध.	१५ घोडानो यज्ञ.
१६ रोहितादिपश्वालंभन.	१६ लाल बकरा वीगेरे पशु यज्ञ.
१७ अष्टादशपशुविधानं.	१७ अराढ पशुनो यज्ञ.
१८ चातुर्मास पशु.	१८ चातुरमासनामना यज्ञमां बकरानोवध.
१९ एकादशानि पशु विधान.	१९ अगीआर पशुनो यज्ञ.
२० ग्राम्यारण्य पशु प्रशंसा.	२० वगडानां तथा गामनां पशुनो यज्ञ.
२१ उपाकरण मंत्र:	२१ पशुनो संस्कार.
२२ गव्यपशु विधान.	२२ गायनो यज्ञ.
२३ सत्र.	२३ बहु दिवश सुधी चालवानो यज्ञ.
२४ ऋषभालंभविधानं.	२४ बळद मारवानो वीधी.
२५ अश्वालंभ मंत्र:	२५ घोडो मारवानो मंत्र.
२६ अश्वसंज्ञपनं.	२६ घोडो मारवानी वीधी.
२७ अश्व मनुष्य अजा गो पशु प्रशंसा.	२७ घोडो, मनुष्य, बकरो, गाय, आ बधांनो यज्ञ वीधी.
२८ आदित्य देवताक पशु.	२८ सूर्य देवताने सारू पशु.
२९ सोमसव.	२९ सोम देवताने सारू यज्ञ.
३० ब्रहस्पति सव.	३० ब्रहस्पती देवतानो यज्ञ.

उपर प्रमाणे अनेक यज्ञ याग, ईष्टी, मख, क्रतु, उत्तरक्रतु, सव. ईत्यादी अनेक प्रकारना याग वेदमां बताव्याछे ते बधायमां पशुनी हींसा अने मांस भक्षण प्राप्त थायछे. कोई कहेशे एम के हींसानो भाग जूदो

कहाडीशुं अने अ हींसानो भाग जूदो कहाडीशुं, तो हींसानो भाग कहाडेथी बीजुं कांइज रहेवानु नथी; कारण जेमां हींसा नथी एवो बीलकुल कोइ भाग छेज नहीं. पशुने मारवाने ठेकाणे वेदमां पांच शब्द वपरायछे:—

आलभन करण उपाकरण शमन संज्ञपन

सुरतना यज्ञेश्वर शास्त्रीए आर्य वीद्या सुधाकर नामनो ग्रंथ छापा थोडा दिवश उपर प्रसिद्ध कर्यो छे तेमां अनेक प्रकारना यज्ञवीधी, पशुयाग, अंगछेदन, ईत्यादि वेदमां लख्या मुजब बताव्युं छे तेमां आलभन शब्दनो अर्थ लख्योछे ते नीचे प्रमाणे:—

उपाकरणंनामदेवकर्मोपयोगी
त्वसंपादक:पशो:संस्कारविशेष:
एतदादीसंज्ञपनपर्यंत:क्रीयाक
लापआलभनशब्देनाभिधीयते२ प्रकाश८१पृष्ट

अर्थ—देवताने अर्थे पशुनो संस्कार करीने वध करतां सुधी जे जे क्रीया थायछे ते सर्वेने आलभन कहेछे:—

नरमेधनु कर्म ज्यां वेदमां लख्युंछे तेमां अनेक प्रकारना, अनेक जातीना, अनेक स्वरूपना, अनेक धंधाना बसे दश माणस (२१०) लख्यांछे, ते बधा युप एटले खीले बंधायछे अने तेमनुं प्रोक्षण पुरूष सुक्त मंत्रथी करवानुं लख्युंछे. केटलेक ठेकाणे पशु बांधीने छोडी देवो के जेने उच्छर्ग कहेछे, तेम पण लखेलुंछे. परंतु ए गौण पक्ष छे, मुख्य पक्ष नथी. केटलेक ठेकाणे वीकल्पे करीने लखेलुंछे पण मळवेदना मंत्रमां "आलभन" एज शब्दनो प्रयोगछे तेथी मुख्य प-

क्षहिंसा जणायछे. ए प्रमाणे यजुर्वेदांतर गत तैतीर्य शाखाना ब्रा-
ह्मण जेमां संहिताना मंत्रनो विनियोग लख्योछे ते तपासतां सदरहु
मुजब मालुम पडेछे. हवे एज शाखानो आरंण्यक दस अध्यायछे
तेनां नाम जूदां जूदांछे. पांच उपनीशद गणायछे अने पांच कर्मोप
नीशद गणायछे. तमांनो छठो अध्याय पित्रमेध वीशेछे. तेमां ब्राह्मण
क्षत्री अने वैश मरी जाय त्यारे शी रीते बाळवो तेनो वीधी लख्योछे.ते
उपर भारद्वाज तथा बौधायन सुत्रछे तेमां एअध्यायमां जे जे मंत्रछे
तेनो उपयोग बतावेलोछे. तेमां वळी एम लख्युंछे के प्रेतनी जोडे
एक गाय मारीने तेनां अंग प्रेतना अंग उपर मुकवां अने पछी चीता
सळगाववी. अने प्रेत गाडामां घालीने अथवा शुद्रने खभे उचकावीने
लेई जवुं अने ए मरनार पुरूषनी बायडी पण स्मशान सुधी लेइ जवी
अने तेने एम कहेवुं के तारो धणी मरी गयो माटे तारे पुनर्विवाह क-
रवानी मरजी होय तो सुखेथी करजे ए प्रमाणे उपदेश करी पाछी
लाववी एम लख्युंछे. आ ग्रंथ ऊपर शायनाचार्यए भाष्य कर्युंछे.
तेमां तपसीलवार वेदनां सुत्र मेळवीने अर्थ करेलोछे. माणस मरी
गयापछी तेना बारमाने दिवशे जव तथा बकराना मांसनुं भक्षण म-
रनारना संबंधीने करवानुं लख्युंछे. आ पुस्तक वेदनां बधां पुस्तक
करतां वधारे पवीत्र गणायछे. बइरीओने काने एनो एक पण शब्द
पडवा देवामां आवतो नथी अने कोइ एकांत स्थळमां जंगलमां भणवामां
आवेछे. बइरीओ तेमज शुद्रने काने पण पडवा देता नथी. सभामां
ब्राह्मणो ज्यारे भेगा थायछे त्यारे संहीता भणेछे परंतु आरंण्यक भ-
णाय नहीं. पीत्रमेधना अध्यायमां जे गाय बाळवानी लखीछे तेनुं
नाम नीचे मूजबछे:—

राजगवी. अनुस्तरणी. सयावरी.

आ अध्यायमांना केटलाक मंत्र भाष्यसहीत नीचे दाखल कर्याछे:—

१ परेयुवांसंप्रवतो. ।। ६ प्र० तै. आ.

भाष्य.

पितृमेधस्यमंत्रास्तुदृश्यंते ऽस्मिन्प्रवाठके पितृमेध मंत्राणांविनियोगोभरद्वाजकल्पेबौधायनकल्पेचाभिहितः

२ अपैतदूहयदिहाबिभःपुरा ।।

भाष्य

कल्प. दासाःप्रवयसोवहेयुःअथैनंअनसावहंति त्येकेषां ।।

३ इमौयुनज्मितेवन्हिअसुनीथायवोढवे ।।

भाष्य

इमौबलिवर्दौशकटेयोजयामि.

४ पुरुषस्यसयावरीवितेप्राणमसिस्रसां ।।

कल्प. अथास्याःप्राणान्विस्रंसमानाननुमंत्रयतेहेपुरुषस्य सयावरी-राजगवीतवप्राणांशिथीलकृतवानस्मि- पितृन्उपेहिअस्मिन्लोकेप्रजयापुत्रादिकयासह क्षेमंप्रापय.

कल्प. अत्रराजगवीउपाकरोति-भुवनस्यपतेइतिजरवीं

मुख्यां,तज्जघन्यांकृष्णांकृष्णाक्षींकृष्णबालां,कृष्ण
खुरामपि,वा,अजां,बालखुर,मेवकृष्ण,एवंस्यादिति।
पाठस्तु । तस्यांनिहन्यमानायांसव्यानिजानून्यनु
निघ्नंतः ।

५ उदीर्ष्वनार्यभिजीवलोकं ।

भाष्य-हेनारीत्वउत्तिष्ठ.त्वंदिधिषो.पुनर्विवाहेच्छोपत्युःजनि-
त्वंजायात्वंसम्यक्प्रान्युहि ॥

६ अपश्यामयुवतिमाचरन्तीं ।। ६ प्र० १२ अनुवाक
राजगव्याहननमुत्सर्गश्चेतिद्वौपक्षौ-तत्रहननपक्षेमं
त्राःपुर्वमेवोक्ता : अथोत्सर्गपक्षेमंत्राउच्यंते

७ अजोसि० द्वेषांसी

८ यवोसि०द्वेषांसी.

सदरहु पुस्तक तपाश्या पछी माध्यंदिनी शाखानी संहिता चाळीस अध्यायनीछे तेनी जोडे चौद अध्यायनुं शतपथ ब्राह्मण छे. ते तपाशीये. एम कहेवायछे के व्यासजीए बधा वेदना मंत्र भेगा करीने तेमना त्रण ग्रंथ बांध्या. एकनु नाम ऋगवेद संहीता. ते सुमंतु ऋषीने आपी. बीजानु नाम यजुर्वेदनी संहीता ते वैशंपायन ऋषीने आपी. तेमनी पासे एक याज्ञवल्क्य. नामनो शीष्य हतो ते तथा सदरहु ऋषी लढ्या तेथी याज्ञवल्क्ये सुर्यनी उपासना करीने

नवो वेद रच्यो तेनुं नाम शुक्ल यजुर्वेद शतपथ ब्राह्मणमां छेलु वाक्य नीचे प्रमाणे छेः—

१ आदित्यानीमानिशुक्लानियजूंषिवाजसनेयेनयाज्ञवल्कीयेनाख्यायंते | श० ब्राह्मणे १४ अ०

आ वेदनी संहितामां चाळीस अध्याय छे तेनी अनुक्रमणिका.

आ ग्रंथ उपर चार भाष्य थयां छे एक महीधर--बीजुं उव्हट— त्रीजुं सायन—चोथुं कर्क. आ शिवाय द्विवेदांग अने देवयाज्ञिक ए बे बीजां छे एम कहेवायछे. आ ग्रंथमांथी केटलांक वाक्यो नीचे लख्यांछे.

१ ऋतस्यत्वादेवहविःपाशेनप्रतिमुंचामिधर्षामानुषः

६ अध्याये

हेदेवहविःदेवानांहविरूपयज्ञस्यपाशेनत्वांप्रतिमुंचामि। एवंपशुसंबोध्यशमित्रेसमर्पयति । व्यामद्वयपरिमिताया कुशकृतयारज्वानागपाशंकृत्वाशृगंयोरंतरालेपशुंछागं बध्नातिपाशंप्रतिमुंचेदितिसूत्रार्थः ॥ महीधरवेददिपे

२ देवस्यत्वासवितुः० ६ अ०

युपेपशुंबध्नातिइतिसुत्रार्थः

३ अग्नीषोमाभ्यांजुष्टंनियुनज्मि ।। अग्निषोमदेवताभ्यां जुष्टंमाभिरूचितंपशुंनियुनज्मिनिबध्नामि

४ अदभ्योस्त्वौषधीभ्योऽनुत्वामाता ०पशुंप्रोक्षणीभिःप्रोक्षतीति । मेध्यंकरोति

५ वाचंतेशुंधामि । प्राणंतेशुंधामि ०पत्निमृतस्यपशोः प्राणान्मुखादीन्यष्टौप्राणायतनानिप्रतिमंत्रंशुंधति । अद्भिः स्पृशति

६ घृतेनद्यावापृथिवी०

वपामुत्खिद्य-द्यावापृथिवीऽइति । पशूदरावतूवपांनिष्काश्यआछादयेत् ।

७ ताउभौचतुरःपदःसम्प्रसारयाव०॥२३अ०२०मंत्र एवंसंवेशनप्रकारः। अधिवासेनप्रछादयतिअश्वमहिष्यौ। अध्वर्युर्वदति। हेअश्वमाहिष्यौयुवांस्वर्गेलोकेअस्यायज्ञभूमौआछादयतम्अश्वाशिस्नमुपस्थेकुरुतेवृषावाजिति। महिषिस्वयमेवाश्वशिश्नमाकृष्यस्वयोनौस्थापयति

८ उत्सक्थ्याअवगुदं०

९ यकासकौशकुंन्त०

१० माताचतेपिताचतेग्रं०॥ २३ अ०

इत्यादिआश्लीलभाषणं

११ अश्वस्तुपरोगोमृगस्तेप्राजापत्याः॥ २४ अ०

अश्वमेधिकानांपशूनांदेवतासंम्बन्धविधायिनोऽध्यायेनोच्यन्ते।।तत्राश्वमेधेएकविंशतिर्यूपाःसन्ति-तत्रमध्यमोयूपोसप्तदशपशवोनियोजनीयाः। शतत्रयसंख्याकानांपशूनांमध्येपंचदशपंचदशपशूनेकैकस्मिन्यूपेयुनक्ति।

१२ रोहितोधूम्ररोहितःकर्कन्धुरोहितस्ते

रोहितःसर्वरक्तः। धुम्रवर्णःइत्यादिपशुवर्णनं

१३ शुद्धवालःसर्वशुद्धवालो०

शुभवालःमणिवर्णकेशःइत्यादि

१४ पृश्निस्तिरश्चीन०

विचित्रवर्णा ।

१५ कृष्णग्रीवाआग्नेयाः

कृष्णग्रीवाःइत्यादिआग्नेयाः

१६ उन्नतऋषभोवामनस्त०

उच्चऋषभःत्रयऐंद्रावैष्णवाः

१७ कृष्णभौमा०

१८ धूम्रान्वसंतायालभते०

१९ अग्नयेऽनिकवतेप्रथमजालभते०

२० धूम्राबभ्रुनिकाशाःपितृणां०

इत्यादिपशवः

२१ वसंतायकपिंजलानालभते०

अथारण्याःपशवउच्यन्ते. कपिंजलादिस्त्रयोदश

२२ सोमायहँसानालभते०

२३ अग्नयेकुटरूनालभते

२४ सोमायलबानालभते०

२५ भूम्याऽआखुनालभते०

२६ वसुभ्यऋश्यानालभते०

२७ इशानायपरस्वतआलभते०

२८ प्रजापतयेपुरुषान्हस्तिनालभते०

२९ ऐण्यन्होमण्डूको

३० श्वित्रआदित्यानामुष्ट्रो

३१ खड्गोवैश्वदेवः

एवंषष्ट्यधिकंशतद्वयमारण्याःसर्वेमिलित्वाषट्शतानिनवाधिकानिपशवोभवन्ति. तेष्वारण्याःसर्वेउत्स्रष्टव्यानतुहिंस्याः ॥

३२ देवःसवितःप्रसुवः ३० अ०

इतउत्तरंपुरुषमेधःचैत्रशुक्लदशम्यारंभःअत्रयूपैकादशिनिभवति। एकादशाग्निषोमियाःपशवोभवन्ति।

तान्नियुक्तांपुरुषांसहस्रशीर्षापुरुषइतिआलंभनक्रमेण यथादेवतंप्रोक्षणादिपर्याग्निकरणानंत्तरइदंब्रह्मणइत्येवंसर्वेषांयथास्वस्वदेवतोद्देशेनत्यागःततःसर्वान्यूपेभ्योविमुच्योत्सृजति। ततःएकादशिनैःपशुभिःसंज्ञपनादिप्रधानयागांसंकृत्वा। सन्यसेत् ॥ अथवागृहंव्रजेत्। महीधर

३३ वहंवपाजातवेदः ३५ अ० २० मंत्र

मध्यमाष्टकागोपशुनाकार्यातस्याधेनोर्वपांजुहोति-वहंवपामंत्रेण.

अर्थ—उपर लखेला पेहेला मंत्रमां पशुने डाभनी दोरीथी थांभले बांधवो, अने पछी शामीत्रने सोंपवो. पशु छे ते देवनुं भक्षण छे एम कहेलुंछे. बीजा मंत्रमां सदरहु मुजबज बतावेलुंछे. त्रीजा मंत्रमां अग्नी षोमदेवताने पशु बहु भावे छे एम लखेलु छे. चोथा मंत्रमां पशु उपर पाणी छांटी प्रोक्षण करवानुं लख्युंछे—पांचमा मंत्रमां पशु मरी गया पछी यज्ञ करनारनी स्त्रीने हाथे मार्जन करवानु लखेलुं छे. छठा मंत्रमां पशुनी वपा एटले काळजु कहाडी ते उपर घी चोपडी तेनो होम करवानुं लख्युं छे. सातमा मंत्रमां अश्वमेध यज्ञमां वध थयेलो घोडा तथा राणी बंनेने वस्त्र ओराढी ढांकवानुं लख्युं छे. आठ, नव, दशमा मंत्रमा राणी तथा गोरनी वचे मशकरी तरीके भाषण लख्युं छे. ते तथा सातमा मंत्रमां जे प्रकार लख्यो छे. ते बहु बीभीत्छ छे तेनो अर्थ लखवा योग्य नथी माटे जेने चीकीच्छा होय तेणे वेदना मंत्र तथा ते उपरनुं भाष्य कहाडीने जोवुं. अगीयारमाथी ते एकतरीसमा मंत्र सुधी. (६०९) छसो नव अश्वमेधमां बीजां पशु जोइए. तेनां नाम लख्यां छे तेमां अनेक रंगना बकरां अने बळद. तरेह तरेहनां पक्षी तथा बीजा नाहाना जीव. उंदरडा तथा देडका, उंट. तथा गेंडा इत्यादी सर्व जातनां पशुनो वध करवानुं लख्युं छे. ते पैकी--२०७--वगडानां जीव छे ते छोडी देवा एवुं भाष्यकार महीधर पंडीते लख्युं छे. बत्रीसमा मंत्रमां नरमेध चैत्र शुध १० थी करवानो लख्यो छे. तेमां पशु बांधवाना अगीआर थांभला रोपवा ने तेणे अगीआर बकरां तथा बसो माणस बांधीने तेनुं प्रोक्षण, स्नग, नैवेदन करीने जे माणस बांध्या होय तेमने छोडी देवा, अने अगीआर बकरां जे रह्यां तेमनो वध करीने तेनो होम करवो एम एज भाष्यकार लखे छे. तेत्रीसमा मंत्रमां माणसने ब्राह्मणनी बलते 'गा-

मनी वपा एटले काळजानो होम करवानुं लख्युं छे. आ अनुष्ठाननुं नाम पितृमेधः—

जे ठेकाणे पशु शब्द आवे छे ते ठेकाणे तेनो अर्थ बकरो करवो. एवुं यज्ञेश्वर शास्त्रीए आर्यविद्या सुधाकर ग्रंथमां बताव्युं छेः—

यत्रपशुसामान्योक्तिस्तत्र छागःपशुर्ग्राह्योभवति पृ० ८९

यज्ञनुं पुण्य बहु मोटुं छे एवुं बधा शास्त्र तथा पुराणमां वर्णन कर्युं छे. जे ठेकाणे कंइ पण पुण्य कर्मनुं वर्णन करवुं होय ते ठेकाणे यज्ञनी तुलना लखी छे. जेमके अनाथप्रेत संस्कार करे तेने अनेक यज्ञनुं फळ मळे छे. सो यज्ञ करे तेने इंद्रनुं राज्य मळे छे. तेथी इंद्रनुं नाम शतक्रतु पड्युं छे. यज्ञ करतां अश्वमेधनुं फळ बहु मोटुं छे. गंगानी जात्राए जाय तेने डगले डगले अश्वमेधनुं पुण्य लख्युं छे.

पदेपदेयज्ञफलमनुपूर्व्यांलभंतिते । पाराशर ३-४०

पूर्वे भरतराजा थइ गया तेना नामथी आ देशने भरतखंड कहे छे. तेणे पचाश ने पांच अश्वमेध यज्ञ कर्या एवी वात ऋगवेदना ऐतरेय ब्राह्मणमां लखि छेः—

भरतोदौष्यंतिर्यमनामनुगंगायावृत्रघ्नेत्रभात्पंचपचाशतंहयान् । महाकर्मभरतस्यनपुर्वेनापरेजनाः।-पं०२ ३खंड

सिवाय रामचंद्रजीए ब्रह्महत्यानुं पाप कहाडवा सारु अश्वमेध कर्यो तेज प्रमाणे पान्डवोए अश्वमेध यज्ञ कर्यो तेनो इतिहास रामाश्वमेध तथा जैमिनी अश्वमेध ए बेमां लख्यो छे. आवी कथाओ अनेक ठेकाणे पुराणोमां मालुम पडे छेः—

यजुर्वेदनुं शतपत ब्राह्मण छे अने ते ऊपर कात्यायनी सुत्र छे ए बे ग्रंथ बहु मोटा माहाभारत जेवा छे. तेमां तमाम यज्ञक्रीया बतावेली छे. तेनुं तारण कहाडतां पार आवे एवो नथी तेमांना एक बे वाक्य नीचे लख्यां छेः—

१ पंचचित्तयःस्तद्यपशुशीर्षाण्युपधाय
२ श्चितिःश्चिनोत्येतैरेवतच्छिर्षाभिरेतानिकुसिन्धानिसंदधाति । ६ अध्याय १-४-११
३ यदैकादशिनान्पशूनालभते-१३ अ १-१४-२
४ शतमालभते- १३ अ० १-१४-४
५ गव्याउत्तमेहन्नालभत १३ अ २-७-३

एज प्रमाणे सामवेदनी संहिता अने तेने जोडेला आठ ब्राह्मणमां यज्ञ क्रीया लखेली छे. माटे ए वीशे वीशेष लखवानी जरुर नथीः—

चोथो वेद अथर्वण अने तेने जोडेलुं ब्राह्मण गोपथ ब्राह्मण आ बे ग्रंथमां एवोज वीषय छे. अने घणुं करीने एक वेदना मंत्र बीजा वेदमां ए मुजब सेळभेळ थयेलुं छे. ते बतावावाने वास्ते गोपथ ब्राह्मणमांथी बे वाक्य नीचे लख्यां छेः—

१ अथातःसवनीयस्यपशोर्विभागंवक्ष्यामः

३ प्र० १८ खडं.

२ अथातोयज्ञक्रमाःअग्न्याधियमग्नाधीयात्पूर्णाहुतिः। पूर्णाहुतेरग्निहोत्रमग्निहोत्राद्दर्शपौर्णमासौ ।दर्शपौर्ण

मासाभ्यामाग्रयणं। आग्रयणाश्चातुर्मास्यानि । चातुर्मास्येभ्यःपशुबन्धः। पशुबधाग्निष्टोमौ। अग्निष्टोमाद्राजसूयो। राजसूयाद्वाजपेय। वाजपेयादश्वमेधः। अश्वमेधात्पुरूषमेधः।पुरूषमेधात्सर्वमेधः। सर्वमेधादक्षिणावन्तो ।दक्षिणावज्योदक्षिणाअदक्षिणा। सहस्रदंशिणेप्रत्यातिष्ठंस्तेवाएतेयज्ञक्रमः॥

५ प्र० ७ खं०

ऊपर लख्या प्रमाणे यज्ञनो वीस्तार बतावेलो छे ते घणुंकरीने एकना एक प्रमाणे चारे वेदमां छे शाखानो भेद कींवा वेदना भेदथी कर्ममां थोडो फरक परचुरण बाबतमां पडे छे ते एवो के एक कहेछे के घीनुं वासण जमणी बाजु मुकवुं ने बीजा कहेछे के घीनुं वासण डाभी बाजु मुकवुं ने एक कहेछे के उभो रहीने मंत्र भणवो ने बीजो कहे छे के बेसीने भणवुं आवी परचुरण बाबतोमां ब्राह्मणोनो घणो आग्रह असलथी पडेलो छे माटे एक शाखाना ब्राह्मण जेने चरण केहेछे ते बीजी शाखानुं कर्म करता नथी असलमां शाखा एक एक प्रदेशमां हती पण दुषकाल, आवर्षण, राजक्रांती, परचक्र, युद्द, दंगा, अने परदेशमां पेट भरवाने वास्ते जवानी इछा ईत्यादी कारणोनी एक एक ठेकाणे अनेक शाखाना लोक भेगा थई गयाछे ब्राह्मण सीवाय बीजा कोईने वेद भणवानो अधीकार नथी.

स्त्रीशूद्राद्विजबधूनांत्रयीनश्रुतिगोचरः॥ भागवत

मूळ वेदना मंत्र अनेक रूषी पासे हतां ते बधाव्यासजीए भे-

गा करीने चार वेदनी संहीता बांधी अने पोताना जे शीष्य हता ते चार जणाने अकेकी वेंची आपी तेना नाम.

१ पैल	वैशंपायन	जैमिनि	सुमंतु
२ ऋगवेद	यजुर्वेद	सामवेद	अथर्ववेद
३ ऐतरेय	तैत्तिर्य	तांड्य	गोपथब्राह्मण
८ भेद	८६ भेद	१००० भेद	९ भेद

ते एक एक आचार्यना पेटामां अनेक भेद उपर बताव्या प्रमाणे थया तेनी संख्या प्राचीन ग्रंथमां लखी छे, ते प्रमाणे हाल जोवामां आवता नथी पण हाल जे शाखा मळे छे तेना नाम

१ ऋग्वेद	१ सांख्यायनि	२ शाकल	३ बाष्कल
	४ आश्वलायनि	५ मांडुक.	
२ यजुर्वेद कृष्ण तैतीर्य	१ आपस्तंब ४ सत्याषाढ	२ हिरण्यकेशी ५ बौधायनी	३ मैत्राणी
२ यजुर्वेद शुक्ल वाजसनेयी	१ कण्व	२ माध्यंदिनी	३ कात्यायनी
३ सामवेद	१ कौथुमी	२ राणायणी	३ गोभिल
४ अथर्ववेद	१ पिपलाद	२ शौनकी	

एक एक शाखाना जे आचार्य थई गया तेमने पोतानी शाखाने वास्ते एक एक सूत्र बांध्युछे ते प्रमाणे ते शाखाना ब्राह्मण कर्म करे छे तेथी हरेक ब्राह्मणने नाम थाय छे तेनी तपसील.

१ नाम	२ उपनाम	३ गोत्र	४ प्रवर	५ सूत्र	६ वेद	७ शाखा
दामोदर	पंड्या	कपि	आंगीरस आमहीयव रुक्षयस	सांख्यायन	ऋग्	सांख्यायन

८ मत	९ कुलदेव	१० ज्ञाति
स्मार्त	शिव	नागर

आ दश सीवाय न्याती भेदथी ब्राह्मण वर्णना पेटामां ज्ञातीनुं नाम, नागर, अवदीच, चीतपावन, गौड, द्रविड, इत्यादि थायछे.

वैशंम्पायन ऋषी अने याज्ञवल्क्य ऋषी लढ्या तेथी यजु वेदमां शुक्ल यजुर्वेद उत्पन्न थयो तेमां १७ शाखाओ छे तेमनु नाम वाजसनीय पड्युं छे तेमांना पंदरनुं ठेकाणु नथी अने बे हाल चाले छे तेनुं नाम कण्व अने मांध्यंदिनी

वेदना ग्रंथ हेठळ लख्या प्रमाणे छे.

१ संहिता. २ ब्राह्मण. ३ अरण. ४ उपनिषद. ५ परिशिष्ट

एमां चार अने पांच प्रकारना ग्रंथमां भेळ बहु थई छे जेने वेद-नो आधार जोइतो हतो तेणे आ ग्रंथ नवा बनाव्या छे एनो दाख-लो अल्लोपनिषद. ए अकबर बादशाहाए करावेलुं छे.

ऋग्वेदसंहिता

अ० २ अ० ३ वर्ग ७।८।९।१०।११।१२।१३

अश्वमेध।दीर्घतमाऔचथ्यः। त्रिष्टुप् ।

एषछागपुरोअश्वेनवाजिनापूष्णोभागोनीयतेविश्वदेव्यः ॥

यदश्वस्यक्रविषोमक्षिकाशयद्वास्वरौस्वधितौरिप्तम

स्ति ॥ यद्धस्तयोःशमितुर्यन्नखेषुसर्वातातेअपिदेवेष्वस्तु॥

यदूवध्यमुदरस्यापवातियआमस्यक्रविषोगंधोअस्ति ॥सु

कृतातछमितारःकृण्वंतूतमेधंशृतपाकंपचंतु ॥

चतुःस्त्रिंशद्वाजिनोदेवबंधोर्वंक्रीरश्वस्यस्वधितिःसमेति ॥अछिद्रागात्रावयुनाकृणोतपरुष्यरुरनुघुष्याविशस्त॥
सुगव्यंनोवाजीस्वश्व्यंपुंसःपुत्रांउतविश्वापुषंरयिं ॥
अनागास्त्वंनोअदितिःकृणोतुक्षत्रंनोअश्वोवनतांहविष्मान्॥
अजःपुरोनीयतेनाभिरस्यानुपश्चात्कवयोयंतिरेभाः॥
उपप्रागात्परमंयत्सधस्थमर्वांअछापितरंमातरंच ॥
अद्यादेवाञ्जुष्टतमोहिगम्याअथाशास्तेदाशुषेवार्याणि ॥

अर्थ—घोडाना आगळ आ बकरो पुषा. अने बीजा देवाने वास्ते लाव्योछे. आ घोडानुं जे कंइ मांस मांखीओ खाशे अने जे कंइ छराने वळगी रेहेशे अने जे कंइ अश्वने मारनारना नखमां रेहेशे ते अश्वने साथ स्वर्गमां जशे.

आ घोडाना पेटमांथी जे कंइ घास काचु नीकळशे, अने जे कंइ काचु मांस ते स्वच्छ करीने सारी पेठे रांधवुं घोडाना अंगमां चोत्रीस पांसळीओछे तेमां छरो युक्तिथी फेरवीने काइ भाग न बगडतां अंग जूदां जूदां कहाडवां आ अश्वमेघ कर्याथी अमने घणी दोलत मळशे अने गायो अने घोडां अने आरोग्य अने संतान अमने प्राप्त थशे.घोडाना आगळ बकरो बांधवो अने तेने पछवाडे मंत्र भणनारा ब्राह्मण उभा रेहेवा. आ घोडाने हण्याथी तेना ज्यांहां मा अने बापछे एवो जे देवोनुं स्थानक त्यां ए घोडो जशे अने होम करनारने अनेक लाभ आपशे.

ब्रह्मोवधंवेदनिंदाकौटसाक्ष्यंसुहृद्वधः॥गर्हितानाद्य

योजग्धिःसुरापानसमानषड्‌ ।।   पद्मपुराण

अर्थ—ब्रह्म हत्या, वेद निंदा, खोटी साक्ष, मित्र वध; सूरापान असत्य ए छे अधर्म समान छे.

वेदप्रणिहितोधर्मोह्यधर्मःस्तद्विपर्यय।।वेदोनारायणः साक्षात्‌इतिमेनिश्चितामतिः ॥   व्यास

नकेचिद्वेदकर्तारोवेदस्मर्ताचतुर्मुखः।। तथैवधर्मस्म रतिमनुःकल्पांतरेष्वापि ।।

अर्थ—वेदमां जे लख्युं छे एनुंज नाम धर्म तेना विरुद्ध चाले तेनुं नाम अधर्म. वेद ए साक्षात्‌ नारायण छे ए निःसंशय जाणवुं एवुं मारु मतछे एवुं व्यासजी कहे छे.

वेद कोईए बनावेलो नथी चतुर्मुख जे ब्रह्मा तेणे पूर्व कल्पमां जे वेद चालतो हतो तेनी सरत राखीने आ कल्पमां प्रकाश कर्यो तार पछी ब्रह्माना जे पुत्र मनु तेमणे तेज धर्म आगळ चलाव्यो.

त्रिधाबद्धोवृषभोरोरवीति
मंत्रब्राह्मणकल्पैश्च ॥
वेदतुल्यइतियास्काचार्येणोक्तः

अर्थ—यज्ञ रूपी धर्म मंत्र, ब्राह्मण, अने कल्प, ए त्रण पुस्तकथी थायछे माटे कल्प छे ते वेद तुल्य छे एवुं यास्काचार्ये लख्युं छे.

स्वामिनारायणनि शिक्षापत्रिमां सूत्र प्रमाणे कर्म करवानु लख्युंछे.

संस्काराश्चान्हिकंश्राद्धंयथाकालंयथाधनं।।स्वस्वगृह्यानुसारेणकर्तव्यंच द्विजन्मभिः   ९१

अर्थ.—संस्कार अने नित्य कर्म अने श्राद्ध जे काळे प्राप्त थाय ते आपणा वैभव प्रमाणे ब्राह्मण, क्षत्री, वाणीयाए पोत पोतानुं गृह्यसूत्र प्रमाणे करवुं. गृह्यसूत्र एटले कल्प.

आश्वलायनसूत्र

दरएक शाखानुं सुत्रछे तेमां बे भाग होयछे १ श्रौत, २ गृह्य, पैकीश्रौतमां यज्ञ क्रीया लखेली होयछे, अने गृह्यमां ग्रहस्थना धर्म लखेला होयछे. आ ग्रंथ स्मृतिमां गणाय छे पण बीजा ग्रंथ करता सूत्रनी योग्यता मोटी छे सुत्र वेद तुल्य गणाय छे. अनेक शाखाना अनेक सूत्रो छे ते बधायनो वीषय एक रीतनो छे माटे आ ग्रंथमांना एक बेनो तपास करीए प्रथम आश्वलायन शाखानो श्रौत सूत्र लईने तेना वाक्यो हेठळ लख्या छे.

१ दैव्याशामितारआरभध्वं० ३ अध्याय ३ कं

२ दैवतेनपशुनानात्वं । ३ अ० ७ कं

३ षाण्मास्यःसांवत्सरोव ॥ ३ अ ८ कं

सोऽअयंनिरूढपशुःषट्सुषट्सुमासेषुकर्तव्यः । संवत्सर संवत्सरेवा । नारायणवृत्ति

४ सौत्रामण्यां । ३--९

५ आश्विनसारस्वतैंद्राःपशवःबार्हस्पत्योवाचतुर्थः । ऐद्रसावित्रवारूणाःपशुपुरोडाशाः ३-९

६ दर्शपौर्णमासाभ्यामिष्ट्वेष्टिपशुचातुर्मास्यैरथसोमेन ४--१

७ अथसवनीयेनपशुनाचरन्ति ५ अ० ३

८ अग्निष्टोमोऽत्यग्निष्णोमउक्थःषोडशीवाजपेयोऽति

रात्रोऽप्तोर्यामइतिसंस्थाः ६--११

९ आग्नेयैन्द्राग्नैकादशिनाःपशवः उत्तरषड्क ३-२

१० वायव्यपशुः उ ३--२

११ सज्ञप्तमश्वंपत्न्योधून्वंति० उ०४-८

१२ तस्यविभागंवक्ष्यामः उ० ६-९

अर्थ.

१ पशुने मारो.

२ देवने जूदा जूदा प्रकारनां पशु जोइए:—

३ छ महीने के वरशे वरशे निरूढ पशु करवो.

४ सैत्रामणीनु वीधान.

५ आश्वीन—सारस्वत—इंद्र ए त्रणे देवताने पशु आपवा: अने ब्रहस्पतीने चोथो पशु आपवो:—इंद्र—सवीता तथा वरूण ए देवता. ओने पण पशु जोइए:—

६ पुनम तथा अमासने दिवशे अने चातुर्मास अनुष्टानमां पशु मारवो:—

७ सवनी अनुष्टानमां पशु वध करवो.

८ सात यज्ञने संस्था कहेछे:—तेमना नाम.

१ अग्निष्टोम. २ अत्यग्निष्टोम. ३ उक्थ.

४ शोडशी. ५ वाजपेय. ६ अतीरात्र.

७ अप्तोर्याम.

९ अग्नि तथा इंद्राग्नि आ देवोने अगीयार पशु जोइए.

१० वायु देवताने एक पशु जोइए.

११ मरी गएला अश्व तथा यज्ञकरनारनी स्त्रीए बंनेने वस्त्र नीचे ढांकवां.

१२ वध करेला पशुना कडका करीने यज्ञ करावनार ब्राह्मणोमां शी रीते वहेंचवा तेनो प्रकार:—

आश्वालायन श्रौत सूत्रना बार अध्यायछे तेमांना छमां पुर्व क्रतु लख्याछे, अने बीजा छमां उत्तर क्रतु लख्याछे. तेमनां नाम.

१ राजसुय.	२ गवामयन.
३ गोसव.	४ अश्वमेध.
५ आंगिरस क्रतु.	६ साकमेध.
७ पंचशारदीय.	८ वीश्वजीत.
९ पौंडरीक.	१० भर्त द्वादशाह.
११ संवछर सत्र.	१२ माहाव्रत.
१३ रात्रीसत्र.	१४ शतरात्र.
१५ स्तोम.	१६ द्वादश संवत्सर.
१७ सहस्त्र संवत्सर.	

आ शीवाय चार अध्याय गृह्य सूत्रनाछे. तेमां ग्रहस्तना धर्म लख्याछे. गृह्यमां तथा श्रौतमां तफावत एटलोछे के जे ब्राह्मण एक अग्निनो कुन्ड के जेनुं नाम स्मार्ताग्नि जे राखेछे तेनु नाम ग्रहस्थः— ए अग्नि लग्नने दिवशे उत्पन्न थायछे. अने जे ग्रहस्थ त्रण अग्नि उत्पन्न करीने अग्निहोत्र लेछे तेने श्रौताग्नि कहेछे. तेना नामः—

दक्षिणाग्नी गार्हस्पत्य आहवनी

आवा अग्निहोत्रीने यज्ञ करवानो अधीकार थायछे. ते अग्नीहोत्रीनां कर्म श्रौत सुत्रमां वर्णन करेलांछे. अने ग्रहस्थाश्रमीना धर्म गृह्य सुत्रमां छे. घणाक ग्रहस्थ हाल अग्नीउपासना करवासारू राखता नथी पण ते बाबतनुं प्रायश्चित करेछे. त्रण दिवश सुधी जे ग्रहस्थ अग्नि राखे नहीं ते शुद्र थाय छे एम धर्मशास्त्रमां कहेलुं छे. ग्रहस्थाश्रम लग्नथी शरू थायछे. अने लग्न थया पछी प्रजा उत्पन्न थायछे. ते प्रजाने ब्राह्मण करवा सारू सोळ संस्कार लख्याछे. गृह्य सुत्रमां आ संस्कार लखेलाछे. तेमनां नाम:—

गर्भादान पुंसवन जात कर्म अन्नप्राशन चूडा उपनयन विवाह अंत्येष्टी० इत्यादि०

असलना वखतमां राजा लोको अग्निहोत्र लेता हता अने राजसूय अश्वमेध वीगरे यज्ञ करता हता. सुत्रने कल्प--धर्मसुत्र--समयचारीक सुत्र--एवा नाम कहेछे. अश्वलायनाचार्यनुं सुत्र केवळ ऋगवेदनो सारछ एम कहेवायछे. तेनो श्रौत भाग बीजा उपर लख्युंछे, अने अग्निहोत्री शीवायना गृहस्थना धर्म गृह्य सुत्रमां केवी रीतना वर्णन करेलाछे ते नीचे लख्युंछे.

१ अथपशुकल्पः १ अ ११--१

२ उत्तरतो अग्नेःशामित्रस्यायतनंकृत्वा । पशुमाप्लाव्य । सपलाशयार्द्रशाखयापश्चादुपस्पृशेत् । त्वाजुष्टंउपाकरोमिति । १-११-२

३ व्रिहीयवमतीभिरद्भिःपुरस्तात्प्रोक्षतिअमुष्मैत्वाजुष्टंप्रोक्षामि । १-११-३

४ आवृतैवपर्यग्निकृत्वोदश्चंनयन्ति । १-११-५

५ तस्यपुरस्तादुल्मुकंहरन्ति. । १-२१-६

६ शामित्रएषभवति

७ वपाश्रपणीभ्यांकर्तापशुंमन्वारभते । १-११-८

८ पश्चाच्छामित्रस्यप्राक्शिरसंप्रत्यक्शिरसंवोदक्पादंसंज्ञप्प्पुरानाभेस्तृणमतधायवपामुत्खिद्य । १-११-१०

नारायणवृति

शामित्रस्यपश्चिमेदेशेबर्हिरुपस्तृणातिकर्ता । ''तंयत्रनिहनिष्यन्तोभवंतितदध्वर्युर्बर्हिरधस्तादुपास्यति'' इति श्रुतेः।ततस्तस्मिन्बर्हिषिप्राक्शिरसंवोदक्पादंपशुंशमयतिशमितावपास्थानज्ञात्वातिर्यक्छित्वावपांउद्धरेत् । शामित्रेप्रताप्यतांवपांमभिघार्यजुहुयात् ।

अर्थ.

१ गृह्य सुत्रना प्रथमाध्यायमांनी अगीयारमी कंडीकाना प्रथम सुत्रमां पशु यागनु वीधान लखेछेः—

२ अग्निना उत्तरमां पशु वध करवानी जगा ठराववी. अने पशुने न्हवराववो,अने खाखरानी लीली डाळीथी तेने स्पर्श करवो अने बोलवुं के तुं देवनुं भक्षछे. माटे तने भक्षण योग्य करूं छुं.

३ डांगर तथा जव पाणीमां नाखी ते पाणी पशु उपर छांटवुं.

४ बळता डाभ लेईने पशुनी प्रदक्षणा करवी.

५ तेज बळता डाभ लईने पशुना आगळ चालवुंः—

६ पशुने वध करवाने ठेकाणे लई जवुंः—

७ वपा यागनो मंत्र भणवोः---

८ वध करीने पशुनी नाभीने ठेकाणे वपा होय छे ते ते ठेकाणे छेदीने ते वपा कहाडवीः—

नारायण वृत्तिः--

वध स्थळमां डाभ पाथरवा ने ते उपर पशुने मारवोः--

एवी वेद आज्ञाछे माटे ते मुजब करीने पछी पेट छेदन करीने वपा कहाडवी, अने वध स्थळना नजीक अग्नि उपर तपाववी तार पछी ते उपर घी रेडवुं ने तारबाद अग्निमां होम करवोः--

बीजा अध्यायमां छोकरानो अंनप्राशन संस्कार लख्यो छे तेनां सुत्र नीचे लख्या प्रमाणे.

१ षष्ठेमास्यन्नप्राशनं १अ० १६ कं १ सु०

२ आजमन्नाद्यकामः १-१६-२

३ तैत्तिरंब्रह्मवर्चसकामः १-१६-३

अर्थ.

१ जन्मथी छटा मासमां अन्न प्राशन संस्कार करवो.

२ बकरानु मांस ए सस्कारमां खवरावीए तो धन धान्यनी वृद्धि करे छे.

३ तीतर पक्षीनु मांस खवरावत्रामां आवे तो.

ब्राह्मणमां ब्रह्म तेजनी वृद्धि थाय छे.

गृह्य सुत्रना प्रथमाध्यायनी चोवीसमी कंडीकामां मधुपर्क वीधी लख्यो छे तेना सूत्र नीचे लख्या प्रमाणेः--

१ ऋत्विजोवृत्वामधुपर्कमाहरेत् । १-२४-१

२ स्नातकायोपस्थिताय । १-२४-२

३ राज्ञेच । ३

४ आचार्यश्वशुरपितृव्यमातुलानांच ४

५ आचांन्तोदकायगांवेदयन्ते २३

६ हतोमेपाप्मापाप्मा मेहत । इतिजपित्वोंकुरुतेति कारयिष्यन् २४

नारायणवृत्ति.

इमंमंत्रंजपित्वाओंमूकुरुतेतिब्रुयान्यदिंकारयिष्यन्मारयिष्यन्भवतितदाचदाताआलभेत् ।

७ नामांसोमधुपर्कोभवतिभवति २६

नारायणवृति

मधुपर्काङभोजनंअमांसंनभवतीत्यर्थःपशुकरणपक्षेतन्मांसेनभोजनं । उत्सर्जनपक्षेमांसान्तरेण ।

अर्थ.

१ यज्ञ करवा सारू ऋत्विज नीमती वखत तेने मधुपर्क आपवो जोइये तेज प्रमाणे लग्न थवा वास्ते जे वर घरमां आवे अने राजा घरमां आवे अथवा.

४ आचार्य एटले गुरू घरमां आवे अथवा ससरो घरमां आवे अगर काको अगर मामो आवे तो तेमने मधुपर्क आपवो जोइये.

५ मोहो साफ करवा सारू पाणी आपीने तेमना मोह आगळ गाय मुकवी.

६ सुत्रमां लखेला मंत्र भणीने ओम् कहीने घरना मालेके गायनो वध करवो.

७ मधुपर्कने अंगे जे जमणवार थायछे ते मांस वीना थती नथी माटे पशुनो वध पुर्वक मधुपर्क कर्यो होय ते तेज पशुनु मांस जमणवारमां काममां आवे अने पशुने छोडी दीधो होय तो बीजी रीते मांस मेळवीने भोजन कराववुं.

द्वतीया अध्यायमांनी चोथी कंडीकामां अष्टका वीधान लख्युं छे तेमां पशुनो वध करवानुं लखेलुंछे. तेनु सुत्र नीचे मुजब.

पशुकल्पेनपशुंसंज्ञप्यप्रोक्षणोपाकरणवर्जंवपामुत्खिद्य जुहुयात् । २-४-१३

अर्थ.

पाछला अध्यायमां पशु वधनु वीधान बतावेलु छे. तेज प्रमाणे पशु एटले बकरो मारी तेनुं काळजुं काहाडी तेनो होम करवो.

वळी बीजा अध्यायनी पांचमी कंडीकामांना पेहेला सुत्रमां अन्वष्टका अनुष्टान लख्युंछे तेमां नीचे प्रमाणे लखेलुछे.

१ अपरेद्युरन्वष्टक्यं २-५-१

२ तस्यैवमांसस्यप्रकल्प्य २-५-२

नारायणवृत्ति.

अपरस्मिन्नहानिनवम्यांमन्वष्टक्यंनामकर्मकार्यमित्यर्थः। योअष्टम्यांपशुःकृतःतस्यैवमांसंब्राह्मणभोजनार्थंप्रकल्प्यसकृत्येत्यर्थः।

अर्थ.

१ नोमने दिवशे अन्वष्टका कर्म करवुं.

२ जे पशुनो वध कर्यो होय तेनुं मांस ब्राह्मणने जमाडवुं.

वळी चोथा अध्यायनी प्रथम कंडीकामां अग्निहोत्री ब्राह्मण मरे तो तेने बाळवानो वीधी लख्यो छे, ते सुत्र नीचे मुजब.

१ आहिताग्निश्चेदुपतपेत्प्राच्यामुदिच्यामपराजितायां वादिश्युदवस्येत्-अ-१-१

२ अगदःसोमेनपशुनेष्टयेष्ट्वावस्येत् ॥ ४-१-४

३ अनिष्ट्वावा ४-१-५

४ पिठचक्रेणगोयुक्तेनेत्येके ४-२-३

५ अनुस्तरणीं ४

६ गां ५

७ अजांवैकतर्णाम् ६

८ कृष्णामेके ७

९ सव्येवाहुनध्वानुसंङ्कालयन्ति. ८

१० अनुस्तरण्यांवपामुत्खिद्यशिरोमुखंप्रछादयेत्
४-३-१९

११ वृक्काउधृत्यपाण्यारादध्यात् २०

१२ हृदयेहृदयं २१

१३ सर्वायथाङ्गंविनिक्षिप्पचर्मणाप्रछाद्ये २४

१४ तांउत्थापयेद्देवरः। उदीर्षनार्यभि० ४-२-१८

१५ सएवंविदादह्यमानःसहैवधूमेनस्वर्गलोकमेतीतिहवि
ज्ञायते ६-४-७

अर्थ.

१ श्रोत्री ब्राह्मण आजारी पडे तो तेने अग्नि सहीत गाम बहार कोई ठेकाणे लई जई राखवो:—

२ जो सारो थाय तो एक पशुनी इष्टि करीने घेर आणवो:—

३ कदी मरी जाय तो:—

४ गाडामां घाली स्मशानमां लई जवो:—

५ अनुस्तरणी एटले एक जनावर साथे लेवुं:—

६ ए जनावर गाय जोइये:—

७ अथवा एक रंगनी बकरी जोईये:—

८ अने ते बकरी काळी जोईये:—

९ ते जनावरने गळे दोरी बांधी मडदाने जमणे हाथे ते दोरीनो बीजो छेडो बांधवो ने तेने मडदानी साथे चलाववुं:—

१० अनुस्तरणीनो वध करी तेनी वपा कहाडी ते वती प्रेतनु माथु ढांकवुं:—

११ तेनां यकृत कहाडी प्रेतना हाथमां मुकवुं:—

१२ हृदय ते प्रेतना हृदय उपरज मुकवुं:—

१३ ए मुजब सर्व अंग प्रेतना अंग उपर मुंकी अनुस्तरणीना चामडा वते ते प्रेतनु बध्धु अंग ढांकी देवुं:—

१४ प्रेतनी पत्नीने पुनर्विवाह करवानो उपदेश करी खशेडवी:—

१५ आ प्रमाणे जेनुं प्रेत बाळवामां आवेछे. ते माणस स्वर्गमां जायछे.

१६ गृह्य सुत्रना चोथा अध्यायनी नवमी कंडीकामां शुलगवनामक यज्ञ लख्योछे तेनां सुत्रो नीचे लख्या प्रमाणेछे.

१ अथशूलगवः ४-९-१

२ शरादिवसंन्तेवार्द्रया २

३ श्रेष्ठंस्वस्ययूथस्य ३

४ अकुष्टिपृषतू ४

५ कल्माषामित्येके ५

६ कामंकृष्णमालोहवांश्चेत् ६

७ व्रीहीयवमतीभिरद्भिराभिषिच्य ७

८ शिरस्तआभसत्त ८

९ रुद्रायमहादेवायजुष्टोवर्धस्वेति ९

१० प्रोक्षणादिसमानंपशुनाविशेषान्वक्ष्यामः। १५

११ पात्र्यापलाशेनवावपांजुहुयातूइतिहविज्ञायते १६

१२ हरायमृडायशर्वायशिवायभवायमहादेवायोग्राय भीमायपशुपतयेरुद्रायशंकरायेशानायस्वाहेति. १७

१३ सएषशूलगवोधन्योलोक्यःपुण्यःपुत्र्यःपशव्य आयुष्योयशस्यः ३६

१४ इष्टान्यमुत्सृजेत्‌ ३७

अर्थः—

१ शुलगव अनुष्टान ए प्रमाणे करवुं:—

२ शरदऋतु एटले आसो तथा कारतक. तथा वसंतऋतु एटले चैतर तथा वैशाक मासोमां अथवा जे दिवशे आर्द्रानिक्षत्र होय ते दिवशे शुलगव यज्ञ करवो:—

३ जोरावर बळवान आखलो होय ते लेवो:—

४ ते आखलो रोगी होवो नही जोइये:—

५ वळी ते आखलो कावरा रंगनो जोइये:—

६ काळा जांबु रंगनो होय तो चाले.—

७ डांगेर तथा जवनुं पाणी करीने ते वते आखला उपर अभीशेक करवो:—

८ माथाथी ते पुछडा सुधी:—

९ माहादेवने गृहण करवा योग्य थाव आ मंत्र भणवो:—

१० बीजा पशुनुं प्रक्षिण तथा वध बीजे ठेकाणे कहेलुं छे तेज मुजब करवुं:—

११ खाखराना लाकडाना वासणमां तेनी वपा एटले काळजु मुकी तेनो होम करवो:—

१२ होम करवो ते शीवनां बार नाम देईने करवो:—

१३ ए प्रमाणे शुलगव नामनो यज्ञ करे तेने धान्य-कीर्ति-पुण्य-पुत्र-पशु समृद्धि-आयुष्य वृद्धि-तथा यश प्राप्त थाय छे:—

१४ सदरहु प्रमाणे यज्ञ करीने फरीथी यज्ञ करवा वास्ते बीजो आखलो नीमीने छोडी देवो:—

सदरहु प्रमाणे ऋगवेदी आश्वलायन ब्राह्मणनुं धर्म सूत्रनो अर्थ उपर लख्यो छे. पुराणमां बहु ठेकाणे ऋषी राजा वीगरे आव्याथी मधुपर्क सहीत पुजा करीने सत्कार कर्यो एवा दाखला मळी आवे छे. तेथी ते वेळा मधुपर्कनी रीत बहु हती एम मालुम पडे छे. केटलाएक ब्राह्मण आपस्तंब शाखाना केहेवायछे. तैलंग अने माहाराष्टदेशमां ए शाखाना ब्राह्मणो घणा छे तेमनु आपस्तंबीय धर्म सुत्रनामक शास्त्र छे ते उपर हरदत्त वृत्ति करीने टीका छे, ते सुत्र हाल मुंबईमां सरकार तरफथी छपाई बाहार पडेलुं छे तेमांथी थोडांक सुत्रो नीचे दाखल कर्यां छे:

		प्रश्न पटल सू०
१	धेन्वनडुहोर्भक्ष्यम्	१-५-३०
२	क्याकभोज्यमितिहिब्राह्मणम्	२८
३	मेध्यमानडुहमितिवाजसनेयकम्	३१

४ गोमधुपर्कार्हांवेदाध्यायः २-४-१

५ आचार्यऋत्विक्स्नातकोराजावाधर्मयुक्तः। २-४६

६ आचार्यायर्त्विजेश्वशुरायराज्ञइतिपरिसंव
त्सरादुपतिष्ठद्भ्योगोर्मधुपर्कश्च। २-४-७

७ धर्मज्ञसमयःप्रमाणंवेदाश्च १-१-२

अर्थः—

१ गाय तथा बळद भक्षण करवा योग्य छेः—

२ पक्षी भक्षणने लायक छे एम ब्राह्मण ग्रंथमां कह्युं छेः—

३ बळद यज्ञ पशु छे एम वाजसनीय कहे छेः—

४ गायनो वध करीने मधुपर्क करवो एवी वेदाज्ञा छेः—

५ आचार्य-ऋत्विजि-वर-तथा राजा एमने मधुपर्क आपवो जोइयेः—

६ ससरो-इत्यादी एकेक वरसने अंतरे घेर आवे तो ते मधुपर्क करवा योग्य छे—

७ धर्म जाणवानी जेनी इच्छा होय तेणे वेदनुं प्रमाण राखवुंः—

कात्यायनकल्पसूत्र

मधुपर्क

षडर्घ्याभवंति। आचर्यऋत्विग्वैवाह्योराजाप्रियस्नातक इति.। गौरितित्रिःप्राह ।। आलभेन्

अन्नप्राशन

भारद्वाजमांसेनवाक्यंसारिकामछकपिंजलमांसेनान्ना

द्यकामस्यमत्स्यैर्जवनकामस्यकृकरवावाऽआयुःकामस्य।

शूलगवःस्वर्गपशव्यः

रौद्रंपशुमालभेत्

नवकंडिकाश्राद्धसूत्र

अथतृप्तिः।छागोमेषानालभ्यनस्वयंमृतानाहृत्यपचेन्मांस द्वयंतुमत्स्यैर्मासत्रयंहारिणेनचतुरःऔरभ्रेणपंचशाकुनेनषट्छागेनसप्तकौर्मेणाष्टौवाराहेणनवमेषमांसेनदशमाहिषेणैकादशपार्षतेनसंवत्सरंतुवाध्रींनमांसेनद्वादशवर्षाणि खड्गमांसंकालशाकंलोहछागमासंमधुमहाशल्कोअक्षयतृप्तिः॥

अर्थ—माध्यंदिनी शाखाना जे ब्राह्मण छे ते कात्यायन सूत्रनो उपयोग करेछे तेमां मधुपर्क, अन्नप्राशन, शुलगव, श्राद्ध, ए चार अनुष्टानमां हिंसानुं प्रतिपादन कर्युं छे ते आश्वलायन सुत्र प्रमाणे छे माटे तपशलिवार विस्तार कर्यो नथी जेने विस्तार जाणवानी इछा हशे ते ऊपर लखेला संस्कृत वाक्यो वांचे तो तेना ध्यानमां आवशे.

ब्राह्मणोनी जेटली शाखाओ छे एटलां सुत्रछे. ते बधां तपासतां पार आवे तेवो नथी माटे धर्म सुत्रना ग्रंथ मुकी स्मृतियोनो तपास करीये: स्मृति ग्रंथ एकंदर पचास साठ छे. ते दरेक ऋषिना नामथी ओळखाय छे तेनां नाम.

१ मनु २ याज्ञवल्क्य ३ विष्णु ४ हारित ५ उशना

६ अंगिरा ७ यम ८ आपस्तंब ९ संवर्त १० कात्यायन ११ बृहस्पति १२ व्यास १३ शंखलिखित १४ दक्ष १५ गौतम १६ शातातप १७ वासिष्ठ इत्यादि.

आ उपर बताव्या ते तथा बीजा घणा छे ए सर्व ग्रंथोने धर्म शास्त्र कहेवाय छे तेमां मनु तथा याज्ञवल्क्य ए बे श्रेष्ट गणाय छे अने ए बे जणना बनावेला ग्रंथ पण मोटा छे. अने तेमना ग्रंथना आचार—व्यवहार—तथा प्रायश्चीत एवी रीतना त्रण भाग करेला छे. मनुस्मृती उपर कुलुकभटनी टीका छे ते प्रसीद्ध छे ते शिवाय मेधातीथी वीगरेनी टीकाओ छे. मनुनु वचन प्रमाण छे एम वेदमां पण कहेलुं छे. याज्ञवल्क्य संहीता उपर मीताक्षरा नामनी टिका छे ते वीज्ञानेश्वर नामनो पंडीत थइ गयो छे तेणे करेलीछे. ए बे ग्रंथमांथी प्रथम स्वायंभु मनुनुं के जे ब्रह्म देवनो छोकरो हतो एवुं ते पोतानी स्मृतीमां लखे छे तेनु धर्म शास्त्र तपासतां नीचे लख्या प्रमाणे वचनो मळी आवे छे:—आ ग्रंथनो गुजराती तरजुमो जव्हेरीलाल उमीयाशंकर याज्ञीके प्रसिद्ध कर्यो छे तेना आधार साथे अर्थ लखवामां आवशे:—

मनुस्मृति

		अ	श्लो
१	इदंशास्त्रंतुकृत्वासौमामेवस्वयमादितं.	१	५८
२	ब्राह्मणोजायमानोहिपृथिव्यामधिजायते,		
	इश्वरःसर्वभुतानांधर्मकोशस्यगुप्तये	१	९९

३ सर्वस्वब्रह्मणस्येदंयत्किंचिज्जगतीगतं
श्रैष्ठयेनाभिजनेनेदंसर्वंवैब्राह्मणोर्हति १ १००

४ वेदाभ्यासोहिविप्राणांतपःपरमिहोच्यते. २-१६६

५ श्रुतिस्मृत्युदितंधर्ममनुतिष्ठतिमानवः
इहकीर्तिमवाप्नोतिप्रेत्यचानुत्तमंसुखं २-९

६ धर्मंजिज्ञासमानानांप्रमाणंपरमंश्रुतिः २-१३

७ अग्निवायुरविभ्यस्तुत्रयंब्रह्मसनातनं ।
दुदोहयज्ञसिध्यर्थमृग्यजुःसामलक्षणं ॥ १-२३

८ तिलैर्व्रीहियवैर्माषैरद्भिर्मूलफलेनवा
दत्तेनमासतृप्यंतिविधिवत्पितरोनृणाम् ३-२६७

९ द्वौमासौमत्स्यमांसेनत्रीन्मासान्हारिणेनतु ३-२६८

१० षण्मासच्छागमांसेनपार्षतेनचसप्तवै ३-२६९

११ दशमासास्तुतृप्यन्तिवराहमहिषामिषैः
शशकूर्मयोस्तुमांसेनमासानेकादशैवतु ३-२७०

१२ वर्धिणसस्यमांसेनतृप्तिर्द्वादशवार्षिकी ३-२७१

१३ कालशाकंमहाशल्काःखड्गलोहामिषंमधु ॥
आनंत्यायैवकल्प्यंन्तेमुन्यन्नानिचसर्वशः ३-२७२

१४ प्रोक्षितंभक्षयेन्मासंब्राह्मणानांश्चकाम्यया ।

यथाविधिनियुक्तस्तु प्राणानामेव चात्ययी. । ५-२७

१५ प्राणस्यान्नमिदं सर्वं प्रजापतिरकल्पयत् ॥
स्थावरं जंगमं श्चैवं सर्वं प्राणस्य भोजनं ५-२८

१६ बभुवुर्हि पुरोडाशभक्ष्याणां मृगपक्षिणां ।
पुराणेष्वपि यज्ञेषु ब्रह्मक्षत्रसवेषु च ॥ ६-२३

१७ देवान्पितृंश्चार्चयित्वा खादं मांसं न भुष्याति । ६-३२

१८ यज्ञार्थं पशवः सृष्टाः स्वयमेव स्वयंभुवा ॥
यज्ञस्य भूत्यै सर्वस्य तस्माद्यज्ञे वधोऽवधः ५-३९

१९ औषध्यः पशवो वृक्षास्तिर्यंःश्च पक्षिणः स्तथा ।।
यज्ञार्थं निधनं प्राप्ताः प्राप्नुवंत्युसृतिः पुनः ५-४०

२० मधुपर्के च यज्ञे चापि तृदैवतकर्मणी
अत्रैव पशवो हिंस्या नान्यत्रेत्यब्रवीन्मनुः ५-४१

२१ एष्वर्थेषु पशून्हिंसन्वेदतत्वार्थविद्द्विजः ।।
आत्मानश्च पशुश्चैव गमयत्युत्तमां गतिम् ५-४२

२२ वृथापशुघ्नः प्राप्नोति प्रेत्य जन्मनि जन्मनि । ५-३८

२३ नावेदविहितां हिंसामापद्यापि समाचरेत् ५-४३

२४ या वेदविहिता हिंसा नियतास्मिन् चराचरे ।।
अहिंसामेव तां विद्याद्वेदाद्धर्मो हि निर्बभौ ।।५-४४

२५ पाठीनरोहितावाद्यौनियुक्तौहव्यकव्ययोः ५-१६

२६ नकृत्वाप्राणिनांहिंसामांसमुत्पद्यतेक्वाचित् ।
नचप्राणिवधःस्वर्ग्यतस्मान्मांसविवर्जयेत् ५-४८

२७ नियुक्तस्तुयथान्यायंयोमांसंनातिमानवः॥
सप्रेत्यपशुतांयातिसंभवानेकविंशतीम् ५-३५

२८ श्वमांसमिछन्नेर्तोत्तुधर्माधर्मविचक्षणः॥
प्राणानांपरिरक्षार्थंवामदेवोनलिप्तवान् १०-१०६

२९ क्षुधार्तश्चात्तुमभ्यागाद्विश्वामित्रःश्वजाघनीम् ॥
चाण्डालहस्तादादायधर्माधर्मविचक्षणः॥१०-१०८

अर्थ.

१ आ शास्त्र रचीने ब्रह्माये मने वीधी पुर्वक भणाव्युं:—

२ ब्राह्मण जन्मे छे त्यारथीज ते पृथ्वी उपर श्रेष्ट गणाय छे, अने सर्व प्राणीनो उपरी छे. धर्म रूपी भंडारनुं रक्षण करवानुं काम एने सोंपेलुं छे:—

३ जे कोई वस्तु संसारमां छे ते सर्व ब्राह्मणनी पोतानीज होय एम छे. केमके ए प्रथम ब्रह्माना मुखथी उत्पंन्न थयेलो छे. अने सर्वथी श्रेष्ट छे. तेथी सर्व वस्तुओनो स्वामी ब्राह्मण थई सके छे:—

४ वेदाभ्यास छे ते ब्राह्मणनुं परम तप कहेलुं छे:—

५ श्रुति तथा स्मृतिमां कहेला धर्म प्रमाणे चालनारा मनुष्यो आ लोकनी कीर्तिने तथा परलोकना उत्तम सुखने पामे छे:—

६ धर्म जाणवानी इच्छा राखनाराओनुं परम प्रमाण श्रुति छेः—

७ अग्नि-वायु-तथा सुर्यमांथी अनुक्रमे ऋग्वेद यजुर्वेद-अने सामवेद ए त्रणे वेद यज्ञ सीद्धीने सारु दोही कहाड्या होय तेवी रीते उत्पंन कर्याः—

८ तल-डांगेर-जव-अडद अथवा मूळ-फुल एओमांथी कोई एक वस्तु शास्त्रनी रीते आप्याथी एक मास सुधी पित्रियो तृप्त थाय छेः—

९ माछलाना मांसथी बेमास तृप्त रहेछे. अने हरणना मांसथी त्रण मास रहेछेः—

१० वाछडाना मांसथी छमास सुधी तृप्त रहेछे. अने चीत्र मृगना मांसथी सातमास सुधी तृप्त रहेछेः—

११ भुंड तथा भेंशना मांसथी दशमास सुधी तृप्त रहेछे. अने ससला तथा काचबाना मांसथी अगीयारमास सुधी पित्रि तृप्त रहेछेः-

१२ लांबा कानवाळा धोळा बकराना मांसथी बार वर्ष सुधी पित्रि तृप्त रहेछेः—

१३ "काळशाक" नामनुं शाक, "माहाशल्क" नामना मत्स्य अथवा गेंडा, लाल बकरु,एमांना कोइ एकनुं मांस आप्याथी, मधथी अने सर्व प्रकारनां ऋषी धान्य अने वनवगडामां जे थाय छे ते आप्याथी अनंत वर्ष सुधी पित्रि तृप्त थाय छेः—

१४ यज्ञने अर्थे जे मांसनुं वेद मंत्रथी प्रोक्षण थयुं होय अने ब्राह्मण तेनुं भक्षण करवानी आज्ञा करे अगर प्राण जवानी धास्ती लागती होयतो तेनुं भक्षण करवुंः—

१५ ब्रह्माये प्राणना रक्षण सारु सृष्टि सरजीछे. माटे स्थावर जंगम सर्वे पदार्थ प्राणना उपभोगने अर्थे छेः—

१६ अगाउना काळमां ब्राह्मण तथा क्षत्रीयना यज्ञमां भक्षणने योग्य एवां जनावर तथा पक्षीना मांसनुं देवताने नैवेद करवामां आवतुं हतुं:—

१७ देवनी तथा पित्रिनी पुजा करी रह्या पछी मांसनुं भक्षण करेतो तेने दोष नथी:—

१८ स्वयंभुए पोते पशुने यज्ञने अर्थे सरज्यां छे. अने यज्ञ आ सर्व जगतनी वृद्धि सारु ठराववामां आव्यो छे. माटे यज्ञ सारु पशुनी हिंसा करनार हिंसक नथीः—

१९ औषधी-पशु-वृक्ष-जनावर-अने पक्षीओनो यज्ञने अर्थे नाश थाय तो ते परलोकमां उत्तम जन्म पामे छे:—

२० मधुपर्कने समये-यज्ञमां-अने पीत्री कर्ममां तथा देवना कर्ममां एटलेज प्रसंगे पशु हिंसा मनुए कहेली छे:—

२१ उपर कहेले प्रसंगे वेदना अर्थ तथा तत्व जाणनारो द्विजाती वर्णवाळो पुरुष पशु हिंसा करे तो ते पोते तथा पशु उत्तम गतीने पामेछे:—

२२ मांस भक्षणनी इच्छा पूरी करवा सारु पशु हिंसा करनार पुरुषने ते पशुना शरीर उपर जेटला वाळछे तेटलां मृत्यु तेणे जन्मो जन्म परलोकमां थाय छे:—

२३ वेदनी आज्ञा वीना आपत्तिकाळमां पण पोताना अगर गुरुना घरमां अथवा अरण्यमां पशु हिंसा करवी नहीं:—

२४ वेद विहित हिंसा स्थावर जंगम जगतमां करवामां आवेछे तेने हिंसा गणवी नही कारण के वेदमांथी धर्म निष्पन थयो छे:—

२५ पाठीन तथा रोहितनुं मांस हव्य कव्यमां आव्युं होय तो ते परोणाने खवरावबुं:—

२६ पशु हिंसा विना कांई मांस मळी सकतुं नथी पण प्राणीनी हिंसा करवाथी स्वर्ग प्राप्ती नथी. माटे मांस भक्षण तदन वर्ज्य करवुं जरूरनुं छेः—

२७ धर्म शास्त्र प्रमाणे धर्म कार्यमां लागेलो पुरूष जो मांसनु भक्षण न करे तो ते मुवा पछी एकवीस जन्म सुधी पशु अवतरे छेः—

२८ धर्म अधर्म समजवामां विचिक्षण एवो वामदेव पण घणी भुखथी पीडायो हतो त्यारे प्राणनु रक्षण करवा सारू कुतरानु मांस खावानी तेनी इच्छा थई परंतु तेथी कांई तेने दोष लाग्यो नहीः-

२९ तेमज धर्म अधर्म समजवामां जेनी बरोबरी कोईथी थई न शके एवो विचक्षण ऋषि विश्वामित्र तेणे पण ज्यारे क्षुधाथी मरवानी तैयारीमां हतो त्यारे कुतरानु मांस चंडाळना हाथथी लेई खावानो नीश्चय कीधोः—

सदरहु प्रमाणे मनुना धर्मशास्त्रमांथी वचनो लख्यां छे, हवे याज्ञवल्कय स्मृतिमां आचार अध्याय छे तेमांना केटलाएक वचनो नीचे लख्यां छेः—

ग्रहस्थधर्मप्रकरणं

महोक्षंवामहाजंवाश्रोत्रियायोपकल्पयेत् ॥ १०८

यज्ञेश्वरशास्त्री

पान ७५

प्रतिसंवत्सरंत्वर्घ्यास्नातकाचार्यपार्थिवाः॥

प्रियोविवाह्यश्चतथायज्ञप्रत्यर्त्विजःपुनः १०९

अर्थ—श्रोतीय एटले अग्निहोत्री ब्राह्मण आपणे घेर आव्या

होय तो मोटो बळद अथवा मोटो बकरो तेमने भक्षणार्थ आपवो; ए उपर टीकाकार एम लखे छे के.

।। अस्वर्ग्यंलोकविद्विष्टंधर्ममप्याचरेन्नत्विति । निषेधाच्च ।

स्नातक, आचार्य, राजा, मित्र, जमाई, एओने मधुपर्क पूजा प्रतिवर्षे करवी तथा ऋत्विज्नी प्रत्येक यज्ञमां करवी एम लखीने आश्वलायन सूत्रनुं वचन दाखल कर्युं छे.

मनुमां 'कल्पयेत्' आ शब्दनो अर्थ एवो लख्यो छे.

।। प्राणस्यान्नमिदंसर्वंप्रजापतिरकल्पयत ।। ५-२८२

आ उपरथी 'कल्पयेत्' आ शब्दनो अर्थ भक्षणनो जणाय छे. पण टीकाकार ते वात उडावी दीधी छे. बीजुं एम लखे छे के.

।। अर्घशब्दोमधुपर्कंलक्षयति ।।

आ प्रमाणे मोटो माणस घेर आवे तो तेने अतिथि के अभ्यागत कहेवाय छे अने तेनो सत्कार करवाने वास्ते मधुपर्क छेः—

अने दक्षणमां जमीनदार लोक अने वरनीमा, राजा, इत्यादिकने भेट बकरानी कींमत आपवानी आजे वहीवट चालेछे. ईराणदेशमां मोटो माणस आवे तेने वास्ते बळद के गाय मारी नाखवानो वहीवट चालेछे ते मोटुं मान गणाय छे ए प्रमाणे ईराणना ईतिहास उपरथी जणाय छे. हवे भक्ष्या भक्ष प्रकरणमां लखे छे के

।। भक्ष्याःपंचनखाःसेधागोधाकच्छपशल्लकाः ।।

।। शशश्चमत्स्येष्वापीहीसिंहतुंडकरोहिताः ।। १७६ ।।

।। तथापाठीनराजीवसशल्काश्चद्विजातिभिः ।।

॥ अतःशृणुध्वंमांसस्याविधिंभक्षणवर्जने ॥ १७७ ॥
॥ प्राणात्ययेतथाश्राद्धेप्रोक्षितंद्विजकाम्यया ॥
॥ देवान्पितृन्समभ्यर्च्यखादन्मांसंनदोषभाक् ॥१७८॥
॥ वसेत्सनरकेघोरेदिनानिपशुरोमभिः ॥
॥ समितानिदुराचारोयोहंत्याविधिना पशून् ॥१७९॥
॥ सर्वान्कामानवाप्नोतिहयमेधफलंतथा ॥
॥ गृहेपिनिवसन्विप्रोमुनिर्मांसविवर्जनात् ॥ १८० ॥

अर्थ.

१ पांच नखवाळा प्राणीमांथी शाहुडी, पाटलागो, काचबो, शल्क, ससलुं, गेंडो, ए प्राणी भक्षण करवामांलेवाय अने पाठीन अने राजीव ए बे जातना मांछला द्विजने भक्ष्य छे.

२ मांसना भक्षणनो तथा परित्यागनो विधि सांभळो.

३ प्राणसंकटमां तथा श्राद्धमां मांस भक्षण करवुं. प्रोक्षित मांस तथा ब्राह्मण भोजनने सारू अथवा देव पितृ कार्यने सारू सिद्ध करेलुं मांस देव पितरनी पुजा कर्या पछी बाकी रह्युं होय ते भक्षण करे तो दोष नथी. 'प्रोक्षितं' एटले प्रोक्षण नामनो संस्कार करीने यज्ञ कर्या पछी बाकी रहे ते प्रोक्षित मांस कहेवाय छे. तेनुं अवश्य भक्षण करवुं कारण न करे तो यागनी समाप्ति न थाय.

४ जे माणस विधि विना पशुनो जीव ले ते नरकमां जायः—

५ जे मांस त्यागी छे तेने अश्वमेध यज्ञनुं फळ मळे छे अने ते गृहस्थ छतां मुनी जाणवो. आ वचन टीकाकार लखे छे के. अ-

वश्य भक्षण करवुं जोइए तेवुं प्रोक्षितादी मांसना परित्यागने माटे नथी.

॥ श्लोक ॥

१॥ हविष्यान्नेनवैमासंपायसेनतुवत्सरम् ॥
॥ मात्स्यहारिणकौरभ्रशाकुनच्छागपार्षतैः॥ २५७॥
२ ॥ऐणरौरववाराहशाशैर्मांसैर्यथाक्रमम् ॥
॥ मासवृद्ध्याभितृप्यंतिदत्तैरिहपितामहाः॥ २५८ ॥
३॥ खड्गामिषंमहाशल्कंमधुमुन्यन्नमेवच ॥
॥ लोहामिषमहाशाकंमांसंवार्ध्रिणसस्यच ॥ २५९॥

अर्थ.

१ अन्नवडे एक मास, दूधपाकवडे एकवर्ष मत्स्य, हरण, घेटो, पक्षी बकरो, काळो हरण, सांबर, भुंड, ससलु ए प्राणीओनुं मांस पीतृगणने आप्याथी एक मास अधिक तृप्ति थाय छे.

३ गेंडानुं मांस, महाशल्क करीने एक मस्यनी जात तेनुं मांस, मध अने वनमां थयेला धान्य, लाल रंगनो बकरो तेनु मांस, कालशाक अने वार्ध्रीणस एटले धोळो बकरो तेनु मांस आप्याथी अनंत फळ दायक छे.

विनायक शांतिमां वचन छे ते नीचे प्रमाणे

॥ श्लोक ॥

१ ॥ मत्स्यान्पक्वास्तथैवामान्मांसमेतावदेवतु ॥ ॥२८६॥
२ ॥ पुष्पंचित्रंसुगंधंचसुरांचत्रिविधामपि ॥ ॥ २९७ ॥

अर्थ.—काचा पाका मत्स्य अने तेवुंज मांस पुष्प, सुगंधि पदार्थ अने त्रण प्रकारनी दारू एटले गोळ, महुडो, तथा लोटनी ए पदार्थनो विनायक अने तेनी माता अंबिकाने निवेद करवो.

ग्रह यज्ञ करवानी विधिमां लखे छे के:—

१ ॥ गुडौदनंपायसंचहविष्यंक्षीरषाष्टिकम् ॥
॥ दध्योदनंहविश्चूर्णमांसचित्रान्नमेवच ॥ ३०३ ॥
२॥दद्याद्ग्रहक्रमादेवद्विजेभ्योभोजनंद्विजः ॥
॥ शक्तितोवायथालाभंसत्कृत्यविधिपूर्वकम् ॥ ३०४

अर्थ.

१ गोळ, दुधपाक, काषिधान्य, क्षीर, दहीं भात, घी भात चटणी, मांस, केशरी भात इत्यादि गृह तृप्ति करवा वास्ते ब्राह्मणोने ए पदार्थो वडे जमाडवा.

सदरहु प्रमाणे स्मृतीयोनो विचार थयो हवे पूराणनो तपास करीये. प्रथम मच्छ पूराणना १७ मा अध्यायमां श्राध्यकल्प लख्यो छे. तेनो श्लोक.

अन्नंतुसदधिक्षीरंगोघृतंशर्करान्वितम् ॥मासंप्रीणाति
वैसर्वान्पितृन्नित्याहकेशव ३० श्लोक. अध्या १७
द्वौमासौमत्स्यमांसेनत्रिन्मासान्हारिणेनतु ।
औरभ्रेणाथचतुरःशाकुनेनाथपंचवै ॥ ३१
षण्मासंछागमांसेनतृप्यंतिपितरस्तथा
सप्तपार्षतमांसेनतथाष्टावेणजेनतु ३२

दशमासास्तुनृप्यंतिवराहमाहिषामिषैः
शशकुर्मजमांसेनमासानेकादशैवतु ३३
संवत्सरंतुगव्येनपयसापायसेनतु
व्याघ्याःसिंहस्यमांसेनतृप्तिर्द्वादशवार्षिकी ३४
कालशाखेनचानंताखड्गमांसेनचैवहि ।
यत्किंचिन्मधुसंमिश्रंगोक्षिरंघृतपायसं ॥ ३५
दत्तमक्षयमित्याहुःपितरःपूर्वदेवताः ॥ ३६

उपर लखेला श्लोकनो अर्थ. उपर स्मृतियोनो अर्थ लख्यो छे तेमां जणावेलो छे. माटे फरी लखवानुं कारण नथी. हवे मारकंड ऋषीनुं पूराण छे तेमांना १३मा अध्यायमां देवीनु महात्म छे तेने चंडी पाठ कहे छे ते लोक घणा वांचे छे अने ते उपरथी जप होम पूजा इत्यादि अनुष्टान करे छे तेमां हेठे लख्या प्रमाणे श्लोक मळे छे.

बलिप्रदानेपुजायामग्निकार्येमहोत्सवे अ० १२-१०
पशुपुष्पार्घधूपैश्चगंधदीपैस्तथोत्तमैः अ० १२-१०
रुधिरोक्तेनबलिनामांसेनसुरयानृप ॥
रहस्य अ० १५ श्लोक १८

अर्थः—देवीनी पूजामां बलिप्रदान करवुं अने गंध पुष्प तथा जनावर पण आपवा अने लोही युक्त मांस अने मद्यदेवीने अर्पण करवुं.

हवे भारत ए मोटो इतिहासनो ग्रंथ छे तेमां पण जे जे राजा बहु शीकार करता अने बहु जनावरो मारता तेमनी कीर्त्ति व्यासजीए बहु वर्णन करी छे; ते विशे थोडां वचनो नीचे लख्यां छे.

१ ॥ ततस्तेयौगपद्येन ययुःसर्वेचतुर्दिशम्॥
॥ मृगयांपुरुषव्याघ्राब्राह्मणार्थेपरंतपाः ॥ ४ ॥
भारते द्रौपदीप्रमाथे प्रथमसर्गे ॥

२ ॥ ततोदिशःसंप्राविहृत्यपार्थामृगान्वराहान्महिषांश्च
हत्वा ॥
॥ धनुर्धराःश्रेष्टतमाःपृथिव्यां, पृथक्चरन्तः
सहिताबभूवुः ॥ १ ॥
द्रौपदीप्रमाथेषष्ठमसर्गे-

३ ॥ ततोमृगसहस्राणिहत्वासबलवाहनः ॥
॥ राजामृगप्रसङ्गेन वनमन्याद्विवेशह ॥ १ ॥
शाकुन्त. तृतीयसर्गः, प्रथमश्लोकः--

अर्थ.

१ ब्राह्मणोने वास्ते बहु हरण मारी लाव्या:—

२ धनुर्धर, श्रेष्ट राजाए बहु हरण तथा डुकर तथा वगडानी भेंशो मारीने आणी:—

३ ए बलवान राजाये हजारो मृग मारीने बीजा मारवा सारु वनमां चाल्यो:—

राज भारतना भीष्मपर्वमां भगवत गीताना मकग्रंथ प्रसिद्ध छे ते वेदांती तथा भक्तिमार्गवाळा बंने वांचे छे. तेमां नीचेनां वचन मळी आवे छे.

सहयज्ञाप्रजासृष्ट्वापुरोवाचःप्रजापतिः
अनेनप्रसविष्यध्वमेषवोस्त्विष्टकामधुक् १० अ० ३
यज्ञशिष्टाशनःसंतोमुच्यंतेसर्वकिल्बिषैः ॥
यज्ञाद्भवतिपर्जन्योयज्ञःकर्मसमुद्भवः १४
२ यज्ञोदानंतपःश्चैवपावनानिमनीषिणाम्
यज्ञदानतपःकर्मनत्याज्यंकार्यमेवतत् अ० १८ श्लो.५

अर्थ.

१ ब्रह्माये सृष्टी उत्पन्न करी तेज वखत यज्ञ करवानी याज्ञा करीने कह्युं के यज्ञ करो एटले देवताओ प्रसंन थई तमारा मननी कामनाओ पुरी करशेः—

२ यज्ञ करीने बाकी जे रहे ते खाय तेनुं सर्व पाप बळी जशे. यज्ञ करेतोज वरसाद पडशे अने यज्ञ ब्रह्मदेवनी आज्ञा प्रमाणे छेः—

३ यज्ञ-दान-तथा तप मनुष्यने पवित्र करे छे माटे ते कर्मनो त्याग कोईए करवो नहीं. ते अवश्य करवांः—

रामायण नामनो काव्य ग्रंथ छे ते मुळ वाल्मीक ऋषिनुं करेलुं छे. अने ते उपरथी पुराणमां अनेक रामायण लखायां छे तेमांनुं मुख्य अध्यात्म रामायण छे तेमांना उत्तरकान्डमां रामचंद्रजी रावणने जीती सीताने लेई ज्यारे अयोध्यामां आव्या त्यारे वीश्वामित्र-भृगु-अंगीरा-वामदेव- अगस्ती इत्यादी ऋषी रामचंद्रजीने आशीरवादने सारु आव्या ते वखत मधुपर्क पुजा करी रामचंद्रजीए ऋषीओने मान आप्युं. ते विशे श्लोकः—

दृष्ट्वारामोमुनीन्प्राप्तंप्रत्युत्थायकृतांजलिः
पाद्यार्घ्यादिभिरापुज्यगांनिवेद्ययथाविधि

उत्तरकांडे अ० १ श्लोक १३

टिका.

गांमधुपर्कार्थेवृषभंच । महोक्षंवामहो
जंवाश्रोत्रियोपकल्पयेदितिस्मरणात्

अर्थः—रामचंद्रजीए मुनीयोना देखतांज उभा थइ हाथ जोडी पग धोवानुं पाणी अने अर्ध्य इत्यादि पुजा करीने वीधी प्रमाणे गायो-नीवेदन करी ए उपर टीकाकार लखे छे के मधुपर्क पुजा करवाने सारू गाय अथवा बळद आपवो जोइए एवी वीधी स्मृतिमां कहेली छे.

स्मृति-पुराण-इतीहास-तथा काव्य आ ग्रंथो ऋषि लोकोये करेला तेथी आर्ष कहेवाय छे. त्यार पछी लोकोए एवुं मान्युं के हवे दुनीयामां ऋषि नथी परंतु जे रह्या छे ते मनुष्य छे अने ते मनुष्ये करेला ग्रंथ तेने पौरूष ग्रंथ कहेवाय छे अने तेवीज जातना ग्रंथने निबंध पण कहेवाय छे. आवा निबंध संस्कृत भाषामां घणा छे अने माधव-हेमाद्री-कमलाकर इत्यादि निबंधकार घणा थइ गया छे. केटलाकोए व्याकर्ण शास्त्र उपर पोताना नीबंध लख्या छे तेमज केटलाकोए धर्मशास्त्र, वैदक इत्यादि उपर लखेला छे अने तेमणे पोताना नीबंध रचवामां आर्ष ग्रंथनो आधार लीधेलो छे. आवा निबंध करनारा मानो कौस्तुभकार वीवाह प्रकरणमां छापेला ग्रंथने पाने २१७ मे नीचे मुजब लखेलुं छे:—

अजयंतः। गौःप्रतिनिधित्वेनछागआलभ्यते ।

उत्सर्जनपक्षेपिछागएवनिवेदनीय इति ।

गौगौंरितिगविमनसिधृतायांद्वात्रिंशत्पणात्मकनिष्क्रय।

छागेमनसिधृतेपणात्मकोनिष्क्रयोदेयः ।

नामांसोमधुपर्कोभवति । इतिसूत्रात् ।

उत्सर्जनपक्षेपिअन्येनमांसेनभोजनदानमिति ।

वृत्तिकृत्जयंतादिभिरभिधानाच्च ॥

अर्थः—गायने ठेकाणे बकरु मारवुं जोइये. गाय छोडी मुकवानो पक्ष लीधो होय तोपण बकरो नीवेदन करवो. ने गायने बदले तेनी कीमत आपवी होय तो तेना रु.३२) आपवा. बकराने बदले रु१) आपवो. मांस वीना मधुपर्क थतु नथी एवुं आश्वलायन आचार्य पोताना धर्म सुत्रमां लखे छे माटे उत्सर्जन पक्ष लीधो होय तोपण बीजा प्रकारथी मांस लावीने भोजन आपवुं एवुं जयंतादीक वृत्तिकारनो अभिप्राय छेः—

श्रद्धविवेकमा

अथमांसानि ॥ गंडकमांसंविषाणसमयानुत्थितशृंगछाग मांसंसर्वलोहितछागमांसंहरिणविचित्रहरिणकृष्णहरिण शंबरमृगमेषशशककूर्माऽरण्यवराहमांसानितित्तिरिला वकवर्तकीशल्लकीक्रकरएषांपक्षिणांमांसानिक्रकरःकरा तइातिप्रसिद्धःवार्धिणसंमांसंत्रिपिवंत्विन्द्रिपाक्षिणंश्वेतंवृद्धअ जापतिंवाघ्रिणसंतुतंप्राहुर्याज्ञिकाःपितृकर्माणिकृष्णग्रीवो

रक्तशिराः श्वेतपक्षोविहंगमः सवैवाध्रिणसः प्रोक्तइत्येषानैगमीश्रुतिः छागपक्षिणोवाध्रिणसौतयोर्मांसंमंत्रसंस्कृतमांसं यदाछागादिकंपशुमालभ्यमांसमुपादीयतेतदाप्रथमंमंत्रेणपशुप्रोक्षणंकर्तव्यम् ॥ मंत्रश्च ॥ ओंम् पितृभ्यस्त्वाजुष्टंप्रोक्षामि ॥ एकोद्दिष्टेनुपित्रेत्वाजुष्टंप्रोक्षामित्यादिरूपः अनालंभपक्षेसिंव्हादिहतमांसादिषुनमंत्रसंस्कारापेक्षेतिसिंव्हव्याघ्रहतहरिणमांसंलब्धक्रीतछागादिमांसम्मस्थराद्यभिघातछागादिमांसं ॥ अथमत्स्याः ॥ महाशल्करोहितराजीवपाठिनश्वेतशल्काअन्येपि ॥

काशिमां छापेलि प्रतनुं पान१६

अर्थ—श्राद्ध विवेक करीने एक ग्रंथ छे तेमां मावापनां श्राद्धनां विधि अनेक प्रकारनां लख्यां छे तेमां श्राद्धमां अनेक जनावरनां मांस भक्षण करवा विशे लख्युं छे, तेनी विगत, जंगलीभेंस, बकरो, हरण, रोझ, घेटा, ससलु, काचबा, जंगलीभूंड, अने तेतर, लावक, इत्यादिक पक्षि, अने जनावरो, मंत्रथी पवित्र करीने पाणी छांटीने, अने एवो मंत्र भणवो के, मारा पित्रीने वास्ते योग्य करवा सारु पवित्र करुछुं, एवुं भणीने तेनुं मांस लेवुं, अथवा पशु हिंसा करवाने अनुकुळ न होयतो, व्याघ्र के सिंहे मारेला जनावरनुं मांस लेवुं, अने एवुं जनावर मळे तो मंत्र भणवानी जरुर नथी, अथवा वेचाथी लाववुं, एज प्रमाणे, महाशल्क, लाल मांछलां, राजीव, तथा पाठिण, इत्यादि श्राद्धमां योग्य छे

भवभुती कवी जे भोजराजाना वखतमां थयो तेणे उत्तररामच-रीत्र नाटक लख्युं छे ते प्रसीद्ध छे अने नीशाळोमां पण चालेछे तेना चोथा अंकमां वशीष्टना शिष्य सौधातक अने भान्डायन ए बंनेनो संवाद लख्यो छे तेमां प्रसंग एवो छे के राजा दशरथ वशीष्ट मुनीने घेर आव्या त्यारे एक वाछडु मधुपर्कने सारू मार्युं. त्यार पछी जनक राजा आव्यो त्यारे मधुपर्क कर्यो नही कारण ए राजा नीवृत्तिमार्गनो हतो माटे मधुपर्कनी जरूर नथी ते वीशे नीचे मुजब संवाद छेः—

सौधातक--मयापुनर्ज्ञातंव्याघ्रोवा
वृकोवाएषइति ।

भांडायण--आःकिमुक्तंभवति--

सौ० तेनसावत्सतरीभाक्षिता ।

भा० समांसमधुपर्कइत्माम्नायंबहुमन्यमानाः
श्रोत्रियायाभ्यागतायवत्सतरीं ।
महोक्षंवामहोजंवानिर्वपंति । गृहमेधिनः ।
तंहिधर्मसूत्रकाराःसमामनंति

सौ० येनआगतेषुवासिष्ठमिश्रेषुवत्सतरींविशासिता ।
अद्यैवप्रत्यागतस्यराजर्षेजनकस्यभगवताबाल्मी
किनापिदधिमधुभिरेवनिवर्तितोमधुपर्कः

भा० अनिवृत्तमांसानामेवकल्पंमृषयोमन्यंते
निवृत्तमांसस्तुतत्रभवान्जनकः ॥

पद्मपुराणना पाताळखंडमां रामाश्वमेधनी कथा छे तेना साठ अध्याय छे तेमांना सातमा अध्यायमां एवुं लख्युं छे के रामचंद्रजीने अयोध्यामां आव्या पछी बहु पश्चाताप थयो के युद्धमां पोताना हाथथी बहु ब्राह्मण रावणादीक मरीगया तेनुं पाप केम जशे एवो प्रश्न पुछाथी ऋषीए जवाब आप्यो के ए सर्वे पाप नाश थवा सारु अश्वमेध यज्ञ करवो ते शीवाय बीजो ऊपाय नथी अने आगळ जे मोहोटा मोहोटा राजाओ थई गया छे तेमणे अश्वमेध करीने स्वर्ग वास कर्यो तेज मुजब तुं कर एटले तारुं सरवे पाप बळी जशे ते वीशे नीचे लख्या मुजबनां वचन छे:—

रामउ० ब्राह्मणास्तुपूजार्हादानसन्मानभोजनैः ।।
तेमयानिहताविप्राःशरसंघातसंहितैः ॥
कुर्वतोबुध्धिपुर्वमेब्रह्महत्यासुनिंदिताम् ॥
इत्युक्तवंतंतंरामंजयादसतपोनिधिः

शेषउ० शृणुराममहावीरलोकानुग्रहकारक ।
विप्रहत्यायनोदायतवयद्वचनंब्रुवे ।
सर्वंसपापंतरतियोश्वमेधंयजेतवै ॥
तस्मात्वयजविश्वात्मन्वाजिमेधेनशोभिना
सवाजिमेधोविप्राणांहत्यातापापनोदनः
कृतवान्यंमहाराजोदिलिपस्तवपूर्वजः ।।
मनुश्चसगरोराजामरुतोनहुषात्मजः ॥

एतेतेपुर्वजाःसर्वेयज्ञान्कृत्वापदंगताः॥३५अ.७॥

उपर मुजबनां सघळां शाखोना ग्रंथ तपासतां मालुम पडे छे के बधा संस्कृत ग्रंथना त्रण भाग करेला छे:—

१ छांदस २ आर्ष ३ पौरुष

छांदस एटले परमेश्वरे करेला ग्रंथ-आर्ष एटले ऋषिओए करेला ग्रंथ. पौरुष एटले मनुष्याेए करेला ग्रंथ. तेमां छांदस ग्रंथ एटले वेद. तेमां मंत्र तथा ब्राह्मण. मंत्र एटले कर्मनी प्रवृत्ति करनार वचन:—

मंत्रराशिर्वेदइत्युच्यंते

कर्मप्रवर्तकामंत्राः

ए मंत्र जुदा जुदा ऋषियोये भणाववाथी शाखा भेद पड्यो तेनुं नाम "चरण" पण छे:—

अध्ययनभेदाच्छाखाभेदोअनादिः

चरणशब्दःशाखाविशेषाध्यापन

परैकतापन्नजनसंघवाची ॥

आश्वलायन शौनक ऋषीनो शिष्य हतो. शौनके पण वेद उपर ऋग्विधान. सर्वानुक्रम. इत्यादी ग्रंथ कर्या छे. अने आश्वलायने धर्म सूत्रकर्युं छे.

शौनकस्यतुशिष्योऽभूत्भगवान्आश्वलायनः ॥

कल्पसूत्रचकारादौमहर्षिगणपूजितः ॥

ए प्रमाणे अनेक शाखाना अनेक आचार्य थयाछे, धर्म शास्त्रमां सूत्र ग्रंथ वेदना बराबर मानेला छे कारण ए ग्रंथो वेदने घणा मळ-

ता छे अने वेदार्थ लेईनेज रचेलां छे. अने सुत्र उपरथी श्लोक बंध स्मृतीयो थयेलीयो छे. वेद जोतां मांस खावाने के हिंसा करवाने कांई नींषेध जणातो नथी. स्मृतिना काळमां एटले कळीयुगना आरंभमां वैदीक धर्म उपर एक मोहोटु बंड उभु थयुं ते ऊभु करनार बुध नामनो मगध एटले गयानो राजा हतो तेणे ब्राह्मणोनी बहुज नींदा करी अने वेदनो धीकार कर्यो ते वीशे जय देव स्वामी पोताना गीत गोवींद काव्य ग्रंथमां पेहेली अष्टपदीमां दशावतारनं वर्णन कर्युं छे तेमां बुद्ध वीशे लखे छे के:—

निंदसियज्ञविधेरहह:श्रुतिजातं
सदयत्दहृदयदर्शितपशुघातं ॥
केशवधृतबुद्धशरीरं ॥ गीतगोविंद.

अर्थ:—भगवान वीष्णुये बुध रुप लेइने वेदमां कहेला यज्ञ वीधीनी नींदा करी कारण के ए वीधीमां जे पशु मरता हता तेमनी भगवाननने दया आवी. एज ग्रंथमां एक श्लोकमां दशावतारनुं वर्णन कर्युं छे. तेमां बुध विशे लख्युं छे के:—

कारुण्यमातन्वते

अर्थ—बुधे दया धर्म प्रगट कर्यो:—

ए पंथना आचार्य अने पंडीत देशोमां फरी फरी उपदेश करता उत्तरमां चीन देश ब्रह्मदेश सुधी बौध धर्म स्थापन कर्यो. दक्षीणमां लंकामां पण ए धर्म चाले छे. हिंदुस्थानना ब्राह्मण एम बोलवा लाग्या के कळी उत्पन्न थयाथी वैदीक धर्म डुबी गयो. कळी एटले टंटो. ए टंटो शरु थयो त्यारथीज जुग जुदो मानेलो छे. बुधनी तकरार

चालतां बीजी एक तकरार एवी उत्पन्न थइ के केटलाक लोक सांख्य शास्त्रनो अभ्यास करीने एवुं कहेवा लाग्या के ब्राह्मण लोको अग्नी, वायु, सुर्य इत्यादी अनेक देवोनी उपासना करे छे, अने तेमना नामथी यज्ञ याग करे छे; पण ए देव शाना. एतो पदार्थ छे, अने आ जगतनुं आदी कारण तो एक ब्रह्म छे माटे कर्म कान्ड तमाम खोटुं छे. आत्मज्ञान एज मुख्य छे. ए लोकोए उपनिषेदनो आधार लीधो. आवां बंने तरफथी वैदीक मार्गवाळा ब्राह्मणोनी बहुज नींदा थवा लागी अने तेमना उपर लोकोनो बहुज धीक्कार थयो, तेथी वेदनां पुस्तक ढांकी मुकवानी जरुर पडी, अने केटलीक तरेहनो वीधीनो त्याग कर्यो, अने पुराण वीगरे ग्रंथमां कळीमां फलाणी चीज करवी नही एवां वचनो पण दाखल कर्यां, अने बौद्ध धर्मने मळतुं आवे एवो घाट रच्यो. अने केटलीएक युक्तियो कहाडी ते एवी के आगळना ऋषी जे यज्ञ करता ते जनावरो मारी पाछा जीवंत करता. ते मोटा सामर्थ्यवाळा हता. केटलाक कहे छे के मंत्रनुं सामर्थ्य तेओनी साथे गयुं पण ए विषे शास्त्रमां कोइ दाखलो मळतो नथी. एवो दाखलो मळे छे के जनावर मारीने होमता, अने खाता, अने ते वखत जे वेद हता तेज वेद आज पण छे; परंतु ते मुजब आज कोइ करे तो तेनी फजेती थाय.

मधुपर्क, अनुंस्तरणि, शूलगव, अश्वमेधमां संवेशन प्रकार, आश्लीलभाषण, इत्यादी कर्म आज कोइ करे तो तेनी सोबत कोइ लोक करशे नही, अने तेनी साथे वेहेवार राखशे नही अने ए कर्म जोतां ढेड वाघरी पण करे नही तेवां छे. गर्भाधान संस्कारमां मंत्र भणे छे ते.

तांपुषंशिवतमामेरयस्वयस्यांबीजं
मनुष्यावपंति ॥ यानउरुविशतिविं

श्रयातियस्यामुशंतः प्रहरामशेपं ॥

ऋग्वेद० अ० ८

आवा मंत्रनो अर्थ बतावे तो बहु अ मर्यादा थाय माटे छानु छे तेज सारु छे. कर्म कान्डनां जे अनुष्ठानो हतां ते उपनीषद भागमां अपरा वीद्यामां वर्णन करेलां छे अने अध्यात्म विद्या श्रेष्ट ठरावी छे.

तत्रापराऋग्वेदोयजुर्वेदः सामवेदोऽथर्ववेदः
शिक्षाकल्पोव्याकरणांनिरुक्तंछंदोज्योतिषामिति ॥
अथपराययातदक्षरमाधिगम्यते ॥ मुंडकोपनिषत्
अध्यात्मविद्याविद्यानां ॥ गीता.

एज उपनीषदमां कर्म कान्डनी निंदा करी छे ते नीचे प्रमाणे.

अविद्यायामन्तरेवर्तमानाःस्वयंधीराःपण्डितंमन्यमाना ॥
जघन्यमानाःपरियंन्तिमुढाअन्धेनैवनीयमानाः
यथान्धाः ॥ ८
अविद्यायांबहुधावर्तमानावयंकृतार्थाइत्यभिमन्यन्ति
बालाः ॥ यत्कर्मिणोनप्रवेदयन्तिरागातेनातुराः
क्षिणलोकाःश्चवंन्ते ॥ ९ ॥
इष्टापूर्तंमन्यमानावरिष्ठंनान्यच्छ्रेयोवेदयंन्तेप्रमुढाः ॥
नाकस्यपृष्टेतेसुकृतेऽनुभूत्वेमंलोकंहीनतरश्चविशंन्ति॥१०

मुंडकोपनिषत्

त्रैगुण्यविषयावेदानिस्त्रैगुण्योभवार्जुन ।।

यामिमांपुष्पितांवाचंप्रवदंत्यविपश्चितः ॥ गीता.

आ प्रमाणे निंदा करीने एवुं ठराव्युं के जे अनेक देवने भजे छे ते नीचे गतीने पामे छे. अने जे एक ईश्वरने भजे छे ते अक्षधामने पामे छे.

यांतिदेवव्रतादेवान्पितॄन्यांतिपितृव्रताः

भूतानियांतिभुतेज्यायांतिमद्याजिनोपिमाम् ।।

गीता अ० ९-२५

अनन्याश्चिंतयंतोमां ।। २२

ततःपदंतत्परिमार्गितव्यंयास्मिन्गतानानिवर्तंतिभूयः

अ० १५-४ गीता

आ प्रमाणे नीर्णय थयो ने ते उपरथी केटलाएक लोक बोलेछे के अमे कर्म कान्डी नथी. नीवृत्ति मार्गमां छीए. अने एक परब्रह्मनी उपासना करीये छीये पण कर्म कान्डना केटलाक कर्म तेमना करवामां आवे छे. अने यज्ञ कर्म करवानो अधीकार धारण करवानुं जे यज्ञो पवीत ते धारण करे छे ए रीती मुकी देता नथी. फकत जे संन्यासी थाय छे तेज मात्र यज्ञो पवीत धारण करता नथी. त्यारे जे गृहस्थ कर्म कान्डने मानता नथी तेमने यज्ञो पवीत शुं करवा राखवुं जोईए ए पण एक सवाल छे अने यज्ञो पवीत यज्ञ साध्यर्थ छे ते वीशे वेदमां नीचे मुजब लख्युं छेः—

प्रसृतोहवैयज्ञोपवितिनोयज्ञोप्रसृतोनुपवीतिनोयत्किंचब्राह्म

णोयज्ञोपवीत्यधीतेयजतएवतत् । तस्माद्यज्ञोपवीत्येंवाधी
यीतयाययजेत्वायज्ञस्यप्रसृत्या

तै० अरण्यक अ० २ अनुवाक १

सेहेजानंद स्वामीए शीक्षापत्री लखी छे तेमां केटलाएक ग्रंथो सत्शास्त्र ठराव्या छे ते नीचे लख्या मुजब:—

वेदाश्चव्याससूत्राणिश्रीमद्भागवताभिधम् ॥
पुराणंभारतेतुश्रीविष्णोर्नामसहस्रकं ९३
धर्मशास्त्रांतर्गताचयाज्ञवल्क्यऋषेःस्मृतिः ॥
एतान्यष्टममेष्टानिसच्छास्त्राणिभवंतिहि ॥ ९५ ॥

शीक्षापत्रि

अर्थ—वेद-याज्ञवल्कीय स्मृती-ए सत् शास्त्र छे एथी एम जणाय छे के एक ईश्वरवादी अने भक्तीवादी एमणे वेदनो आधार मुक्यो नथी शंकरवीजयनामनो ग्रंथ आनंद गीरी कृत छे तेना छवीसमा अध्यायमां जईन आचार्य अने शंकरस्वामीनो संवाद थएलो ते वीशे लखेलुं छे. तेमां शंकरस्वामी बोल्या छे के वेदमां हिंसा लखी छे ते हींसा नथी ए तो धर्म छे ते भाषण नीचे लख्यु छे:—

इदंआह । सर्वप्राण्यहिंसापरमोधर्मः।।परमगुरुभिरिदमु
च्यते ।। रेरेसौगतनीचतरकिंकिंजल्पसि ।
अहिंसाकथंधर्मोभवितुमर्हति । यागीयहिंसा
य । धर्मरूपत्वात्तथाहिअग्निष्टोमादिक्रतुः

छागादिपशुमान्यागस्यपरमधर्मत्वात् ।
सर्वदेवतृप्तिमूलकत्वाच्च । तद्द्वारास्वर्गादिफल
दर्शनाच्च । पशुहिंसाश्रुत्याचारतत्परैरङ्गि
करणीयातद्व्यतिरिक्तस्यैवपाषंण्डत्वान्तदा
चाररतानरकमेवयान्ति ।
वेदनिन्दापरायेनुतद्वाचारविवर्जिताः॥
तेसर्वेनरकंयान्तियद्यपिब्रह्मबीजजाः॥
इतिमनुवचनात्॥ हिंसाकर्तव्येत्यत्रवेदाःसहस्रंप्रमाणंवर्तते।
ब्रह्मक्षत्रवैश्यशुद्राणांवेदेतिहासपुराणाचारःप्रमाणमेव ।
तदन्यःपतितोनरकगामीचेति
सम्यगुपदिष्टःसौगतःपरमगुरुंनत्वानिरस्तसमस्ताभिमा
नःपद्मपादादिगुरुशिष्याणांपादरक्षधारणाधिकारकुश
लःसततंतदुच्छिष्टान्नभक्षणपुष्टतनुरभवत् ॥ इत्यनंन्ता
नंदगिरिकृतोषड्विंशप्रकरणं ॥

उपर मुजबनु शंकरस्वामीनु वचन सांभळी ए जैनाचार्य ए स्वामीनो नोकर थई रह्यो एवुं एमां लख्युं छे. सदरहु शंकरस्वामी शाक्तमार्गि हता. एवुं लोको कहेछे कारण ज्यांहां ज्यांहां एमना मठ छे तहां तहां शक्तीनी उपासना वीशेष चाले छे अने द्वारीकामां एमनो शारदा मठ छे. त्यांहां "श्रीचक्र" स्थापन पथरा उपर कोरीने कर्युं छे. अने घणा परम हंस-कौलीक-अघोरी-वाममार्गि, सरभंगी इत्यादी ब्र-

ग्न मार्गि केहेवाय छे पण मद्य मांस पीयेछे खायछे. श्रीचक्र वाममार्गि नुं पुजा करवानुं दैवत छे ते शंकराचार्य स्वामीए ठरावेलुं छे. ए वीशे शंकरवीजयना चोसठ तथा पांसठमा अध्यायमां नीचे मुजब वचनो छेः-

यादेवीसर्वभूतेषुज्ञानरूपेणसंस्थिताइतिमार्कंडेयवचनात् परादेवताकामाक्षिति । अ० ६४

एवमेतस्मिन्नर्थेनिष्पन्नेपरशक्तिस्वस्याभिव्यंजकंश्रीचक्र निर्माणंक्रियतेभवद्भिराचार्यैःतत्रश्लोकम् ।

बिंदुत्रिकोणवसुकोणदशारयुग्मंमन्वस्त्रनागदलसंयुतषोडशारम्॥ वृत्तत्रयश्चधरणिसदनत्रयश्चश्रीचक्रमेतदुदितंपरदेवतायाः॥

श्रीचक्रंशिवयोर्वपुः॥

इत्यादिवचनैःश्रीचक्रस्यशिवशक्त्यैक्यरूपत्वात् । मुक्तिकांक्षिभि.सर्वैःश्रीचक्रपूजाकर्तव्येतिसर्वेषांमोक्ष फलप्राप्तयेदर्शनादेवश्रीचक्रआचार्यैर्निर्मितमिति ॥

पंचषष्टिप्रकरणं ॥

पछी शंकराचार्यने राजा लोकोनी घणी मदद मळी अने बुद्ध धर्मना लोको साथे लढाइ करी अने ए धर्मना घणा लोकोने मारी नांख्या. ए वीशे माधवाचार्ये बीजो शंकरवीजय लख्यो तेमां नीचे मुजबनो वचन मळी आवेछेः—

आसेतुरातुषाद्रिंबौद्धानंवृद्धबालकं

नाहंतियासहंतव्योभृत्यंइत्पवसंनृपाः ॥
नावदेत्यवंनीभाषांप्राणैःकंठगतैरपि ।
हस्तिनाताडयमानेपिनगच्छेजैनमंदिरं ॥

त्यार पछी बुद्ध धर्मनु खंडण थयुं ने वैदीक मत चाल्युं. परंतु ते पण लोकोने पसंद नही आव्याथी भक्तीमार्ग चाल्यो. अने यज्ञने ठेकाणे पुजा शेवा करवानो प्रथा पड्यो. अने ब्राह्मणो कर्म कांन्डमां ज्यां दर्भ वापरता हता ते जगोए आ भक्तीमार्गवाळाओए तुळशी वापरी अने पुरो डाश एटले यज्ञनो शेष भागने बदले प्रसाद दाखल थयो. अने अग्निने ठेकाणे मुर्तियो थई अने माहाक्रतुने ठेकाणे छपन भोग ईत्यादि मोहोछव करवानु शरु थयु. अने वेद पठनने ठेकाणे माळा फेरववानुं आव्युं. अने प्रायश्चतिने ठेकाणे नाम स्मरण आव्युं अने अनुष्टाननी जगो उपर भजन आव्युं मधुपर्कने ठेकाणे अर्ध्य एटले पाणीनो लोटो भरी आपवो. तोपण भक्तीमार्ग नीची पदवीनी उपासना गणाय छे. ते वीशे कह्युं छे केः—

अग्नौक्रियावतांदेवेदिविदेवेमनीषिणां
प्रतिमास्वल्पबुध्धिनांसर्वत्रसमदर्शनः ॥
कृतेपापेनुतापोवैयस्यपुंसःप्रजायते
प्रायश्चितंतुतस्यैकंहरिसंस्मरणंपरं ॥
मनसापिस्मरेद्यस्तुवासुदेवंहरिंपरं ॥
चांद्रायणशतंसाग्रलभतेनात्रसंशयः
अश्वमेधाद्दशगुणंप्रवदंतिमनीषिणः

पौंडरीकस्ययज्ञस्यफलंप्राप्नोतिमानवः
अकामोवासकामोवायेस्मरंतिचमाधवः
हरेःसंकीर्तनंचैवसर्वपापप्रणाशनं
येनराःनाभिजानंतिवंचितास्तेनसंशयः
तस्मात्सर्वप्रयत्नेनहरेर्नामानुकीर्तनंः

शंकराचार्यना मतमां आत्मा एज ब्रह्मछे बीजा बधा देव नीचा छे. ब्रह्मचींतनीका--तथा ज्ञान भास्कर ग्रंथ छे तेमां नीचे लखेलां वचन मळी आवेछेः—

अहमेवपरंब्रह्मवासुदेवाख्यमव्ययं
इतिस्यान्निश्चितोमुक्तोबत्धएवंन्यथाभवेत् ।।
आत्मानंसततंब्रह्मसंभाव्यविरहंतिये ।
तन्महापातकंहंतितमःसूर्योदयोयथा ॥
अहंविष्णुरहंविष्णुरहंविष्णुरहंहरिः ।।
आनंदोहंमशेषोहंअजोहंममृतोस्म्पहं ।।
अच्युतोहंमनंतोहंगोविंदोहंमहंहरिः ।।
नित्योहंनिर्विकल्पोहंनिराकारोहमव्ययं ।।
सच्चिदानंदरूपोहंपंचकोशातिगोस्म्यहं ॥
आदिमध्यांतमुक्तोहंनबत्धोहंकदाचन ।।
ब्रह्मैवाहंनसंसारीमुक्तोहमितिभावयेत् ।।
आनंदःसत्यबोधोहंमितिब्रह्मानूचिंतनं ॥

अयंप्रपंचोमिथ्यैवसत्यंब्रह्माहमद्वयं ॥
नाहंदेहोनमेदेहिकेवलोहंसनातनः ॥
एकमेवाद्वितीयंब्रह्मनेहनानास्तिकिंचन ॥

सदरहु मतने अद्वैत मत कहेछे अने भक्तिमार्गने द्वैत मत कहे छे. पण आ बंने मत कर्मकान्डने खंडन करनारा छे. तेज प्रमाणे बौध मत पण खंडन करनार छे. ते उपरथी ब्राह्मणनो अधिकार घणुं करीने जवा लाग्यो ने तेथी ब्राह्मणो पोकार करवा लाग्या के कळीयुग आव्युं अने धर्म डुबवा लाग्यो. ते वीशे एवुं लख्युंछे केः—

धर्मःप्रव्रजितःतपःप्रचलितःसत्यंचदुरंगतः ॥
पृथ्विमंदफलानृपाकपटिनोलोलपंगताब्राह्मणः ॥
नारीयौवनगर्वितापररतापुत्रापिदुर्द्वेषिणा ॥
साधुःसीदातिदुर्जनःप्रभवतिप्रायःप्रविष्टेकलौ ॥ १ ॥

कर्मकान्डनी नींदा करनार बधायदेशमां उत्पंन्न थया. दक्षणमां तुकाराम कवी थयो ते लखेछे केः—

मुखबांधुनिमेंढामारा । ह्मणातिसोमयागकरा ।
ह्मणतिसजीवतुळसीतोडा । पुजानिर्जिवदगडा ॥
करतिबेलातोडातोडि । शिवालाखोलिरोकडि ॥
नागपूजायालाजाति । सापदेखुनडांगाघेति ।
कोणजाणेखरेखोटे । भजनचाललेउफराटे ।
तुकाह्मणेभक्तिभाव ॥ तेणेभक्तापावेदेव ॥

कमळाकर भट निर्णय सिंधुमां तृतिय परिछेदना प्रथम प्रकरणने अंते अनेक पुराणमां कळीयुगमां जे करवुं नही तेनुं वर्णन करेलुं छे ते बधु आ जगाये एकठु करेलुं छे. तेमांना वचन नीचे मुजबः-

१ समुद्रयातुःस्वीकारःकमंडलुविधारणं ॥
द्विजानामसवर्णासाकन्यापयमःस्तथा ॥
देवराच्चसुतोत्पातिमधुपर्केपशोर्वधः
मांसदानंतथाश्राद्धेवानप्रस्थाश्रमस्तथा ॥
दत्ताक्षतायाःकन्यायाःपुनर्दानंपरस्यच
दीर्घकालंब्रह्मचर्यंनरमेधाश्वमेधकौ ॥
महाप्रस्थानगमनंगोमेधश्चतथामखः
इमान्धर्मान्कलियुगेवर्ज्यानाहुर्मनिषिणः
बृहन्नारदपुराणे

२ उढायाःपुनरुद्वाहंज्येष्टांशंगोवधःस्तथा ॥
कलौपंचनकुर्वितभ्रातृजायाकमंडलुं ॥ हेमाद्रि

३ गोत्रान्मातृःसपिंडाच्चविवाहोगोवधःस्तथा ।
नराश्वमेधौमद्यंचकलौवर्जद्विजातिभिः ॥ ब्राह्मे.

४ विधवायांप्रजोत्पत्तौदेवरस्यानियोजनं
बालायाःक्षतयोन्यासुवरेणान्येनसंस्कृतिः
कन्यानामसवर्णानांविवाहश्चद्विजन्मभिः

आततायिद्विजाग्र्याणांधर्मयुद्धेनहिंसनम् ॥
द्विजस्याब्धौतुनौयातुःशोधितस्याप्यसंग्रहम् ॥
सत्रदिक्षाचसर्वेषांकमंडलुविधारणं ॥
महाप्रस्थानगमनंगोसंज्ञप्तिश्चगोसवे ॥
सौत्रामण्यामपिसुराग्रहणस्यचसंग्रहः
अग्नीहोत्रहवन्याश्चलेहोलीढापरिग्रहः
वृत्तस्वाध्यायसापेक्ष्यमद्यसंकोचनंतथा
प्रायश्चित्तविधानंचाविप्राणांमरणान्तिकं ॥
संसर्गदोषास्तेयान्यमहापातकानिष्कृतिः

आदित्यपुराणे

५ वरातिथिपितृभ्यश्चपशूपाकरणक्रिया
दत्तौरसेतरेषांतुपुत्रत्वेनपरिग्रहः
शामित्रंचैवविप्राणांसोमविक्रयणंतथा ॥
कलौकर्तैवलिप्यंते ॥ इतिव्यासोक्तेः
महापापेरहस्यकृतेप्रायश्चितंनेत्यर्थः
६ अग्निहोत्रंगवालंभंसन्यासंपलपैतृकं ॥
देवराच्चसुतोत्पातिःकलौपंचविवर्जयेत् ॥
सन्यासश्चनकर्तव्योब्राह्मणेनविजानतः ॥

यावद्वर्णविभागोस्तियावद्वेदःप्रवर्तते ॥
सन्यासंचाग्निहोत्रंचतावकुर्यात्कलौयुगे ॥
एतेनचत्वार्यब्दसहस्त्राणिचत्वार्यब्दशतानिच
कलेर्यदागमिष्यंतितदात्रेतापरिग्रहः ॥

स्मृतिचंद्रिकायां

अर्थ.

१ एक जगोए नीचे मुजबना धर्म कळीयुगमां नही करवा विषे वीचारवंत माणसे एवुं कहेलुं छेः—

१ समुद्रमां जवुं.
२ संन्यास लेवो.
३ नीची जातनी कन्या परणवी.
४ दीयरवटु करवुं.
५ मधुपर्कमां जनावर मारवां.
६ श्राधमां मांस खवराववुं.
७ वानप्रस्थाश्रम लेवो.
८ परणेली कन्यानो पुनर्विवाह करवो.
९ बहु वर्ष सुधी ब्रह्मचर्य राखवुं.
१० मनुष्य यज्ञ करवो.
११ घोडानो यज्ञ करवो.
१२ जन्म सुधी यात्रा करवा फरवुं.
१३ गायनो यज्ञ करवो.

२ वळी बीजे ठेकाणे नीचे मुजब नही करवा विषे लख्युं छेः—

१ वीधवानो पुनर्विवाह.
२ मोटा भाइने मोटो भाग आपवो.
३ संन्यास लेवो.
४ भाइनी वीधवा साथे परणवु.
५ गोवध करवो.

३ त्रीजे ठेकाणे नीचे मुजब करवा मना करेली छे.

१ मामानी दीकरी साथे लग्न करवुं.
२ गोवध करवो.

३ नरमेध करवो. ४ अश्वमेध करवो.

५ दारू पीवो.

४ वळी चोथे ठेकाणे नीचे मुजब कळीयुगमां नहीं करवा लखेलुं छे.

१ दीयरवटु. २ पुनर्विवाह.

३ नीची जातनी कन्या परणवी. ४ युधमां ब्राह्मणने मारवो.

५ समुद्र यात्रा करवी. ६ सत्र नामनो यज्ञ करवो.

७ संन्यास लेवो. ८ जन्म सुधी यात्रार्थ फरवुं.

९ गोसव नामना यज्ञमां गोवध करवो. १० सौत्रामणी नामना यज्ञमां दारू पीवो.

११ अग्निहोत्र. १२ मरण प्रायश्चीत.

१३ संसर्गदोश. १४ दत्त अने औरस शीवाय बीजा पुत्र करवा.

१५ शमीत्र एटले पशुने यज्ञार्थ मारवानुं काम. १६ सोम विक्रय.

५ वळी बीजे ठेकाणे नीचे मुजब नहीं करवा लख्युं छे.

१ अग्निहोत्र. २ गोवध. ३ संन्यास.

४ श्राद्धमां मांस भक्षण. ५ दीयरवटु.

आ मुजब कर्म करवां नहीं ने संसर्गनो दोश नथी अने छानुं पाप थाय ते गणवुं नहीं. संन्यास तथा अग्निहोत्र, वेद तथा वर्ण ज्यां सुधी चालतुं होय त्यांसुधी करवुं:—

उपर लखेला कर्ममांथी केटला एक चाले छे ने केटलाक नथी चालता. चाले छे ते; १मामानी कंन्या परणे छे. २मोटा भाइने मोटो

भाग अपाय छे ३ बहुकाल ब्रह्मचारी रहेछे. ४ संन्यास ले छे ५ अग्निहोत्री ब्राह्मण छे ६ दरीआमां नावमां बेसीने लोक जाय छे ७ संसर्ग दोष पण गणाय छे. अने ८ महा प्रस्थान एटले जन्म सुधी जात्रा करवाने अर्थे फरवुं ते पण लोक करे छे. ९ मांस भक्षण पण गौडब्राह्मण, सारस्वत, कान्यकुब्ज, मैथील अने केटला एक उत्कलपण करे छे. अने १० पंच द्राविडमा यज्ञ यागादीक कर्ममां भक्षण करे छे. ११ कळीयुगमां अश्वमेध करवानो नीषेध छे. पण सवाइ जेशींग राजाए जयपुरमां कराव्यो हतो एम संभळाय छे. अने १२ सोम विक्रय अने १३ शामित्र ए केटलेक ठेकाणे थाय छे. वळी बीजुं एम छे के ज्यां कळीगमां फलाणुं काम न करवुं एवु ज्यां लख्युं छे. त्यां ते बाबत उपर दोष मुकेलो नथी पण फकत भलामण तरीके लखेलुं छे. के विचारवंत माणसे न करवुं. जे गोसाइ वेरागी विगरे लोको देशदेश फरे छे तेओ बधा महा प्रस्थानमां गणाय छे.

आ शिवाय कळीना धर्म, हाल चलाववा के नही चलाववा ए विशे संशय छे. कारण के केटला एक कहे छे के छत्रीस हजार वर्श सुधी कळीयुग गणवो नही. केमके तेटली मुदत सुधी पूर्व युग प्रमाणे वर्तवुं, केटला एक कहे छे, चार हजार, केटला एक कहे छे दश हजार. एम कहे छे. आ सिवाय बीजो एवो संशय छे के वेदनां वचन अने सुत्रनां वचन एनुं खंडन पुराण वचनथी शी रीते थाय तेथी युगने माटे विषेष शास्त्रार्थ जे लख्यो छे ते अडचण लागवाथी लख्यो हशे. अने एनु प्रमाण निर्णयसींधुमां एम लख्युं छे के लोकना संरक्षणने माटे रुषीओए ठराव कर्या.

एतानिलोकगुप्त्यर्थंकलेरादौमहात्मभिः ॥

निर्वर्तितानिविद्वद्भिर्व्यवस्थापूर्वकंबुधैः ॥

परीछेद ३ प्रकरण १ निर्णय०

ब्राह्मणोने उपनयन, विवाह, मरण कार्य इत्यादिक संस्कार, गृह्यसुत्र थकी थाय छे. बीजो आधार जणातो नथी एम छतां अर्धुं खरू अर्धुं खोटुं एम शी रीते थाय अने पुराणनां वचन लेइए तो एक पुराणमां चार श्लोक वधारे अने बीजी प्रतमां ओछा एटले तेमां कीया श्लोको नवा बनावटना मुकायेला छे ते तपाशी शकातु नथी. अने जेम जेम गरज पडती गइ तेम तेम पुराणमां नवा श्लोक घलाय छे, श्लोक बद्ध स्मृतीओमां पण एवी गरबड थइ छे अने हाल गोसाइ, वेरागी, साधु, बावा, इत्यादीक चार वर्णना लोक एकत्र जमे छे अने अनेक जातीना साधु थया छे जेवाकि नाभाजी भक्तमाळनो ग्रंथ करनार ए जातनो धेड हतो. अने कबीर मुसलमान हतो, तेथी एम जणाय छे के परमार्थमां वर्णाश्रम धर्म रह्योज नथी. फकत व्यवहारमां मात्र रह्यो छे. हालनो धर्म एक रीत उपर नथी पण पंचमुख छे एटले केटला एक वेद विधी, केटला वेदांत, केटला एक भक्तीमार्गी केटला एक बौध मार्ग, अने केटला एक रूढी, एवां पांचने आधारे चाले छे मूळ चार वेद अने चार उपवेद तेमां आयु. धनु, शिल्प, गांधर्व आ छे, अने छ अंग एमां व्याकरण वेदनुं मुख कहेवाय छे. अने सुत्र हस्त कहेवाय छे, जोतीष नेत्र कहेवाय छे. शिक्षा नाक गणाय छे, छंद पग कहेवाय छे, नीरूक्त कान कहेवाय छे. ए प्रमाणे वेद रूपी जे पुरूष तेना शरीरना ए भाग कहेवाय छे. जे चौद विद्या कहेवाय छे ते आनुं नाम छे. वेदने लगता ग्रंथ आटलाज छे. एमां देवता वगेरे आजना जेवा नही विजी प्रकारना छे. जेमके अग्नी, म-

रुद्र, इंद्र, वरुण, सुर्य प्रजापती, धुरीलोचन धनुर्धर, नान्दीमुख, पुरुर्वाद्रव इत्यादीक अने तेनी भक्ती यज्ञ अने होम द्वाराए थाय छे, शौ-नक रुषीए ज्यारे वेदनो सर्वानुक्रम लख्यो त्यारे एणे एवो ठराव कर्यो के मंत्रमां जे पदार्थनुं वर्णन आवे ते तेनी देवता ठराववी तेथी केट-ला एक मंत्रनी देवता घासने ठरावी छे केटला एकनी देवता देड-कां थयां छे. तेथी देवतानी संख्या पण वधी छे पण वेदमां मुख्य देवता तो पंच तत्व छे. अने बौध अने ब्राह्मण वच्चे ज्यारे तकरार पडी ते वखत वेदना मंत्र परमेश्वरथी थयेला छे एम पूर्वमिमासा वाळा ए ठराव्युं पण ए मत घणुं प्राचीन नथी. घणे ठेकाणे वेद छे ते रु-षी वाक्य छे एवुं लख्युं छे.

शौनकोक्तसर्वानुक्रमपरिशीष्ट-परीभाषाखंडमां

यस्यवाक्यंसऋषिः । यातेनोच्यतेसादेवता ॥

यदक्षरपरिमाणंतछंदं ॥

नमोवाचस्पतयेनमऋषिभ्योमंत्रकृद्भ्योमंत्रपतिभ्योमामामृषयोमंत्रकृतोमंत्रपतयःपरादुर्मा ॥

तैत्तिरीये अरण्यके ४ प्रपाठक १ अनुवाक १

ऋग्वेद संहितामां घणे ठेकाणे एवुं लख्युं छे के रुषिओए मंत्र उत्पन्न कर्या तेमांनुं एक वचन नीचे लख्युंछे.

ऋषेमंत्रकृतास्तोमैःकश्यपोद्वर्धयन्गिरः ॥

वेद ब्रह्मदेवे निर्माण कर्या एवुं जे कहेछे तेनुं कारण एमछे के ब्राह्मण ए ब्रह्मानुं मुख छे माटे जे ब्राह्मणे कर्युं ते ब्रह्माएज कर्युं एमज

समजवुं जोईए गीतामां कह्युं छे के.

ऋषिभिर्बहुधागीतंछंदोभिर्विविधैः पृथक् ॥ गीतायां

अर्थ—अनेक छंद रुषिओए गायन कर्या अने रुषिओ ईश्वरनां मुख हता ए विशे भारथमां लख्युंछे के.

ब्रह्मवक्त्रंभुजौक्षत्रंकृत्स्नंमुरुदरंविशः ॥
पादौयस्याश्रिताःशुद्रास्तस्मैवर्णात्मनेनमः ॥

भीष्मस्तवराज ६८

अने जे रुषि मंत्र कर्त्ता गणाता तेमने द्रष्टा ठराव्या. एनुं कारण एके ए पुस्तकनी विरुद्ध कोई तकरार न करे तेने माटे एम करेलुं जणाय छे. पछी वेद धर्म चालतां चालतां लोकोने कंटाळो आव्यो अने हजारो देव अने हजारो अनुष्टान अने हींसा ए ठीक लाग्युं नहीं तेथी ब्रह्मजीज्ञासा उत्पंन्न थई अने ते बाबत उपनीषदमां एवां वाक्य जणायछे.

अधीहीभगवोब्रह्मेति
नकर्मणानप्रजयाधनेनत्यागेनैकेअमृतत्वमाशुः ॥
ब्रह्मविदाप्नोतिपरम्
तद्वीजिज्ञासस्व. यतोवाईमानिभुतानिजायंते ॥
अथातोब्रह्मजिज्ञासा.

कर्म उपरथी श्रधा उठी अने ब्रह्मउपर आवी एवुं उपरनां वाक्योथी जणाय छे अने वैदीक पुस्तकोमां जे देवता अने तेमनी प्रार्थना

जे मळेछे तेनो नमुनो बतावबाने वास्ते गृह्यसूत्रना त्रितीया ध्यायना चोथी कंडीकाना पेहेला सुत्रमां तर्पण करवानी देवतानी याद लखी छे तेमां देवता निचे प्रमाणे.

१ प्रजापती. २ ब्रह्मा. ३ वेद. ४ देव. ५ ऋषी. ६ सर्वाणी छन्दांसी. ७ ॐकार. ८ वषट्कार. ९ व्याह्रतया. १० सावित्री ११ यज्ञ. १२ द्यावाप्रथीवि. १३ अंतरिक्ष. १४ अहोरात्र. १५संख्या १६ सिद्धा. १७ समुद्रा. १८ नद्या. १९ गिरय. २० क्षेत्रौषधीवनस्पतिगंधर्वाप्सरसा. २१ नागा. २२ वयांसी. २३ गावा. २४ साध्या. २५ विप्रा. २६ यक्षा. २७ रक्षांसि.

आजना लोक आ देवता विषे तो केटलोक वांधो काढे. अने नाग डुंगर दरीयो, नदी, वनस्पति, संख्या व्याह्रती, वषट्कार, यज्ञ, ईत्यादिने देव केरवाने आचर्यो थाय.

प्रार्थना करवामां शतरुद्रीय के जेने रुद्रि केहेछे. ए महामंत्र गणाय छे तेमां शिवनुं वर्णन छे तेनां थोडां वाक्य नीचे लख्यां छे.

नमोस्तुनीलग्रीवाय-सहस्त्राक्षायमीढुषे-विज्यंधनुःकपर्दिनो-नमोहिरण्यबाहवे-वनानांपतये-निषंगीणेस्तेनानांपतये-वंचतेपरिवंचते-तस्कराणांपतये-नक्तंचरद्भ्यः-गिरिचराय-तक्षभ्यः- ॥

असौयः ताम्रो- अरुणः- ॥

अहींश्चसर्वांजंभयं ॥

रथकारेभ्यः-कुलालेभ्यःकर्मारेभ्यःश्वभ्यः-श्वपतिभ्यः-

शितिकंठ:कवचिने-आरात्तेगोघ्नउतपूरुषघ्ने-अग्रेवधाय दुरेवधाय-कुल्याय-शष्यायचपर्णाय-सिकताय-त्रजाय-इषुकृद्भ्य:धन्वकृद्भ्य:-गव्हरेष्ठाय-धन्वकृद्भ्य:पशुनांमाभे र्मा-मारीरिषा-मानस्तोकेमानधि-भेषधि-विशिखास:-असंख्यातानिसहस्राणियेरुद्रा:-येपथांपथिरक्षय-येतीर्थानि प्रचरंतियेअन्नेषुविविध्यंति-दशप्राचीर्दशदक्षिणादशप्रतीचीर्दशोदिचीदशोर्ध्वायश्चनोद्वेष्टितंमेषांजभेदधामि.

वाजश्चमेक्रतुश्चमे-यज्ञेनकल्पेताम्-ओजश्चमे-शंचमे-रयिश्चमे-व्रीह्यश्चमे-अश्माचमे-अग्नीश्चमेआग्रयणश्चमे-स्रुच:श्चमआयुर्यज्ञेनकल्पतां ।। रुद्रि

देवायद्यज्ञंतन्वानाअबध्नंपुरुषंपशुं ।। नारायण सूक्त

अर्थ—नमस्कार करु छुं तारो कंठ काळोछे. तने हजार आंख्यो छे वळी तुं जळनी वृष्टि करनार छे. तारुं धनुष तैयार छे. तुं जटावाळोछे तारी खांधे सुवर्णना अलंकार छे. तुं वगडानो राजा छे. तुं खड्गधारी छें, ने गुप्त चोरोनो उपरी छे तुं दगाबाजी करनारो.अने तुं चोरनो धणी छे. रात्रे फरनार, डुंगरमां फरनार अने सुतार पण तुं छे. वळी तुं लाल अने भगवो पण छे. सर्व ठेकाणेना सर्प मारनार तुं छे. गाडी करनार तुं छे. कुंभार तुं छे लुहार पण तुं छे तुं कुतरु छे अने कुतरानो पाळनार पण तुं छे धोळा गळावाळो छे. ने बक्तर पेहेरेलो छे. वळी तुं गायोने मारनार अने पुरुषोने मारनार, सामो

आवे तेने मारनार अने दुर होय तेने मारनार. झाडमां रेहेनार अने घासमां रेहेनार तुं छे. वळी पांदडांमां रेहेनार. रेतीमां रेहेनार, टोरांना टोळामां रेहेनार. तीर करनार, धनुष करनार, जंगलमां रेहेनार, जनावरोने बीवडावशो नहीं. मारशो नहीं. अमारां छोकरांने न मारशो. तुं वैदछे तारे शिखा नथी छे तारी मुर्ती गणती नही एटली छे. तु रस्ता वचे बेसेछे केटला एक तीर्थमां रहो छो केटला एक रसोइमां वीघ्र करो छो. पूर्व दीशामां तमे दश, दक्षणमां, दश पश्चीममां दश, उत्तरमां दश, अने आकाशमा पण तमे दश छो. जे अमारो शत्रु होय तेने तु दाढमां घालीने चावी जा. अन्न आप. यज्ञ करवानी शक्ति आप. यज्ञ करवाने उपयोगी कर तेज आप कल्याण आप द्रव्य आप डांगर आप तु पथरां आप अग्नी आप आग्रयण नामनो यज्ञ करवा सामर्थ आप. यज्ञनां पात्रो ते आप. आयुष आप ते यज्ञना काममां उपयोग आवे एवु कर.

रुद्रिमां रुद्रदेवनी प्रार्थना छे तेमां यज्ञ करवाने सर्व प्रकारनी सामग्री मने आप्य. अने ते सामग्री विगतवार लखी छे ते नीचे प्रमाणे.

इध्मःश्चमेबर्हिश्चमेवेदिश्चमेधिष्णियाश्चमे० शतरुद्रिय

उपर मंत्रनुं मूळ बताव्युं छे पण मंत्र तो बे त्रण वर्ग सुधी लांबा छे तेमां विगतवार यज्ञना लवाजमां वास्ते महादेवनी प्रार्थना करी छे ते उपरथी एम मालम पडे छे के यज्ञ करवानुं लोकोने बहु गमतुं हतुं अने माध्यंदीनी शाखामां यज्ञ विधि बहु बताव्यो छे माटे ए शाखाना ब्राह्मण हिंदुस्तानमां, गुजरातमां, ने दक्षणमां घणा छे महाराष्ट्र देशमां अश्वलायन ब्राह्मण घणा अने तैलंगदेशमां आपस्तंब शाखाना ब्राह्मण घणा बंगाळामां सामवेदना ब्राह्मण घणा लुणावाडामां अ-

थर्वेदी ब्राह्मण घणा छे पण माध्यंदीनी शाखाना विस्तारने कोई पो होंचे नहीं बौध धर्मवाळाए एम विचार कर्यो के चारवेदमां यज्ञ सिवाय बीजो कोई सात्विक धर्म नथी अने यज्ञमां हिंसा आवे छे माटे ए चारे वेदनो आपणे त्याग करवो एम समजीने फकत बुद्दीनो आधार लेईने दया धर्म चलाव्यो.

नारायण सुक्तमां लख्युं छे के देवोए यज्ञोनी वृद्धि करीने पुरुष पशुने बांध्यो.

अने गीतामां अनेक यज्ञ ब्रह्माना मुखथी उत्पन्न थया. तेनो शेष जे भक्षण करे छे. तेने मुक्ति मळे छे एवुं लख्युं छे.

एवंबहुविधायज्ञावितताब्रह्मणोमुखे॥ गीता. अ० ४-३२

यज्ञशिष्टांमृतभुजोयांतिब्रह्मसनातनम् ॥ ४-३१ गीता

ब्रह्मानुं मुख ते ब्राह्मण, ब्राह्मणना मुखथी जे विधि निकळ्या ते ब्रह्माना मुखथी कहेवाय.अने आज्ञाएज मुख छे. वेदना ऋषी केटला एक शुद्र छे केटला एक क्षत्री छे. ऐतरेय ब्राह्मणमां एक कथा छे तेमां कवष ऐलुष ए दासी पुत्र छतां ऋषी पद पाम्यो तेज प्रमाणे कक्षिवत राजा क्षत्री छतां वेदनो ऋषी थयो विश्वामीत्र पण एज प्रकारनो छे. पुराणोमां नहुष,वेण, सहस्त्रार्जुन आ त्रण जणा ब्राह्मणो साथे लड्या अने परशुरामे क्षत्रीओ साथे युद्ध कर्युं. बौध पण क्षत्री हतो. वेद पछी अनेक पंथ नीकळ्या. ते महीमनस्तोत्रमां एक ठेकाणे वर्णन कर्या छे.

त्रयीसांख्यंयोगंपशुमतंवैष्णवमिति ॥

अर्थ,—वेद, असल त्रण हता चोथो पाछळथी थएलो होय एम जणाय छे कारण के घणे ठेकाणे वेद त्रयी एवुं आवे छे.

असलना वखतमां वेद त्रण हता कारण घणेक ठेकाणे वेदत्रयी

एम लखाय छे अने वेदमां घणे ठेकाणे त्रणज लख्या छे.

ऋक्चमेसामचमेस्तोमचमेयजुश्चमे

कृष्णयजुःसंहिताशतरुद्रियसूक्त

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऋचःसामानिजज्ञिरे ॥

छंदांसिजज्ञिरेतस्माद्यजुःस्तस्मादजायत ॥

ऋग्वेदसंहितापुरुषसूक्त

अर्थः—ऋग्वेद अने सामवेद अने यजुरवेद ए त्रणे मने आप ए प्रमाणे भक्त, रुद्र देवताने प्रार्थना करे छे.

पुरुष यज्ञ करीने ऋग्वेद अने सामवेद अने यजुरवेद ब्रह्माए निर्माण कर्या.

ब्रह्मावक्त्रंभुजौक्षत्रंकृत्स्नमुरुदरंविशः ॥

पादौचस्यास्थिताःशुद्रास्तस्मैवर्णात्मनेनमः ॥

भारत

अर्थ—ब्राह्मण इश्वरनुं मुख छे क्षत्री ए इश्वरना खभा छे वाणीया ए इश्वरना साथळ छे शूद्र ए इश्वरना पग छे.

ऋग्यजुःसामएवच ॥

त्रयिविद्यामांसोमपाः ॥ गीता

ब्रह्मवल्लि उपनीषदमां अथर्ववेदने पुछ कह्युं छे.

तस्यपुरुषविधता। तस्तयजुरेवशिरः। ऋग्दक्षिणःपक्षः

सामोत्तरःपक्षः।आदेशआत्मा।अथर्वांगिरसःपुछंप्रतिष्टा

बौधे वेद उपर दोष मुक्यो छे. के वेद वाक्यमां पुनरुक्ति अने विरुद्ध आवे छे अने अनृत आवे छे.

अनृतव्याघातपुनरुक्तिदोषेभ्यः

उपर जे वेदनो नमुनो बताव्यो छे ते उपरथी मालुम पडशे बीजा दाखला.

नमोस्तुसर्पेभ्योयेकेचपृथ्विवीमनुः ।

येअंतरिक्षेयेदिवितेभ्यःसर्पेभ्योनमः

होतायक्षदश्विनौछागस्यवपायामेदसोजुषेंताँहविर्होतयज

होतायक्षसरस्वतीमेषस्यवपायामे०

होतायक्षदिन्द्रमृषभस्यवपायांमे० २१-४१

याऽअस्मभ्यमरातीयाद्यश्चनोद्वेषतेजनः

निंद्राद्योअस्मान्धिप्साच्चसर्वतंभस्मसाकुरु॥अ०११-८०

येजनेषुमलिम्लवस्तेनासस्तस्करावने ॥

यकक्षेष्वघायनस्तांस्तेदधामिजंभयोः ॥ अ०११-७९

शुक्लयजु संहिता.

उपला मंत्रोमां पहेला मंत्रमां सर्पनी स्तुती छे. बीजामां वपायाग छे. त्रीजामां शत्रु नाशनो मंत्र छे अने चोथामां चोर नाशनो मंत्र छे. बौधे जे धरम चलाव्यो तेमां वेद, तीर्थो, वर्ण, आ त्रण वानां काढी नाख्यां. ने दयाधर्म सत्य, तप इत्यादीक प्रगट कर्यां. वेदीक धर्ममां तप

एटले स्वाध्याय एटले भणवुं एनेज तप कहेता बीजुं देह दंडनुं तप हतुं नही. बौध पछी जे बीजा पंथ नीकळया ते बधा ए वेदने माने छे एटले तेओ वेद विरुद्ध बोलता नथी पण तेमनो धर्म वेदथी घणो वेगळो छे. त्यार पछी ज्यारे लोकोनी वेदमां कहेला धर्म उपरथी आस्था उठी गइ त्यारे एक इश्वर कीयो तेनो तपास करवाने षड् शास्त्र बांध्या तेना नाम.

कर्ता.	नाम.
गौतम.	न्याय.
कणाद.	वैशेषिक.
पतंजली.	योग.
कपील.	सांख्य.
जयमिनी.	पूर्वमीमांसा.
व्यास.	वेदांत.

आ ग्रंथ उपरथी एक इश्वर छे. अने अनेक देव नथी ए नकी थइ गयुं अने कर्मकान्डनुं वजन ओछुं थयुं अने शम, दम, उपरती, तीतीक्षा समाधी, श्रद्धा, नीत्यानीत्य वस्तु विवेक इत्यादिक साधन उपर नीष्ठा बेठी फकत एओ ज्ञानने मानता हता तीर्थादिकने मानता नहोता वेदांत सारमां कह्युं छे के.

तनुंत्यजतिवाकाश्यांश्वपचस्यगृहेथवा ।
ज्ञानसंप्राप्तसमयेमुक्तोसौविगताशयः ।।
नकर्मणामनुष्ठानैर्लभ्यतेतपसापिवा ।।
कैवल्यंलभतेमर्त्यःकिंतुज्ञानेनकेवलं ।। शीवगीता

कुटस्थानिहींकर्माणीकोटिजन्मार्जितानपि ॥
ज्ञानेनतुविनश्यंतिनतुकर्मायुतैरपि ॥ शी० अ० १३
तीर्थेचांडालगेहेवास्मशानेवासुरालये ॥
परित्यजन्देहमिदंज्ञानादेवविमुच्यते ॥
कुरुतेयत्रकुत्रापिभक्ष्यंवाभक्ष्यमेवच ॥
शेतेस्वेच्छालयगतोज्ञानात्मापरिमुच्यते ॥ शी०
कर्मणाबध्यतेजंतुर्विद्ययाचाविमुच्यते ॥
तस्मात्कर्मनकर्वंतियतयःपारदर्शिनः॥उपनिषद्भाष्य.

सदरहु विषे प्राकृत कवी तुकारामे कह्युं छे के.

तुह्मीनकाकरुगर्व ॥ नीचयातिह्मणुनीसर्व ॥
शुक्रशोणिताचिरवाणि-तुह्मा आह्मायेकचयोनि ॥
रक्तमांसचर्महाडे ॥ सर्वाठाईसमपाडे ॥
अन्नउदकघरोघरी ॥ निष्ठानाहीहोदुसरी ॥
तुकाह्मणेहेचिरवरे ॥ नाहिदेवाशीदुसरें ॥१॥
शुनिचैवश्वपाकेचपंडिताःसमदर्शनः ॥ गीता
स्त्रियोवैश्यास्तथाशूद्रास्तेपियांतिपरांगतिं ॥ गीता ॥
आदौकृतयुगेवर्णोनृणांहंसइतिस्मृतः ॥
कृतकृत्याप्रजाजात्यातस्मात्कृतयुगंविदुः ॥

सदरहु प्रमाणे ज्ञानमार्गी लोकोए वर्णाश्रमने कर्मनो उपहास कर्यो केटलाएक वरस सुधी आ प्रमाणे ज्ञानमार्ग चाल्यो त्यार पछी उपासना मार्ग उत्पंन थयो. अढार पुराण अने उपपुराण एओ उपासना मार्गनुं प्रतीपादन करे छे तेनी अंदर शैव अने वैष्णव आ बे संप्रदाय बहु वधेला छे तेमां शैवमार्ग पुरातन छे. अने वैष्णवमार्ग त्यार पछी थएलो छे. वैष्णवना मुख्यचार संप्रदाय १ रामानुज, २नींबार्क, ३मध्व, ४विष्णुस्वामी, ए चारे जणाए शंकराचार्ये स्थापेलो अद्वैतमत खंडन करी द्वैत मत चलाव्यो. एमने आधार घणु करीने पुराणनो. अने श्रुतीनो आधार लेवाने वास्ते केटलांएक नवां उपनीषद बनाव्यां. रामतापीनी, गोपाल तापीनी, नृसींहतापीनी इत्यादिक—पण वेदनां मंत्र भागमां उपासना विषे कंई जणातुं नथी. तेमां जे उपासना छे ते अग्नीद्वारा, अने पंचमहाभूतादिकनी छे. पण पुराणमां अवतारादीकनी छे. आ उपासना पुराणो थयां, त्यारथी ते आ संप्रदाय नीकळ्या त्यां सुधी उपासनाना विषय घणा नीकळ्या. जेवा के—कोई शीवमार्गी, कोइ विष्णु, कोइ गणपती, कोइ राधाकृष्ण कोइ बाळकृष्ण कोइ हनुमान, अने पोतपोताना उपासक देवने परब्रह्म कहे छे. केटला एक एकबीजाने उंचा नीचा गणे छे. कह्युं छे के.

गणेशंपूजयेद्यस्तुविघ्नस्तस्यनबाध्यते ॥
आरोग्यार्थेचयेसूर्यंधर्ममोक्षायमाधवं ॥
शिवंधमार्थमोक्षायचतुर्वर्गायचंडिका ॥

पछी अकेक संप्रदाय वाळाए पोतपोताना संप्रदायनां चिन्ह ठराव्यां, शीवमार्गीए भस्म, रुद्राक्ष, बाणलींग इत्यादीक वैष्णवे, तप्तमुद्रा

तुलसी, गोपिचंदन, शाळीग्राम इत्यादीक नीशानीओ ठरावी तेओ चंदन विष्णुपादाकृती करे छे. कोइ श्रीनुं चीन्ह धारण करे छे आ मुख्य बे मार्गोनी तकरार वध्याथी एकना विरुद्ध बीजाए बहु शास्त्र लख्यां छे. तेमां एक बीजानी नींदा करी छे. ए वाक्यो क्षेपक अथवा कल्पीत के असलनां हशे तेनो नीर्णय करवानुं मुष्किल छे. पुराण अने ऋषी उपर पण ए लोकोए दोष मुकेलो छे. केटलां एक पुराणो सात्वीक ठराव्यां छे. केटलां एक तामसी पुराणो ठराव्यां छे.

सत्यंपाराशरंवाक्यंसत्यंवाल्मिकमेवच ॥
व्यासवाक्यंक्वचित्सत्यंअसत्यंजैमिनीवचः॥
सात्विकामोक्षदाप्रोक्ताराजसास्वर्गदाशुभा ॥
तथैवतामसादेवीनीरयप्राप्तिहेतवे ॥
वैष्णवंनारदीयंचतथाभागवतःशुभं ॥
गारुडंचतथापाद्मंवाराहोराजसस्मृतः ॥ इत्यादी.

अने एक बीजा उपर दोश मुक्या छे ते निचे प्रमाणे.

वैष्णवमतमां.

ब्राह्मणःकुलजोविद्वान्भस्मधारीभवेद्यदी ॥
वर्जयेतादृशंदेवमिद्योच्छिष्टंघटंयथा ॥ १ ॥

वेदांताचिंतामणी

त्रिपुंड्रंशुद्रकल्पानांशूद्राणांचविधीयते ॥
त्रिपुंड्रधारणात्विप्रःपतितस्यान्नसंशयः ॥ २ ॥

योददातिद्विजातिभ्यः श्चंदनंगोपिमर्दितं ॥
अपिसर्षपमात्रेणपुनात्यासप्तमंकुलं ॥ ३ ॥
ऊर्ध्वपुंड्रविहीनस्यस्मशानसदृशंमुखं ॥
अवलोक्यमुखंतेषामादित्यमवलोकयेत् ॥ ४ ॥
यज्ञोदानतपश्चैवस्वाध्यायपितृतर्पणं ॥
व्यर्थंभवतितत्सर्वंऊर्ध्वपुंड्रविनाकृतं ॥ ५ ॥
शालग्रामोद्भवंदेवंदेवद्वारावतीभवः ॥
उभयोसंगमोयत्रतत्रमुक्तिर्नसंशयः ॥ ६ ॥
शालग्रामोद्भवंदेवंशैलंचक्रांकमंडितं ॥
यत्रापिनियतेतत्रवाराणस्यांशताधिकं ॥ ७ ॥
म्लेंछदेशेशुचौवापिचक्रांकोयत्रातिष्टति ॥
वाराणस्यांयवाधिक्यसमंताद्योजनत्रयंम् ॥ ८ ॥
यन्मुलेसर्वतीर्थानीयन्मध्येसर्वदेवताः ॥
यदग्रेसर्ववेदाश्चतुलसीतांनमाम्यहं ॥९॥
पुष्कराद्यानितीर्थानीगंगाद्यासरीतस्तथा ॥
वासुदेवादयोदेवावसंतितुलसीदले ॥ १० ॥
तुलसीकाष्टमालांतुप्रेतराजस्यदूतकाः॥
दृष्ट्वानश्यंतिदुरेणवातोधूतंयथारजाः ॥ ११ ॥

तुलसिमालिकांधृत्वायोभुंक्तोगरिनंदिनी ॥
सिक्थे सिक्थेसलभतेवाजपेयफलंशुभं ॥ १२ ॥
तुलसीकाष्टमालांयोधृत्वास्नानंसमाचरेत् ॥
पुष्करेचप्रयागेचस्नातंतेनमुनिश्वर॥ ॥ १३ ॥
आलोक्यसर्वशास्त्राणीविचार्यचपुनःपुनः ॥
इदमेकंसुनिष्पंन्नंध्येयोनारायणःसदा ॥१४॥
चक्रलांछनहीनस्यविप्रस्यार्वफलंभवेत् ॥
क्रीयमाणंचयत्कर्मवैष्णवानांविशोषतः ॥१५॥
कृष्णमंत्रविहीनस्यपापिष्टस्यदुरात्मनः ॥
श्वानाविष्टासमंचान्नंजलंचमदिरासमं ॥१६॥

शैवमतमां.

विनाभस्मत्रिपुंड्रेणविनारूद्राक्षमालया ॥
पूजितोपिमहादेवनतस्यफलदोभवेत् ॥ १ ॥
महापातकयुक्तोवायुक्तोवाचोपपातकैः ॥
भस्मस्नानेनतत्सर्वंदहत्यग्निरिवेंधनं ॥ २ ॥
पृथिव्यांयानितीर्थानोपुण्यान्यायतनायच ॥
शिवलिंगेवसंत्येवतानिसर्वाणिनारद ॥ ३ ॥
महेशाराधनाद्यन्यंनास्तिसर्वार्थदायकं ॥

अतःसदासावधानंपूजनीयोमहेश्वरः ॥ ४ ॥
अमितान्यपिपापानिनश्यंतिशिवपूजया ॥
तावत्पापानितिष्ठंतिनयावच्छिवपूजनं ॥ ५ ॥
लिंगार्चनविहीनस्यसमस्तानिष्फलाक्रीयः ॥
ततःसर्वार्थसिध्यर्थंलिंगपूजाविधीयते ॥ ६ ॥
सर्वैवर्णाश्रमाणांचकलौपार्थिवमेवही ॥
लींगंमहीजंसंपूज्यशिवसायुज्यमाप्नुयात् ॥ ७ ॥
दर्शनाब्दिल्ववृक्षस्यस्पर्शनात्वंदनादपि ॥
अहोरात्रकृतंपापंनश्यतिनात्रसंशयः ॥ ८ ॥
अरुद्राक्षधरोभूत्वायत्किंचित्कर्मवैदिकं ॥
कुर्वन्विप्रस्तुमोहेननरकेपतातिध्रुवं ॥ ९ ॥
देवाधिदेवःसर्वेषांत्र्यंबकःस्त्रिपुरांतकः ॥
तस्यैवानुचराःसर्वेब्रह्मविष्ण्वादयःसुरः ॥ १० ॥
विहायसांबमीशानंयजंतेदेवतांतरं ॥
तेमहाघोरसंसारेपतंतिपरिमोहिताः ॥ ११ ॥
तेधन्याशिवपादपूजनपराःअन्योनधन्योजनाः ॥
सत्यंसत्यमिहोच्यतेमुनिवरासत्यंपुनःसर्वथा. ॥ १२ ॥
शंखचक्रेतापपित्वायस्यदेहप्रदह्यते ॥

सजीवःकुपणःस्त्याजःसर्वधर्मबहिष्कृताः ॥ १३ ॥
यस्तुसंतप्तमुद्राभिःलिंगांकिततनुर्नराः ॥
ससर्वयातनाभोगीचांडालोजन्मकोटिषु ॥ १४ ॥
भक्त्यापंचाक्षरेणैवयःशिवसकृदर्चयेत् ॥
सोपिगच्छेच्छिवस्थानंशिवमंत्रस्यगौरवात् ॥ १५ ॥
पंचाक्षरेणमंत्रेणबिल्वपत्रैःशिवार्चनं ॥
करोतिश्रद्धयायुक्तोसगच्छेदैश्वरंपदं ॥ १६ ॥

आवां वचनो हजारोज नहींज पण लक्षा वधी मोटा मोटा ग्रंथमां मळी आवे छे तेथी लोकोने व्यामोह बहु थाय छे के आटला मार्गमां खरो कीयो आ वचन मानवुं के पेलुं मानवुं. देव पण घणा थया छे. पुराणना देव ते जुदा, गाम गामना ते जुदा, देश देशना जुदा अने प्रत्येकनुं प्रस्थान जुदुं अने एक बीजामां अपवाद घणा. धर्म शास्त्रनी व्यवस्था पण आवीज छे पण घणा मत थयाथी फलाणुं मत खरु छे एम कहेवातुं नथी धर्म शास्त्र कामधेनु जेवुं थयुं छे. जे वातनी इछा करो ते तेमां मळी आवे पुनर्विवाह बाबतमां स्मृत्यर्थ सार ग्रंथमां एक वचन लख्युं छे तेथी शी रीते मत भेद पड्यो छे ते जणाशे.

मृतेन्यस्मैप्रदातव्यामृतेसप्तपदात्पुरा ॥
पुरापुरुषसंयोगान्मृतेदेयेतिकेचन ॥
ऋतावदृष्टेकन्यैवपुनर्देयेतिकेचन ॥
आगर्भधारणात्कन्यांपुनर्देयेतिचापरे ॥

प्राचीन काळमां ब्राह्मण लोक पोतानो धर्म अने विद्यानो अभिमान राखता अने जे वाद करवा आवे तेनो पराभव करवाने वास्ते बहु महेनत लेता ते उपरथी केटला एक लोकोए दीग्वीजय कर्यो. आजना ब्राह्मणोए ए शरम मुकी दीधी छे. एज प्रमाणे क्षत्री पण जे युद्ध करवा आवे तेमने ना पाडता नहोता पण आज तो बधाए लोक तेजहीन थया छे.कोइ कोइने जवाब देतो नथी के पुछतो नथी विद्या बहु घटी गइ छे. शिवगितामां लख्युं छे के.

शक्तिवादरताःसांख्याःबुध्याबौध्यात्मवादिनः॥
इश्वरात्मैतिवैशेष्यामीमांसाकर्मवादिनः॥
सर्वनास्तितिचार्वाकावेदांताब्रह्मवादिनः॥
एवंभ्रमतिवैसर्वेशास्त्रमोहसमन्विताः॥
तस्मात्सर्वप्रयत्नेनशास्त्राभ्यासंत्यजेद्बुधः ॥

आ सर्व विचार उपरथी धर्मनी सुधारणा अवश्य छे के नहीं आ प्रश्न उत्पंन्न थशेः—हाल जे ब्रह्मसमाज बंगाळी पंडीतोए नवो संप्रदाय चलाव्यो छे तेमां वेदांतमांथी एकेश्वरमत ले छे अने द्वैतमांथी उपासना लेछे अने कर्मकांड थोडु राखेछे ए संप्रदाय सांप्रतकाळनी स्थीतीनी अनुकुळ छे के नहीं ए पण विचार गहन छे एनो निर्णय यद्यपी माणस न करे तो काळ करशे एमां संशय नथी. आद्य धर्म जे हतो ते आज चाले एवो नथी. ए सिद्ध थयुंछे. अने अनेक देवोनी उपासना हाल चाले छे ते पण नभशे एवुं लागतुं नथी माटे आ बधो विचार विचारवंत लोकोए ध्यानमां राखवा लायक छे एज विनंती.

वेदादिक शास्त्रमां जे हिंसा करवानी लखी छे तेनुं बयान करी

बताव्युं छे हवे हिंसा करवानी शास्त्र विना जे रुढी छे ते वीशे विचार करीये छीये. हिंसानुं मुळ एज छे के लोकोए नाना प्रकारना देवताओ छे एम मान्युं. अने ते देवता शान्त तथा सत्व गुणी छे, एवुं मानेलुं नही, बधा देवता एवा मानेला छे के ते लोकोने पीडा करी सके छे अने जुदा जुदा प्रकारना विघ्नो उत्पन्न करे छे, वृष्टीने हरकत करे छे. ने तेथी मनुष्य तथा पशुं. बाळक तथा स्त्री ए सघळांने दुख दे छे. अने देव माहाक्रुर तथा नीर्दय छे अने तेमने मद्य मांस अंन आप्या विना तेमनी तृप्ति थाय नही एवुं मुळथी धारेलुं तेथी तेमनी तृप्तीने वास्ते अने पोतानी पीडा मटवाने सारु हिंसा करीने देवताओने भक्ष आपवानी चाल पडी वेदमां जे देवोनु वर्णन करेलुं छे ते एज प्रकारनुं छे तंत्रमां जे वर्णन करेलुं छे ते पण एज प्रकारनुं छे. मंत्र शास्त्रमां अने रुढीमां. जे देवताओ मानेला ते पण आवाज प्रकारथी. ब्राह्मणनी संध्यामां पीशाचोने नसाडवा सारु भैरव अने चामुन्डा आ बे देवोनी प्रार्थना छे ते बंने श्लोक नीचे मुजब:—

उर्ध्वकेशीविरूपाक्षीमांसशोणितभोजनी ॥
तिष्ठदेवीशिखाबद्धेचामुंडेह्यपराजिते ॥१॥
तिक्ष्णदंष्ट्रामहाकायकल्पांतदहनोपम ॥
भैरवायनमस्तुभ्यंअनुज्ञांदातुमर्हसी ॥२॥
अपक्रामंतुभूतानिपिशाचाःसर्वतोदिशं ॥
सर्वेषामविरोधेनब्रह्मकर्मसमारभे ॥३॥

अर्थ.

१ ताहारा वाळ उभा थयेला छे अने ताहारी आंखो लालचोळ थई गई छे अने लोही तथा मांस तुं खाय छे. एवी चामुंन्डा देवी तुं छे.तारो कोई पराभव करे तेवुं नथी तुं आवी माहारी चोटलीमां वास कर:—

२ हे भैरव तने हुं नमस्कार करुं छुं. तुं मने ब्रह्मकर्म करवानी आज्ञा आप. ताहारो दाहाडो बहु मजबुत छे अने ताहारुं शरीर बहु वीक्राळ छे:—

३ माहारी पासे आ ठेकाणे जे कांई भुत, पीशाच होय ते दुर नाशी जाव अने शत्रुनो पण नाश थाव अने नीरांते हुं ब्रह्मकर्म करुं:—

आवा अनेक देवता, काळका, नरसिंह, वेताल, रुद्र, इत्यादी जुदा जुदा प्रकारना देवता छे एवुं असलथी लोकोए मानेलुं अने ते एकज ठेकाणे छे एम नथी पण गामोगाममां, वगडामां, झाड नीचे, पाणीना आरा उपर, इत्यादी तमाम ठेकाणे आवा अनेक देवताओ रेहेछे अने तेममे खावा पीवाने मळतु नथी. माणस ज्यारे आपे छे त्यारे ज तेमने खावा मळे छे माणस कांई आपे नही तो ते देवताओ माणसने पीडा करीने पोतानुं भक्ष ले छे अने वरसमां एक वखत अगर सवारे अथवा सांजे अथवा छ महीने अगर दश के पांचे वरशे आ देवताओने भक्ष आप्या शीवाय माणसनो छुटको थतो नथी एवी रीते नथी आपता तो कोगळीआ वीगरेना रोग पेदा करी पोतानुं भक्ष ले छे एवा वेहेम असलथी लोकोना दीलमां पेशी गएलो छे. मुसलमान लोक "कुरबानेईद" जने बकरीईद केहे छे ते दीवसे जनावरोनुं प-

रमेश्वरने बळीदान आपे छे अने ते ईद जीलहेज महीनामां आवे छे. जीलहेज एटले मुसलमानोनी जात्रानु ठेकाणुं जे मक्का तांहां जवानो महीनो. जे माणस मके जई आवे छे तेने हज करी आव्यो केहे छे. जे जात्राए जाय छे ते तांहां जात्रामां बळीदान आपे छे अने नहीं गयो होय ते पोताना घरमांज आपे छे अने पशुनो वध करवो ते "नीयत" एटले बिस्मीलहा कहीने करवो. "भिस्मीलाह ए शब्दनो अर्थ फकत परमेश्वर दयाळु छे एटलोज छे. उपर मुजब "नीयत" भण्या शीवाय वध जनावरनो थाय छे तेने ते लोको हराम केहे छे एटले तेवा पशुनु भक्षण करवुं ते अपवीत्र गणाय छे अने "नीयत" भणी जेनो वध थयेलो तेवा पशुनु भक्षण करवुं ते हलाल एटले पवीत्र गणे छे. एज मुजब ब्राम्हण लोकोमां जांहां वैदीक कर्म थाय छे तांहां "आप्यायन संस्कार," "प्रोक्षण संस्कार" "उपाकरण संस्कार." जे पशुने थयो होय तेनु मांस हव्य तथा कव्य समजीने भक्षण करवानो नीषेध राखता नहता. उपर मुजबनी ब्राम्हणनी व्यवस्था हती. हवे शुद्रादीक लोको शास्त्रनो आधार बीलकुल राखता नथी तथा कोई जातनो संस्कार पण करता नथी परंतु बळीदान घणा करे छे. दसराने दीवशे घोडानी पायगामां, हाथीखानामां, रथखानामां, इत्यादी अराढे कारखानामां बकरां मारे छे. तोपो आगळ पण एज प्रमाणे करे छे. अने शमीनुं पुजन करवा स्वारी जाय छे तांहां पण पाडानो वध करे छे अने होळीमां केटलांक गामोमां अने रजवाडामां जीवतुं बकरुं होमेछे. काशी पासे विंध्यावासनी देवी छे त्यां बारे मास आवी तरेहना बकराना बळी चालु रहे छे. एज मुजब पुनानी पासे कोन्डनपुर छे त्यांपण उपर मुजब चाल छे. तेथी पोस मासमां ज्यारे जात्रा ए कुम्ह-

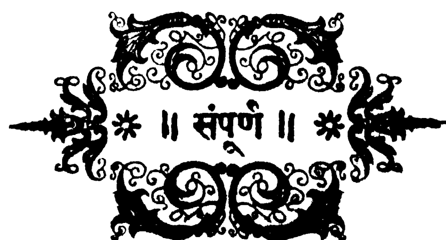
नपुरमा भराय छे त्यारे आखो ए मास त्यां लहुनी नेहेर चाले छे. पुनानीज पासे वळी बीजु जेजोरी गाम छे त्यां खंडोबा नामना देवनुं देवळ छे. आ खंडोबाने हजारो ब्राह्मण पोतानो इष्ट देव माने छे त्यां पण बळीदान आपवानी रीत छे. पण त्या आवा काममां ब्राह्मणो सामेल थता नथी कारण के ए रुढी मार्ग गणे छे शास्त्र मार्ग छे नहीं एम ब्राह्मणो कहे छे. परंतु बंगाळामां एवाज स्थानको छे त्याहा आवी रीतनां कर्म करवामां ब्राह्मणो सामेल थाय छे अने श्रौत यज्ञ ज्यां थाय छे तेमां बधा देशना ब्राह्मणो सामेल थाय छे. अग्निहोत्री शीवाय बीजो कोइ यज्ञ करतुं नथी. पशु यज्ञ. अग्निहोत्र. संन्यास आ गुजरात प्रांतमां तथा मारवाडमां विशेष चालता नथी तेनुं कारण आ प्रांतोमां श्रावक, वैष्णवनी वस्ती घणी छे माटे ब्राह्मण पोते धारे ते प्रमाणे करी शकता नथी पण द्रावीड. तैलंग. कर्नाटक. माहाराष्ट्र. हिंदुस्थान. काशी प्रयाग सुधां प्रांतोमां यज्ञ थाय छे. वैष्णवी मार्गना ब्राह्मणो छे ते लोटनो पशु करे छे पण शंकराचार्यना पंथना जे स्मार्त ब्राह्मण छे ते तेमनी नींदा करे छे ते विशे केटलाक पीष्ट पशु मीमांसा इत्यादिक ग्रंथ लखाया छे. वीनायकराव पेशवा स्मार्त छतां पीष्ट पशुनो यज्ञ कर्यो माटे काशीना तमाम ब्राह्मणोए एने न्यात बहार मुक्यो हतो. सवाइ जेइसीधराजा जयपुरमां एक कळीयुगमां अश्वमेध कर्यो तेथी ते यज्ञ करावनारा ब्राह्मणो हजु सुधी नात बहार छे. दक्षणमां "वारकरी" एटले वीठाबानो पंथ थोडा वरसथी एक नवो नीकळ्यो छे ते लोक बीजा वैष्णव पंथना लोको प्रमाणे बनती महेनत करी हींसा बंध करे छे पण हींसानो पंथ प्राचीन काळथी मोटो चाल्यो आव्यो ते मुजब चालनारा लोको घणा छे. केटलाक लोक अज्ञानथी एम समजे छे के छोकराने ताव आव्यो के क्षय रोग थयो

नो ते देवनो एटले पोताना इष्ट देवनो कोप थयो माटे ते इष्ट देवनी जगो होय त्यां जइ दस पांच रुपैया खरच करी बळीदान करे छे. आ मुजब लोको चाले ते उपरथी तेमने आपणे क्रूर विगेरे विशेषण लगाडी शकीये नही कारण के ते लोको मात्र पोतानी चालती आवेली रुढी मुजब चाले छे, ज्यारे तेओने सतधर्म तथा एक खरा इश्वरनुं ज्ञान थशे त्यारे तेओना मननी देवताओ भक्ष मागे छे विगेरे जे हाल कल्पनाओ छे ते पोतानी मेळेज मनमांथी नीकळी जशे. ब्राह्मणो समजे छे के यज्ञ कर्या शिवाय वरसाद थाय नही ते उपरथी एम वीचार करे छे के वरसाद थाय त्यारे हजारो जीवनुं कल्याण थाय तेमां दस पांच जीवनो कदी नाश थाय तो ते कांइ पाप ना कहेवाय. कारण आखा कुटुंबनुं संरक्षण थतुं होय तो तेमांना एकनो नाश थवानो होय तो थवा देवो एवुं शास्त्र मुजब छे. अने एक कुटुंब नाशथी आखुं गाम बचतुं होय तो ते कुटुंबनो नाश थवा देवो. अने गाम बचाववुं. एक आखा गामनो नाश थतो होय ने आखा देशनो बचाव थतो होय तो देशने बचाववो अने गामनो नाश थवा देवो एवी नीती छे ते प्रमाणे देवता ज्यारे प्रसंन थाय छे अने वरसाद समृद्धी वीगेरे सघळी जोइती वस्तुओ आपी देशने आबाद करे छे त्यारे यज्ञ करी थोडां पशु बळीदानमां आपवां तेमां शी चिन्ता छे एवो विचार करी लोको बळीदान आपे छे हवे आ वात साची हशे तो बळी करवामां दोश नथी ए वात उघाडी छे पण ए वात बाबत हाल आपणे संशय काहाडी शकीए छीए. परंतु जे वखतना लोकोए आ धर्म प्रगट करी चलाव्यो तेमने कशो संशय पड्यो होय एम मालम पडतुं नथी. तेमनो एवोज नीश्चय हतो के उपर मुजब यज्ञ विगेरे करेथी लोको जरुर सुखी थाय छे तेममे ए अन्याय मालम पड्यो नही पण

यज्ञ करवा ते न्याय प्रमाणे छे एम समजता. ए विषे मोटी तकरार बौध्ये चलावी पण बौध्य अवतार थइने वैदीक धर्म डुबाव्यो एवां पण वचनो घणेक ठेकाणे लखेलां मळी आवे छे. पण नीरुपाय होवाथी केटलाक ब्राह्मण दया धर्म मानवा लाग्या. पण वेद शास्त्र छे ते कायम छे तेथी वेद धर्म दया धर्मने वीरुद्ध छे के नथी ए समजवुं मुश्केल नथी. ज्यां सुधी ब्राह्मण वेदने माने छे त्यांसुधी ए वेद धर्मिज कहेवाय पछी मतलबने वास्ते गमे तेम बोले तेनी फीकर नथी.

बुद्धरूपंसमास्थायसर्वरूपपरायण:
मोहयन्सर्वभूतानितस्मैमोहात्मनेनम: ८६
भीष्मस्तवराजभारते

जे माणस एम कहे छे के वेद मारु धर्म पुस्तक छे अने यज्ञ कराववाने वास्ते हुं यज्ञो पवित धारण करुं छुं तेणे दया धर्म प्रतिपादन करवानो अधिकार नथी. स्वामी शंकराचार्य पण एम बोल्या छे. हालना ब्राह्मण कोई अज्ञान पणाथी. प्रतिपादन करे तो एटलुज केहेवाय के वेदशास्त्र अने यज्ञो पवितनो अर्थ जाणतो नथी, कींवा जाणीने स्वार्थने वास्ते कपट करे छे वेदनुं खंडन करीने जे करशे ते सत्यवादी जाणवो. नहि तो शास्त्रमां एक. पेटमां एक. मोहमां एक. एवुं जे चलावशे ते सत्यवादी केम थाय. ?



शुद्धि पृष्ठ.

पृ.	पं.	अशुद्ध	शुद्ध.
२	५	अच्युतं	दच्युतं
४	१०	त्रिविध्या	त्रिविद्या
२९	६	छापा	छापि
३१	६	दशिणे	दक्षिणे
४३	१४	दूतीया	द्वितीया
४४	१४	नू	तृ
५७	२२	श्रोतीय	श्रोत्रिय
६५	२	रा	सं
६८	८	ज्ञा	ज्ञीं
७२	२३	उ	उरू
७७	२०	पार्द्रिं	पाराद्रिं
९६	८	कुर्मनकुर्वंति	कर्मनकुर्वंति

निगम प्रकाश

ग्रंथनु परिशिष्ट.

हिंसा विशे वेदमां कशि तकरार छेज नहीं. जनावरोनी दया ए ग्रंथमां नथी. एटलुज नहीं पण मनुष्यने पण बळि करता. अने नरमेधना मोटा विधानो लखेलां छे. नरमेध थयेला तेनि कथा पण वेदमां ठेकाणे ठेकाणे छे. ऐतरेय ब्राह्मणमां शुनःशेपाख्यान छे ते एज प्रमाणे छे. भागवतमां जडभरतनी कथा एज प्रकारनी छे. वैदिककाळमां हिंसा विषे कोइना मनमां संशय हतोज नहीं. शाक भाजी कापवामां तथा समारवामां अने खावामां हाल कोइना मनमां संशय नथी. ते प्रमाणे ते काळमां जनावर विशे हतु. तेना प्रकार त्रण छे. देवकार्य अने पितृकार्यमां जनावर मारवा ए पुण्य गणता. केवल स्वर्गे जवानु साधन एनेज समजता. मनुष्य पोताने निर्वाह अर्थे खायतो विधि छे एमां पाप के पुण्य कांइ गणता नहोता. अने विना कारण कोइनो जीव लेवो ए पाप. ए प्रमाणे वेदनु अनुशासन छे. पछि बौध्य अवतार थयो अने कळि उत्पन्न थयो त्यारे हिंसा अहिंसानो मोटो टंटो उभो रह्यो. बौध्य मतनो सारी पेठे असर थयो ते वखत भारत ग्रंथ थयो एम लागे छे. ब्राह्मण, क्षत्रि, वैश्य, एमणे पोताना वेदनो अभिमान छेक मुक्यो नहतो अने बौध्यनो उपदेश एमना मनमां सारी पेठे असर थई गयो हतो तेथी भारतमां हिंसा ए शुं? अहिंसा ए शुं? मांस खावूं के न खावूं? ए विषे घणी तकरारो अने प्रश्नोत्तर लखेलां छे. ते सर्वनो इत्यर्थ एटले सारांश एम जणाय छे के वेद विहित

हिंसा करवी अन्यत्र अहिंसा पाळवी. ते वखत बे पंथ निकळया हता एक प्रवृत्ति अने बीजो निवृत्ति. प्रवृत्ति मार्गवाळा वेदने अनुसरीने चालता. अने ते वेदना अभिमानी हता. आजना अग्निहोत्रि, दिक्षीत, श्रौति, याज्ञिक,इत्यादि कर्मकांड चलावेछे तेवा ए प्रवृति मार्गवाळा हता. बीजा निवृतिवाळा तेमणे वेद मार्गनो त्याग कर्यो अने साधु सन्याशी थया हता तेमनो आग्रह एवो हतो के कोइ प्रकारथी हिंसा न करवी वेदमां मंजूर करी होयतो फिकर नहीं पण वैदिक कर्म न करवां.

केटलाएक वेदना अने श्रौत सूत्रना वचनो निगम प्रकाश पुरो थया केडे जोवामां आव्या, तेनो संग्रह आ परिशिष्टमां कर्यो छे. तेज प्रमाणे भारतनो ग्रंथ मुंबईमां छाप्यो छे ते उपरथी श्लोक लख्या छे ते पण वांचवा लायक छे.

ताण्डय महाब्राह्मण.

आ ग्रंथ सामवेदना पेटामां छे, ते उपर शायना चार्यनु भाष्य छे तेमां एम लख्युंछे के.

यस्यनिःश्वसितंवेदायोवेदेभ्योखिलञ्जगत् ॥
निर्ममेतमहंवन्देविद्यातीर्थमहेश्वरं ॥१॥
तत्कटाक्षेणतद्रूपंदधद्बुक्कमहीपतिः।
आदीशत्सायनाचार्यंवेदार्थस्यप्रकाशने ॥२॥

अर्थ—वेद ए परमेश्वरनो शब्द छे वेदथी सर्व जगत् निर्माण थयुं छे माटे ते इश्वरज बुक्कराजा उपर कृपा करी छे तेनी आज्ञाथी

वेदनो प्रकाश करवाने वास्ते भाष्य कर्यूं छे. ॥ ए सायनाचार्य ५०० बरस पहेला विजयनगरीमां कर्णाटक प्रांतमां, बुक्कराजानो आश्रित हतो एने माधव पण कहे छे. अने संन्यासि थया पछि विद्यारण्य स्वामि पण कहेछे.

आ ग्रंथमां अनेक क्रतु विधानो लख्या छे तेनां नाम.

१ अग्निष्ठोमादिसप्त क्रतु
१ औपसद क्रतु
१ चतुष्टोम क्रतु
१ उद्भाद्बलभित क्रतु
१ इंद्रस्तोम क्रतु
१ निधन क्रतु
१ वसिष्ठ चतुर्रात्र
१ विश्वामित्रसंजय चतुर्रात्र
१ पंचशारदीय पंचरात्र
१ विश्वजित् एकादशरात्र.
१ प्रक्षाख्य क्रतु
१ चैत्ररथ क्रतु
१ गर्ग क्रतु
अंगिरसामयन क्रतु
शतरात्र क्रतु
द्वादश संवत्सरसत्र
षड्त्रिंश त्संवत्सरसत्र
सारस्वतसत्र

१ राट् क्रतु
१ ज्योति क्रतु
१ ऋषभाख्य क्रतु
१ कुलायाख्य क्रतु
१ त्रिकद्रुक षड्रात्र
१ प्रजापति सप्तरात्र
१ ऐंद्रसप्तरात्र
१ जनक सप्तरात्र
१ देव नवरात्र
१ विंशतिरात्र
१ त्रय त्रिंशद्रात्र
१ चत्वारिंश द्रात्र
१ एकषाष्टिरात्र क्रतु.
सहस्त्र संवत्सरसत्र
सर्प सत्र
विश्वसृजमयन क्रतु
आदित्यपृष्ठ्यमयन क्रतु
संवत्सरसत्र.

सर्व सूत्रमां ब्राह्मण क्षत्रि वैश आ त्रि वर्गनुं कर्म, उपनयन विवाह, अंत्येष्टि,इत्यादि थोडा फरकथी बतावेलां छे. यज्ञ करवानो पण ए त्रि वर्गने अधिकार छे.

ताण्डय ब्राह्मणनां वचनो नीचे लख्या छे.

परिश्रीपशून्नियुंजन्ति॥ अध्याय १७ खंण्ड १३ मंत्र ४

वैश्यंयाजयेत् ॥ १८---४---५

एतद्वैवैश्यस्यसमृद्धंयत्पशवःपशुभिरेवैनं

समर्धयति ॥ १८---४---६

ज्योतिर्वाएषोऽग्निष्टोमोज्योतिष्मंतं पुण्यलोकंजयतियए

वंविद्वानेतेनयजते १९---११---११

स्वाराज्यंगच्छतियएवंवेद ॥ १९---१३---२

परमेष्ठितांगच्छतियएवंवेद ॥ १९---१३---४

अथैषविघनः ॥ १९---१८---१

इंद्रोऽकामयतपाप्मानंभ्रातृव्यंविहन्यामिति.सएतंविघनम

पश्यत् ॥ १९---१८---२

एकादशरशनाएकादशपशवःएकादशयूपाभवन्ति ॥

२०---२---४

तयासमुद्यतयारात्र्यायंयंकामंकामयतेतंतमभ्यश्नुते

यएवंवेद ॥ २०---२---५

अजोग्निषोमियः	२१--१४--११
ऐन्द्रामारुताउक्षाणीमारुत्योवत्सतर्यः	२२--१४--१२
पशुकामोयजेत्	२२---६---२
सौमपौषंपशुमुपालभ्यमालभेरन्	२३--१६--४

एक एक क्रतु करवामां फल लख्युं छे कोइथी इंद्र पद, कोइथी ब्रह्मानुं पद, कोइथी प्रजा, पशु, अन्न, राज्य. अधिकार, इत्यादि प्राप्त थाय छे. ते विशे घणाएक अर्थ वादरूपे प्राचीन इतिहास लख्या छे. के प्रजापतिए वरसाद रोक्यो त्यारे फलाणो यज्ञ कर्यो तेथी सारो वर्साद पड्यो. अने प्रजा सुखी थई. जनावरो मरी जतां हतां ते वखत जनावरोनो स्वामिरुद्र पशुपति, तेने वास्ते यज्ञ कर्यो, त्यारे जनावर रह्यां. अने वृद्धि पाम्यां. एवी एवी कथा पण लखेली छे तेथी ते कर्मनुं प्रयोजन बताव्युं छे. विधान अने मंत्र विनियोग लख्यो छे. ए प्रमाणे अनेक प्रकारना क्रतु लख्या छे. चारे वेदमां अने सूत्रमां एज विषय छे.

उपर लखेला वचनोनो अर्थ.

यूप, न होयतो परिधिने जनावर बांधवुं	१७--१३--४
वाणियाए यज्ञ करवो	१८--४--५
तेणे करीने वाणियानि लक्ष्मी वधेछे.	१८--४--६
अग्निष्टोम यज्ञ कर्याथी मनुष्य पुण्य लोकमां जाय छे	१९--११--११
आ वात जे जाणे छे ते स्वर्गमां जाय छे.	१९--१३--२
ब्रह्मदेवना स्थानमां जाय छे	१९--१३--४

विघन यज्ञ बतावुंछुं १९--१८--१

पुर्वे इंद्रदेवे इछाकरी, के आपणा शत्रु शि रिते मरशे,

त्यारे तेणे आ यज्ञ विधी कर्यो १९--१८--२

अगीयार दोरडां वडे अगीयार थांभलाने अने अगीयार जनाव-

रो बांधवां. २०--२--४

आ यज्ञ कर्याथी जे मनमां धारे ते सिद्ध थाय छे. २०--२--५

अग्निषोम देवने बकरो आपवो. २१--१४--११

इंद्र अने मरुत देवने गाय आपवी अने मरुत देवने वा-

छडो आपवो. २१--१४--१२

जेने पशुनि वृद्धि जोइये तेणे यज्ञ करवो २२--६--२

सोम अने पुषा देवताने अर्थे पशु मारवो २३--१६--४

गोपथ ब्राह्मण, द्वितीय प्रपाठक ॥

ॐ मा ५ सीयंन्तिवाआहिताग्नेरग्नयःतएनमेवाभ्रेऽ

भिध्यायन्तियजमानंयएतमैंद्राग्नंपशुषष्ठेषष्ठेमासेआलभते॥

आश्वलायन

श्रौतसूत्र,उत्तरषट्क, ६ ध्याये

सत्पमीकंण्डिका

वैश्वकर्मणमृषभंमहाव्रते १३

नारायणवृत्ति

एतेसर्वेगोपशवः

अन्वहंवैकैकशएकादशिनाम् ८

नारायणवृत्ति

एकादशिनामेवएकैकमादितआरभ्यअहन्यहनीक्रमेणा लभेरन्

उत्तरषट्क ३ ध्याये

सूर्यस्तुतायशस्काम :

गोसवविवधौपशुकाम :

वाजपेयेनाधिपत्यकाम :

४ अध्याये

ज्योतिर्ऋद्धिकामस्यनवसत्पदशःप्रजातिकामस्य

५ ध्याये

आङ्गिरसंस्वर्गकामःचैत्ररथमन्नाद्यकामः

अत्रेश्चतुर्वीरंवीरकामःजामदग्नंपुष्टिकामः

ऋतूनाषडहंप्रतिष्ठाकामःसंभार्यमायुष्कामः

संवत्सरप्रवल्हंश्रीकामःअथगवामयनंसर्वकामः

अर्थः—प्रत्येक छ छ मासे ऐंद्राग्नि देव प्रीत्यर्थ पशुनो यज्ञ कर वो गोपथ ब्राह्मणे

महा व्रत यज्ञमा ऋषभ एटले बळद आपवो आश्वलायन

पशु एकादशनीमां नित्य एक एक पशु मारवो	आश्वलायन
सूर्य स्तुता यज्ञ कर्याथी जश मळेछे.	आ०
गोसव यज्ञ कर्याथी पशु प्राप्ति थायछे.	आ०
वाजपेय यज्ञ कर्याथी अधिकार मळेछे.	आ०
ज्योति यज्ञ कर्याथी संमृद्धि थायछे.	आ०
नव सप्तदशथी प्रजा थायछे.	आ०
आङ्गिरसथी स्वर्ग प्राप्ति थायछे.	आ०
चैत्ररथथी धान्य वृद्धि थायछे.	आ०
अत्रेश्चतुर्वीर कर्याथी धैर्य वृद्धि थायछे.	आ०
जामदग्न्यथी प्रकृति सारी थायछे.	आ०
षडहथी प्रतिष्ठा मळेछे.	आ०
संभार्यथी आयुष्य प्राप्ति थायछे.	आ०
संवत्सरप्रवल्हथी लक्ष्मी मळेछे.	आ०
गवामयनथी सर्व कामना सिद्ध थायछे.	आ०

लाटचायनियश्रौतसूत्र

उक्षाचेदनूबंध्यऔक्ष्णोरन्ध्रे

प्रथमप्रपाठक.षष्टिकण्डिका.सूत्र ४२

ऋषभआर्षभं.	१--६--४३
अजआजेगं.	१--६--४६
मेषऔर्णावयं.	१--६--४७

नइतिशाण्डिल्यायनः ८--२--१२

एतंमृतंयजमानहविर्भिः सहजीषेयज्ञपात्रेश्चाहव

नीयेप्रहृत्यप्रव्रजेयुरितिशाण्डिल्यः ८--८--६

आस्येहिरण्यमवधायानुस्तरणिक्यागौर्मुखंव

पयाप्रच्छाद्यतत्राग्निहोत्रहवर्नीतिरश्रीम्. ८--८--२२

बैठ्यंयंविशःस्वराजानःपुरस्कुर्वीरन्सगो

सवेनयजेता. ९--४--२२

विघ्नाभ्यांपशुकामोयजेताभिचरन्वा. ९--४--३३

राजाश्वमेधेनयजेत. ९--९--१

पंचशारदीयेपशुबन्धर्यजेत. ९--१२--१०

लाट्यायनसूत्र.

अर्थ.

बळदनो यज्ञ करतां बळदनो मंत्र भणवो. १-६-४२

आखलानो यज्ञ करतां आखलानो मंत्र भणवो. १-६-४३

बकरानो यज्ञ करतां बकरानो मंत्र भणवो. १-६-४६

गाडरनो यज्ञ करतां तेनो मंत्र भणवो. १-६-४७

काळजानो होम करतां उपस्थान मंत्र भणवो. २-२-१०

यज्ञनी दीक्षा लीधा पछी शुद्र साथे भाषण न करवुं. २-२-१६

गाय बांधवाने ठेकाणे यज्ञ करतां जनावरोनी वृद्धि थाय छे. ३-५-२१

स्मशानमां कर्यांथी शत्रु नाश थाय छे. ३-५-२३

जनावरना काळजानो होम कर्या पछी वर्तु करावं. ४-४-१८
एक मास पछी पशु करवो. ४-८-१४
पशु उपर पाणि छांटवुं. ५-३-१७
अग्नि षोम देवने काळजानो होम करति वखते पाणि छांटवुं. ५-९ १४
ब्राह्मण क्षत्रि वैश्य ए त्रण सामान्य छे एवुं शांडिल्याचार्ये कह्युं छे. ८-२-१०
सगां वहालां ए पण सामान्य छे एवुं धानंजय्याचार्ये कह्युं छे. ८-२-११
स्वदेशीय जन समान्य छे एवुं शांडिल्य बोल्यो छे. ८-२-१२
यज्ञकर्ता यजमान मरी जाय तो तेना उपर यज्ञना पात्र नांखवां. ८--८--६
तेना मोंमां सुवर्ण घालीने गायनुं काळजुं काढीने तेना मुख उपर मुकवुं. ए गायनुं नाम अनुस्तरणी. ८-८-१२
वाणियाए गोसव करवो. ९-४-२२
विघन यज्ञथी पशु वृद्धि थाय छे. ९-४-३३
राजाए अश्व एटले घोडानो यज्ञ करवो. ९--९--१
पंचशारदीय यज्ञमां पशु मारवो. ९-१२-१०

॥ भारत ॥

युधिष्ठिर उवाच ॥

गार्हस्थ्यस्यचधर्मस्ययोगधर्मस्यचोभयोः॥
अदुरसंप्रास्थितयोःकिंस्विश्रेयःपितामह ॥१॥

भीष्मउवाच ।।

उभौधर्मौमहाभागावुभौपरमदुश्चरौ ।।
उभौमहाफलौतौतुसद्भिराचरितावुभौ ।।

कपिलउवाच ।।

नाहंवेदान्विनिंदामीनविवक्ष्यामिकर्हिचित्
पृथगाश्रमिणांकर्माण्येकार्थानीतिनःश्रुतं ।।

स्यूमरश्मिरुवाच ।।

स्वर्गकामोयजेतेतिसततंश्रूयतेश्रुतिः ।।
फलंप्रकल्पपूर्वंहिततोयज्ञःप्रतायते ।।१।।
अजश्चाश्वश्चमेषश्चगौश्चपक्षिगणाश्चये ।।
ग्राम्यारण्याश्चौषधयःप्राणस्यान्नमितिश्रुतिः ।।
तथैवान्नंह्यहरहःसायंप्रातर्निरूप्यते ।।
पशवश्चाथधान्यंचयज्ञस्यांगमितिश्रुतिः ।।
एतानिसहयज्ञेनप्रजापतिरकल्पयत् ।।
तेनप्रजापतिर्देवान्यज्ञेनायजतप्रभुः. ।।
तदन्योन्यवराःसर्वेप्राणिनःसप्तसप्तधा ।।
यज्ञेषुपाकृतंविश्वंप्राहुरुत्तमसंज्ञितं ।।

एतच्चैवाभ्यनुज्ञातंपूर्वैःपूर्वतरैस्तथा ॥
नोजातुनविचिन्वीतविद्यान्स्वांशक्तिमात्मनः ॥
पशवश्चमनुष्याश्चद्रुमाश्चौषधिभिःसह ॥
स्वर्गमेवाभिकांक्षंतेनचस्वर्गस्ततोमखात् ॥
औषध्यःपशवोवृक्षावीरुदाज्यंपयोदधि ॥
हविर्भूमिर्दिशःश्रद्धाकालश्चैतानिद्वादश ॥
ऋचोयजूंषिसामानियजमानश्चषोडश ॥
अग्निर्ज्ञेयोगृहपतिःससप्तदशउच्यते ॥
अंगान्येतानियज्ञस्ययज्ञोमूलमितिश्रुतिः
यज्ञार्थानिहिसृष्टानियथार्थाश्रूयतेश्रुतिः
एवंपूर्वतराःसर्वेप्रवृत्ताश्चैवमानवाः ॥
यज्ञांगान्यपिचैतानियज्ञोक्तान्यनुपूर्वशः ॥
विधिनाविधियुक्तानिधारयंतिपरस्परं ॥
नतस्यात्रिषुलोकेषुपरलोकभयंविदुः
इतिवेदावदंतिहसिद्धाचपरमर्षयः ॥
यजतःस्वर्गविधिनाप्रेत्यस्वर्गफलंलभेत् ॥
इतिश्रीमहाभारतेशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेगोकपिलियेअष्ट
षष्ट्यधिकद्विशततमोध्यायः ॥२६८॥

स्यूमरश्मिरुवाच ।।

यथामातर माश्रित्यसर्वे जीवंतिजंतवः ॥

एवंगार्हस्थ्यमाश्रित्यवर्ततइतराश्रमाः ॥

गृहस्थएवयजतेगृहस्थःस्तप्यतेतपः ॥

गार्हस्थ्यमस्यधर्मस्यमूलंयत्किंचिदेजते ॥

सर्वमेतन्मयाब्रह्मनूशास्त्रतःपरिकीर्तितं ॥

नह्यविज्ञायशास्त्रार्थंप्रवर्ततेप्रवृत्तयः ॥ अ० २६९

युधिष्ठरउवाच ॥

अहिंसापरमोधर्मःइत्युक्तंबहुशस्त्वया ॥

श्राद्धेषुचभवानाहपितृनामिषकांक्षिणः ॥

मांसैर्बहुविधैःप्रोक्तंस्त्वयाश्राद्धविधिःपुरा ।।

अहत्वाचकुतोमांसमेवमेतद्विरुध्यते ॥

जातोनःसंशयोधर्मेमांसस्यपरिवर्जने ॥

दोषोभक्षयतःकःस्यात्कश्चाभक्षयतोगुणः ॥

भीष्मउवाच ॥

अप्रोक्षितंवृथामांसंविधिहीनंनभक्षयेत् ॥

प्रवृत्तिलक्षणोधर्मःप्रजार्थिभिरुदाहृतः ॥

यथोक्तंराजशार्दुलंनतुतन्मोक्षकांक्षिणां ॥

हविर्यत्संस्कृतंमंत्रैःप्रोक्षिताभ्युक्षितंशुचि ॥
वेदोक्तेनप्रमाणेनपितृणांप्रक्रियासुच ॥
अतोन्यथावृथामांसमभक्ष्यमनुरब्रवीत् ॥
एतत्तेकथितंराजन्मांसस्यपरिवर्जने ॥
प्रवृत्तौचनिवृत्तौचविधानमृषिनिर्मितं ॥
इतिश्रीमहाभारतेअनुशासनपर्वणिदानधर्मेमांसभक्षणनि-
षेधेपंचदशाधिकशततमोध्यायः ॥११५॥

युधिष्ठिरउवाच ॥

किंचाभक्ष्यमभक्ष्यंवासर्वमेतद्वदस्वमे ॥
दोषाभक्षयतोयेपितन्मेब्रूहीपितामह ॥

भीष्मउवाच ॥

एवमेतन्महाबाहोयथावदसिभारत ॥
नमांसात्परमंकिंचिद्रसतोविद्यतेभुवि ॥
सद्योवर्धयतिप्राणान्पुष्टिमग्र्यांदधातिच ॥
नभक्ष्योभ्यधिकःकश्चिन्मांसादस्तिपरंतप ॥
विवर्जितेतुबहवोगुणाःकौरवनंदन ॥
येभवंतिमनुष्याणांतान्मेनिगदतःशृणु ॥
विधिनावेददृष्टेनतद्भुक्तेहनदुष्यति ॥

यज्ञार्थेपशवःसृष्टाइत्यपिश्रुयतेश्रुतिः ॥
अतोन्यथाप्रवृत्तानांराक्षसोविधिरुच्यते ॥
क्षत्रियाणांतुयोदृष्टोविधिस्तमपिमेशृणु ॥
वीर्येणोपार्जितंमांसयथाभुंजन्नदुष्यति ॥
आरण्याःसर्वदैवत्याःसर्वशःप्रोक्षितामृगाः ॥
अगस्त्येनपुराराजन्मृगयायेनपूजिते ॥
अतोराजर्षयःसर्वेमृगयांयांतिभारत ॥
नहिलिप्यंतिपापेननचैतत्पातकंविदुः ॥
पितृदैवतयज्ञेषुप्रोक्षितंहविरुच्यते ॥
प्राणदानात्परंदानंनभुतोनभविष्यति ॥
अनिष्टंसर्वभूतानांमरणंनामभारतं ॥
सर्वयज्ञेषुवादानंसर्वतीर्थेषुवाप्लुतं ॥
सर्वदानफलंवापिनैतत्तुल्यमहिंसया ॥

इतिश्रीमहाभारतेअनुशासनपर्वणीआनुशासन०दानधर्मे अहिंसाफलकथनेषोडशाधिकशततमोध्यायः ११६

व्यासउवाच.

यज्ञेनतपसाचैवदानेनचनराधिप ॥
पूयतेनरशार्दुलनरादुष्कृतकारिणः ॥

राजसूयाश्वमेधौचसर्वमेधंचभारत ॥
नरमेधंचनृपतेत्वमाहरयुधिष्ठिर ॥
यजस्ववाजिमेधेनविधिवद्दक्षिणावता ॥
बहुकामान्नवित्तेनरामोदाशरथिर्यथा ॥
इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्वणीतृतीयोध्यायः ॥
ततोयूपोच्छ्रयेप्राप्तेषड्बिल्वान्भरतर्षभ ॥
खादिरान्बिल्वसमितांस्तावतःसर्ववर्णितः ॥
देवदारुमयोद्वौतुयूपौकुरुपतेर्मखे ॥
श्लेष्मांतकमयंचैकंयाजकाःसमकल्पयन् ॥
इष्टकाःकांचनीश्चात्रचयनार्थकृताभवत् ॥
शुशुभेचयनंतच्चदक्षस्येवप्रजापतेः ॥
ततोनियुक्ताःपशवोयथाशास्त्रंमनीषिभिः ॥
तंतंदेवंसमुद्दिश्यपक्षिणःपशवश्चये ॥
ऋषभाःशास्त्रपठितास्तथाजलचराश्चये ॥
यूपेषुनियताचासीत्पशूनांत्रिशतीतथा ॥
अश्वरत्नोत्तरायज्ञेकौंतेयस्यमहात्मनः ॥
सयज्ञःशुशुभेतस्यसाक्षाद्देवर्षिसंकुलः ॥
सिद्धविप्रनिवासैश्चसमंतादभिसंवृतः ॥

तस्मिनसदसिनित्यास्तुव्यासशिष्याद्विजर्षभाः ।।
सर्वशास्त्रप्रणेतारःकुशलायज्ञसंस्तरे ।।
नारदश्चबभूवात्रतुंबुरुश्चमहाद्युतिः ॥
इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्वणिअनुगीतापर्वाणिअश्वमेधारंभेअष्टाशीतितमोध्यायः ॥८८॥

वैशंपायनउवाच ॥

श्रपयित्वापशूनन्यान्विधिवद्विजसत्तमाः ॥
ततुरंगंयथाशास्त्रमालभंतद्विजातयः ॥
ततःसंश्रप्यतुरगंविधिवद्याजकास्तदा ।।
उपसंवेशयन्राजंस्ततस्तांद्रुपदात्मजां ।।
उधृत्यतुवपांतस्ययथाशास्त्रंद्विजातयः ।।
उपाजिघ्रद्यथाशास्त्रंसर्वपापापहंतदा ॥
शिष्टान्यंगानियान्यासंस्तस्याश्वस्यनराधिप ॥
तान्यग्नौजुहुवुर्धीराःसमस्ताःषोडशर्त्विजः ॥
व्यासःसशिष्योभगवान्वर्धयामासतंनृपं ॥
ततोयुधिष्ठिरःप्रादाद्ब्राह्मणेभ्योयथाविधि ॥
गोविंदंचमहात्मानंबलदेवंमहाबलं ॥
तथान्यान्वृष्णिवीरांश्चप्रद्युम्नाद्यान्सहस्रशः ।।

पूजयित्वामहाराजयथाविधिमहाद्युतिः॥
एवंबभूवयज्ञःसधर्मराजस्यधीमतः॥
बव्हन्नधनरत्नौघःसुरामैरेयसागरः ॥
सर्पिःपंकाह्रदायत्रबभुवुश्चान्नपर्वताः ॥
पशुनांवध्यतांचैवनांतंददाशिरेजनाः ॥
विपाप्माभरतश्रेष्ठःकृतार्थःप्राविशत्पुरं ॥
तंमहोत्सवसंकाशंत्दृष्टपुष्टजनाकुलं ॥
इतिश्रीमहाभारतेआश्रमेधिकेपर्वणिअनुगीतापर्वणि
अश्वमेधसमाप्तौऊननवतितमोऽध्यायः ॥८९॥

अर्थ.

युधिष्ठिर, धर्मराजा भीष्माचार्यने प्रश्न करे छे, के ग्रहस्थ अने साधू आ बेमांथी उत्तम धर्म कोनो ?

ते ऊपर भीष्माचार्ये जवाब दीधो के बे धर्म सारा छे.

पछि कपिलजी बोल्या के वेदनी निंदा हुं करी शकतो नथी. आश्रम प्रमाणे धर्म होय छे.

स्युमरश्मी ऋषी बोल्या के स्वर्गे जवाने यज्ञ करो ए प्रमाणे हमेष वेद बोल्यो छे. तेथी परंपराथी यज्ञ करता आव्या छे. बकरानो, अने घोडानो, अने गाडरनो, गायनो, अने पंखि जनावरोनो, यज्ञ थायछे. गाममां अने सिममां जे जनावरो छे अने वनस्पति छे ते सर्व भक्षण करवा एवुं वेदमां कह्युं छे. अने जनावरो अने धान्य आ बेथी यज्ञ थाय

छे एम वेद कह्युं छे. ए प्रमाणे प्रजापति देवे ठराव करीने यज्ञ विधि, जनावरो, अने धान्य ए सर्व उत्पन्न कर्यां. ते प्रमाणे देव प्रजापतिना ठराव प्रमाणे यज्ञ करवा लाग्या. यज्ञने वास्ते जनावरनो उपयोग करवो ते ब्रह्मदेवनी आज्ञा प्रमाणे छे. अने ते प्रमाणे पुर्वापरथी करता आव्या छे. जनावर, मनुष्य, वनस्पति, ए सर्व स्वर्ग जवानी इछा करे छे. जनावर, धान्य, इत्यादि १२ प्रकारनी सामग्री यज्ञमां जोइए ते अने वेद मळी एकंदर १६ अने सत्तरमो अग्नि आ प्रमाणे यज्ञनी सामाग्रि वेदमां लखी छे. तेथी पुर्वेथी मनुष्यो यज्ञ करवा लाग्या. आ सर्व पदार्थ यज्ञार्थ कर्या छे. एम वेदमां लख्युं छे. एज प्रमाणे सर्व वेद, सिद्ध पुरुष, महाऋषी ए सर्व जणनो एज पुकार छे. त्यारे एमां पातक शानुं होय! यज्ञथी परभवमां सारुं थाय छे.

शांतिपर्वमां ए प्रमाणे कथा २६८मा अध्यायमां छे.

स्युमराश्मि ऋषी कहे छे के—सर्व जीव, माता आश्रयथी जीवे छे. ते प्रमाणे ग्रहस्थने आश्रये, सर्व साधु इत्यादिक जीवे छे. गृहस्थथी यज्ञ थाय छे तप थाय छे माटे गृहस्थाश्रमी लोक धर्मनो टेको छे. आ बाधि बाबत शास्त्र विचार करीने में कही छे.

आ प्रमाणे कथा २६९मा अध्यायमां छे.

धर्मराजा कहे छे. हे आचार्य अहिंसा मोटो धर्म छे एम पण घणी वखत कह्युं, अने तमेज श्राद्धमां अनेक प्रकारनुं मांस खावानी छुट आपी छे. त्यारे हिंसा कर्या विना मांस शी रीते मळशे. मारो आ संशय जतो नथी. माटे एनो खुलासो करो. यज्ञ सिवाय, अने श्राद्धे छुट आपी छे ते सिवाय, मांस

न खावूं. एनुं नाम प्रवृत्ति धर्म परंतु मोक्षनी इच्छा होय तेनो आ धर्म नथी. वेदना मंत्रथी पवित्र थएलुं, अने पाणी छांटीने प्रोक्षण करेलुं मांस पवित्र छे ते खावानी हरकत नथी, आ सिवाय मांस खावुं नहीं. प्रवृत्ति अने निवृत्ति ए बे धर्म ऋषी लोके कह्या छे.

अनुशासन पर्वमां ए कथा ११५मा अध्यायमां छे.

धर्मराजा पुछे छे के हे आचार्य शुं खावूं ने शुं न खावूं ए मने कहो. भीष्म जवाब दे छे के हे धर्मराजा, आ पृथ्वी उपर मांस जेवो उत्तम पदार्थ नथी, जीवने पुष्टि आपनार, शरिरने वृद्धि करनार, मांस जेवो बिजो पदार्थ छेज नहीं. तत्रापि तेनो त्याग करवामां पण बहु गुण छे. वेदाज्ञा प्रमाणे मांस खावामां दोष नथी. कारण यज्ञार्थ परमेश्वरे पशु जनावरो उत्पन्न कर्यां छे, एम वेदमां लख्युं छे. ते सिवाय मांस खावुं ए राक्षसी कर्म छे. क्षत्रि जातिनो धर्म छे, ते कहुं छुं. के तेमणे पोताना बळथी जनावरो मार्यां होय ते खावामां तेमणे दोष नथी. आगस्ति ऋषिने पण सर्व मृग, पक्षीनुं मांस आप्युं हतुं, सर्व राजर्षी शिकार करे छे. ते करवामां तेमने पाप नथी. श्राद्धमां यज्ञमां जे मांस खाय छे, ते देवोनुं उच्छिष्ट खाय छे प्राण सर्वने प्रिय छे माटे प्राण रक्षण करवो ए मोटुं दान छे. अहिंसा राख्याथी सर्व यज्ञ तप तिर्थनुं फळ मळे छे.

ए प्रमाणे कथा ११६ मा अध्यायमां छे.

व्यासजी कहे छे. पापी छे ते यज्ञ, तप, दानथी पवित्र थाय छे. राजसूय यज्ञ, अश्वमेध यज्ञ, नरमेध एवा अनेक प्रकारना यज्ञ छे, तेमांनो घोडानो यज्ञ तुं कर. पूर्वे रामचंद्रजीए ए यज्ञ कर्यो हतो.

ए प्रमाणे अश्वमेध पर्वना ३ जा अध्यायमां ए कथा छे. बिलिना, खेरना, देवदारुना अनेक खीटा यज्ञमां कर्या हता. इटो सुवर्णनी करी हती. चयन कुंड सुंदर रच्यो हतो. अने एक एक देव ने वास्ते पशु पक्षी बळद जलचर जनावरो एकंदर त्रणसे बांध्यां हतां तेमां अश्व एटले घोडो बहु शोभिवंत देखातो हतो, सिद्ध अने ब्राह्मण, व्यासजी अने तेमना बहु शिष्य, सर्व कर्म जाणनारा अने नारदजी मोटा तेजस्वी अने तुंबरुऋषी, सभामां हता.

ए प्रमाणे कथा ८८ मा अध्यायमां छे.

वैशंपायन कहे छे. पछी ब्राह्मणोए सर्व जनावरोनु मांस रांधीने तैयार कर्युं. अने शास्त्र प्रमाणे घोडानु मांस पण रांध्युं. राजा अने द्रौपदी राजपत्नीने उपसंवेशन संस्कार थयो. त्यार पछी घोडानु काळजु ब्राह्मणोए राजाना हाथमां आप्युं. तेथी राजानु सर्व पाप गयुं. बीजा अंगनु मांसनो सोळ याज्ञिके मळीने हवन कर्यो. ते सभामां श्रीकृष्णजी तेमनो भाइ बलदेवजी प्रद्युम्न वीगेरे हता त्यार पछी ब्राह्मणोनी पुजा अने दान कर्यां. ए प्रमाणे धर्मराजाना घोडानो यज्ञ थयो. तेमां धन, धान्य, रत्न, अने दारु पीवानो पुष्कळ आप्यो हतो, अने घीनो कादव थयो हतो. अने अन्नना पर्वत थया हता ने जनावर केटलां मार्यां तेनी संख्या नहाती. ए प्रमाणे यज्ञ कर्याथी राजानु पाप गयुं, जने प्रजा तृप्त थइ.

ए प्रमाणे कथा ८९ मां अध्यायमां अश्वमेध पर्वमांछे.

निगमशास्त्रना ग्रंथ हजार भातना छे तेथी यक्ष प्रश्नमां युधिष्टिर राजाए पण एवो जवाब दीधो के.

श्रुतिर्विभिन्नास्मृतयोपिभिन्ना ॥
नानाऋषीणांमतयोपिभिन्नाः ॥

त्यारे आपणो तो शो हिसाब. शास्त्र नबळु अने चाले नहि एवुं थयुं त्यारे रूढी एना माथापर चढी बेठी. खरेखर विचार करतां एवुं न थवुं जोइए; कारण के रूढीना कर्ता मुर्ख लोक होय छे, अने शास्त्रना कर्ता डाह्या होय छे. पण घणां वरसथी शास्त्र लखवानुं के सुधारवानुं बंध पड्युं अने घणो काळ विती गयो. त्यारे शास्त्र काढीने जोइए तो सांप्रतकाळने कशुं मळतुं नथी. अनेक भातनां शास्त्र उत्पन्न थयां तेथी भ्रांतिनो डुंगर लोकोनी आगळ पड्यो, तेमांथी सार असार विचार करवानी शक्ति बहाय लोकोने क्यांथी होय, धर्माध्यक्ष अने हिंदुराजा सर्व मुर्ख थया. शिक्षण पद्धति के परिषद रह्यूं नथी तेथी मन माने तेवा पंथ अने सांप्रदाय निकळ्या. चंगी, भंगी लोको महंत थइ पड्या. हावे प्रसंगे धुतारा लोकोने सारी पेठे फाव्यूं. आळसु निरूपयोगी लोक खाय तेनु नाम पुण्य. अने मेहनतु खाय ते पाप. व्रत, तीर्थ, शांति, उद्यापन इत्यादि शांतिक पौष्टिकना ग्रंथ मोटा मोटा लखीने ब्राम्हण लोकोए पोतानो धंधो वधार्यो, तेथी भिख मागनारनी संख्या देशमां बहु वधी, पण उद्योग वध्यो नही. उद्योग अने विद्या तरफ कोईनु लक्ष नथी. अने ते काममां पैशो कोई आपतुं नथी. तोफानी काममां देशनु द्रव्य खर्चाय छे. माटे हावा काळमां जुना लोकोने कशुं सुझतुं नथी. तेमनी अक्कल काळना प्रखर प्रकाशथी गुम थई छे. नवा लोकोए आ काममां मन घालीने तपास करवो जोइए, अने सार शुं छे, असार शुं तेनो निर्णय करीने लोकोए कि

ये रस्ते चालवुं अने भीख ओछी थाय अने उद्योग वधे एवी योजना करवी जोइए एज मनुष्य जन्मनुं सार्थक छे परमेश्वर कृपा करीने जे बुद्धि आपशे ते खरी.

कर्मकांड निरूपयोगी छे. आ सिद्वांत वेदमां एटले अरण्यक अने उपनिषदमां लख्यो छे. ज्यारे ब्राह्मण कर्मकांडनी निशानी, शिखा अने सूत्र तोडीने कर्म अने उपासना उपरथी हाथ उठावेछे, त्यारे आपण एम नथी केहेता के ए वटली गयो; पण तर्यो अने नारायण रूप थयो एम कहीये छीए त्यारे कर्मनो त्याग ए नर्कनुं साधन नथी ए वात सिद्वछे. पण व्यवहारमां ज्यां सुधी रहीये छीए त्यां सुधी एनी जरूर. परमार्थ विषे कर्म उपयोगी नथी ए सिद्वांत जे दिवसथी सन्यास हिंदु लोकोना आचारमां पेठो ते दिवसथी कर्मनी केवळ निंद्या थइ. आ प्रमाणे परस्पर निंद्या थयाथी जेटलां आधार रूप शास्त्र छे ते सर्वनी निंद्या थइ. निंद्या वगर एक पण आधार रह्यो नहिं. वेदांति कर्मनी निंद्या करेछे. वैष्णव शैवनी करेछे, श्रोति वामिनी करेछे. ए समजीने लोके शास्त्र मुकी दधुं अने रूढीने धर्म समजीने रूढीने वळगी रह्याछे. शास्त्र संबंधि वाद कोईने गमतो नथी; कारण तेमांथी काळुं निकळवानुं,अने वधारे फजेतीनुं कारण बनवानुं. तेथी कोई पण चर्चा करतुं नथी. ए वात आज थइ एम नथी, पण भारतमां पण एम कह्युं छे के.

धर्मस्यतत्त्वंनिहितंगुहायां
महाजनोयेनगतःसपंथाः ॥

रूढी उपर लोकोनी निष्टा एवि मजबुत बेठी छे के जरा कोइ

रूढी विरुद्ध करे तो तेनी बुमो पडे छे, पण ते विशे शास्त्र शुं छे ए विचार करवाने कोई पण समर्थ नथी, अने इछा पण राखतुं नथी. लोक एम कहे छे के जुनां पोथांमा गमे तेम हशे पण हाल चाले छे ते खरुं.एम थवाथी सुधारो कोइ करी सकतुं नथी. मनु एम कहेछे के

"पक्वान्नंफलवत्ग्राह्यं"

पण ए वातनी रूढी नथी तेथी ते शास्त्र रद्द थयुं. तेज प्रमाणे.

कार्पासंकटिनिर्मुक्तंकौशेयकृतभोजनं

एथी रूढी उलटी छे. पोतियाने जेटलुं अशुचित्व अडके छे एटलुं यज्ञोपवीतने अडकतुं नथी. सर्व ब्राह्मण, शास्त्रमां समान छतां जुदा थया छे, अने वर्णमां जाति,अने जातिमां ज्ञाति रूढीथी थइछे. आ रूढीनुं जोर अने शास्त्रनी निर्बळता समजीने इंग्रेज सरकारे अदालतने सारु कायदो ठराव्यो तेमां पण शास्त्रथी रूढी वधारे बळवान ठरावी छे. त्यारे रूढीना अनुयायी लोक ते सुधाराना रस्ता उपर शी रीते आवशे ते मोटो विचार छे.

रूढीनुं जोर एवुं छे के वैष्णवी मंदिरमां यज्ञ न करवो एवो मत राखे छे, पण, वेदना पारायणथी मंदिर पवित्र थाय छे. तेमां यज्ञनो विधी, अश्वमेध, नरमेध, इत्यादि विधि बोल्या छे, ते सांभळवामां घणुं पुण्य जाणे छे. सांभळवूं, पण करवूं नाहिं. त्यारे न करवानो विधि श्रवण करवामां पुण्य छे के नहि? आ प्रश्ननो मोटो विचार उत्पन्न थाय छे. यजुर्वेद संहितामां ६०० जनावर अश्वमेधमां मारवां तेनां नाम विगतवार लख्यां छे, तेज प्रमाणे आश्लील भाषण लख्यां छे, ते

होळिमां नीच लोक बोले छे तेथी नठारां. तेज प्रमाणे मनुष्य यज्ञना बसे नरजातिना नाम लख्यां छे, ते सांभळवामां पुण्य हशे खरूं? सर्व शास्त्र कहे छे के देह शुध्यर्थ कर्म छे.

गीता

यज्ञो दानंतपश्चैवपावनानिमनीषीणां ॥

ए प्रमाणे वेदांति पण बोले छे, त्यारे उपर लखेलां कर्मथी देहनी अने चितनी शुद्धि थाय खरी. अनुस्तरणीथी मुवो माणस स्वर्ग जाय, ए पण मोटो संशय छे. रुढीथी ढेडने कोइ अडकतो नथी. तेनुं कारण एम कहे छे के ढेड जनावरो खाय छे.त्यारे मुसलमान विगेरे शुद्ध शायी थया? ते घरमां आवे पण ढेड चामडियो न आवे तेनुं कारण कदापि ढेड हराम एटले मुवा जनावरो खाय छे, अने मुसलमान हलाल एटलें मारिनि खाय छे, माटे पवित्र थया हशे? आगगाडिमां, ढेड बेसे तो लोक पुकार करे छे, अने यवनादिक बेसे तो कोइ बोलतो नथी. एनुं कारण दरिद्र हशे, के बिजु हशे, ते कोण जाणे? त्यारे दरिद्री ते नीच एम केहता न फावे. उंचवर्णना घणा दरिद्रि छे.

भारतमां भीष्माचार्ये कहेलो सिद्धांत सांभळी ने धर्मराजाए भीष्मना निर्याण पछी अश्वमेध कर्यो अने त्रणसो जनावरो मारी ने पाप मुक्त थया. हवे भिष्माचार्यना सिद्धांतनो अर्थ कोइ बिजे प्रकारे करशे तारे प्रत्यक्ष युधिष्टीर राजा सांभळनार हता अने भीष्माचार्य बहु वृद्ध अने धर्मज्ञ हता तेथी तेमना मरण समये धर्म व्याख्यान सांभळवाने वास्ते मोटी ऋषीनी सभा भराइ हति. तेमां युधिष्टिर राजा मुख्य हता तेणे अश्वमेध केम कर्यो? तेना स्थानमां भीष्माचा-

यँनो सिद्धांत बरो बर आव्यो नही के केम?

वेद, पुराण, इतिहास, आसर्व पुस्तको परमेश्वरे निर्माण करेलाछे, अने ए तेनि वाणी छे, ए प्रमाणे हिंदु लोक मानेछे, ए प्रमाणे न माने तेने नास्तिक कहेछे. तेमा बेकांण्ड छे, कर्मकांड अने ज्ञानकांण्ड. एक बीजाने विरुद्धछे. तारे ज्ञानि नास्तिक केशु? जे-ज्ञानकांण्डनी दीक्षा एटले संन्यास लेछे ते आस्तिक के नास्तिक कदापि बे जणा आस्तिक कहिये, तो कर्म करनारा दिक्षीत अग्नि होत्रि पण आस्तिक अने चोटली अने जनोइनो त्याग करनारा संन्यासि अने परमहंस पण आस्तिक छे, एम जणाय छे. तेमां कर्म कर्ताने पुनर्जन्म अने ज्ञानि ने मोक्ष एटलो फरकछे. तारे कर्मकांण्ड मां शु करवा पडवु? ए समजातु नथी. नीच मार्ग कर्मनो छे तारे ज्ञानी केम न थवु? संसारमां पण ज्ञानी थइए तो हरकत नथी.

कृष्णभोगीशुकत्यागीराजाजनकराघवौ ॥
वसिष्ठकर्मकर्ताचपंचैतेसमज्ञानिनः ॥

ए प्रमाणे बधाय लोक कर्म मुकी देईने पोत पोताना धंधा करीने ज्ञानी थाय तो शि हरकत? पण लोक कहेशे के रुढी नथी माटे संन्यास लेवो जोइए. तारे कृष्ण, राम, जनक, एमणे संन्यास क्यारे लिधो हतो ?

हाल रूढीनुं जोर एवुं छे के धर्मना आचार्य जो बावा होय तो तेने पगे लागे, तेमनो उपदेश ले, तेथि मोक्षे जाय. एम समजे, पण ज्ञातनो टंटो होय, अने आचार्य कहे तारे तेनुं वचन कोइ माने नहीं. बावाने गुरु कहे पण तेनुं पाणी न पिये एक तरफथी एम स-

मजे छे के हु पवित्र ज्ञात जातमां छुं, बावा अने साधु वटलेला छे. तेनुं पाणी पिवुं नहीं, अने बिजि तरफथी एम समजे छे के बावो मने मोक्षे मोकलशे. तारे एनो मेळ कशो नथी. रूढी प्रमाण.

एक ठेकाणे अन्नमां मेध्य आव्युं एम ऋग्वेदमां लख्युंछे, पण ते अन्ननी प्रशंसापर वाक्य छे. पण तेथि पशु हिंसा वर्ज थइ एम नथी. कारण हजारो वेद अने सुत्र प्रमाण छे. भिष्माचार्य अने शंकराचार्य एमज बोल्या छे, अने यज्ञनी वातो भारतादिकमां आवि छे, युधिष्टिरे अश्वमेध कर्यो, तेमां व्यास शिष्य सहवर्तमान हाजर हता अने त्रणसें पशु मार्या, तारे व्यासजीने मेध्य जनावरमां रह्युं नहीं ए वात मालुम पडि नहोति? अने हालना पंडितोने मात्र मालुम पडि, ए पण कहेवुं मुश्केल छे. जनावरोमांथी निकळीने मेध्य अंनमा पेठू, ए वाक्यनो अर्थ एटलोज छे के अन्न पण होमवा लायक छे. वैकुंठना भगवाननो अवतार अयोध्यामां थयो तारे वैकुंठ खालि पडयूं एम थतु नथी. तेज प्रमाणे जनावरमांथी मेध्य निकळीने अन्नमां आव्युं एनो अर्थ बे मेध्य छे. एम न कहिये तो हजारो वेद, अने यज्ञनी आख्यायिका हजारो छे, ते खोटि थशे. अने ते करनारा प्राचीन बर्हि, व्यास, युधिष्टिर, भरतादिक, सर्व मूर्ख ठरशे. कोइ पंडितोनो मत एवो छे के हिंसा करता तेनुं कारण अन्न मळतुं नहोतु, पण ए वात खोटी छे. ए प्रमाणे भारतना अश्वमेध पर्वना श्लोक दाखल कर्या छे, ते उपरथी समजाशे. लक्षा वधी लोकोने जमाडवा अन्न मळयूं. अने होमवाने डांगर केम न मळि? बिजु अनुस्तरणीनो होम लख्यो छे ते खावाने वास्ते नथी फकत प्रेत संस्कारमां जनावरने बाळवुं एटलुंज ल-

रूपुं छे. तारे अन्न कमातिनुं कारण क्यां आव्युं. तारे आ तर्क पण मिथ्या छे. गुर्जर देशना लोके ए हिंसा वर्ज करेलिछे तेनु कारण एमने शास्त्रनो खरो अर्थ जड्यो अने प्राचीन व्यासादिक ऋषि अने शंकराचार्यादिक आचार्योए वेदनो अर्थ जाण्यो नथी एम नहीं, गुजरातना ब्राह्मणो शास्त्र धुरंधर मुळथी नथी गुजरातमां कोइ शास्त्र उपर ग्रंथ थयेलो नथी. दक्षणमां हेमाद्री माधवादिक प्रसिद्ध छे, बंगदेशमां गदाधर इत्यादि प्रसिद्ध छे, पण गुजरातमां कोइ काळमां ग्रंथ थयेलो नथी. फकत जैनधर्मना बळथी ब्राह्मण दबाया. माटे यज्ञादिक विधि मुकी दिधो. तारपछि वैष्णव लोकोए पण अहिंसा प्रतिपादन करी तेथी ब्राह्मण तेमने मळता रह्या. ए खरू कारण कबूल करवाने तेमने शरम लागेछे, तेथी वेदनो अर्थ एम नथी एम कहेछे, पण ए वात जुठि छे. तेनुं प्रमाण आ ग्रंथमां पाने पाने मळशे. गुजरातमां दिक्षित नामना, याज्ञिक नामनां, ब्राह्मण छे तारे तेमणे पूर्वे यज्ञयाग कर्या हशेज. पण हाल मुकी दिधु छे, तेनुं कारण फकत जैनधर्मनो फैलाव छे. वेदनो अर्थ हिंसापर छे एम घणा पुरावाथी शाबित छे. प्रत्यक्ष वेदना मंत्रो. ते प्रमाणे पुर्वेना राजादिके कर्म करेला तेनो इतिहास. सांप्रतनो काशी विगेरे ठेकाणे यज्ञ कर्म थायछे ए सर्व प्रमाण फकत गुजरातना हालना ब्राह्मणोथी मिथ्या केम थशे? ए संशयनि निवृत्ति खरी रीते कोइ करशे एवी आशा छे. हजारो प्रमाणथी विरुद्ध बोलवामां शो माल?

मूर्तिनी उपासना तंत्र अने पुराणथी उत्पन्न थइ. पण वेदमां कोइ ठेकाणे नथी. संध्या ब्रह्म यज्ञ इत्यादिक ब्रह्म कर्ममां मुर्ति नथी. मुर्ति-

नो मार्ग निकळ्यो तेथी लोकोने मोटी छूट माळि. पंथ पंथमां गामो-गाम अने वगडामां अनेक मूर्तियो थइ, एके एक करी, त्यारे बीजाए बीजी करी. कोइ च्यार हाथनी कोइ आठ अने दश हाथनी करी, कोइ चार मुखनी कोइ, छ मुखनी, कोइ शांत रूपनी कोइ वीरनी, कोइ स्त्रिनी, कोइ जनावरोनी, कोइ अर्धू जनावर अने कोइ अर्धू माणस एवी, करी. पछी तेनुं भक्षण, तेनो पूजापो, तेनुं वाहन, पात्र, आयुध आभरण शृंगार, तेनुं कुटुंब. अने तेनो विस्तार, अने नोकर, चाकर, तेनी राणीयो, अने राखेली स्त्रीयो, अने तेनी रूची, अने तेनुं भक्तिनुं पटल, पद्धति, न्यास, मुद्रा, यंत्र, मंत्र, बीज, पंचाग, इत्यादि ऊभा कर्यां. एथी हिंदु लोको महा भ्रम अने अंधःकारमां पड्या. एनो निर्णय काळ करशे ते खरो. आगममा, रजस्वला, भंगण इत्यादिक पण पूजा योग्य मूर्ति थइ छे, तेथी तेनो अंत पार रह्यो नथी, धर्ममां ए मोटुं तोफान उत्पन्न थयुं, एम लागे छे? ए विशे कोइ खुलासो करशे तो सारूं.

एम कहे छे के कृष्ण अवतार छे, अने कृष्णनुं वाक्य गीता इत्यादिक मानवा. बुद्ध अवतार छे, पण बुद्धना वचन मानवा नहीं.

वल्लभाचार्ये प्रमाण एटले खरा शास्त्र ठराव्याछे ते ए प्रमाणे.

वेदाःश्रीकृष्णवाक्यानीव्याससूत्राणिचैवही ॥
समाधिभाषाव्यासस्यप्रमाणंतच्चतुष्टयं ॥१॥

उत्तरतो बलवान्

अर्थ.

वेद, गीता, ब्रह्मसूत्र, अने भागवत ए चार एक करता एक वधारे मानवा लायक तेज प्रमाणे शिवने ईश्वर कहेछे, पण शिवे रचेला तंत्रो मानवा नहीं. एम केटलाएक पंडितोनो मत छे.तारे आ बद्धायनो सार एवो निकळे छे के, गमे ते देव, के ऋषि शास्त्रनो लखनार हशे पण तेनो लेख आपणा ध्यानमां उतरशे के बरोबर छे तारे ते मानवो. अने मनमां नठारो एम लागे तारे मानवो नहि. त्यारे शास्त्रमां सारु कियुं अने नठारु कियुं ए जाणवाने वास्ते आपणुं मन प्रमाण छे, शास्त्र प्रमाण नथी. कारण शास्त्रो सारा अने नठारा अनेक भेळ शेळ थया. तारे बुद्धिथी निश्चय करवानो रह्यो.

कह्युं छे के.

श्रुतिस्मृतिविरोधेतुयुक्तिरेवबलीयसी ॥
युक्तिहीनेविचारेतुधर्महानिःप्रजायते ॥१॥

वेद पण प्रमाण नही. तेमां जेटलु आपणे फावतु आवे, तेटलु खरु, बाकी खोटु. ते खोटु ठराववाने वास्ते ह'म ते ग्रंथनुं वाक्य लेवु. भारतथी के पुराण वचनथी वेदने रद् करीये, तेनी चिंता नही. तारे मन एज मोटुं शास्त्र छे. एम सिद्धांत ठरावीये तो अनेक प्रकारना माणसना, अनेक प्रकारना मन छे. तारे किया माणसना मननो आधार करीये, ए पण मोटो संशय छे! जे गुरु पासे जइये तो तेनि एक उपसना होयज, ते पोतानि उपासना बतावशे. वैष्णव हशे तो विष्णुनु बतावशे, कालिकानो उपासक हशे ते, ते बतावशे. वेदांति हशे तो सर्व कर्म काण्ड व्यर्थछे अने एक ब्रह्मनि उपासना क-

रवी एम बतावशे. तारे बिजा बद्धाय मार्ग खोटा अने मारो मत खरो एम पण कहेवु विचारमां ठीक आवतु नथी. कदापि सर्व देवता छे, ते एक ईश्वरनु रुपज छे. नाम रुप लोके ए जुदु कल्प्यु, माटे शि चिंताछे बद्धायने परमेश्वर कहिये एम केटालाएक मत धरावेछे, अने कोइथी विरुद्ध चालता नथी तेमणे एक संकट मोटु पडेछे, ते एज के नठारा अने सारा शास्त्र जे उपर बताव्याछे ते सर्वने मान्य करवा पडेछे विवेक जायछे अने सुधारो करवानी बुद्धी क्षीण थायछे. आळसु, अविवेकी,ने ए मत गमशे पण, बद्धायने ए मत गमवानो नथी. हजारो तकरारो स्वामिनारायण विगरेनी चाले छे ते उपरथी एम मालम पडेछे. तारे शास्त्र खरू कियु ए सार काढवानि घणी जरूर छे. पण ए काम कोण करशे, ते हजी समजातुं नथी. विद्वान लोके एम ठराव्युं छे के:—

अग्नौक्रियावतादेवोदिविदेवेमनीषिणां ॥
प्रतिमास्वल्पबुद्धिनांसर्वत्रसमदर्शिनां ॥

आगमवाळाए जेम जंतर मंतर अने टुचका कल्पनाथी उत्पन्न कऱ्या तेज प्रमाणे निगमवाळाए चारसे पांचसे व्रत ठराव्या छे. तेज प्रमाणे दान ठराव्या छे व्रतार्क, चतुर्वर्ग चिंतामणी वीगेरे ग्रंथमां बद्धाय भेगा कऱ्या छे प्रत्येकमां एक एक काहाणि लखी छे. तेनी रिति एवी.

"एक ब्राह्मण हतो ते दरिद्रि थयो तेथी पीडा पाम्यो अने भटकतो फरतो हतो तेनी एक दहाडे गंगाने कांठे एक ऋषिनी मुलाकात थइ तेणे कह्युं के आज नोम छे आज जेको किलापक्षी सो-

नानो करीने पूजा करशे, अने ब्राह्मणने दान देशे, तो तेनुं दारिद्र जशे. ते सांभळीने ते प्रमाणे करतांज बीजे दहाडे लक्ष्मी प्राप्त थइ. घरमां खोदतां द्रव्य मळ्यूं, अने ब्राह्मण सुखी थयो. ए व्रतनी कथा रामचंद्रजीए लक्षमणजीने कही तेथी जगतमां प्रसिद्ध थइ. एवुं ए व्रत लक्ष्मी आपनार छे. "

आवि कथा हजारो लखीछे.अने तेणे आधारने सारु जे मोटा पुरूषो थइ गया, तेमना नाम दाखल कर्या छे. एटलुज नहीं, पण स्थावर पदार्थना नामथी केटलीएक कथा लखी छे. जेमके धरणी अने शेषनो संवाद, सूर्य अने अरूणनो संवाद, सागर अने आकाश, चंद्र अने शनि, अग्नि अने कार्तिक स्वामी, हिमालय अने इंद्र, इत्यादि जड, स्थावर,कल्पित पुरूषना नामथी कथा लखी छे. तेमां मोटी मोटी करामतो, अद्भुत चमत्कार, सिद्धि, अनेक तरेहना रस,अने रंग,पण ते बद्धायनो मतलब एज के ब्राह्मणनुं महात्म वधारवूं. अने तेमणे जेटली बने एटली मिलकत आपावी. ए प्रमाणे सर्व कथानो सारछे. ब्राह्मण पहेला श्राप देता अने वर आपता, तेनी बहु कथाओ लखी छे. कोइना श्रापथी राजा मरी गया, समुद्र सुकायो, यादवकुळनुं सत्यानाश गयु, मोटा देव, पर्वत, नदीयो, ए पण बिहिने चालता. अने ए बोले तेम करता. ए मतलबनी हजारो कथाओ लखीछे. संस्कृत पुस्तकनो मोटो भाग ए मतलब उपरजछे. अने ब्राह्मणनी लायब्रेरीमां सर्व पुस्तको एज प्रकारना होयछे. जेणे आवा पुस्तको नाहानपणथी वांच्या होय, तेना मनउपर असर तेज प्रकारनो लागे. संस्कृत भणेलो मोटो पंडित होय, तो ए विद्यामां बहु कुशल होयछे. भूगोळ, यंत्रज्ञान के इतिहास,वगेरे सत्यविद्याथी ए बहु दुर होयछे.स-

सत्यशुं अने असत्यशुं, ते विषे एनो विचार नष्ट थायछे. बुद्धिमां कुतर्क वृद्धि पामेछे. दहीं दुध, अने शेर्डिना रसनो समुद्रछे, सूर्यनो वंश पृथ्वी ऊपर राज करवा आव्यो, हिमालयनि दिकि ने शिवजी पर्ण्या, अने सूर्यनि कन्या तापिनदि, अने यमनी बेहेन यमुना, इत्यादि अद्भुत कल्पना विशे संस्कृत पंडितोना मनमां कशो संशय आवतो ज नथी. अने संशय आव्या विना शास्त्रनी वृद्धि के शोधन थतु नथी. माटे हिंदुस्थानमां विद्यानि वृद्धि बंध पडि, ने राजा अने विधवा॰ए बे जणा ब्राह्मणोना मोटा घराक थयाछे. आ हिंदुस्थानमां यज्ञकांड कमति थयुं, एम समजीने शांतिक पौष्टीक कर्मनी वृद्धि करी दानना विधि लख्याछे, तेमां प्रत्येकमां जुदा जुदा देवता तेमनि पूजा, होम, शृंगार, अने ते प्रमाणे करवाथी फल थायछे तेनुं वर्णन, लख्युछे. हेमाद्रि ग्रंथ ऊपरथी थोडा दान निचे लख्याछे.

उदककुंभदान	इछा भोजन दान	अश्वदान
गोदान	भूमी दान	ब्रह्मांडदान
कन्यादान	घंटा दान	महिषीदान
कदलिदान	घृतदान	रजतदान
कांस्य पात्रदान	छत्रोपानहदान	सुवर्णदान
गजदान	दक्षिणा मूर्तिदान	वृषभदान
कृष्णाजीनदान	तिलदान	वस्त्रदान
पुस्तकदान	गोधूमदान	शयादान
गृहदान	तुलादान	यज्ञो पवीतदान
गोपालमूर्तिदान	दशमहादान	श्वेताश्वदान
गोसहस्त्रदान	धान्य पर्वतदान	कपिलादान

प्रपादान	दीपदान	अश्वत्थदान
मणीदान	वृक्षदान	सर्वस्वदान
लवण पर्वतदान		रत्नदान

इत्यादि जेटला उपयोगी पदार्थ तेटला दान छे. अने ब्राह्मण शिवाय बीजाने आपवाना नहीं. अने बीजाने जमाडवा नहीं, ए बाबत सखत नियम लख्या छे.ने एवा हजारो दान लख्या छे. तेज प्रमाणे व्रतार्क उपरथी थोडा निचे व्रतना नाम लख्या छे.

एकादशीव्रत	मुक्ताभरण	गोत्रिरात्र
सोमवारव्रत	रथसप्तमी	प्रदोष
हरितालिका	बुधाष्टमी	नृसिंहजयंति
हस्तगौरी	जन्माष्टमी	अनंतचतुर्दशी
परशुराम जयंति	महालक्ष्मी	वैकुंठचतुर्दशी
चतुर्थी	दुर्वाष्टमी	वटसावित्री
ऋषीपंचमी	रामनवमी	कोकिलाव्रत
उपांगललिता	रुद्रवर्तिव्रत	सोमवति
कपिलाषष्टि	लक्षदीपव्रत	शिवामुष्टि
शीतलाव्रत	विजयादशमी	मंगलागौरी
लक्षनमस्कार	दशाहार	संक्रांति
	लक्षप्रदक्षिणा	तुलसीविवाह

प्रत्येक कथामां एम लखे छे के—

शृणुराजन्प्रवक्ष्यामीव्रतानांउत्तमंव्रतं ॥

एनु फल बताव्युं ते ए प्रमाणे—

अश्वमेधसहस्राणीवाजपेयशतानिच ॥

वंध्यानांपुत्रजननंधनधान्यविवर्धनं ॥

प्रत्येक व्रत कर्ममां एम लखे छे के

आचार्यंचसपत्नीकंवस्त्रालंकारचंदनैः

तोषयित्वाशुचींदांतंगांचदद्यात्पयस्विनीं ॥

ब्राह्मणांभोजयेत्पश्चादक्षिणाभिःप्रदापयेत् ॥

दरएक व्रतमां, नवा नवा देव आवे छे, केळनुं झाड कदली व्रतमां पुजाय छे तेनि प्रार्थना करेछे ते निचे प्रमाणे.

आगच्छकदलिदेवीसौभाग्यफलदायिनी ॥

रूपंदेहीजयंदेहीयशोदेहीसुनिश्चितं ॥

एज प्रमाणे पिपळो, वड, इत्यादिकनी कोइ ब्रह्मा, कोइ विष्णु, कोइ रूद्र, एवा नामथी प्रार्थना पशु पाक्षि झाड, धान्य, पाषाण, चामडुं, इत्यादिने परमेश्वर ठराव्या छे. ए पुराण अने तंत्रनो धर्म वेदथी जुदो छे, अर्जुने बाण मारीने तीरनो ढगलो स्वर्ग सुधी कर्यो, ते रस्तेथी इंद्रनो हाथि लेइ आव्या ए कथा पण गजगौरी व्रतमां छे. जेम जेम स्त्रियो उपर जुलम वधतो गयो, तेम तेम आवी कथा सांभळवामां अने व्रतादिक करवामां वधारे सामिल थइ. एमने वास्तेज ए धर्म ठराव्यो एम पण घणे ठेकाणे लख्युं छे. आ हिंदुस्थानमां विधवा जेवो दुर्दैवी अमंगळ अने कुरूप प्राणी नथी. सामि मळे तो दुःशुकन थाय, मंगळ काममां उभि रहे तो मर्यादा तुटि कहेवाय, बे वार जमे तो अधर्म, घर मांडे तो वटलि जाय, सारू लुगडु पहेरेतो लुचि कहेवाय, एवि बळतरा कोइ प्राणीने न होय.

केटलाएक पुराणमां युगनां वर्ष लख्यां छे तेनी विगत.

३६० वर्षना १ दिव्य वर्ष थाय छे.

एवा दिव्य वर्ष.	मनुष्य वर्ष.
कृतयुगमां ४८००	१७२८०००
त्रेतायुगमां ३६००	१२९६०००
द्वापरमां २४००	८६४०००
कलियुगमां १२००	४३२०००

प्रत्येक युगना आरंभे संधिकाल अने अंते संध्याकाळ आवे छे तेनुं कोष्टक.

संधि	मुख्यकाल	संध्यांश
४००	४०००	४००
३००.	३०००	३००
२००	२०००	२००
१००	१०००	१००

तारे कलियुगनुं हाल ४९७५ मुं वर्ष चाले छे. अने सो दिव्य वर्ष एटले ३६००० छात्तिस हजार वर्ष सुधि कलिनी संधी चालशे ते मां पुर्व युगना धर्म चालवाना एम लख्यूं छे, ते खरू के खोटुं ! आ प्रश्ननो जवाब कोण देशे?

एज प्रमाणे श्राद्ध विधिनो विस्तार थयो छे.

नित्यश्राद्ध	मासिक	दधिश्राद्ध
दर्शश्राद्ध	वार्षिक--सांवत्सरी	घृतश्राद्ध
शण्णवतिश्राद्ध	चट	एकोदिष्ट
नांदिश्राद्ध	हिरण्यश्राद्ध	पार्वण
तीर्थश्राद्ध	आमान्यश्राद्ध	संपिंडश्राद्ध

एक एक श्राद्धमां लाख रूपया खर्च थाय छे. राजा अने श्रीमान् ग्रहस्थो रांडिरांडो हजारो रूपैया पितृकार्यमां खर्च करे छे ए उपरथी, बारमु, जमवानी रीत, नात जमवानी रीत गुजरातमां पडी छे साठोद्रा नागर सात वखत नातो जमाडे छे. अने औदीच्य ब्राह्मण एक वार नात जमाडे छे. तेमां गरीब माणस होय तो घरबार वेचीने कर्ज करीने नात जमाडे छे. आ देशमां, गामोमां, अने शहेरमां कर्ज छे तेमानो घणो भाग एज कारणथी छे. ए कारणथी, भिखारी, विद्याहीन, ने निरूपयोगी लोक बहु थया.

अन्नदानात्परंनास्तिविद्यादानंततःपरं ॥

अन्नेनक्षणिकातृप्तियावज्जीवंतुविद्यता ॥

अन्नदानथी क्षणिक तृप्ति थाय छे विद्याथी आमरण तृप्ति छे. आमानो बीजो भाग जतो रह्यो. एवा अनेक कारणथि आ देशनी पडति थई छे.

वैदिक धर्ममां त्रण ऋण लख्या छे एक देव ऋण--पितृऋण अने ऋषिऋण. आ त्रणे, यज्ञथी श्राद्धथी अने स्वाध्यायथी अपायछे. यज्ञ एटले होम--मख-क्रतु-याग मेध-अध्वर इत्यादि नामथी प्रसिद्ध छे.

यद्यदग्नौजुहोतिसदेवयज्ञः

आश्व. सूत्र अ. ३ कं. १

शत यज्ञ करे तेनु नाम शत क्रतु कहेवाय छे. एवा राजा पण थया छे, एना पेटामां, सप्तहविर्यज्ञ. सप्त पाक यज्ञ. सप्त सोम यज्ञ. श्रौत यज्ञ. उत्तर क्रतु इत्यादिक भेद छे. केटलाएक अन्नना, अने घीना, अने केटलाएक पशुना छे. पशु एटले सर्व प्रकारना जनावर, माणस, बळद, बकरां, घेटां, घोडा इत्यादि. ऋग्वेदनी बे ऋचा निचे लखी

छे ते आश्वलायन गृह्य सूत्रनो पहेला अध्यायनो प्रथम कांडिकानो पांचमा सूत्रमां दाखल कर्या छे.

विश्वमनाऋषि, इंद्रदेवता ॥

अगोरुधायगविषेद्युक्षायदस्म्यंवचः ॥

घृतात्स्वादियोमधुनश्चवोचते ॥

ऋ० अ० ६ अ० २ वर्ग २०

भारद्वाजऋषि. अग्निदेवता ॥

आतेअग्नऋचाहविर्हृदातष्टंभरामसी ॥

तेतेभवंतूक्षणऋषभासोवशाउत ॥

ऋग्वेद.

अ० ४ अ० ५ वर्ग १८ ऋ० ४७ आश्वलायन

नारायणवृत्ति

अस्यमंत्रस्यतात्पर्यंउक्षादिमांसेनतवयावति

प्रीतिस्तावतितवविद्ययापिभवतीत्यर्थः ॥

अर्थ.

हे इंद्र हे अग्नी तमारी बळद अने गायनो मांस उपर प्रीति छे. ते प्रमाणे हमारी विद्या उपर प्रीति थाय. यज्ञने देव यज्ञ कहे छे. ग्रहस्थ लोक, राजा, श्रौति ब्राह्मण पासेथी पैसा आपीने यज्ञ करावे छे. वाममार्गी पासेथी पुजन करावे छे. तेथी पोतानुं कल्याण जाणे छे.

श्राद्ध एटले पितृ यज्ञ एमां पण अनुस्तरणी इत्यादिक मांसना विधी छे. एने पितृ मेध पण कहे छे. आश्वलायन सूत्रनो टीकाकार नारायण श्राद्धनी व्याख्या एम करे छे.

पितृनुद्दिश्ययद्दियते ब्राह्मणेभ्यःश्रद्धयाततश्राद्धं ॥
आ--४--७

अर्थः—वडिलोना नामथी ब्राह्मणने भक्तिथी आपवुं, एनुं नाम श्राद्ध.

स्वाध्याय एटले वेद पठण करवा. एने ब्रह्म यज्ञ पण कहे छे.

आ त्रण यज्ञ छे. वेदनो मुख्य भजन मार्ग एज छे. पौराणिक धर्म चाल्यो तेमां यज्ञने ठेकाणे पूजा स्थापन करी. तेमां बे भाग छे, दक्षण अने वाम. दक्षिण मार्गमां वैष्णव मत सौथी सात्विकछे, तेमां हिंसा नथी. अने वाममां बळिदान, मद्य मांसादिक अनेक प्रकारना दुराचरणो छे. सात्विक मार्गनो कर्ता बुध, ऋषभ देव अने तेनी परंपरामां वैष्णवाचार्य, नारद, पराशरादिक तेमनुं पण कहेवुं एवुं के पूजामां हिंसा नहि, पण वैदिक अने श्रौत कर्म करिये तो हिंसा करवी पण ते हिंसा छे एम कहेवुं नहीं. बीजा निरीश्वर वादी जैन अने श्रावक छे. बीजो वाममाग एनो चलावनार शिवजी अने तेमना परंपराना नाथादिक थया ते. आ प्रमाणे हाल वैष्णव अने शैव बे मोटा प्रस्थान हिंदुस्थानमां छे.

यज्ञधर्म असलथी सर्व देशमां हतो एम इतिहासथी मालूम पडे छे, हाल जेम हिंदुस्थानमां भक्ति अने ज्ञान धर्मनो फेलाव थयाथी यज्ञ कर्म पाछु हठयुं, ते प्रमाणे अन्य देशमां पण यज्ञ कर्म बंध पड्युं छे.

कबीर पंथी, रामस्नेही, माधवगीरी, नडियादनो संत रामबावा, ए पंथमां मूर्तिनो त्याग छे वेदांतिमां बे पक्ष प्राचीन अने अर्वाचीन छे. प्राचीनमां सगुण ब्रह्मनी द्वैत भावे उपासना करे छे प्रार्थना समाजनु मत एज छे अर्वाचीन मतनो स्थापन करनारा शंकराचार्य ते ब्रह्मने निर्गुण ठरावीने अद्वैत माने छे अने हुं ब्रह्म छु एम समजे छे.

उपोद्घात.

शेवकराम रामनाथ शास्त्री शेहेर अमदावाद एमने निगमप्रकाश ग्रंथ तपासवा आप्यो हतो तेमने ते ग्रंथनुं खंडण लखी आप्यूं छे ते आगळ छापवामां आव्यूं छे.

शास्त्रि सेवकराम रामनाथ रचित हिंसा प्रधान धर्म खंडननी चोपडी वेदाभिप्राय बोधनी.

श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ जगतनी सृष्टिने विषे देव मनुष्य असुर तथा उच्च नीच वर्ण तथा दरिद्री तथा धनवान तथा राजा रंक ए जुदां जुदां करवा रूप जे विषम भाव ने निदर्य पणुं ते ईश्वरने ते नथी त्यारे ए देवादि विषम भाव शाथी छे तो सृष्टि वेळाये ईश्वर जे ते जीवनां पूर्व कर्म जोइने तेने अनुसरीने विषम सृष्टि करे छे माटे जीवनां कर्म एज विषम भावनुं कारण छे. पाप करे छे ते पापि थाय छे सारुं करे छे ते सारो थाय छे. जीवने जीवना कर्मनो प्रवाह अनादीनो छे कोइ दिवस जीव कर्म वनातो नोता एम नथी एम जो होय तो न करेलुं आवे ने करेलुं जाय.

॥ उक्तंचशारीरकमीमांसायाम् ॥

वैषम्यनैर्घृण्येनसापेक्षत्वात्तथाहिदर्शयतीति ॥

साधुकारीसाधुर्भवतिपापकारीपापोभवतीतिश्रुतिः ॥

नकर्माविभागाच्चेन्नानादित्वादुपपद्यतेचाप्युपलभ्यतेचेति॥

अन्यथाऽकृताभ्यागमकृतविप्रनाशप्रसंगात् ॥

प्रकृतिंपुरुषंचैवविद्ध्यनादीउभावपीतिस्मृतिः

वेदप्रणिहितोधर्मोह्यधर्मस्तद्विपर्ययः ॥

वेदोनारायणःसाक्षात्स्वयंभूरितिशुश्रुम ॥१॥

तथाचश्रुतिः॥ अस्यमहतोभूतस्यनिः
श्वसितमेतद्यदृग्वेदोयजुर्वेदोःसामवेदोऽथर्वेति

ते जीव सात्विक राजस तामस ए त्रण प्रकारना छे ते महा प्रलयमां माया मध्ये लीन थाय छे जेम सूर्यना तेजमां रात्री लीन थाय छे.

उक्तंचस्कांदे

सकार्यमूलप्रकृतिःसकालाक्षरतेजसि ॥
प्रकाशेर्कस्यरात्रीवतिरोभूतातदाऽभवत् ॥
तिरोभवंतिजीवेशायत्राव्यक्तेहरीच्छया ॥ १ ॥

अनादि जीव पोत पोताना कर्म सहित मायामां सुतेला छे ते अनुशायि जीव कहेवाय छे तेने सृष्टि वेळाये भगवान् जे ते बुद्धि इंद्रियोने मनने प्राण आले छे तथा देह आले छे शा वास्ते विषय भोगने अर्थे तथा जन्म प्रभृति कर्म करवाने अर्थे तथा लोकांतरमां जवाने अर्थे केहतां ते ते लोकना भोगने अर्थे तथा मोक्षने अर्थे.

॥ उक्तंचश्रीमद्भागवते ॥

बुद्धींद्रियमनःप्राणाञ्जनानामसृजत्प्रभुः ॥
मात्रार्थंचभवार्थंचह्यात्मनेकल्पनायच ॥ १ ॥

तेमां सात्विक जीव छे ते सच्छास्त्र सत्पुरुषना संगे करी मोक्ष मार्गमां प्रवर्त्ते छे राजस तामस जीव छे ते पामर छे ते सर्वे जीव कुशास्त्र तथा विधि निषेध समजता नथी वास्ते सदा मांस भक्षण करे छे परदारा संग करे छे सुरापान करे छे तेने नियममां लाववा सारूं

भगवाने वेद रूप शास्त्र कर्युं छे ते सृष्टिकाळे वैराजना श्वासमां ॐकार रूपे आवी चतुर्मुख ब्रह्माना चार मुखमांथी अक्षरात्मक मंत्र गण रूपे उत्पन्न थाय छे.

उक्तंचश्रीमद्भागवते

सएषजीवोविवरप्रसूतिःप्राणेनघोषेणगुहांप्रविष्टः
मनोमयंसूक्ष्ममुपेत्यरूपंमात्रास्वरोवर्णइतिस्थविष्ठः

तथाचश्रुतिः

चत्वारिवाक्परिमितापदानितानिविदुर्ब्राह्मणायेमनीषिणः॥
गुहात्रीणिनिहितानेंगयंतितुरीयंवाचोमनुष्यावदंति ॥

श्रीमद्भागवतेच तृ. अ० १२

ऋग्यजुःसामाथर्वाख्यान्वेदान्पूर्वादिभिर्मुखैः ॥
शस्त्रमिज्यांस्तुतिस्तोमंप्रायश्चित्तंव्यधात्क्रमात् ॥१॥
आयुर्वेदंधनुर्वेदंगांधर्ववेदमात्मनः ॥
स्थापत्यंचासृजद्वेदंक्रमात्पूर्वादिभिर्मुखैः ॥ २ ॥
इतिहासपुराणानांपंचमंवेदमीश्वरः ॥
सर्वेभ्यएववक्त्रेभ्यःससृजेसर्वदर्शनः ॥ ३ ॥

वेदमां ने पुराणमां कशो भेद नथी वेदमां अस्पष्ट वार्त्ता छे ने पुराणमां स्पष्ट वार्त्ता छे एटलो भेद छे पुराण ने वेदनुं उपबृंहकपणुं कहे छे,

उक्तंचमाध्ये

यन्नदृष्टंहिवेदेषुतद्दृष्टंस्मृतिभिःकिल ॥
उभाभ्यांयन्नदृष्टंहितत्पुराणेषुगीयते ॥ १ ॥
इतिहासपुराणाभ्यांवेदंसमुपबृंहयेत् ॥
बिभेत्यल्पश्रुताद्वेदोमामयंचालयेदिति ॥ २ ॥
मामयंनिहनिष्यतीतिकचित्पाठः ॥

ब्रह्माना मुखमांथी वेद उत्पन्न थया ते वेद मरीच्यादि पोताना पुत्र ब्रह्माये भणाव्या पण प्रथम युगमां एक ब्राह्मणनीज सृष्टि हति ते सर्वे सत्वगुणी पापे रहित हता ने ध्यान निष्ठ हता वास्ते उपासना तथा ज्ञान ए बे वेदना भाग प्रवर्त्त्या पण कर्म मार्ग न प्रवर्त्त्यो पछे सत्ययुग उतर्यो ने त्रेतायुग बेठो त्यारे कर्म मार्ग प्रवर्त्त्यो त्यार पहेले बहुधा प्रकारे केवल उंकारात्मज वेद हतो.

उक्तंचश्रीमद्भागवते

नवमस्कंधेसप्तदशोऽध्याये ॥
वेदःप्रणवएवाग्रेधर्मोहिंवृषरूपधृत् ॥
उपासतेतपोनिष्ठाधर्मंमांमुक्तकिल्बिषाः ॥ १ ॥
त्रेतायुगेमाहाभागप्राणान्मेहृदयात्त्रयी ॥
विद्याप्रादुरभूत्तस्याअहमासंत्रिवृन्मखः ॥ २ ॥
त्रेतायांसंप्रवृत्तायांमनसित्रय्यवर्त्तत ॥

स्थालीस्थानंगतोऽश्वत्थंशमीगर्भंविलक्ष्यसः ॥ ३ ॥
तेनद्वेअरणीकृत्वाउर्वशीलोककाम्यया ॥
उर्वशीमंत्रतोध्यायन्नधरारणिमुत्तराम् ॥ ४ ॥
आत्मानंयत्तयोर्मध्येयत्तत्प्रजननंप्रभुः ॥
तस्यानिर्मंथनाज्जातोजातवेदोविभावसुः ॥ ५ ॥
त्रय्यासविद्ययाराज्ञःपुत्रत्वेकल्पितास्त्रिवृत् ॥
तेनायजतयज्ञेशंभगवंतमधोक्षजम् ॥ ६ ॥
उर्वशीलोकमन्विछन्सर्वलोकमयंहरिम्
एकएवपुरावेदःप्रणवःसर्ववाङ्मयः ॥
देवोनारायणोनान्यएकोग्निर्वर्णएवच ॥ ७ ॥
पुरूरवसएवासीत्त्रयीत्रेतामुखेनृप ॥
अग्निनाप्रजयाराजालोकंगांधर्वमेयिवान् ॥ ८ ॥

ते यज्ञ पण भगवाने त्रण प्रकारना कर्‍या छे एक तो साक्षात्पशुये करिने बीजो पशु ते पिष्टनो करवो पण साक्षात्पशु नहि तेने प्रकृति ने विकृति रूप केहे छे ते शास्त्रमां प्रसिद्ध छे ने ए बे थकी त्रिजो केवल अहिंसक यज्ञ त्रण वर्षनी डांगेरे करिने करवानो कह्यो छे पण

यागात्स्वर्गोभवति ॥ अक्षय्यंहवैसुकृतंचातुर्मास्ययाजिनोऽभवति

इत्यादि जे वेदमां फळे श्रुति लखिछे तेने जोइने हिंसामय यज्ञमां सकामिक राजस तामस जन घणा आसक्त थाय छे पण घटवत्स्वर्गादि विनश्यति इत्यादि ज्ञानमार्गनी श्रुतियोनो विचार नथी कर्ता ने हिंसामय यज्ञ करेछे ते वारंवार जन्म मरणने पामे छे के त्यां एमनुं कल्याण थतुं नथी.

॥ तथाचश्रुतिः ॥

प्लवाह्येतेअदृढायज्ञरूपाअष्टादशोक्तमवरंयेषुकर्मएतच्छ्रे
योयेऽभिनंदंतिमूढास्तेजरामृत्युपुनरेवापियंति ॥

अर्थः—आ यज्ञ रूपी प्लव जे नाव छे ते अदृढ केतां दृढ नथी ने अष्टादश पुरोहित यजमानादिक जे तेमणे कर्युं एवुं जे कर्म हिंसा रूपी ते नीच छे ते हिंसामययज्ञना करनारा पुरुष वारंवार जन्म मरणने पामे छे एकनो एक वेद बे वार्त्ताओ केम कहे छे पामर जीवने विषयी करवा सारुं यज्ञ कह्या हता पाछा ए जीव विषयमां आसक्त थया तेने छोडाववा वास्ते पोते ने पोते एनां निषेधनां वचन कह्यां छे त्यां दृष्टांत छे जेम पिता बाळकने खंडलडुकादिये करिने लोभावता सता औषध पाय छे एटले करी कांय खंड लाडुनुं लाभनुं प्रयोजन नथी त्यारे शुं प्रयोजन छे शरीरे आरोग्य थाय ए प्रयोजन छे एम वेद पण कृपाळु छे ते कर्मने मुकाववा सारुं कर्म करावे छे,

उक्तंचश्रीमद्भागवते एका. तृ. ध्याये

परोक्षवादोवेदोयंबालानामनुशासनम् ॥
कर्ममोक्षायकर्माणिविधत्तेह्यगदंयथा ॥ १ ॥

अन्यच्चश्रीधरीटीकाया

पिबनिंबंप्रदास्यामिखलुतेखंडलडुकान् ॥
पित्रैवमुक्तःपिबतिनफलंतावदेवतु ॥ १ ॥

उक्तंचभागवते

नाचरेद्यस्तुवेदोक्तंस्वयमज्ञो जितेंद्रियः ॥
विकर्मणाह्यधर्मेणमृत्योर्मृत्युमुपैतिसः ॥ १ ॥
वेदोक्तमेवकुर्वाणोनिःसंगोऽर्पितमीश्वरे ॥
नैष्कर्म्यांलभतेसिद्धिंरोचनार्थाफलश्रुतिः ॥ २ ॥

अर्थः—जो कर्मनो मोक्ष ए पुरुषार्थ छे त्यारे वेद प्रथमज कर्मनो त्याग स्वयम करावतो नथी त्यां कहे छे अजितेंद्रि छे वास्ते अज्ञानि छे पोते जो वेदोक्त कर्म नाचरे तो कर्माना चरण लक्षण जे अधर्म तेणे करि मृत्यु थकी अनंतर मृत्युनेज पामे छे,

तथाचश्रुतिः

मृत्वा पुनर्मृत्युमुपपद्यतेअद्यमानःस्वकर्मभिः ॥

हिंसामय यज्ञनी निंदा कहि छे श्रुतिमां

कश्चिद्वावाअस्माल्लोकात्प्रेत्यआत्मानंवेदअयमहमस्मीति
कश्चित्स्वंलोकंनप्रतिजानातिअग्निमुग्धोहैवधूमतांतइति

अर्थः—कोइक पोतानो लोक जे ब्रह्म धाम आत्म तत्त्वरूप तेने जाणतो नथी जे पुष्प जे अवांतर फलमां परम फलनो माननारो ते

अग्नि साध्य कर्ममां आ सक्रिये करि लोपाइ गयो छे विवेक जेनो तेने अंते धूम मार्ग छे.

उक्तंच श्रीमद्भागवतैकादशे एकविंशतितमाध्यायेच

फलश्रुतिरियंनृणांनश्रेयोरोचनंपरम् ॥
श्रेयोविवक्षयाप्रोक्तंयथाभैषज्यरोचनम् ॥ १ ॥
उत्पत्त्यैवहिकामेषुप्राणेषुस्वजनेषुच ॥
आसक्तमनसोमर्त्याआत्मनोऽनर्थहेतुषु ॥ २ ॥
नतानविदुषःस्वार्थंभ्राम्यतोवृजिनाध्वनि ॥
कथंयुंज्यात्पुनस्तेषुतांस्तमोविशतोबुधः ॥ ३ ॥
एवंव्यवसितंकेचिदविज्ञायकुबुद्धयः
फलश्रुतिंकुसुमितांनवेदज्ञावदंतिहि ॥ ४ ॥
कामिनःकृपणालुब्धाःपुष्पेषुफलबुद्धयः ॥
अग्निमुग्धाधूमतांताःस्वंलोकंनविदंतिते ॥ ५ ॥
नतेमामंगजानंतिहृदिस्थंयइदंयतः ॥
उक्थशस्त्राह्यसुतृपोयथानीहारचक्षुषः ॥ ६ ॥
तेमेमतमविज्ञायपरोक्षंविषयात्मकाः ॥
हिंसायांयदिरागःस्याद्यज्ञएवनचोदना ॥ ७ ॥
हिंसाविहाराह्यालब्धैःपशुभिःस्वसुखेच्छया ॥

यजंतेदेवतायज्ञैःपितृभूतपतीन्खलाः ॥ ८ ॥

स्वप्नोपममम्ुंलोकमसंतंश्रवणप्रियम् ॥

आशिषोहृदिसंकल्प्यत्यजंत्यर्थान्यथावणिक् ॥ ९ ॥

रजःसत्वतमोनिष्ठारजःसत्वतमोजुषः ॥

उपासतेइंद्रमुख्यान्देवादीन्नतथैवमाम् ॥ १० ॥

इष्ट्वेहदेवतायज्ञैर्गत्वारंस्यामहेदिवि ॥

तस्यांतइहभूयास्ममहाशालामहाकुलाः ॥ ११ ॥

एवंपुष्पितयावाचाव्याक्षिप्तमनसांनृणाम् ॥

मानिनांचातिस्तब्धानांमद्वार्त्तापिनरोचते ॥ १२ ॥

वेदाब्रह्मात्मविषयात्रिकांडविषयाइमे ॥

परोक्षवादाऋषयःपरोक्षंममचप्रियम् ॥ १३ ॥

किंविधत्तेकिमाचष्टेकिमनूद्यविकल्पयेत् ॥

इत्यस्याहृदयंलोकेनान्योमद्वेदकश्चन ॥ १४ ॥

मांविधत्तेऽभिधत्तेमांविकल्प्यापोह्यतेह्यहम् ॥

एतावान्सर्ववेदार्थःशब्दआस्थायमांभिदा ॥ १५ ॥

एकादशमां छत्रीशमा अध्यायमां सर्व व्रतमां अहिंसाव्रत छे ते पोतानुं स्वरूप कह्युं छे.

यज्ञानांजपयज्ञोहंव्रतानामविहिंसनम् ॥

एकादशना १७ अध्यायमां अहिंसा ए सर्व वर्णनो धर्म कह्यो छे वास्ते हिंसामय यज्ञ करवा अवश्य एवुं वेदनुं तात्पर्य नथी.

अहिंसासत्यमस्तेयमकामक्रोधलोभ्यता ॥
भूतप्रियहितेहाचधर्मोयंसार्ववर्णिकः ॥ १ ॥

श्री भारतना मोक्ष धर्ममां एकसोनेचोसठमा अध्यायमां कल्याणना मारगमां चाल्या जे वैष्णव तेने हिंसामय यज्ञ न करवा एम कह्युं छे, ते अध्यायना आदि नीलकंठे अवतारणिका लखि छे.

यदाभगवतोऽत्यर्थमित्यादिरध्यायो
वैष्णवानांहिंस्रयज्ञनिषेधार्थः ॥

युधिष्ठिरउवाच.

यदाभागवतोत्यर्थमासीद्राजामहान्वसुः ॥
किमर्थंसपरिभ्रष्टोविवेशाविवरंभुवः ॥ १ ॥
भीष्मउ--अत्राप्युदाहरंतीममितिहासंपुरातनम् ॥
ऋषीणांचैवसंवादंत्रिदशानांचभारत ॥ २ ॥
अजेनयष्टव्यमितिप्राहुर्देवाद्विजोत्तमान् ॥
सचछागोप्यजोज्ञेयोनान्यःपशुरितिस्थितिः ॥ ३ ॥
ऋषयउ--बीजैर्यज्ञेषुयष्टव्यमितिवैवैदिकीश्रुतिः ॥
अजसंज्ञानिबीजानिछागंनोहंतुमर्हथ ॥ ४ ॥
नैषधर्मःसतांदेवायत्रवध्येतवैपशुः ॥

इदंकृतयुगंश्रेष्ठंकथंवध्येतवैपशुः ॥ ५ ॥
भीष्मउ--तेषांसंवदतामेवऋषीणांविबुधैःसह ॥
मार्गागतोनृपश्रेष्ठस्तंदेशंप्राप्तवान्वसुः ॥ ६ ॥
अंतरिक्षचरःश्रीमान्समग्रबलवाहनः ॥
तंदृष्ट्वासहसायांतंवसुंतेत्वंतरिक्षगम् ॥ ७ ॥
ऊचुर्द्विजातयोदेवानेषच्छेत्स्यतिसंशयम् ॥
यज्वादानपतिःश्रेष्ठःसर्वभूतहितप्रियः ॥ ८ ॥
कथंस्विदन्यथाब्रूयादेषवाक्यंमहान्वसुः ॥
एवंतेसंविदंकृत्वाविबुधाऋषयस्तथा ॥ ९ ॥
अपृच्छन्सहसाभ्येत्यवसुंराजानमंतिकात् ॥
भोराजन्केनयष्टव्यमजेनाहोस्विदोषधैः ॥ १० ॥
एतंनःसंशयंछिंधिप्रमाणंनोभवान्मतः ॥
सतान्कृतांजलिर्भूत्वापरिपप्रच्छवैवसुः ॥ ११ ॥
कस्यवैकोमतःकामोब्रूतसत्यंद्विजोत्तमाः ॥
ऋषयउ--धान्यैर्यष्टव्यमित्येवपक्षोऽस्माकंनराधिप ॥
देवानांतुपशुःपक्षोमतोराजन्वदस्वनः ॥ १२ ॥
भीष्मउ--देवानांतुमतंज्ञात्वावसुनापक्षसंश्रयात् ॥
छागेनाजेनयष्टव्यमेवमुक्तंवचस्तदा ॥ १३ ॥

कुपितास्तेततःसर्वेमुनयःसूर्यवर्च्चसः ॥
ऊचुर्वसुंविमानस्थंदेबपक्षार्थवादिनम् ॥ १४ ॥
सुरपक्षोगृहीतस्तेयस्मात्तस्माद्दिवःपत ॥
अद्यप्रभृतितेराजन्नाकाशेविहतागतिः ॥ १५ ॥
अस्मच्छापाभिघातेनमहींभित्वाप्रवेक्ष्यसि ॥
ततस्तस्मिन्मुहूर्त्तेऽथराजोपरिचरस्तदा ॥ १६ ॥
अधोवैसंबभूवाशुभूमेर्विवरतोनृप ॥
स्मृतिस्त्वेवंनविजहौतदानारायणाज्ञया ॥ १७ ॥

इतिश्री भारते मोक्ष धर्मे शतोपरिचतुः षष्टितमेऽध्याये ।

एम वार्त्ता वायु पुराणमां पण छे, स्कंद पुराणमां पण छे त्यांथी जोइ लेजो घणा विस्तारे छे.

यावेदविहिताहिंसानसाहिंसेतिकीर्त्यते ॥

ए स्मृति वाक्यमां कह्युं जे वेदमां कहि एवी जे हिंसा ते हिंसा न कहेवाय. यज्ञ विना अमथी हिंसा करवानुं कोइ ठेकाणे कह्युं नथी जे हिंसा निषेध करे एतो जे ठेकाणे हिंसाना निषेध छे ते वेद विहित हिंसानाज निषेध छे.

ऐतरब्राह्मणनीद्वितीयपंचिकामांपुरुषंवैदेवाःपशुमालभंत

ए पुरुष मेधना निषेध श्रीमद्भागवतना पंचम स्कंधना छेला अध्यायमां निषेध द्वारायम यातना कहि छे.

तथा।हिर्यात्विहवैपुरुषाःपुरुषमेधेनयजंतेयाश्चस्त्रियोनृप
शून्खादंतितांश्चताश्चतेपशवइहनिहतायमसदनेपात
यंतोरक्षोगणाःसौनिकाइवस्वधितिनाविदार्यासृक्पि
बंतिनृत्यंतिगायंतिचहृष्यमाणायथेहपुरुषादाः ॥१॥

सोमक राजा हता तेने एक पुत्र जंतु नामे हतो तेने एक दिन कीडिये चटको भर्यो त्यारे पुत्रे बकोर पाड्यो त्यारे राजाये मुख हलाव्युं ने कह्युं जे एक पुत्र ते पुत्रमां नहि तारे पासे उभा एवा जे पुरोहित तेणे कह्युं जे ए पुत्रने यज्ञ करि होमो तो घणा पुत्र थशे त्यारे राजाये कह्युं जे होमिशुं यज्ञ करो पछे ए गोर हता तेणे यज्ञ करिने पुत्रने होमाव्यो पछे राजाने पुत्र एकसोने एक थया पछे काळे करि गोर मरि गया त्यारे पुरुष मेध कर्यो तेना पापे करिने गोरने नरकमां नाख्या पछे राजा मरि गया त्यारे राजा पण नरकमां गया त्यां गोरने देखिने यम राजाने राजाये कह्युं जे आ गोरने नरकमां शा सारुं नाख्या त्यारे यमे कह्युं जे तमोने पुरुष मेध कराव्यो तेना पापे करिने तमारे नरक भोगववो छे ने गोरने पण भोगववानो छे ए वार्त्ता वन पर्वमां सविस्तर ते जोवि ए रीत्ये वेदोक्त हिंसानुं फळ पण नरक प्राप्ति छे कळिमां तो सर्वथा हिंसामय यज्ञनो निषेधज लख्यो छे जो ए हिंसामय यज्ञनो सत्य पक्ष होय तो निषेध शुं करवा करे.काळ निर्णय दीपिकामां निषेध लख्यो छे.

वर्ज्यंगोनरवाजिमेधकरणंमद्यंविवाहः
पुनर्व्यूढायाश्चकलौकमंडलुधृतिर्ब्रह्मव्रतंनैष्ठिकम् ॥

ज्येष्ठांशोद्धरणंवरातिथिसुराद्यर्थंपशोर्हिंसनंभ्रातु.
स्त्रीषुनियोगतःसुतजनिस्तद्वद्वनस्थाश्रमः ॥ १ ॥

आदित्यपुराणेच.

नराश्वमेधौमद्यंचकलौवर्ज्यौद्विजातिभिः ॥
ऊढायाःपुनरुद्वाहोज्येष्ठांशोगोवधस्तथा ॥१॥

शास्त्रमां कर्म बे प्रकारनां कह्यां छे प्रवृत्त कर्म तथा निवृत्त कर्म तेमां अग्निहोत्रादि हिंस्र कर्म छे ते अशांतिनुं करनार छे वारंवार जन्ममरणने आपे छे निवृत्त कर्म मोक्ष आपे छे.

उक्तंचश्रीमद्भागवतेसप्तमस्कंधे.

प्रवृत्तंचनिवृत्तंचद्विविधंकर्मवैदिकम् ॥
आवर्त्ततप्रवृत्तेननिवृत्तेनाश्नुतेऽमृतम् ॥ १ ॥
हिंस्रंद्रव्यमयंकाम्यमग्निहोत्राद्यशांतिदम् ॥
दर्शश्चपूर्णमासश्चचातुर्मास्यंपशुःसुतः॥२॥सोमयागः
एतदिष्टंप्रवृत्ताख्यंहुतंप्रहुतमेवच ॥
पूर्त्तंसुरालयारामकूपाजीव्यादिलक्षणम् ॥३॥
द्रव्यसूक्ष्मविपाकश्चधूमोरात्रिरपक्षयः ॥
अयनंदक्षिणंसोमोदर्शऔषधिवीरुधः ॥ ४ ॥
अन्नंरेतइतिक्ष्मेशपितृयानंपुनर्भवः ॥

एकैकश्येनानुपूर्वंभूत्वाभूत्वेहजायते ॥ ५ ॥
निषेकादिश्मशानांतैःसंस्कारैःसंस्कृतोद्विजः ॥
इंद्रियेषुक्रियायज्ञान्ज्ञानदीपेषुजुह्वति ॥६॥ इत्यादि.

प्राचीन बर्हिष राजाये यज्ञ करि बधु वसुधात लदर्भे करि आस्त-त कर्युं ए रीत्ये कर्मने विषे आसक्त छे मन जेनुं एवा प्राचीन बर्हिषने जोइ कृपाळु नारदजी बोध करता हवा हे राजन् कीया कर्म करि दुःखहानि सुखनी प्राप्ति छे राजाये कह्युं महाराज मने कशि समजण नथी पछे नारदजीये प्रत्यक्ष मार्या पशुने देखाड्या जे कुठार लइने राजाने मारवा उभा छे ते राजा जोइ कंप्या ने हिंसामय यज्ञ छोडीने निष्काम अहिंसक कर्म करि परमात्माने पाम्या.

उक्तंचश्रीमद्भागवतेचतुर्थस्कंधे.

बर्हिषत्सुमहाभागोहाविर्द्धानिःप्रजापतिः ॥
क्रियाकांडेषुनिष्णातोयोगेषुचकुरूद्वह ॥ १ ॥
यस्येदंदेवयजनमनुयज्ञंवितन्वतः ॥
प्राचीनाग्रैःकुशैरासीदास्तृतंवसुधातलम् ॥ २ ॥
प्राचीनबर्हिषंराजन्कर्मस्वासक्तमानसम् ॥
नारदोऽध्यात्मतत्वज्ञः कृपालुःप्रत्यबोधयत् ॥ ३ ॥
श्रेयस्त्वंकतमद्राजन्कर्मणात्मनईहसे ॥
दुःखहानिःसुखावाप्तिःश्रेयस्तन्नेहचेष्यते ॥ ४ ॥

राजोवाच--नजानामिमहाबाहोपरंकर्मापविद्धधीः ॥
ब्रूहिमेविमलंज्ञानंयेनमुच्येयकर्मभिः ॥ ५ ॥
गृहेषुकूटधर्मेषुपुत्रदारधनार्थधीः ॥
नपरंविंदतेमूढोभ्राम्यन्संसारवर्त्मसु ॥ ६ ॥

श्रीनारदउवाच.

भोभोःप्रजापतेराजन्पशून्पश्यत्वयाध्वरे ॥
संज्ञापितान्जीवसंघान्निर्घृणेनसहस्रशः ॥ ७ ॥
एतेत्वांसंप्रतीक्षंतेस्मरंतोवैशसंतव ॥
संपरेतमयःकूटैश्छिंदंत्युत्थितमन्यवः ॥ ८ ॥

युधिष्ठिरवाक्यंप्रथमस्कंधे.

यथापंकेनपंकांभःसुरयावासुराकृतम् ॥
भूतहत्यांतथैवैकांनयज्ञैर्मार्ष्टुमर्हति ॥ १ ॥

वेदना त्रण कांडछे एकतो कर्मकांड बीजो उपासना कांड त्रीजो ज्ञानकांड थकी श्रीमद्भागवतने श्रेष्ठ पणुं कह्युं छे श्रीधरस्वामीये धर्मःप्रोज्झित ए श्लोकनी टीकामां ॥

इदानींश्रोतृप्रवर्त्तनायश्रीमद्भागवतस्यकांड
त्रयविषयेभ्यःसर्वशास्त्रेभ्यश्रेष्ठ्यंदर्शयतिधर्मइति ॥
धर्मःप्रोज्झितकैतवोऽत्रपरमोनिर्मत्सराणां

सतांवेद्यंवास्तवमत्रवस्तुशिवदंतापत्रयोन्मूलनम् ॥
श्रीमद्भागवतेमहामुनिकृतेकिंवापरैरीश्वरः
सद्योहृद्यवरुध्यतेऽत्रकृतिभिःशुश्रूषुभिस्तत्क्षणात् ॥१॥
निगमकल्पतरोर्गलितंफलंशुकमुखादमृतद्रवसंयुतम् ॥
पिबतभागवतंरसमालयंमुहुरहोरसिकाभुविभावुकाः॥२॥
श्रीधरस्वामिनःसर्वटीकाकाराग्रगण्यावेदविद्वारि
ष्ठाव्याचख्युः ॥
अत्रश्रीमतिसुंदरेभागवतेपरमोधर्मोनिरूप्यते ॥
परमत्वेहेतु.
प्रकर्षेणोज्झितंकैतवंफलाभिसंधिलक्षणंकपटंयस्मिन्सः॥
प्रशब्देनमोक्षाभिसंधिरपिनिरस्तः ॥
केवलमीश्वराराधनलक्षणोधर्मोनिरूप्यतइति ॥
अधिकारितोऽपिधर्मस्यपरमत्वमाहनिर्मत्सराणां
परोत्कर्षासहनंमत्सरस्तद्रहितानांसतांभूतानुकंपिनाम्
एवंकर्मकांडविषयेभ्यःशास्त्रेभ्यःश्रैष्ठ्यमुक्तम् ॥
ज्ञानकांडविषयेभ्योऽपिश्रैष्ठ्यमाहवेद्यमिति
वास्तवंपरमार्थभूतंवस्तुवेद्यम् ॥
नतुवै शेषिकाणामिवद्रव्यगुणादिरूपम् ॥

शिवदंपरमसुखदम्किंच ॥
आध्यात्मिकादितापत्रयोन्मूलनंच ॥
अनेनज्ञानकांडविषयेभ्यःश्रैष्ठ्यंदर्शितम् ॥
कर्त्तृतोपिश्रैष्ठ्यमाह
महामुनिःश्रीनारायणस्तेनप्रथमंसंक्षेपतःकृते ॥
देवताकांडगतंश्रैष्ठ्यमाहपरैःशास्त्रैस्तदुक्तसाधनैर्वा ॥
ईश्वरोहृदिकिंवासद्यएवावरुध्यतेस्थिरीक्रियते
वाशब्दःकटाक्षेकिंतुविलंबेनकथंचिदेव ॥
अत्रतुशुश्रूषुभिःश्रोतुमिच्छद्भिरेवतत्क्षणादेवावरुध्यते ॥
इदमेवतर्हिकिमितिसर्वेनशृण्वंतितत्राहकृतिभिरिति ॥
श्रवणेच्छानुपुण्यैर्विनानोत्पद्यतइत्यर्थः ॥
तस्मादत्रकांडत्रयार्थस्यापियथावत्प्रतिपादनादिदमेव
सर्वशास्त्रेभ्यःश्रेष्ठमतोनित्यमेतदेवश्रोतव्यमितिभावः ॥
इदानींतुनकेवलंसर्वशास्त्रेभ्यःश्रेष्ठत्वादस्यश्रवणं
विधीयतेअपितुसर्वशास्त्रफलरूपमिदमतःपरमाद
रेणसेव्यमित्याहनिगमेति ॥
चातुर्होत्रंकर्मशुद्धंप्रजानांवीक्ष्यवैदिकम् ॥
व्यदधाद्यज्ञसंतत्यैवेदमेकंचतुर्विधम् ॥ १ ॥

ऋग्यजुःसामाथर्वाख्यावेदाश्चत्वारउद्धृताः ॥
इतिहासपुराणानिपंचमोवेदउच्यते ॥ २ ॥
तत्रर्ग्वेदधरःपैलःसामगोजैमिनिःकविः ॥
वैशंपायनएवैकोनिष्णातोयजुषामुत ॥ ३ ॥
अथर्वांगिरसामासीत्सुमंतुर्दारुणोमुनिः ॥
इतिहासपुराणानांपितामेरोमहर्षणः ॥ ४ ॥
तएतऋषयोवेदंस्वंस्वंव्यस्यन्ननेकधा ॥
शिष्यैःप्रशिष्यैस्तच्छिष्यैर्वेदास्तेशाखिनोभवन् ॥ ५ ॥
तएववेदादुर्मेधैर्धार्यंतेपुरुषैर्यथा ॥
एवंचकारभगवान्व्यासःकृपणवत्सलः ॥ ६ ॥
स्त्रीशूद्रद्विजबंधूनांत्रयीनश्रुतिगोचरः ॥
कर्मश्रेयसिमूढानांश्रेयएवंभवेदिह ॥ ७ ॥
इतिभारतमाख्यानंकृपयामुनिनाकृतम् ॥
एवंप्रवृत्तस्यसदाभूतानांश्रेयसिद्विजाः ॥ ८ ॥
भारतव्यपदेशेनह्याम्नायार्थश्चदर्शितः ॥
दृश्यतेयत्रधर्मादिस्त्रीशूद्रादिभिरप्युत ॥ ९ ॥
मुमुक्षवोघोररूपान्हित्वाभूतपतीनथ ॥
नारायणकलाःशांताभजंतिह्यनसूयवः ॥ १० ॥

रजस्तमःप्रकृतयःसमशीलान्भजंतिवै ॥
पितृभूतप्रजेशादीन्श्रियैश्वर्यप्रजेप्सवः ॥ ११ ॥
वासुदेवपरावेदावासुदेवपरामखाः ॥
वासुदेवपरायोगावासुदेवपराःक्रियाः ॥ १२ ॥
वेदार्थाभारतेन्यस्ताइतिच ॥
वेदान्व्यासयतिनिरूपयतिभारतादिष्वितिवेद
व्यासइतिनामनिरुक्तेः ॥
इतिहासपुराणानिपंचमंवेदमीश्वरइत्यादिवाक्यैः
पुराणानांवेदाभिन्नत्वनिश्चयः ॥

महाभारतेमानवीयेच.

इतिहासपुराणाभ्यांवेदंसमुपबृंहयेदित्युक्तम् ॥
तेनपुराणानांवेदोपबृंहकत्वान्नततोविजातीयत्वम् ॥
तस्मान्नपुराणोक्तवाक्येष्ववैदिकत्वशंकाकार्या ॥

तथाचनारदीये.

वेदार्थादधिकंमन्येपुराणार्थंवरानने ॥
वेदाऽप्रतिष्ठितादेविपुराणेनात्रसंशयः ॥
पुराणमन्यथाज्ञात्वातिर्यग्योतिमवाप्नुयात् ॥
सुदांतोऽपिसुशांतोवानगतिंप्राप्नुयात्सतीम् ॥

वेदपुराणयोर्भिन्नत्वेत्वस्पष्टपरोक्षार्थत्वस्पष्टापरो
क्षार्थत्वेएवप्रयोजकेभवतोनत्वाधिक्यन्यूनत्वे ॥
उभयोरपिभगवन्मुखादेवाविर्भूतत्वात् ॥
तथाहिवेदेनित्योनित्यानांचेतनश्चेतनानामित्यादि
प्रथमांतनित्यचेतनशब्दाभिधेयोभगवान्नस्पष्टंप्रतीयते ॥
पुराणेतुकृष्णमेनमवेहित्वमात्मानमखिलात्मना
मितिस्पष्टंप्रतीयते ॥
तथावेदेसदेवसोम्येदमग्रआसीदेकमेवाद्वितीय
मितिसामान्यतोऽस्पष्टमुच्यते ॥
पुराणेतुतत्रोद्वहत्पशुपवंशशिशुत्वनाट्यंब्रह्माद्वयं
परमनंतमगाधबोधम् ॥
वत्सान्सखीनिवपुरापरितोविचिन्वदेकंसपाणिकवलं
परमेष्ठ्यचष्टेतिस्पष्टमुच्यते ॥
तथावेदेयदूर्ध्वंगार्गीदिवोयदर्वाग्पृथिव्यायदंतरा
द्यावापृथिवीत्यादिनाभगवतोब्रह्मांडाश्रयलक्षणं
माहात्म्यमुक्तंतच्चास्पष्टम् ॥
पुराणेतुक्वाहंतमोमहदहंखचराग्निवार्भू
संवेष्टितांडघटसप्तवितस्तिकायः ॥

केदग्विधाविगणितांडपराणुचर्यावाताध्वरोम
विवरस्यचतेमहित्वमितिस्पष्टमुक्तम् ॥
तथावेदेमायाचतमोरूपासदसदनिर्वचनी
येतिमायायादुर्ज्ञेयत्वमुक्तंतच्चास्पष्टम् ॥
पुराणेतुआत्मांशभूतांतांमायांभवानींभगवान्भवः
शंसतामृषिमुख्यानांप्रीत्याचष्टाथभारतेति
श्रीपार्वतीरूपामायेतिस्पष्टयुक्तम् ॥

मुंडकोपनिषदि

द्वेविद्येवेदितव्येइतिहास्मयद्ब्रह्मविदोवदंतिपराचैवाप-
राचतत्रापरात्सग्वेदोयजुर्वेदःसामवेदोब्रह्मवेदःशिक्षाक
ल्पोव्याकरणंनिरुक्तंछंदोज्योतिषमितीतिहासः पुराणं
न्यायोमीमांसाधर्मशास्त्राणीत्पथपरायययातदक्षरमधिग
म्मतयत्तदहश्यमग्राह्यमगोत्रमवर्णमचक्षुःश्रोत्रंतदपाणि
पादंनित्यंविभुसर्वगतंसुसूक्ष्मंतदव्ययंयद्भूतयोनिंपरिपश्यं
तिधीराः ॥

ए श्रुतिमां कह्युं जे वेद पुराण ने इतिहास एकज छे एमां फेर नथी.

॥ तृतीयस्कंधे ॥

जीवाःश्रेष्ठाह्यजीवानांततःप्राणभृतःशुभे ॥

ततःसचित्ताःप्रवरास्ततश्चेंद्रियवृतयः ॥ १ ॥
तत्रापिस्पर्शवेदिभ्यःप्रवरारसवेदिनः ॥
तेभ्योगंधविदःश्रेष्ठास्ततःशब्दविदोवराः ॥ २ ॥
रूपभेदविदस्तत्रततश्चोभयतोदतः ॥
तेषांबहुपदःश्रेष्ठाश्चतुष्पादस्ततोद्विपात् ॥३॥
ततोवर्णाश्चचत्वारस्तेषांब्राह्मणउत्तमः ॥
ब्राह्मणेष्वपिवेदज्ञोह्यर्थज्ञोऽभ्याधिकस्ततः ॥ ४ ॥
अर्थज्ञात्संशयच्छेत्तातत:श्रेयान्स्वकर्मकृत् ॥
मुक्तसंगस्ततोभूयान्नदोग्धाधर्ममात्मनः ॥ ५ ॥
तस्मान्मय्यर्पिताशेषक्रियार्थात्मानिरंतरः ॥
मय्यर्पितात्मनःपुंसोमयिसंन्यस्तकर्मणः ॥ ६ ॥
नपश्यामिपरंभूतमकर्त्तुःसमदर्शनात् ॥ ७ ॥

हिंसामय यज्ञ करिने राजस तामस जीवने स्वर्गादिकनी प्राप्ति निर्विघ्ने करि यज्ञ करे ते मारू मांय आराधन करे तो थाय छे पण एनुं पुण्य थइ रहे त्यारे पाछो मर्त्य लोकमां पडे छे ते गीतामां भगवाने कह्युं छे.

त्रैविद्याःसोमपाःपूतपापायज्ञैरिष्ट्वास्वर्गतिंप्रार्थयंते ॥
तेपुण्यमासाद्यसुरेंद्रलोकमश्नंतिदिव्यान्दिविदैवभोगान् ॥

तेतंभुक्त्वास्वर्गलोकंविशालंक्षीणेपुण्येमर्त्यलोक
विशंति ॥ १ ॥
एवंत्रयीधर्ममनुप्रपन्नागतागतंकामकामालभंते ॥

पण एम मोक्ष थतो नथी वास्ते जेने मोक्षनी इछा होय तेने क्यारेय पण हिंसामय यज्ञ न करवा निष्काम अहिंसक यज्ञ करवा ते कळिमां जे अश्वमेधादि यज्ञ करवानो निषेध कर्यो छे ते तो कदापि करवाज नाहिं.

उक्तंचश्रीमद्भागवते

कृतेयद्ध्यायतोविष्णुंत्रेतायांयजतोमखैः ॥
द्वापरेपरिचर्यायांकलौतद्धरिकीर्त्तनात् ॥ १ ॥

भारतना मोक्ष धर्ममां विशमा अध्यायमां हिंसामय यागादि कर्म निंद्युं छे.

लोष्टमर्द्दीतृणछेदीनखवादीतुयोनरः ॥
नित्योच्छिष्टःशंकुशुकोनेहायुर्विंदतेमहत् ॥ १ ॥
यजुषासंस्कृतंमांसंनिवृत्तोमांसभक्षणात् ॥
नभक्षयेद्वृथामांपृष्ठमांसंचवर्ज्जयेत् ॥ २ ॥

अस्यटीकायांनीलकंठः ॥

अमृतंब्राह्मणोच्छिष्टमित्यस्यप्रशंसार्थंहिंसामयं
यागादिकर्मनिंद्यते

लोष्टेति:--लोष्ठमर्द्दीयज्ञीयवेदिकरणार्थंतृणछेदी वर्हिराहरणार्थनखादिनखैच्छित्वायज्ञशेषंमांसं खादतीतितथा ॥

नित्योच्छिष्टंनित्यसोमपानंपितापितामहोवापिसोमं यस्यनपीतवान् सर्वैकर्ब्राह्मणोनामेत्युक्तःतेनउच्छिष्टः सोमपायीशंकुसुकःफलाभिष्वंगीमहदायुर्ब्रह्म नविंदते ॥१॥

यजुषायजुर्वेदविदाऽध्वर्युणामांसंयज्ञीयंयद्यपिनिवृत्तो नभक्षयेत् ॥

वृथामांसंअसंस्कृतमांसंपृष्ठमांसंचरममांसंश्राद्ध शेषमित्यर्थः ॥

पृष्ठंचरममात्रेस्यादितिविश्वः ॥

एतेनहिंसायुक्तोधर्मोनकर्त्तव्यइत्युक्तम् ॥ २ ॥

श्रीभारतना मोक्ष धर्ममां अध्याय ८८, ८९, ९०, ए त्रण अध्यायमां तुलाधार जाजलिनो संवाद आहिंसक धर्मे युक्त छे.

यदाचायंनबिभेतियदाचास्मान्नबिभ्यनि
यदानेच्छतिनद्वेष्टिब्रह्मसंपद्यतेतदा ॥ १ ॥
यदानकुरुतेभावंसर्वभूतेषुपापकम् ॥

कर्मणामनसावाचाब्रह्मसंपद्यतेतदा ॥ २ ॥
नभूतोनभाविष्योऽस्तिनचधर्मोऽस्तिकश्चन ॥
योऽभयःसर्वभूतानांसप्राप्नोत्पभयंपदम् ॥ ३ ॥
यस्मादुद्विजतेलोकःसर्वेमृत्युमुखादिव ॥
वाक्क्रूराद्दंडपरुषात्संप्राप्नोतिमहद्भयम् ॥ ४ ॥
यथावद्वर्त्तमानानांवृद्धानोपुत्रपौत्रिणाम् ॥
अनुवृत्तामहेवृत्तमहिंस्राणांमहात्मनाम् ॥ ५ ॥
अहिंस्राणामितिहिंसामयकुलाचारोप्यप्रमाण
मितिनीलकंठः ॥

वेद तथा भारत तथा सर्व पुराणनो अभिप्राय तो हिंसामय यज्ञ न करवो एज छे सकामिक पुरुषने हिंसा करवानुं सुझे छे काम्य एवुं जे हिंसामय कर्म तेनी निंदा करि छे.

सएवसुभगोभूत्वापुनर्भवतिदुर्भगः ॥
व्यापत्तिंकर्मणांदृष्ट्वाजुगुप्संतिजनाःसदा ॥ १ ॥
अकारणोहिनैवास्तिधर्मःसूक्ष्मोहिजाजले ॥
भूतभव्यार्थमेवेहधर्मप्रवचनेकृतम् ॥ २ ॥
सूक्ष्मत्वान्नसविज्ञातुंशक्यतेबहुनिन्हवः ॥
उपलभ्यांतराचान्यानाचारानवबुध्यते ॥ ३ ॥

टीकाअस्यैवस्तुत्यर्थकाम्यंकर्मक्षविष्नुवेनर्नि
दातिसएवेति ॥

सुभगःस्वर्गाव्यापत्तिनाशंकर्मणांकर्मफलानां
स्वर्गादीनाम् ॥ १ ॥

अकारणःकारणमनुष्ठानंप्रयोजकंफलंतद्धीनः
सूक्ष्मोऽभयदानात्मकः ॥

भूतंब्रह्मभव्यंस्वर्गादिउभयार्थमेवधर्माणांशमानीनां
यज्ञादीनांचप्रवचनमध्ययनंवेदेकृतंअतःस्थूलधर्मा
द्यज्ञादेरन्यःसूक्ष्मधर्मोऽस्तीतिभावः ॥ २ ॥

कुतःसूक्ष्मधर्मोदुर्ज्ञेयः ॥

यतःबहुनिन्हवःसप्तदशप्राजापत्यान्यशूनालतेसप्तदशो
वैप्रजापतिःप्रजापतेराप्त्याइत्यादिविधयःश्रेयः साधनत्वे
नहिंसामुपदिशंतःअहिंसाशास्त्रमुपद्रवंतीत्यर्थः ॥

तर्हितदप्रमाणमेवेत्याशंक्याहउपलभ्येति ॥

उक्षाणावावेहतेचाक्षदंते महोक्षंवामहाजंवाश्रोत्रियायोप
कल्पयेदितिश्रुतिस्मृतिविहितोमधुपर्कोगवालंबनएक
आचारःयागामनागामादितिवधिष्ठेतिमंत्रलिंगावगतोग
वोत्सर्गविधिस्तद्विरुद्धोऽन्यआचारस्तत्रप्रमाणमितिवि

शेषणात्क्रत्वर्थहिंसाविधेरहिंसाविधिर्ज्यायानितिगम्यते ,
अनागस्त्वस्यप्राजापत्यपशुष्वपितुल्यत्वादित्यास्तांतावत्।
तपोभिर्यज्ञदानैश्चवाक्यैःप्रज्ञाश्रितैस्तथा ॥
प्राप्नोत्यभयदानस्ययद्यत्फलमिहाश्नुते ॥ १ ॥
लोकेयःसर्वभूतेभ्योददात्यभयदक्षिणाम् ॥
ससर्वयज्ञैरीजानःप्राप्नोत्यभयदक्षिणाम् ॥ २ ॥
नभूतानामहिंसायाज्यायान्धर्मोऽस्तिकश्चन ॥
यस्मान्नोद्विजतेभूतंजातुकिंचित्कथंचन ॥ ३ ॥
सोऽभयंसर्वभूतेभ्यःसंप्राप्नोतिमहामुने ॥
यस्मादुद्विजतेलोकःसर्पाद्वेश्मगतादिव ॥
नसधर्ममवाप्नोतिइहलोकेपरत्रच ॥ ४ ॥
सर्वभूतात्मभूतस्यसम्यक्भूतानिपश्यतः ॥
देवापिमार्गेमुह्यंतिअपदस्यपदैषिणः ॥ ५ ॥
दानंभूताभयस्याहुःसर्वदानेभ्यउत्तमम् ॥
ब्रवीमितेसत्यमिदंश्रद्दधस्वचजाजले ॥ ६ ॥

अर्थः—आ श्लोकोनो अर्थ ए छे जे अहिंसाथी बीजो कोइ उत्तम धर्म नथी.

अघ्न्याइतिगवांनामकएताहंतुमर्हति ॥

महद्यकाराकुशलंवृषंगांवालभेत्तुयः ॥ १ ॥
आप्यायध्वमघ्न्यादेवभागमितिश्रुतिप्रसिद्धंगवांनाम ॥
नहंतुंशक्या अघ्न्याइतियोगात् गवामवध्यत्वंश्रौतामित्यर्थः॥
चकारकृतवान्आलभेत्हिंस्यात् ॥

अर्थः—वास्ते यज्ञमां वा अतिथिने अर्थे गायने तथा वृषभने मारे छे ए मोटुं अकुशल कर्म करे छे

तथाचापस्तंबः ॥ हृष्टोहृष्यतिदृप्तोधर्ममतिक्रामतिधर्मा
तिक्रमान्नश्यतीतिक्रुद्धोहन्यात्पित्दनपीति ॥
तस्मात्सर्वभूताभयप्रदानमेवमहान्धर्मइत्याशयः ॥

अर्थः—ते कारण माटे सर्व भूतने अभय दान आलवुं एज मोटो धर्म छे पण हिंसामय यज्ञ एतो मोटो धर्म नथी एतो नित्य हिंसा करे छे तेने मुकवाने अर्थे छे ने पामर जीवने विषयी करवा ने विषयीने मुमुक्षु करवाने अर्थे छे.

वक्ष्यामिजाजलेवृत्तिंनास्मिब्राह्मणनास्तिकः ॥
नयज्ञंचविनिंदामियज्ञवित्तुसुदुर्लभः ॥ १ ॥

अर्थः—तुलाधार जाजलि रुषिने कहे छे हे जाजलि हे ब्राह्मण हुं जे ते हिंसा रहित जीविका तेने कहुं छुं यज्ञनी निंदा नथी करतो सुं नास्तिक नथी.

यज्ञो । वैविष्णुरितिश्रुतेर्योयज्ञभोक्ता

यज्ञ ए विष्णु वाचक शब्द छे ते परमात्मा.तेनो जाणनार दुर्लभ छे ते परमात्मानुं पुराडाशे करी यजन करवुं एज उत्तम यज्ञ छे पण पशु होमी यज्ञ तो केवल सकामिक तामसी पुरुषने ने पामरने विषयी करवा साहज छे संकोचने अर्थे नियम छे परंतु विधि नथी.

नमोब्राह्मणयज्ञाययेचयज्ञविदोजनाः ॥
स्वयज्ञंब्राह्मणाहित्वाक्षत्रयज्ञामिहास्थिताः ॥ २ ॥

टीका.ब्राह्मणानांब्रह्मविदांयज्ञःब्रह्माग्नौजीवहवि
षस्त्यागस्तस्मैयोगायेत्यर्थः ।। स्वयज्ञंयागम् ।।
क्षत्रयज्ञांहिंसामयंज्योतिष्टोमादिम् ।।

अर्थः—ब्राह्मण जे ते पोतानो यज्ञ जे योग तेनो त्याग करि क्षत्रिनो यज्ञ जे हिंसामय ज्योतिष्टोमादिक तेने आश्रा छे.

क्षत्रयज्ञांविशिनष्टिलुब्धैरिति ।।
लुब्धैर्वृत्तिपरैर्ब्रह्मन्नास्तिकैःसंप्रवर्त्तितम् ।।
वेदवादानविज्ञायसत्याभासमिवानृतम् ।। ३ ।।

टीका.हेब्रह्मन्।। आस्तिकैर्वेदप्रामाण्यवादिभिः ।।
वेदवादानर्थवादान्तेषांस्तुतिमात्रतात्पर्यमित्यविज्ञाय
सत्यवदाभासमानंस्वरूपतःअनृतंआविद्यकब्राह्मण्या
द्यध्यासमूलत्वात्लुब्धैःप्रवर्त्तितम्तथाचश्रुतिः ।।
नीहारेणप्रावृताजल्प्याश्चासुतृपउक्थशासश्चरंतीति ॥

अज्ञानेनआवृताःजल्प्याअर्थवादगिरः ॥

असुतृपःप्राणपोषकाःउक्थशासकर्मानुशासनपराः ॥

आस्तिक जे तेमणे वेदमां जे अर्थ वाद छे तेने स्तुति मात्रने विषे तात्पर्य छे एम न जाणि सत्यनी पेठे भासतुं ने स्वरूपे करिने तो अनृतने लोभि पुरुषे हिंसामय पणुं प्रवर्त्ताव्युं छे.

एवंक्षत्रयज्ञंनिंदित्वाब्राह्मणस्वरूपमाहयदेवेति ॥

यदेवसुकृतंहव्यंतेनतुष्यंतिदेवताः ॥

नमस्कारेणहविषास्वाध्यायैरोषधैस्तथा ॥ ४ ॥

टीका. सुकृतंसुकृतार्जितंहव्यम् ॥

तदेवत्रिविधमाहनमइति ॥

नमस्कारात्मकेनहविषेतिसामानाधिकरण्यम् ॥

योनमसामध्वरइतियज्ञोवैनमइतिहिब्राह्मणं

भवतीतिश्रुतिस्मृतिभ्यांनमस्कारस्यैवयज्ञत्वावगतेः

तथास्वाध्यायैर्हविषेतिसंबंधः ॥

वयमग्नेअर्वतावासुवीर्यंब्रह्मणावाचिंतयेमजानीम

अनीतिवेदस्यापियज्ञत्वश्रुतेः ॥

अर्वताअश्वेनब्रह्मणावेदेनवाऽग्नेत्वांचिंतयेमजानीम ॥

तथाचाश्वमेधतुल्यत्वंयज्ञस्योक्तम् ॥

आश्वलायनगृह्योपि आते अग्रऋचाहविर्हिदात्तष्टंभग
मसितेतेभवंतूक्षणऋषभासोवशाउतेत्पतएवउक्षा
णश्चऋषभाश्ववशाश्वभवेतियइमंस्वाध्यायमधीयतइति॥
तथाउँषधैर्व्रीहियवादिभिःपशुभ्योवैमेधाउदक्रामंस्तौ
व्रीहिश्चैवयवश्चभूतामावजायेतांतस्मादाहुःपुरोडाशसत्रं
लोक्यमितिचतयोर्हिविष्ठ्वावगमात्पुरुषाश्वगोजादीनां
पशुनाममेध्यत्वश्रुतिश्चातएवउक्रांतमेधाअमेध्याः
पशवइति ॥
तथाचैतैस्त्रिभिर्हविर्भिर्देवतापूजायज्ञाख्याकर्त्तव्येति
शास्त्रेवेदेनिदर्शनंप्रत्यायकवचमस्तितदप्युदाहृतमेव ॥
पूजास्याद्देवतानांहियथाशास्त्रानिदर्शनम् ॥
इदंपूर्वंव्याख्यातम् ॥
इष्टापूर्त्तादसाधूनाविगुणाजायतेप्रजा ॥
टीका ननुइष्टान्भोगान्हिवोदेवादास्यंतेयज्ञभाविता
इतिभगवतायज्ञानांधनपुत्रत्वादिप्रीत्यर्थत्वोक्तेः
किंतैर्मोक्षानुपयोगिभिरित्याशंक्याहइष्टेति ॥
इष्टंइष्टिपशुसोमादिआपूर्त्तंतटाकारामादि ॥
असाधुनांकामनात्वतांयज्ञाःतादृगेवलुब्धमपत्यंभवति

समेभ्योरागद्वेषशून्येभ्यइष्टादिकर्तृभ्योनीप्सितापिता

दर्शीप्रजाजायतइत्यर्थः ॥

भारते मोक्षधर्मे अध्याय ९०

यत्रगत्वानशोचंतिनच्यवंतिव्यथंतिच ॥

तेतुतद्ब्रह्मणःस्थानंप्राप्नुवंतीहसात्विकाः ॥ १ ॥

नैवतेस्वर्गमिच्छंतिनयजंतियशोधनैः ॥

सतांवर्त्मानुवर्त्ततेयेयजंतेत्वहिंसया ॥ २ ॥

वनस्पतीनोषधीश्चफलंमूलंचतेविदुः

नचैतानृत्विजोलुब्धायाजयंतिफलार्थिनः ॥ ३ ॥

अर्थः—आ लोकने विषे जे सात्विक छे हिंसामय यज्ञ कर्त्ता नथी तेतो परमात्माना स्थानने पामे छे.

तेने विषे जइने शोक करता नथी तथा च्यवता नथी ने व्यथा पामता नथी.

अर्थः—ते स्वर्गने पण इच्छता नथी.

तस्यनाममहद्यशइतिश्रु। तेर्यशोब्रह्मधनैर्धनसाध्यैः

धन साध्य एवां कर्मे करि यजता नथी सत्पुरुषनो मार्ग जे योग तेने अनु वर्ते छे जे अहिंसाये करिने यज्ञ करे छे ते पुरुष, यज्ञ शाने करिने करे छे तो वनस्पति तथा ॐषधि व्रीहियवादि तथा फल मूल तेनेज यज्ञमां होमवानी सामग्री जाणे छे पण पशुने नथी जाणता लो-भीयाने धनथी एवा ऋत्विज जे ते एवा समजणा छे तेने यज्ञ कराव-ता नथी.

वेद ने हिंसाने विषे तात्पर्य नथी। किंतु राग प्राप्त हिंसा संकोचने अर्थे महा पत्काल निर्वाहने अर्थे अभ्य नुज्ञा मात्र छे.

तथाचोक्तम्तीर्थेषुप्रतिदृष्टेषुराजामेध्यपशून्वने ॥
यावदर्थमलंलुब्धोहन्यादितिनियम्यते ॥ १ ॥
लोकेव्यवायामिषमद्यसेवानित्यास्तुजंतोर्नहितत्रनोदना॥
व्यवस्थितिस्तेषुविवाहयज्ञसुराग्रहैरासुनिवृत्तिरिष्टा ।२॥

टीका. श्रीधरः नहिमृगयाविधीयतेरागप्राप्तत्वात् ॥
किंतुनियम्यतेप्रवृत्तिःसंकोच्यते ॥
नियममेवषड्विधंदर्शयाति ॥ यद्यलमत्यर्थंलुब्धोरागी
सन्हन्यात्तर्हितीर्थेषुश्राद्धादिष्वेवतत्रापिप्रतिदृष्टेषु
प्रख्यातेष्वेवननित्यश्राद्धादिषुतत्रापिराजैव
मेध्यानेवयावदुपयोगमेवअतोनावश्यकत्वमिति ॥
नित्यारागतएवनित्यप्राप्ताः ॥ जंतोःप्राणिमात्रस्य
तत्रतासुचोदनाविधिर्नास्ति ॥ ननुऋतावुपेयाद्धुतशे
षंभक्षयेदित्यादिविधिर्दर्शितःसत्यम् नत्वयमपूर्वविधिः
रागतःप्राप्तत्वात्किंतुनियमविधिरूपेणसकामानां
राजसतामसप्रकृतीनांहिंसारागिणांक्षत्रियाणामे
वाभ्यनुज्ञामात्रंक्रियतेनतुसात्विकानांमुमुक्षुणामिति ॥

भारते मोक्षधर्मे अ. ९०

तस्मात्तानृत्विजोलुब्धायाजयंत्यशुभान्नरान् ॥
प्रापयेयुःप्रजास्वर्गेस्वधर्माचरणेनवै ॥ १ ॥

ये कारण माटे सात्विक पुरुषने लोभीया ऋत्विजनथी यज्ञ करावता ते पण तेने नथी इछता ते कारण माटे मोक्षेछा रहित पुरुषने ते लोभीया ऋत्विज यज्ञ करावे छे. बीजा साधु जे तेतो स्वधर्मा चरणे करिने परने उपकार करे छे पण धर्म फलने नथी इछता सम बुद्धि छे माटे एम कहे छे प्रापयेयु एणे करीने

भारते मोक्षधर्मे अ. ९०

उतयज्ञाउतायज्ञामखंनार्हंतितेक्वचित् ॥

अर्थः—जे दांभिक छे ते यज्ञ करे छे तोये पण श्रद्धा रहित छे माटे अ यज्ञ छे ते कोइ दिनमां व अथवा बायण यज्ञ करवा योग्य नथी.

आज्येनपयसादध्नापूर्णाहुत्याविशेषतः
वालैःशृंगेणपादेनसंभरत्येवगौर्मखम्

अर्थः—श्रद्धा वाळा छे तेने तो एक यागे करिनेज बाह्य यज्ञनी सिद्धि छे एम कहे छे आज्येन ए श्लोके करिने. घीये करी तथा दुधे करीने तथा दधिये करि तथा घीनी पूर्णाहुतिये करिने यज्ञ थाय छे. गाय जे ते वाले करित. शृंगे करित. पादर जे यज्ञ पूर्ण करे छे.

नीलकंठः

टिका एतेषांगोस्पर्शनादीनांचसद्यःपा

पनाशकत्वंपरलोकप्रदत्वंचस्मृत्युक्तंदर्शितम्

पशु हिंसाये रहित घृतादिये करिने साध्य एवा यज्ञनी वार्ता कांहे मोक्ष धर्मना ९० मा अध्यायमां

पाछी हिंसा रहित यज्ञनी पुष्टिने अर्थे कहे छे.

पत्नींचानेनविधिनाप्रकरोतिनियोजयन् ॥
इष्टंतुदैवतंकृत्वायथायज्ञमवाप्नुयात् ॥ १ ॥

टीका. ननुपत्न्यभावेविशेषवान्श्रौतोमखःकथंस्यादित्य तआहपत्नीमिति ॥ अनेन पशु हिंसारहितेनआज्या दिसाध्यक्रतुविधिनाआज्यादिद्रव्यंदेवतार्थेविनियोजयन् हेतौशतृप्रत्ययःविनियोगहेतो ःपत्नीचमानसीमेवकरो ति ॥ श्रद्धामितिशेषःतस्मादपत्नीकोऽग्निहोत्रमाहरेत्त स्मादपत्नीकस्याधानंकुर्वतीत्युक्त्वाश्रद्धापत्नीसत्यंयजमा नइतिबहृचब्राह्मणेअपत्नीकस्याग्निहोत्राधानादौश्रद्धायाः पत्नीत्वदर्शनात् ॥ इष्टंभावेक्तः॥ यागमेवदैवतवदत्यं तंसेवनीयंकृत्वायथायथावद्यज्ञंविष्णुंप्राप्नुयात् ॥ तत्रयागविशेषंनियमयतिपुरोडाशोहीतिहिशब्देनतएत उत्क्रांतमेधाअमेध्याःपशवइतिपशूनाममेध्यत्वम् ॥ तस्मादाहुःपुरोडाशसत्रंलोक्यमिति ॥

पुरोडाशसत्रप्राशस्त्यंचश्रुतिप्रसिद्धंद्योत्यते।
मेधोयज्ञस्तदर्हः मेध्यः सर्वेषांवाएषपशूनांमेधेनयजतेयः
पुरोडाशेनयजतइतिश्रुतेःमूलेपशुनामितिननिर्द्धारण
षष्ठीपशूनाममेध्यत्वात्। पुरोडाशस्यचापशुत्वात्तेन
पशुसंबधीयोमेधस्तदर्हःपुरोडाशइतिश्रुत्यनुसारेण
स्मृत्यर्थोवर्णनीयः॥
पुरोडाशोहिसर्वेषांपशूनांमेध्यउच्यते ॥
इदंपूर्वार्द्धंप्रथमंव्याख्यातम्॥ सर्वानद्यः
सरस्वत्यःसर्वेपुण्याःशिलोच्चयाः॥ १ ॥
एवंश्रद्धावतामविदुषांयज्ञमुक्तीविदुषांयसमाहसर्वाइति॥

ए रीते ९० मा अध्यायमां श्रुतिनो विरोध न आवे ए रीते अहिंसक धर्म प्रतिपादन कर्यो छे ने वेदमां हिंसामय यज्ञनुं जे वर्णन छे तेतो नित्य हिंसा कर्त्ता होय तेने संकरावी सर्वथा मुकावी ते कल्याण मार्गे चलावी ते मोक्ष करवाने अर्थे छे एज सर्व वेदनो सिद्धांत छे पण वेद हिंसा करवी एम कहेता नथी.

भारत मोक्ष धर्म अध्याय ९२

प्रज्ञानामनुकंपार्थंगीतंराज्ञाविचख्युना॥ १॥

टीका---प्रजानांपुरूषादिपशूनाम्

अर्थः—यज्ञमां होमता एवा जे पुरुषादि पशु ते उपर दया कर-

वाने अर्थे विचख्यु राजाये कह्युं छे.

अर्थः—ते विचख्यु नाम राजा जे ते गवालंभ यज्ञने विषे छेदा-युं छे शरीर जेनुं एवो वृष जे बली वर्द तेने जोइने गायोनो अत्यंत विलाप तेने जोइने यज्ञ वाटमां रह्या एवा निर्दय ब्राह्मणने जोता सता बोलता हवा.

भारते मोक्ष धर्मे अध्याय ९२

स्वस्तिगोभ्योस्तुलोकेषुततोनिर्वचनंकृतम् ॥
हिंसायांहिप्रवृत्तायामाशीरेषाकाल्पिता ॥ ३ ॥
अव्यवस्थितमर्यादैर्विमूढैर्नास्तिकैर्नरैः ॥
संशयात्माभिख्यक्तैर्हिंसासमनुवर्णिता ॥ ४ ॥

अर्थः—निर्वचन कर्युं ते कहे छे हिंसामय यज्ञ छे ते राजस तामस क्षत्रिनो यज्ञ छे ते थकी क्षीरघृते करि करवो ए ब्राह्मणनो यज्ञ छे ए प्रकारनी मर्यादा छे नथी मर्यादा जेमने वास्ते विमूढ एवा ते नथी ब्रह्म ए प्रकारे कहेता.

आत्मादेहोऽन्योवाअन्योऽपिकर्त्ताऽकर्त्तावा
अकर्त्ताप्येकोऽनेकोवाएकोऽपिसंगवा नसंगोवा

इत्यादि रूपजे संशय ते वालुं छे चित्त जेमनुं एवाने यज्ञादि द्वाराये करि ख्यातिने इछता एवा पुरुष जे तेमणे हिंसा वर्णन करि छे के त्यां यज्ञमां पशु मारवो ए श्रेष्ट कह्युं छे.

भारते मोक्ष धर्मे अध्याय ९२

सर्वकर्मस्वहिंशांहिधर्मात्मामनुरब्रवीत् ॥

कामकाराद्धिहिंसंतिबहिर्वेद्यांपशून्नराः ॥

अर्थः—धर्मात्मा एवा मनु जे ते सर्व कर्मने विषे ज्योतिष्टोमादि यज्ञने विषे पण अहिंसानेज वखाणता हवा नर जे ते काम कारण थकीज बहिर्वेदी ने विषे पशूने मारे छे पण शास्त्र थकी नहि विशेष वार्ता ए श्लोकनी टीकामांथी जोवी टीकामां श्रुति लखी छे ते हिंसामय यज्ञने निंदे छे.

प्लवाह्येतेअदृढायज्ञरूपाअष्टादशोक्तमवरंयेषुकर्मएतच्छ्रे
योयेऽभिनंदंतिमूढाजरामृत्यूतेपुनरेवापियंतीति ॥

तस्मात्प्रमाणतःकार्योधर्मःसूक्ष्मोविजानता
अहिंसासर्वभूतेभ्योधर्मेभ्योज्यायसीयता ॥६॥

अर्थः—ते कारण माटे प्रमाणनुं बळाबळ जाण तो पुरुष जे तेणे सूक्ष्म धर्म जे ते करवो ते कहे छे अहिंसा जे ते सर्व धर्म थकी मोटो छे.

गृहस्थस्यपंचसूनानामपरिहार्यत्वात्कथम
हिंसाकार्येत्यतआहोपोष्येति ॥

उपोष्यसंशितोभूत्वाहित्वादेवकृताःश्रुतीः ॥
आचारइत्यनाचारःकृपणाःफलहेतवः ७

टीका---उपसमीपेग्रामस्यवासंकृत्वाभिक्षार्थं
ग्रामंप्रविशेदितिविधेःसंन्यस्येत्यर्थः
संशितस्तीक्ष्णव्रतोभूत्वादेवेनकृताःश्रुतीःफलश्रुतीः

अक्षय्यंहवैचातुर्मास्ययाजिनःसुकृतंभवतीत्याद्याः
हित्वाआचारइतिबुध्याअनाचारः
गृहस्थाचारहीनःस्यात् पुरुषस्येदमेवश्रेयइति
बुद्धयानैष्कर्म्यंश्रयेदित्यर्थःकृपणाःक्षुद्राः
फलमेवकर्माणिप्रवृत्तौहेतुःकारणंयेषांतथाभूताः

यदियज्ञांश्चवृक्षांश्चयूपांश्चोद्दिश्यमानवाः ॥
वृथामांसानिखादंतिनैषधर्मःप्रशस्यते ॥८॥

अर्थः—यज्ञादिपर एवा मानव जे ते यज्ञादि ने उद्देशिने वृथा मांस खाय छे एं धर्म प्रशस्त नथी.

सुरांमस्यान्मधुमांसमासवंकृशरोदनम् ॥
धूर्त्तैःप्रवर्त्तितंह्येतन्नैतद्वेदेषुकल्पितम् ॥
मानान्मोहाच्चलोभाच्चलौल्यमेतत्प्रकल्पितम् ॥९॥

वैदिक कर्मनि निंदा करिने कामकार कृत जे कर्म तेने निंदे छे सुरामश्य मधु मांस आसव केतां मद्य कृशरोदन केतां तिल मिश्रोदन एने खावानुं धूनारा पुरुषोये प्रवर्ताव्युंछे ए वेदने विषे नथीज कल्प्युं मान मोह लोभ थकी ए ललुता पण कल्प्युंछे पण वेदनो अभिप्राय नथी ॥

विष्णुमेवाभिजानंतिसर्वेयज्ञेषुब्राह्मणाः ॥
पायसैःसुमनोभिश्चतस्यापियजनंस्मृतम् ॥१०॥

अर्थ—ब्राह्मण जे ते सर्व यज्ञने विषे विष्नुने मुख्य जाणे छे ॥ ते विष्नुनुं यजन पायसे करिने तथा पुण्ये करिनेज कह्यु छे ॥

यज्ञियाश्चैवयेवृक्षावेदेषुपरिकल्पिताः ॥
पद्यापिकिंचित्कर्त्तव्यमन्यच्चोक्षैःसुसंस्कृतम् ॥
महद्भिःप्रयत्नैःशुद्धभावैःसर्वदेवार्हमेवतत् ॥१९॥

अर्थ—शुद्ध भावकरि शुद्ध पुरुषे शोधेलुं एवुं जे अन्न दुधथीते सर्व विष्नु यजन करवुं ते योग्य छे ते पशुये करिने यजन करवुं एतो तामसी पामर एवा जे जीव जेने मोक्ष पांमवानी इछा नथी गांमगरास स्त्री उपर जेनुं चित्तछे तेमनुं कामछे पूर्वना अध्यायमां निष्काम धर्मने श्रेष्ट कह्यो ॥ ते हिंसा शुन्य एवोज निष्काम धर्म ते श्रेष्टछे एम कहेवाने हिंसामय यज्ञनि निंदाने अर्थे आ अध्याय आरंभ्योछे विदर्भदेशमां उंछ वृत्ति नामे ब्राह्मण हतो यज्ञ करवाने तत्पर थयो तारे मूल फले करि यज्ञ करवा मांडयो तेनी स्त्री पुष्कर धारिणी ते पण स्वामिनी आज्ञाथी आवी एज प्रकारे करती हवी तारे वननी विषे समीप रह्यो एवो मृग जे ते बोलतो हवो जे तें आदुष्कृत कर्युं पशुवनानो यज्ञ मंत्रागर्हो न कर्यो मने अग्निमां होमने स्वर्गमां जातो पण मान्युं नहि तारे सवितृ मंडला धिष्टात्री देवताये आविने कह्युं तो पण मान्युं नहि पछे वळी हरिणे आवीने कह्युं जे मने यज्ञमां होमीं तु स्वर्गमां जाने मुने पण पमाडे पछे मृगने अग्निमां होम्यो पछे एणे मोटुं तप कर्युं हतुं ते नाश पाम्युं ने मोटुं दुःख पडज्युं.

एतो धर्म हता ते कोइ कारणथी मृग थया हता तेमने पाछुं धर्म रुपे थै स्वर्गमां जवुं हतुं ते ए रीत्ये कपट करिने पोताना स्था

नमां गया पण पशु होमवो ए यज्ञनो विधि नथी ॥

तथा चोक्तम् ॥

सतुधर्मोमृगोभूत्वाबहुवर्षोषितोवने ॥
तस्यनिष्कृतिमाधत्तनह्यसौयज्ञसंविधिः ॥ १ ॥

टीका--सत्विति केनचिन्निमित्तेनमृगतांप्राप्तः धर्मःतस्यनिमित्तस्यानिष्कृतिंप्रतीकारंम् ॥ स्वात्मानंमोचितवान्नत्वसौयज्ञस्यसमीचीनोविधिः॥ हिंसामयत्वात् ॥

तस्यतेनानुभावेनमृगहिंसात्मनस्तदा॥
तपोमहत्र्यमुच्छिन्नंतस्माद्धिंसानयज्ञिया ॥२॥

टीका--अनुभावेनपशुंहत्वास्वर्गंप्राप्स्यामीत्यभिप्रायेण ॥ यज्ञियायज्ञायहिता ॥

ततस्तंभगवान्धर्मोयज्ञंयाजयतस्वयम्
समाधानंचभार्यायालेभेसतपसापरम् ॥३॥
अहिंसासकलोधर्मोहिंसाधर्मस्तथाहितः ॥
सत्यंतेहंप्रवक्ष्यामियोधर्मःसत्यवादिनाम् ॥

टीका--तथातेनस्वर्गप्रदत्वेनरूपेणहितःसत्यवादिनां ब्रह्मवादिनांतुअसौनोधर्मःयोधर्मद्वातिपाठे तेतुभ्यं सत्यंवक्ष्यामिकिंतत्सत्यम्यःसत्यवादिनांधर्मः

यद्वातिविधेयापेक्ष्यंपुंस्त्वम् ।। अत्राख्यायिकातात्पर्यम् ॥
पशुकार्येश्यामाकादिविकारान्चरुपुरोडाशादीन्
कुर्यादितिगम्यतेतथाचगृह्येअथश्वोभूतोष्टकाः
पशुनास्थालीपाकोविधीयतएवमन्यत्रपुरोडाशा
मीक्षादीनामपिपशुस्थानेविधानमवगंतव्यंतस्मान्न
हिंसायज्ञःश्रेयान्निति ॥

नारद पंचरात्रेच

श्रुतिर्वदतिविश्वस्य जननीवहितंसदा ॥
कस्यापिद्रोहजननंनवक्तिप्रभुतत्परा ॥१॥
नतच्छास्त्रंतुयच्छास्त्रंवक्तिहिंसामनर्थदाम् ॥
यतोभवतिसंसारःसर्वानर्थपरंपरः ॥२॥
अंतरंगंविजानातिभगवत्याःश्रुतिस्वयम् ॥
चराचरात्माभगवान्नापरःकोऽपितत्ववित् ॥
आत्मवत्सर्वभूतानिमान्यानीत्येवसब्रुवन् ॥
भगवान्कथमत्रेमांहिंसामुपदिशेत्क्वचित् ॥
हिंसाविधिस्तुहिंसायानिवृत्यर्थोस्तिसर्वथा ॥
आत्मवत्सर्वभूतानिततःपश्येच्चनान्यथेति ॥

वृद्धपराशरेणोक्तम्

शौचंचपात्रशुद्धिश्चश्रद्धाचपरमायदि ॥
अनंततृप्तिकृच्छ्राद्धेएतदेवनचामिषम् ॥१॥
यस्तुप्राणिवधंकृत्वापितृन्मांसेनतर्पयेत् ॥
सोविद्वांश्चंदनंदग्ध्वाकुर्यादंगारलेपनम् ॥
सूक्ष्मजंतुनाद्रोहनुंफलपणअंधकूपाख्यनरकलख्योछे

श्रीमद्भागवतने विषे.

यस्त्विहवैभूतानामीश्वरकल्पितवृत्तीनामविविक्त
परव्यथानांस्वयंपुरुषोकल्पितवृत्तिर्विविक्तपरव्यथो
व्यथामाचरतिसपरत्रांधकूपेतदभिद्रोहेणानिपतति
तत्रहासौतैस्तैर्जंतुभिःपशुपक्षिमृगसरीसृपैर्मश
कयूकामत्कुणमक्षिकादिभिर्येकेचाभिद्रुग्धास्तैः
सर्वतोऽभिद्रुह्यमाणस्तमसिविहतनिद्रानिर्वृतिर
लब्धावस्थानःपरिक्रामतियथाकुशरीरेजीवः ॥
नब्रह्मदंडदग्धस्यनभूतभयदस्यच ॥
नारकाश्चानुगृह्णंतियांयांयोनिमसौगतः ॥
तस्मान्नकस्यचिद्द्रोहमाचरेद्यतथाविधः ॥
आत्मनःक्षेममन्विछन्द्रोग्धुर्वैपरतोभयम् ॥

भागवतेच

नदद्यादामिषंश्राद्धेनचाद्याद्धर्मतत्त्ववित् ॥
मुन्यन्नैःस्यात्पराप्रीतिर्यथानपशुहिंसया ॥१॥
नैतादृशःपरोधर्मोनृणांसधर्ममिच्छताम् ॥
न्यासोदंडस्यभूतेषुमनोवाक्कायजस्यय: ॥२॥

स्कंदपुराणेच.

नश्राद्धेक्कापिमांसंनुदद्यान्नाद्याच्चमानवः ॥
मुन्यन्नैःक्षीरसर्पिर्भ्यांतृप्यंतिपितरोभृशम् ॥
ईदृशीमहिंसांचयोगशास्त्रेसाधनपादेमहाव्रत
त्वेनसूत्रयामासभगवान्पतंजलिः ॥
अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहायमाः ॥
जातिदेशकालसमयानवच्छिन्नाः
सार्वभौमीमहाव्रतमिति ॥ तत्राहिंसामहाव्रतं
व्याचख्यौभाष्यकारोभगवान्बादरायणः ॥
सर्वथासर्वदाभूतानामनभिद्रोहः
अहिंसासाचमत्स्येष्वेवाहिंसानान्यत्रेतिजात्यवच्छिन्नान
तीर्थेहनिष्यामीतिदेशावच्छिन्नानचतुर्दश्यांनपुण्येहनीति
सैवकालावच्छिन्नातथात्रिभिरुपरतस्यदेवब्राह्मणार्थेहनि

ष्यामिनान्यथेतिसमयावच्छिन्नायथाक्षत्रियाणांयुद्धएवहिं
सानान्यत्रेतिएभिर्जातिदेशकालसमयैरनवच्छिन्नाअहिं
सासर्वथैवपरिपालनीयासर्वभूमिषुसर्वभूविषयेषुसर्वथैवा
विदितव्यभिचारासार्वभौमीमहाव्रतमित्युच्यते ॥

मोक्षधर्मेद्वितीयेऽध्याये

नाहिंसयतियोजंतून्मनोवाक्कायहेतुभिः
जीवितार्थापनयनैःप्राणिभिर्नसवध्यते ॥१॥

भागवते

नकर्मभिस्तांगतिंपाप्नुवंति
विद्यातपोयोगसमाधिभाजाम् ॥१॥
तस्मात्सर्वात्मनाराजन्हरिःसर्वत्रसर्वदा ॥
श्रोतव्यःकीर्त्तितव्यश्चस्मर्त्तव्यश्चेछताऽभयम् ॥२॥
एवंनृणांक्रियायोगाःसर्वेसंसृतिहेतवः॥
तएवात्मविनाशायकल्पंतेकल्पिताःपरे ॥३॥
प्रायेणवेदतादिदंनमहाजनोयंदेव्याविमोहितमतिर्बत
माययाऽलम्॥त्रय्यां जडीकृतमतिर्मधुपुष्पितायांवैता
निकेमहातिकर्मणियुज्यमानः ॥४॥

मनुस्मृती

अनुमंताविशासितानिंहताक्रयविक्रयी ॥
संस्कर्त्ताचोपहर्त्ताचखादकश्चेतिघातकाः ॥१॥
नकृत्वाप्राणिनांहिंसांमांसमुत्पद्यतेक्कचित् ॥
नचप्राणिवधःस्वर्ग्यस्तस्मान्मांसंनभक्षयेत् ॥२॥
मांसभक्षयितामुत्रयस्यमांसमिहाद्म्यहम् ॥
एतन्मांसस्यमासत्वंप्रवदंतिमनीषिणः ॥

दानधर्मेषुभीष्मः

योयजेताश्वमेधेनमासिमासियतव्रतः ॥
वर्जयेन्मधुमांसंचसममेतद्युधिष्टिर ॥ १ ॥
सप्तर्षयोवालखिल्यास्तथैवचमरीचिपाः ॥
अमांसभक्षणंराजन्प्रशंसंतिमनीषिणः ॥२॥
पूर्वंतुमनसात्यक्त्वातथावाचाचकर्मणा ॥
नभक्षयतियोमांसंत्रिविधंसविमुच्यते ॥३॥
नहिमांसंतृणात्काष्ठादुपलाद्वापिजायते ॥
जंतुघाताद्भवेन्मांसंतस्माद्दोषोस्तिभक्षणे ॥४॥
ऋषिभिःसंशयंपृष्टोवसुश्चेदिपतिः पुरा ॥
अभक्ष्यमपिमांसंसप्राहभक्ष्यमितिप्रभो ॥५॥

आकाशात्पतितःसद्योभूमौसनृपतिस्तथा ॥
एतदेवपुनश्चोक्त्काविवेशधरणीतलम् ॥६॥

भगवद्गीतायांम्

यज्ञशिष्टाशिनःसंतोमुच्यंतेसर्वकिल्बिषैः ॥
भुंजतेतेत्वघंपापायेपचंत्यात्मकारणात् ॥

अर्थः—यज्ञमांथी शेष रह्युं तेने जमे तो सर्व पापथी मुकाय ने जे पोताने अर्थे पाक करि जमे छे ते तो पाप जमे छे ते वाक्य पण मांस भक्षण विषय नथी तारे देवकृत वृष्टि निष्पन्न रंधितान्ननु वैश्वदेवानंतर भोजन विषय छे तेज प्रकारे श्री गीता भाष्य ने विषेत्त श्री धरेस्व टीकाने विषे व्याख्यान कर्युं छे.

तथाहिवैश्वदेवादिपंचमहायज्ञावशिष्टमन्नंयेऽश्नंति
तेपंचसूनाकृतैःसर्वैःकिल्बिषैर्विमुच्यंतेपंचसूनाश्च
स्मृतावुक्ताः ॥

कंडनीपेषणीचुल्लीउदकुंभीचमार्जनी
पंचसूनागृहस्थस्यताभिःस्वर्गंनविंदति ॥१॥
श्रीवैष्णवाचार्यास्तुयज्ञोवैविष्णुरितिश्रुतेः
श्रीवासुदेवनैवेद्यावशिष्टान्नभोजिनःसकल
किल्बिषमुक्ताभवंतीत्यस्यार्थमाहुरित्यन्नत्रविस्तरः ॥

यज्ञ करीने यज्ञमांथी शेष मांस भक्षण करि ए मांस भक्षणनी शु-

द्विने अर्थे चांद्रायण व्रत लख्युं छे स्मृत्यंतरने विषे जो हिंसामय यज्ञ अपूर्व विधि होय तो एनुं प्रायश्चित्त शु करवा लखे वास्ते वेदनुं तात्पर्य हिंसा मुकावानुं छे.

तथाहिद्विजोयोभक्षयेन्मांसंयज्ञशेषमपिक्वचित् ॥
सतुचांद्रायणेनैवशुद्धिमाप्नोतिनान्यथा ॥१॥

तथाचमनुः

सुरावैमलमन्नांपाप्माचमलमुच्यते ॥
तस्माद्ब्राह्मणराजन्यौवैश्यश्चनसुरांपिबेत् ॥१॥
गौडीमाध्वीतथापैष्टीविज्ञेयात्रिविधासुरा
यथैवैकातथासर्वानपातव्याद्विजोत्तमैः ॥२॥

पुलस्त्यः

पानसंद्राक्षमाधूकंखर्जूरंतालमैक्षवम् ॥
माधूत्थंसैरमारिष्टंमैरेयंनालिकेरजम् ॥३॥
समानानिविजानीयान्मद्यान्येकादशैवतु ॥
द्वादशंतुसुरामद्यंसर्वेषामधमंस्मृतम् ॥४॥

प्रचेताः

सुरापगुरुतल्पगौचीरवल्कलवाससौ
द्वादशाब्दंब्रह्महत्याव्रतंचरेयाताम् ॥
सुरापीत्वाद्विजोमोहादग्निवर्णांसुरांपिबेत् ॥

सौत्रामण्यामपिसुराग्रहनिषेधः

भागवते

यद्घ्राणभक्षोविहितःसुरायास्तथापशोरालभनंनहिंसा ॥
एवंव्यवायःप्रजयानरत्याइमंविशुद्धंनविदुःस्वधर्मम्॥१॥

इत्यादीनिवेदवेदोपवृंहकपुराणेतिहासादीनांहिंसामय यज्ञनिषेधकानिमांसभक्षणनिषेधकानिचसहस्रशोवाक्या निसंतिततःसर्वथासर्वदामुमुक्षुभिर्हिंसामययज्ञोमांसभ-क्षणंचवर्जनीयमिति

भारतेआनुशासनपर्वणियःसर्वमांसानिनभक्षायीतपु
मान्सदाभावितोधर्मयुक्तः ॥
मातापित्रोरर्चिताधर्मयुक्तःशुश्रूषिताब्राह्मणानाम
निद्यः ॥१॥
ईदग्गुणोमानवस्तंप्रयातिलोकंगवांशाश्वतंचाव्ययंच ॥
नपारदारीपश्यतिलोकमेतंनवैकृतघ्नोनमृषासंप्रलापि ॥

योगीश्वरः

गुरूणामध्यधिक्षेपोवेदनिंदासुहृद्वधः ॥
ब्रह्महत्यासमंज्ञेयमधीतस्यचनाशनम् ॥१॥

ईश्वरमंतरावेदतात्पर्यंतुनकोपिजानातिवेदेषुहिंसामय

यज्ञवर्णनंराजसतामसजीवानांमुमुक्षुकरणार्थंनित्यमास
भक्षणादिसंकोचार्थंचेत्यवसेयम् ॥
अत्रायथाकिंचिल्लिखितंयदिप्रतिभातितद्वेषभावमुत्सृज्य
शोधनीयंपंडितैः ॥

भारते मोक्ष धर्मे अ. ९२

सुरामत्स्यान्मधुमांसमासवंकृशरौदनम्
धूर्त्तैःप्रवर्त्तितंह्येतन्नैतद्वेदेषुकल्पितम्
मानान्मोहाच्चलोभाच्चलौल्यमेतत्प्रकल्पितम्

सुरामत्स्यादिनुं भक्षण धूतारायें प्रवर्त्ताव्युं ए वेदमां नथी मोहथी लोभथी ललुतापणाथी कल्प्युं छे.

भारते बृहत्पराशरस्मृतौच

मत्स्यग्राहस्ययत्पापंषण्मासाभ्यंतरेभवेत् ॥
एकाहेनैवतत्पापमगालितंजलंपिबेत् ॥१॥

अर्थः— माछीने छमास माछलां मारवानुं जे पाप ते पाप जे कोइ प्राणी एकदीन अगालित गाल्या विनानुं जल पीये तेने छे.



उपोद्घात.



निगमप्रकाश ग्रंथ भोळानाथ भगवान शास्त्री रायकवाळ पासे तपासवा आप्यो हतो तेमणे तेनुं बीजुं खंडन लखी आप्युं छे ते आगळ जोवामां आवशे.



॥श्रीगणेशायनमः ॥ विहितोपिधर्मः पूर्वंमहद्भि राचरितएवान्यैरन्वाचर्यत इतिपरंपरा यज्ञादिषुपशुहन नात्मकोधर्मःपुरातनकालेकैराचरितःकिमर्थंचतैराचरि तइत्याकांक्षासमाधानपूर्वकयज्ञार्थपशुहननविषयानुज्ञामा हमनुर्मांसभक्षणप्रकरणोपक्रमकाले ॥

यज्ञार्थंब्राह्मणैर्वध्याः प्रशस्तामृगपक्षिणः
भृत्यानांचैववृत्यर्थमगस्त्योह्याचरत्पुरा १

यस्मात्पुरातनकालेऽवश्यंभरणीयानांजीवनार्थं मगस्त्येनाचारितं तस्माद्यज्ञार्थं पशवोहन्तव्याइतिभावः कस्मिन्कालआचरितमित्याकांक्षायामाहसएव

बभूवुर्हिपुरोडाशा भक्ष्याणांमृगपक्षिणाम्
पुराणेष्वपियज्ञेषुब्रह्मक्षत्रसवेषुच २

यस्मिन्कालेब्रह्मक्षत्रसवेषुभक्ष्याणांमृगपक्षिणांमांसेनपुरोडाशाआसन्स्तस्मिन्कालेहताइतिभावः श्रुत्यादिषुपुरोडाशाव्रीहियवयोरेवविहितास्तस्मिन्कालेतुव्रीहियवौनबभूवतुस्तस्मान्मांसपुरोडाशास्तेनकृताइतितात्पर्यम् एतावताऽन्नाभावकालएवकेवलंस्वकीयानांजीवनार्थमेवागस्त्येनयज्ञादिषुपशवोहतास्तस्मादन्यैरप्यन्नाभावकालएवप्राणधा

रणार्थमेवहन्तव्याइतिमनोराशयः एतदेवाभिप्रेत्यपराश रोपितथैवाह

सर्वथान्नंयदानस्यात्तदैवामिषमाश्रयेत्
ब्राह्मणश्चस्वयंनाद्यात्तच्चश्वादिहतंयदि ३

ब्रहस्पतिरपि

अभून्मांसपुरोडाशोभक्षणंमृगपक्षिणां
पुराणेष्वेवयज्ञेषुब्रह्मक्षत्रसवेषुच ४

यस्मिन्कालेपुरातनयज्ञेषुमांसपुरोडाशआसीत्तस्मिन्ने वकालेमृगपक्षिणांभक्षणमभून्ननुव्रीहियवयोः पुरोडाश-काले अन्नाभावकालएवमांसभक्षणमितिपर्यवसितं तत्का लेपिपूर्वकेवलेनागस्त्येनतदनुसारिभिश्चवंगस्थैरेवायंक्रौर्य विशिष्टोधर्मआचरितोननुसर्वर्षिभिस्तस्मादन्नाभावकालेपि तद्धर्माननुष्ठानेमहत्फलभाक्त्वमाहमनुः

योबंधनवधक्लेशान् प्राणिनान्नचिकीर्षति
ससर्वस्यहितप्रेप्सुःसुखमत्यंतमश्नुते ५
यद्ध्यायतियत्कुरुतेधृतिंबध्नातियत्रच
तदवाप्नोत्ययत्नेनयो हिनस्तिनकिंचन ६
नाकृत्वाप्राणिनांहिंसांमांसमुत्पद्यतेक्वचित्

नचप्राणिवधः स्वर्ग्यस्तस्मान्मांसंविवर्जयेत् ७
समुत्पत्तिचमांसस्य वधबंधौचदेहिनां प्रसमीक्ष्य
निवर्त्तेत सर्वमांसस्यभक्षणात् फलमूलाशनैर्मे
ध्यैर्मुन्यन्नानांचभोजनैः नतत्फलमवाप्नोतिय-
न्मांसपरिवर्जनात् ८
मांसभक्षयितामुत्रयस्यमांसमिहाम्यहं
एतन्मांसस्यमांसत्वंप्रवदंतिमनीषिणः ९
अनुमंताविशासितानिहंताक्रयविक्रयी
संस्कर्ताचोपहर्ताच खादकश्चेतिघातकाः १०
वर्षेवर्षेश्वमेधेनयोयजेतशतंसमाः
मांसंनखादयेद्यस्तुतयोःपुण्यंफलंसमं ११

याज्ञवल्क्योपि

सर्वान्कामानवाप्नोतिहयमेधफलंतथा
गृहेपिनिवसन्विप्रोमुनिर्मांसविवर्जनात्

यमः

सर्वेषामेवमांसानांमहान्दोषस्तुभक्षणे
निवर्त्तनेमहत्पुण्यमित्याहसप्रजापतिः १२

वृहस्पतिः

रोगार्तोभ्यर्थितोवापियोमांसंनात्यलोलुपः
फलंप्राप्नोत्ययत्नेनसोश्वमेधफलंतथा १३

किंचतत्कालेप्यगस्त्येनवक्ष्यमाणविधिनैवायंधर्मोऽनुष्ठित
स्तस्मादविधिनाचरणेदोषमाहमनुः

नाद्यादविधिनामांसंविधिज्ञोनापदिद्विजः
जग्ध्वाह्यविधिनामांसंप्रेत्यतैरद्यतेऽवशः १४
असंस्कृतान्पशून्मंत्रैर्नाद्याद्विप्रःकदाचन
मंत्रैस्तुसंस्कृतानद्याच्छाश्वतंविधिमास्थितः १५
नभक्षयतियोमांसंविधिंहित्वापिशाचवत्
सलोकेप्रियतांयातिव्याधिभिश्चनपीड्यते १६
स्वमांसंपरमांसेनयोवर्द्धयितुमिच्छति
अनभ्यर्च्यपितृन्देवांस्ततोऽन्योनास्त्यपुण्यकृत् १७

याज्ञवाल्क्योपि

वसेत्सनरकेघोरे वर्षाणिपशुरोमभिः
सम्मितानिदुराचारोयोहंत्यविधिनापशून् १८

विधिमाहमनु

मधुपर्केचयज्ञेचपितृदैवतकर्मणि
अत्रैवपशवोहिंस्यानान्यत्रेतिकदाचन १९

याज्ञवल्क्योपि

प्राणात्यये तथा श्राद्धे प्रोक्षिते द्विजकाम्यया

देवान्पितॄन्समभ्यर्च्यखादन्मांसन्नदोषभाक् २०

विधेरपि दैवराक्षसभेदाभ्यां द्वैविध्यमाह मनुः

यज्ञाय जग्धिर्मांसस्येत्येष दैवो विधिस्स्मृतः

अतोन्यथा प्रवृत्तिस्तु राक्षसो विधिरुच्यते २१

यज्ञे मांसभक्षणं दैवविधिस्तदतिरिक्तश्राद्धमधुपर्कदेवार्च्च नादिषु मांसभक्षणं राक्षसो विधिरित्यर्थः नचात्र यज्ञशब्देन श्राद्धदेवार्च्चनादीन्युपलक्ष्याणि मधुपर्के च यज्ञे चेत्यादिवाक्येषु मधुपर्कादिभ्यो यज्ञशब्दस्य पृथक्करणात् नचायं यज्ञस्यैव प्रपंच इति वाच्यं राक्षसो विधिरुच्यत इत्यत्र विधिशब्दोपादानेन तदुचितग्राह्यान्यविधेरदर्शनात् नच पिशाचवद्भक्षणं राक्षसो विधिरिति वाच्यं न भक्षयति यो मांसं विधिं हित्वा पिशाचवदित्यादिवाक्येषु पिशाचवद्भक्षणस्याविधित्वप्रदर्शनात् ॥ नचायं राक्षसो विधिरनर्थकरः पठित इति वाच्यं सर्वथान्नाभावकाले पिशाचवद्धिंसायां प्रवृत्तानां बंगस्थानां राक्षसविधेरन्यत्र हिंसानिवर्त्तकत्वेन तस्याप्यर्थकरत्वात् नच तत्रत्यानामपि विदुषाम्ग्राह्यस्तस्य रक्षःकर्मत्वात् अन्नाभावकाले पशूनां

यज्ञार्थसृष्टत्वात्तदतिरिक्तश्राद्धादिस्थलेषुतद्वधस्यानुचि
तत्वात्राक्षसोविधिरितिभावःअतएवपराशरः

यस्तुप्राणिवधंकृत्वा मांसैस्तर्पयतेपितृन्सावि
द्वान्चंदनं दग्ध्वाकुर्यादंगारविक्रयं क्षिप्त्वाकू
पेयथाकिंचित्बालआदातुमिच्छति २२
पतत्यज्ञानतःसोपिमांसेनश्राद्धकृत्तथेत्यादि २३

तथाचागस्त्येनान्नाभावकालएवायंधर्मआचरितस्त
स्माज्जीवनहेतुभूतव्रीहियवाद्यन्नसत्वेतत्धर्मानुष्ठानेमहद्दो
षमाहमनुः

नतादृशंभवत्येनोमृगहंतुर्धनार्थिनः
यादृशंभवतिप्रेत्यवृथामांसानिखादतः २४

व्रीहियवाद्यन्नसत्वेमांसभक्षणंतदभावेचशास्त्रदर्शिता
दन्यत्रमांसभक्षणंशास्त्रेवृथामांसभक्षणमुच्यतेनचाविधि
नामांसभक्षणंवृथामांसभक्षणमितिवाच्यंतथासतिप्राणा
त्ययेतथाश्राद्धेप्रोक्षितेद्विजकाम्ययेत्यादिवाक्यैःप्राणात्य
येऽविधिनामांसभक्षणेदोषाभावप्रदर्शनस्यवैयर्थ्यंस्यात्प्रा
णात्ययेऽविधिनामांसभक्षणस्यवृथामांसभक्षणत्वेवृथामां
सभक्षणनिमित्तकदोषप्रसंगात्ततोव्रीह्याद्यन्नसत्वेयज्ञा

दिषुविधिनाकृतस्यापिमांसभक्षणस्यवृथामांसभक्षणत्व
मेवेतिबोध्यं

कुर्याद्घृतपशुंसंगेकुर्यात्पिष्टपशुंस्तथा
नत्वेवतुवृथाहन्तुंपशुमिच्छेत्कदाचन २५
यावन्तिपशुरोमाणि तावत्कृत्वोहमारणं
वृथापशुघ्नःप्राप्नोतिप्रेत्यजन्मनिजन्मनि २६

यागादिहेतुभूतेव्रीह्यादौसतियज्ञादिषुसाक्षात्पशुहननं सर्वथाऽन्नाभावेचशास्त्रदर्शितादन्यत्रपशुहननंवृथापशु हननमुच्यतेसोगस्त्योभृत्यानामेववृत्यर्थमाचरत् नतुस्वा त्मवृत्यर्थंतस्मादात्मार्थपशुहननेदोषमाहमनुः

योऽहिंसकानिभूतानिहिनस्त्यात्मसुखेच्छया
सजीवंश्चमृतश्चैवनक्वचित्सुखमेधते २७

एवंभक्ष्याभक्ष्यमांसविचारेप्यगस्त्याचरणमेवमूलंयाज्यं नोचेद्गोधाकच्छपादीनांकिंनिमित्तकंमनुनाभक्ष्यत्वंप्रक ल्पितंकिन्निमित्तकंचटिट्टिभादीनाममभक्ष्यत्वंप्रकल्पितंतथा चवृथामांसभक्षणेदोषोवृथामांसभक्षणेदोषाभावश्चकिन्नि मित्तकःप्रकल्पितःअगस्त्याचरणस्यमूलत्वेतुयेयेपशवस्ते नस्वीकृतास्तेषांभक्ष्यत्वंयेचास्वीकृतास्तेषाममभक्ष्यत्वंमन्वा

दिभिः प्रतिपादितं. अन्यथातिमांसलानांगोज्ञाश्वादीनामे
वभक्ष्यत्वंब्रूयात् अत्यल्पमांसानांकच्छपादिनांचभक्ष्यत्वन्नो
ब्रूयात्किंचागस्त्येनान्नाभावकालेकेवलमवश्यंभरणीयानां
प्राणधारणार्थमेवयज्ञादिषुपशवोहतानतुशरीरपुष्ट्यर्थम् अ
न्यथागोज्ञाश्वादीनेवस्वीकुर्यात् मन्वादीनामप्यगस्त्याचर
णानुसरणमेवाभिप्रेतम् अतएवतैरप्यगस्त्यस्वीकृताएवानुस्वी
कृताः किंचयज्ञार्थंपशवःसृष्टाःस्वयमेवस्वयंभूवेत्यादिवाक्यैः
पशूनांयज्ञार्थंसृष्टत्वेपितत्रमूलमगस्त्याचरणमेवनोचेद्यज्ञा
र्थंपशवोवध्याः प्रशस्तामृगपक्षिणइतिवाक्येप्रशस्ताइतिप
दन्नोब्रूयात्बभुवुर्हिपुरोडाशाभक्ष्याणांमृगपक्षिणामितिवा
क्येचभक्ष्याणामितिपदंचनोब्रूयात्सर्वेपिपशवोवध्याःसन्ति
कुतःप्रशस्तामृगपक्षिणोवध्याइत्युक्तंकुतश्चभक्ष्याणांमृगप
क्षिणांपुरोडाशाआसन्नित्युक्तंतत्रागस्त्याचरणस्यमूलत्वे
तुयेयेपशवस्तेनस्वीकृतास्तेषां यज्ञार्थसृष्टत्वं येचाऽस्वी
कृता स्तेषा मयाज्ञियत्वम् एव मप्रशस्ताना मभक्ष्याणां
व्यावृत्यर्थं प्रशस्तपदम भक्ष्याणा मितिपदंचतेन नि-
र्दिष्टंकिंचनमांस भक्षणेदोषोनमद्येनचमैथुनेप्रवृत्तिरेषाभू
तानांनिवृत्तिस्तुमहाफलेतिमनुनोपसंहारकालेप्रदर्शितंते

नमांसभक्षणेमद्यपानेमैथुनेचनदोषोऽयंतुप्रवृत्तिलक्षणोधर्म
इतिकेषांचिद्विदुषांभ्रान्तिरुत्पद्यतेपरंतुनायमर्थोमनोर
भिप्रेतःतथासतिवृथामांसभक्षणेप्रायश्चितविधेरविधिनामां
सभक्षणेदोषप्रदर्शनस्यचवैयर्थ्यंस्यात्तथाचसुरांपित्वाद्वि
जोमोहादग्निवर्णांसुरांपिबेदित्यादिभिर्मद्यपानेऽतिदुष्कर
प्रायश्चित्तविधानस्यनैरर्थ्यंस्यात्तथापरस्त्रीगमनेप्रायश्चित
विधानस्यचानिष्फलत्वंस्यात्तदकरणेकुंभीपाकादिनरक
पतनप्रदर्शनस्यचानिरर्थकत्वंस्यात्तस्मान्नायमर्थोमनोरभि
प्रेतःकिंतुसर्वथान्नाभावकालएवयज्ञार्थंमांसभक्षणेनदोषः
सौत्रामण्यांचमद्येनदोषःस्वभार्यायामृतौगमनेचनदोष
इत्ययमेवार्थोमनोरभिप्रेतः

अतएवबृहस्पतिः

अभून्मांसपुरोडाशे भक्षणंमृगपक्षिणां
पुराणेष्वेवयज्ञेषुब्रह्मक्षत्रसवेषुच २८
सौत्रामण्यांतथामद्यंश्रुतौभक्ष्यमुदाहृतम्
ऋतौचमैथुनंधर्म्यंपुत्रोत्पत्तिनिमित्ततः
स्वर्गंप्राप्नोतिनैवंतुप्रत्यवायेनदुष्यति २९

तथासत्यन्नसत्वेयत्रकर्मणिप्रत्यक्षपशुःप्रदेयत्वेनोक्तस्त

त्र किं कार्यमित्यपेक्षायामाह मनुः

कुर्याद्घृतपशुंसंगे कुर्यात्पिष्टपशुंस्तथा
नत्वेवतु वृथा हन्तुं पशुमिच्छेत्कदाचन ३०

अत्र मनुनोभयकार्यमभिप्रेत्य तन्त्रेणेयं स्मृतिः पठिता तथाहि आसक्तिश्चेद्घृतपशुं स्तथा पिष्टपशुं कृत्वा खादयेत् तथा च यज्ञादिप्रसंगेषु यत्र प्रत्यक्षपशुः प्रदेयत्वेनोक्तस्तत्र पिष्टपशुं कुर्यात् अत एवात्र मनुना कुर्यादिपदं संग इति पदं च निर्दिष्टम् अन्यथासक्तिश्चेत्पिष्टपशुं कृत्वा खादयेदिति स्पष्टं ब्रुयात् अत एव यवमयं मेषं मेषीं च कृत्वा वरुणदेवतामुद्दिश्याग्नौ निर्वपन्ति नायं पिष्टपशुः प्रत्यक्षपशोरभावे तत्प्रतिनिधिरिति वाच्यं वेदे पिष्टपशोरेव प्रत्यक्षपशुत्वप्रतिपादनात् तथाहि शतपथब्राह्मणे

हरिः ॐ वैश्वदेवेन वै प्रजापतिः। प्रजाः ससृजे ता अस्य प्रजाः सृष्टा वरुणस्य यवान्जक्षुर्वरुण्यो ह वाऽअग्रे यवस्तद्यन्नेव वरुणस्य यवान्प्रादंस्तस्माद्वरुणप्रघासा नाम ॥१॥ ता वरुणो जग्राह। ता वरुणगृहीताः परिदीर्णा अनत्यश्च प्राणत्यश्च शिश्यिरे च निषेदुश्च प्राणोदानौ हैवाभ्यो नाप-

चक्रमनुरथान्याः सर्वा देवता अपचक्रमुस्तयो-
र्हैवास्य हतोः प्रजा न पराबभूवुः ॥२॥ ता
एतेन हविषा प्रजापतिरभिषज्यत् । तद्याश्चैवा-
स्य प्रजा जाता आसन्याश्चाजातास्ता उभयीर्वरु
णपाशात्प्रामुञ्चत्ता अस्यानमीवा अकिल्वि-
षाः प्रजाः प्राजायत ॥३॥ अथ यदेष एतैश्च
तुर्थे मासि यजते । तन्नाह न्वेवैतस्य तथा प्रजा
वरुणो गृह्णातीति देवा अकुर्वन्निति न्वेवैष एत-
त्करोति याश्च न्वेवास्य प्रजा जाता याश्चाजा-
तास्ता उभयीर्वरुणपाशात्प्रमुञ्चति ता अस्या-
नमीवा अकिल्विषाः प्रजाः प्रजायते तस्माद्वाऽ
एष एतैश्चतुर्थे मासि यजते ॥४॥ तद्वै द्वे वेदी
द्वावग्नी भवतः । तद्यद्द्वे वेदी द्वावग्नी भवतस्तदुभ-
यत एवैतद्वरुणपाशात्प्रजाःप्रमुञ्चतीतश्चोर्ध्वा इ
तश्चावाचीस्तस्माद्द्वे वेदी द्वावग्नी भवतः ॥५॥
स उत्तरस्यामेव वेदौ । उत्तरवेदिमुपाकिरति न
दक्षिणस्यांक्षत्रं वै वरुणो विशो मरुतः क्षत्रमेवै-
तद्विश उत्तरं करोति तस्मादुपर्यासीनं क्षत्रीय-

मधस्तादिमाः प्रजा उपासते तस्मादुत्तरस्यामेव वेदाऽउत्तरवेदिमुपाकिरति नदक्षिणस्याम् ।।६।। अथैतान्येव पञ्च हवींषि भवन्ति । एतैर्वै हविर्भिः प्रजापतिः प्रजा असृजतैतैरुभयतो वरुण पाशात्प्रजाः प्रामुञ्चादितश्चोर्ध्वा इतश्चावाचीस्त स्माद्वाऽएतानि पञ्च हविंषि भवन्ति ।।७।। अथैन्द्राग्नो द्वादशकपालः पुरोडाशो भवति । प्राणोदानौ वाऽइन्द्राग्नी तद्यथा पुण्यं चक्रुषे पुण्यं कुर्यादेवं तत्तयोर्हैवास्य हेतोः प्रजा न पराबभूवुस्तत्प्राणोदानाभ्यामेवैतत्प्रजा ।भिषज्यति प्राणोदानौ प्रजासु दधाति तस्मादैन्द्राग्नो द्वादशकपालः पुरोडाशो भवति ।।८।। उभयत्रपयस्ये भवतः । पयसो वै प्रजाः सम्भवन्ति पयसः सम्भुतास्तद्यत एव सम्भुतायतः सम्भवन्ति तत एवैतदुभयतो वरुणपाशात्प्रजाःप्रमुञ्चतीतश्चोर्ध्वा इतश्चावाचीस्तस्मादुभयत्र पयस्ये भवतः ।।९।। वारुण्युत्तरा भवति । वरुणो ह वाऽअस्यप्रजा अगृह्णात्तत्प्रत्यक्षं वरुणपाशात्प्रजाः प्रमुञ्चाति मा

रुती दक्षिणा जामितायै न्वेव मारुती भवति जा-
मि ह कुर्याद्यदुभे वारुण्यौ स्यातामतो ह वाऽ
अस्य दक्षिणतो मरुतः प्रजा अजिघांसंस्तां-
नेतेन भागेनाशमयंस्तस्मान्मारुती दक्षिणा ॥१०॥
तयोरुभयोरेव करीराण्यावपति । कं वै प्रजाप
तिः प्रजाभ्यः करीरैरकुरुत कमेवैष एतत्प्रजाभ्यः
कुरुते ॥११॥ तयोरुभयोरेव शमीपलाशान्या-
वपति । शं वै प्रजापतिः प्रजाभ्यः शमीपलाशै-
रकुरुत शमेवैष एतत्प्रजाभ्य कुरुते ॥१२॥
अथ काय एककपालः पुरोडाशो भवति । कं
वै प्रजापतिः प्रजाभ्यः कायेनैककपालेन पुरोडा
शेनाकुरुत कमेवैष एतत्प्रजाभ्यः कायेनैकक-
पालेन पुरोडाशेन कुरुते तस्मात्काय एककपा
लः पुरोडाशो भवति ॥१३॥ अथ पूर्वेद्युः ।
अन्वाहार्यपचनेऽनुषानिव यवान्कृत्वा तानीषदिवो
पतप्य तेषा करम्भपात्राणि कुर्वन्ति यावन्तोगृह्या
स्युस्तावन्त्येकेनातिरिक्तानि ॥१४॥ तत्रापि मेषं
च मेषीं च कुर्वन्ति । तयोर्मेषे च मेष्यां च य-

यद्यनैडकीरूर्णा विन्देत्ताः प्रणिह्य निश्लेषयेद्यद्युऽ अनैडकीर्न विन्देदथोऽअपि कुशोर्णा एव स्युः ॥१५॥ तद्यन्मेषश्च मेषी च भवतः । एष वै-प्रत्यक्षं वरुणस्य पशुर्यन्मेषस्तत्प्रत्यक्षं वरुणपा-शात्प्रजाः प्रमुञ्चति यवमयौ भवतो यवान्हि जक्षुषीर्वरुणोऽगृह्णान्मिथुनौ भवतो मिथुनादेवै-तद्वरुण पाशात्प्रजाः प्रमुञ्चाति ॥१६॥ स उ त्तरस्यामेव पयस्यायां मेषमिवदधाति । दक्षिणस्यां मेषमेवामिवही मिथुनं क्लृप्तमुत्तरतो हि स्त्री पु-मांसमुपशेते ॥१७॥

एवंयत्रयत्रकर्मणिप्रत्यक्षपशुःप्रदेयत्वेनोक्तस्तत्रतत्र पिष्टपशुरेवाभिप्रेत्तोनतुसाक्षात्पशुःसाक्षात्पशवोहिहनन कालेशोचन्तितस्मात्तेयज्ञाहानभवन्तिअतएवसृष्ट्यारंभका लेन्नंसिसृक्षुणाप्रजापतिनादौस्वमनसःसकाशात्पुरुषोनि र्मितश्चचक्षुषोऽश्वःप्राणाद्गौःश्रोत्रादविर्वाचोजश्चानिर्मि तः एवंसृष्टैतेपशवोनिर्वपनकालेयदाअशोचन्तदेत्थंतेषां शोकोपहतः लोकेषुपुरुषरूपोद्विपादपशुर्नहिंस्यस्तथाश्व रूपश्चतुष्पादपशुर्नहिंस्यः एवंगौरविरजश्चनहन्तव्याःकिंचै

तेपशवउत्क्रान्तमेधाअमेध्याअयज्ञिया:सन्तितस्मादेते षांमांसंनाशितव्यमित्याहशतपथब्राह्मणे.

हरि: ॐ प्रजापतिर्वाऽइदमग्रऽआसीदेक एव सोऽका मयतान्नं सृजेय प्रजायेयेति स प्राणेभ्य एवाधि पशून्निरमिमीत मनस: पुरुषं चक्षुषोऽश्वं प्राणा द्गां श्रोत्रादविं वाचोऽजं तद्यदेनान्प्राणेभ्योऽधि निरमिमीत तस्मादाहु: प्राणा: पशव इति मनो वै प्राणानां प्रथमं तद्यन्मनस: पुरुषं निरमिमीत तस्मादाहु: पुरुष: प्रथम: पशूनां वीर्यवत्तमइति मनो वै सर्वे प्राणा मनसि हि सर्वे प्राणा: प्रति ष्ठितास्तद्यन्मनस: पुरुषं निरमिमीत तस्मादाहु: पुरुष: सर्वे पशव इति पुरुषस्य ह्येवैते सर्वे भव न्ति ।।६।। तदेतदन्नं सृष्ट्वा

हरि: ॐ अथोत्सर्गैरुपतिष्ठत । एतद्वै यत्रैतान्प्रजा पति: पशूनालिप्सत तऽआलिप्स्यमाना अशोचं स्तेषामेतैरुत्सर्गै: शुचं पाप्मानमपाहंस्तथैवैषामय मेतदेतैरुत्सर्गै: शुचं पाप्मानमपहन्ति ।।२८।। तद्धैके । यं-यमेव पशुमुपदधाति तस्य तस्य शु

चमुत्सृजन्ति नेच्छुचं पाप्मानमभ्युपदधामहाऽइति ते ह ते शुचं पाप्मानमभ्युपदधति यां हिपूर्वस्य शुचमुत्सृजन्ति तामुत्तरेण सहोपदधति ॥२९॥ विपरिक्राममु हैकऽउपतिष्ठन्ते ।·ऊर्ध्वां शुचमुत्सृजाम इति ते ह ते शुचं पाप्मानमनूद्यन्त्यूर्ध्वां ह्येतेन कर्मणैत्यूर्ध्वामु शुचमुत्सृजन्ति ।३०। बाह्येनैवाग्निमुत्सृजेत् । इमे वै लोका एषोऽग्निरेभ्यस्तल्लोकेभ्यो बहिर्धा शुचं दधाति बहिर्वेदीयं वै वेदिरस्यै तद्बहिर्धा शुचं दधात्युदङ् तिष्ठन्नेतस्यां ह दिश्येते पशवस्तद्यत्रैते पशवस्तदेवैष्वेतच्छुचं दधाति ॥३१॥ पुरुषस्य प्रथममुत्सृजति । तं हि प्रथममुपदधातीमं मा हिंसीर्द्विपादं पशुमिति द्विपाद्वाएष पशुर्यत्पुरुषस्तं मा हिंसीरित्येतत्सहस्राक्षो मेधाय चीयमान इति हिरण्यशकलैर्वाऽएष सहस्राक्षो मेधायेत्यन्नायेत्येतन्मयुं पशुं मेधमग्ने जुषस्वेति किम्पुरुषो वै मयुः किम्पुरुषमग्ने जुषस्वेत्येतत्तेन चिन्वानस्तन्वो निषीदेत्यात्मा वै तनूस्तेन चिन्वान आत्मानं संस्कुरुष्वेत्येतन्मयुं ते

शुगृछनु यंद्विष्मस्तं ते शुगृछत्विति तन्मयौ च
शुचं दधाति यं च द्वेष्टि तस्मिंश्च ॥२२॥ अथा
श्वस्य । इमं मा हिंसीरेकशफं पशुमित्येकशफो
वाऽएष पशुर्यदश्वस्तं माहिंसीरित्येतत्कनिक्रदं
वाजिनं वाजिनेष्वित्ति कनिक्रदो वाऽएष वाज्यु वा
जिनेषु गौरमारण्यमनु ते दिशामीति तदस्मै गौ
रमारण्यमनुदिशाति तेन चिन्वानस्तन्वो निषीदेति
तेन चिन्वानआत्मानं संस्कुरुष्वेत्येतद्गौरं ते शुगृ
छतु यं द्विष्मस्तं ते शुगृछत्विति तद्गौरे च शुचं
दधाति यं च द्वेष्टि तस्मिंश्च ॥२३॥ अथगोः ।
इमं साहस्रं शतधारमुत्समिति साहस्रो वाऽएष
शतधार उत्सो यद्गौर्व्यच्यमानं सरिरस्य मध्य
ऽइतिमे वै लोकाः सरिरमुपजीव्यमानमेषु लोके
ष्वित्येतद्घृतं दुहानामदितिं जनायेति घृतं वाऽए
षादितिर्जनाय दुहेऽग्ने मा हिंसीःपरमे व्योमन्नि
तीमे वै लोकाः परमं व्योमैषु लोकेष्वेनं मा हिं
सीरित्येतद्गवयमारण्यमनु ते दिशामीति तदस्मै
गवयमारण्यमनुदिशाति तेन चिन्वानस्तनवो नि

षीदेति तेन चिन्वान आत्मानं संस्कुरुष्वेत्येतद्भव
यं ते शुगृच्छतु यं द्विष्मस्तंते शुगृच्छत्विति तद्भवये
च शुचं दधाति यं च द्वेष्टि तस्मिंश्च ॥३४॥ अ
थावेः । इममूर्णायुमित्यूर्णावलमित्येतद्वरुणस्य ना
भिमिति वारुणो ह्यविस्त्वचं पशूनां द्विपदां चतु
ष्पदामित्युभयेषां ह्येष पशूनां त्वग्द्विपदां च चतु
ष्पदां च त्वष्टुः प्रजानां प्रथमं जनित्रमित्येतद्ध
त्वष्टा प्रथमं रूपं विचकाराग्ने मा हिंसीः परमे
व्योमन्निती मे वै लोकाः परमं व्योमैषु लोकेष्वेनं
मा हिंसीरित्येतदुष्ट्रमारण्यमनु ते दिशामीति त
दस्माऽउष्ट्रमारण्यमनुदिशाति तेन चिन्वानस्तन्वो
निषीदेति तेन चिन्वान आत्मानं संस्कुरुष्वेत्येत
दुष्ट्रं ते शुगृच्छतु यं द्विष्मस्तं ते शुगृच्छत्विति त
दुष्ट्रे च शुचं दधाति यं च द्वेष्टि तस्मिंश्च॥३५॥
अथाजस्य । अजो ह्यग्नेरजनिष्ट शोकादिति य
द्वै प्रजापतेः शोकादजायत तदग्नेः शोकादजा
यत सोऽअपश्यज्जनितारमग्रऽइति प्रजापतिर्वै
जनिता सोऽपश्यत्प्रजापतिमग्रऽइत्येतत्तेन देवा दे

वतामग्रऽआयन्निति वाग्वाऽअजो वाचो वै देवा देवतामग्रमायंस्तेन रोहमायन्नुपमेध्यास इति स्व र्गो वै लोको रोहस्तेन स्वर्गं लोकमायन्नुप मेध्या स इत्येतच्छरभमारण्यमनु ते दिशामीति तदस्मै शरभमारण्यमनुदिशाति तेन चिन्वानस्तन्वो नि- षीदेति तेन चिन्वान आत्मानं संस्कुरुष्वेत्वेतच्छर भं ते शुगृच्छतु यं द्विष्मस्तं ते शुगृच्छत्विति तच्छ रभे च शुचं दधाति यं च द्वेष्टि तस्मिंश्च॥३६॥ तदाहुः । यांवै तत्प्रजापतिरेतेषां पशूनां शुचं पा प्मानमपाहंस्तऽएते पञ्च पशवोऽभवंस्तऽएतऽउ त्क्रान्तमेधा अमेध्या अयज्ञियास्तेषां ब्राह्मणो नाश्नीयात्तानेतस्यां दिशि दधाति तस्मादेतस्यां दि शि पर्जन्यो न वर्षुको यत्रैते भवन्ति ॥३७॥

नह्यधुनाप्येतादृशाःके पिपशवोविद्यन्तेयेवैहननकाले किमपिनशोचेयुस्ततः शोचतांसाक्षात्पशूनांयज्ञाऽनर्हत्वा दुत्सृज्यत्वमेवास्तिनतुहननीयत्वमितिभावः नचतेषांयज्ञानर्ह त्वेकेवलस्तच्छोकएवहेतुरितिवाच्यंतेषाममेध्यत्वस्यापिहेतु त्वात्कथममेध्यत्वमितिचेदुच्यतेसर्वथाऽन्नाभावकालेदेवाः

प्रथमंयज्ञियसारंमेधंपुरुषएवप्रददृशुः ततोयज्ञासिध्यर्थंप्रथमं
पुरुषमालेभिरेतदानिमालब्धात्पुरुषान्मेधोऽपक्रम्याश्वंप्रवि
ष्टःपुरुषस्तुकिंपुरुषोजातःपश्चात्पुरुषंपरित्यज्यप्रविष्टमेधत्वे
नाश्वंमेध्यंप्रद्रश्यमेधार्थमश्वमालभन्ततदालब्धादश्वादपिमे
धउत्क्रम्यगांप्रविवेश अश्वश्चगौरमृगोबभूवततोऽश्वंत्यक्त्वा
मेधार्थंप्रविष्टमेधत्वेनगांमेध्यंज्ञात्वातमालेभिरेतस्मादपिमेधो
निःसृत्याविंप्राविशत्गौश्चगवयोऽभवत्तेगांपरित्यज्याऽविं
मेध्यंप्रज्ञायमेधार्थंतमप्यालेभिरेततोऽपिमेधोऽपक्रम्याजंप्रवि
ष्टःअविस्तूष्ट्रोभवत्अविंपरित्यज्याऽजोयदालब्धस्तदामेधः
पृथिवींप्राविशत् अजश्चशरभोऽभवत्तदनंतरंदेवाःपृथिव्यां
मेधमनुजग्मुस्तदामेधोव्रीहिरूपोभूत्वाबहिर्निसृतस्ततोव्रीहि
मेंध्योऽभवत् एवंपूर्वोक्तरीत्यापुरुषस्यमेध्यत्वेप्युत्क्रान्तमेध
त्वादमेध्यत्वंजातमश्वाद्यजपर्यन्तानांतुप्रविष्टमेधत्वेनमेध्य
त्वेजातेप्यपक्रान्तमेधत्वादमेध्यत्वंनिष्पन्नम् अन्येषांपशूनां
तुस्वभावतएवमेधवत्वाभावात्सर्वेपिपशवोऽमेध्याःसन्तिअ
तःसर्वेषांपशूनाममेध्यत्वेनयज्ञानर्हत्वात्कदापितदर्थंनहन्त
व्यास्तन्मांसादीनिचनाश्नीयात् किंचपूर्वोक्तमेधोयस्मात्
व्रीहिरूपोभवत्यस्माच्चाश्वादिपशुषुप्राविशत्ताभ्यांहेतुभ्यां

व्रीहिनिर्मितपशुःकेवलोव्रीहिरेववातत्तत्पशुसंज्ञयासंक्रियमाणआलभ्यतेनतुसाक्षात्पशुः नचानेनकेवलेनहास्येन व्रीहिपशुनैवयष्टव्यंकिंतुपुरोडाशेनसहयष्टव्यं ततोयद्दैवस्यःपशुर्भवतितद्दैवत्यंपुरोडाशमनुनिर्वपन्ति नचास्यव्रीहेः पुरोडाशस्यचरोमत्वगादिमत्वाभावात्पशुत्वंनसंगच्छतइति वाच्यंतत्तुपपिष्टकिंशारूफलीकरणादिनांत्वग्मांसरोमासृगादित्वप्रतिपादनेनपशुत्वप्रतिपादनात् तथाचस्पष्टमृग्वेदान्तर्गतैतरेयब्राह्मणे

हरिः ॐ पुरुषं वै देवाःपशुमालभंत-तस्मादालब्धान्मेध उदक्रामत्सोऽश्वंप्राविशत्तस्मादश्वोमेध्योऽभवदथैनमुत्क्रांतमेधमत्यार्जंत, स किंपुरुषो भवत्तेऽश्वमालभंत. सोऽश्वादालब्धादुदक्रामत्स गां प्राविशत्तस्मात् गौर्मेध्यो भवदथैनमुत्क्रांतमेधमत्यार्जंत, स गौरमृगो भवत्ते गामालभंत. स गोरालब्धादुदक्रामत्सोऽविंप्राविशत्तस्मादविर्मेध्योभवदथैनमुत्क्रांतमेधमत्यार्जंत, सगवयोभवत्तेऽविमालभंत. सोऽवेरालब्धादुदक्रामत्सोऽजं प्राविशत्तस्मादजो मेध्योभवदथैनमुत्क्रांतमेधमत्यार्जंत,स

उष्ट्रो भवत्सोऽजे ज्योक्तमामिवारमत. तस्मादे ष एतेषां पशूनां प्रयुक्ततमो यदजस्तेऽजमाल भंत. सोऽजादालब्धादुदक्रामत्स इमां प्राविशत्त स्मादियं मेध्या भवदथैनमुत्क्रांतमेधमत्यार्जंत, स शरभोऽभवत्त एव उत्क्रांतमेधा अमेध्याः प शवस्तस्मादेतेषां नाश्नीयात्तमस्यामन्वगच्छंत्सोऽ नुगतो व्रीहिरभवत्तद्यत्पशौ पुरोळाशमनु निर्वपं- ति, स मेधेन नःपशुनेष्टमसत् केवलेन नः पशु नेष्टमसदिति. स मेधेन हास्य पशुनेष्टं भवति के वलेन हास्य पशुनेष्टं भवति य एवं वेद ॥८॥

स वा एष पशुरेवालभ्यते यत्पुरोळाशस्तस्य यानि किंशारूणितानि रोमाणि, ये तुषाःसा त्व ग्ये फलीकरणास्तदसृग्यत्पिष्टं किक्नसास्तन्मां सं; यत्किंचित्कंसारं तदस्थि. सर्वेषां वा एष प शूनां मेधेन यजते य पुरोळाशेन यजते. तस्मा दाहुः पुरोळाशसत्रं लोक्यमिति युवमेतानि दिवि रोचनान्यग्निश्चसोम सक्रतू अधत्तं; युवं सिंधूं० रभिशस्तेरवद्यादग्नीषोमावमुंचतं गृभीतानिति व

पायै यजति. सर्वाभिर्वा एष देवताभिरालब्धो भ
वति यो दीक्षितो भवति. तस्मादाहुर्न दीक्षितस्या
श्नीयादिति स यदग्नीषोमावमुंचतं गृभीतानिति व
पायै यजति, सर्वाभ्य एव तद्देवताभ्यो यजमा
नं प्रमुंचति. तस्मादाहुरशितव्यं वपायां हुतायां
यजमानो हि स तर्हि भवति. आन्यं दिवो मात
रिश्वा जभारेति पुरोळाशस्य यजति. अमथ्ना
दन्यं परि श्येनो अद्रेरितीत इव च ह्येष इत इव
च मेधःसमाहृतो भवति. स्वदस्व हव्या समिषो
दिदीहिति पुरोळाशःस्विष्ट कृतो यजति. हविरे
वास्मा एतत्स्वदयतिषमूर्जमात्मन् धत्त. इळामुप
ह्वयते. पशवो वाइळा पशूनेव तदुपह्वयते पशू
न्यजमाने दधाति ॥९॥

॥ तथैवयुजर्वेदांतर्गतशतपथब्राह्मणेपि ॥

हरिः ॐ पशुर्ह वाएष आलभ्यते यत्पुरोडाशः॥५॥
पुरुषं ह वै देवाः । अग्रे पशुमालेभिरे तस्याल
ब्धस्य मेधोऽपचक्राम सोऽश्वं प्रविवेश तेऽश्व
मालभन्त तस्यालब्धस्य मेधोऽपचक्राम स गां

प्रविवेश ते गामालभन्त तस्यालब्धस्य मेधोऽप
चक्राम सोऽविं प्रविवेश तेऽविमालभन्त तस्या
लब्धस्य मेधोऽपचक्राम सोऽजं प्रविवेश तेऽज
मालभन्त तस्यालब्धस्य मेधोऽपचक्राम ॥६॥
स इमां पृथिवीं प्रविवेश । तं खनन्तइवान्वीषु
स्तमन्वविन्दंस्ताविमौ व्रीहीयवौ तस्मादप्येतावेत
र्हि खनन्त-इवैवानुविन्दन्ति स यावद्वीर्यवद्ध वा
ऽअस्यैते सर्वे पशव आलब्धाः स्युस्तावद्वीर्यव
द्धास्य हविरेव भवति य एवमेतद्वेदात्रो सा स
म्पद्यदाहुः पाङ्क्तः पशुरिति ॥७॥ यदा पिष्टान्य
थ लोमानि भवन्ति । यदाप आनयत्यथ त्वग्भ
वति यदा संयौत्यथ मांसं भवति संतत-इव हि
स तर्हि भवति संततमिव हि मासं यदा शृतोऽ
थास्थि भवति दारुण-इव हि स तर्हि भवति दा
रुणमित्यस्थ्यथ यदुद्वासयिष्यन्नभिघारयति तंम
ज्जानं दधात्येषो सा सम्पद्यदाहुः पाङ्क्तः पशुरि
ति ॥८॥ स यं पुरुषमालभन्त । स किम्पुरुषो
ऽभवद्यावश्वं च गां च तौ गौरश्च गवयश्चाभव

तां यमविमालभन्त स उष्ट्रोऽभवद्यमजमालभन्त स शरभोऽभवत्तस्मादेतेषां पशूनां नाशितव्यम पक्रान्तमेधा हैते पशवः ॥९॥

अत्रपुरुषंवैदेवाःपशुमालभन्तेतिपुरुषस्यपशुत्वप्रदर्शनंव्रीहेःपुरोडाशस्यचपशुत्वदृढीकरणार्थमन्यथापुरुषमालेभिरइत्येवब्रूयात्पशुपदंनोब्रूयान्यथापुरुषस्यपशुत्वप्रदर्शनमनवद्यंतथैवव्रीहेःपुरोडाशस्यचपशुत्वंनिरवद्यमितिभावःनचात्रपरिसंख्याताश्वादीनामेवमांसाद्यशनंनिषिध्यते किंतुसर्वेषांपशुत्वजातिविशिष्टानांनिषिध्यतेपरिसंख्यातानांनिषेधेऽमेध्यत्वस्यहेतुत्वेनप्रदर्शितत्वात् अत्रायं भावः येषांयेषांपशूनाममेध्यत्वंतेषांतेषांपशूनांमांसाद्यशनंप्रतिषिध्यतेतत्रपरिसंख्यातानामश्वादीनांमेधोत्क्रमणात्पूर्वंपुरुषनिःसृतमेधप्रवेशनैवहेतुनामेध्यत्वप्रतिपादनात्येषांयेषांपशूनांप्रविष्टमेधत्वंतेषांतेषांपशूनामेवमेध्यत्वम्अतःपरिसंख्याताश्वादिव्यतिरिक्तानांपशुत्वजातिविशिष्टानांसर्वेषामपिपशूनांप्रविष्टमेधत्वाभावादमेध्यत्वंनिष्पन्नंपरिसंख्यातानांत्वपक्रान्तमेधत्वादमेध्यत्वंप्रतिपादितमेवव्रीहेःपशुत्वेनतत्पिष्टादिनांमांसादित्वेपितस्यमेध्यपशुत्वात्तदशनं

न प्रतिषिद्धं तथा च यत्र यत्र मांसादिनां हवनीयत्वेन भक्षणी
यत्वेन च प्रदर्शनं तत्र सर्वत्र व्रीहिपिष्टादिकमेवाभिप्रेतमिति बो
ध्यं नो चेत्तत्पिष्टादिनां मांसादित्वप्रतिपादनस्य वैयर्थ्यं स्यात् स
वा एष पशुरेवालभ्यत इत्यत्र चावधारणार्थेनैवाऽव्ययेन सर्वे
प्यपांक्ताः पशवः पुनरपिऽयावृत्यन्ते उताहो केवलेन पांक्तपशु
ना पुरोडाशेन यजमानास्तन्त्रेण सर्वेषां पशूनां मेधेन यजन्त इति
महदलभ्यफलाभोक्तिः किंच साक्षादश्वादीनामालभनेन नह्य
श्वमेधादियज्ञसिद्धिः कुत इति चेदुच्यते अश्वस्य मेधो यस्मि
न्निति व्युत्पत्त्याश्वसंबंधी यज्ञियसारो मेधो मुख्यो हवनीयो य-
स्मिन् यज्ञे स यज्ञो अश्वमेधशब्देनाभिधीयते तथा च गोसंबंधी
मेधो मुख्यत्वेन हवनीयो यस्मिन् यज्ञे स गोमेधशब्देनोच्यते पुरु
षसंबंधीमेधो मुख्यत्येन हवनीयो यस्मिन् स पुरुषमेधशब्देना-
ख्यायते एवं सति साक्षादश्वादिष्वालब्धेषु तत्तत्संबंधीमेधो ह
वनार्थं नैव लभ्यते तेषामपक्रान्तमेधत्वेन मेधवत्त्वाभावादतस्ते
षामालभनं वृथैव व्रीहिपशुना यजने तु तस्य सर्वपशुमेधरूप
त्वादश्वादिसंबंधीमेधो हवनार्थं लभ्यत एव न चात्र मेधशब्द
स्याप्रशस्तमपि यज्ञवाचकत्वमंगीकृत्याश्वमेधादिशब्देषु षष्ठी
तत्पुरुषः कार्यः तथा सति पुरुषमेधयज्ञाऽश्वमेधयज्ञादिशब्दे

पुयज्ञशब्दस्यपुनरुक्तत्वेनानर्थक्यापत्तिःस्यात्ततोबहुव्रीहि
रेवयुक्तः नचव्यधिकरणोबहुव्रीहिरन्याय्यइतिवाच्यंसंभ
वतिसमानाधिकरणएवव्यधिकरणस्यान्याय्यत्वात्सप्तमी
विशेषणेबहुव्रीहाविति सूत्रेसप्तमीग्रहणेनव्यधिकरणबहुव्री
हेरपिज्ञापितत्वाच्चयद्वाऽभुनाव्रीहेर्मेधरूपत्वादश्वसंज्ञकोमे
धोव्रीहिर्मुख्योहवनीयोयस्मिन्नितिसमानाधिकरणेबहुव्रीहा
वपिनकापिक्षतिः नाप्यत्रमेधशब्दस्ययज्ञियसाराऽतिरिक्तः
कश्चिदप्यन्योगौणोर्थःस्वीकार्यःमुख्यार्थंपरित्यज्यगौणार्थ
स्वीकारेमानाभावात्सायनाचार्यादिकृतभाष्येषुतस्ययाज्ञिय
सारवाचकत्वप्रतिपादनात्सर्वेष्वप्यश्वमेधादियज्ञेष्वश्वादिमे
धएवमुख्योहूयतेतस्मादश्वमेधपुरुषमेधादिशब्देषुमेधशब्दउ
द्दिष्टःतदर्थत्यागेतत्स्वारस्यभंगापत्तिरपिस्यात्किंचवस्तुतः
साक्षादश्वाद्यालभनेमुख्यत्वेनालभनशब्दोपिनप्रवर्त्ततेआ
समन्तात्लभ्यतेअनेनेतिप्राप्त्यर्थकाल्लभ्धातोःसकाशात्
करणेल्युटिसत्यालभनशब्दःसिध्यति लभ्धातोश्चसकर्म
कत्वात्कर्मभूतोमेधआक्षिप्यतेतेनयत्संस्कारविशेषेणमेधः
प्राप्यतेससंस्कारविशेषआलभनशब्देनोच्यतेतथासतिनहि
साक्षात्पशुसंस्कारविशेषेणतन्मेधःप्राप्यतेसाक्षात्पशूनांमे

धत्वाभावात्व्रीहिपशौतुसंस्कारविशेषेणाश्वादिनांमेधःप्रा
प्यतएव व्रीहेःसर्वमेधरूपत्वात् तस्माद्व्रीहिपशोःसंस्कार
विशेषएवमुख्यत्वेनालभनशब्दःप्रवर्त्तते नचासमंतात्ल
भ्यतेअनेनेत्यत्रमांसादिनःकर्मत्वंवाच्यं तस्येप्सिततमत्वा
भावात् यजमानानामालभनाख्यसंस्कारविशेषेणमेधएवे
प्सिततमोनतुमांसादि यद्यपिमांसादिनोपीप्सितत्वंभवति
तथापीप्सिततमत्वाभावान्नकर्मत्वं कर्त्तुरीप्सिततमंकर्मेति
सूत्रेणेप्सिततमस्यैवकर्मत्वविधानात्एतावतासाक्षात्पश्वभा
वेप्रतिनिधिर्व्रीहिपशुरितिकेषांचित्कुतर्कःपरास्तः देवकृतप
श्वालभनेनतुव्रीहियवात्मकोमेधःप्राप्तस्तस्मात्तत्रालभनश
ब्दोमुख्यत्वेनप्रवृत्तः व्रीहिपश्वालभनेनयजमानेप्सितंमांसा
दिकमपिपिष्टादिरूपंप्राप्यतएव इयंव्रीहियवयोरूपत्पत्तिर्दैव
कृतपश्वालभनस्यसृष्ट्यारम्भकालोद्भूतत्वमन्नाभावकालोद्भूत
त्वंचज्ञापयति देवालब्धाश्वादीनांमृगादिरूपैर्भवनंकेवलंदे
वाचरणंज्ञात्वैवतद्वन्मनुष्यैर्नाचरणीयमितिध्वनयति एवंपू
र्वोक्तरीत्याव्रीहियवौव्रीहियवसंज्ञाभ्याम्पशुसंज्ञाभ्यांचनि
गमादिषुसंव्यवह्रियेते तत्राश्वमेधेव्रीहिर्यवोवामुख्यत्वेनाश्व
संज्ञयापुरुषमेधेमुख्यत्वेनपुरुषपशुसंज्ञयागोमेधेगोसंज्ञया

ज्योतिष्टोमादिषु च छागादिसंज्ञाभिर्व्यवह्रियत इति वेदसं
केतः नोचेत् यज्ञविषयकमंत्रब्राह्मणादिषु सर्वत्राऽश्वादीनां वि
शेषणतयोच्चारितस्य मेध्यपदस्य वैयर्थ्यं स्यात् व्यावर्त्याभावा
त् नहि लोकेषु मेध्यत्वामेध्यत्वभेदाभ्यामुभयाविधाः साक्षादश्वा
दयः प्रदृश्यन्ते तस्माद् व्यावर्त्यतावच्छेदकावच्छिन्नानाममेध्या
नामन्येषां साक्षादश्वादीनामनुपलम्भात्तद् व्यावर्त्तकतावच्छे
दकावच्छिन्नस्य मेध्यपदस्य वैयर्थ्यं स्यात् न चात्र विशेषणस्य स्व
रूपज्ञापकत्वं मेध्यत्वस्य स्वरूपाभावात् मेध्यत्वममेध्यत्वं च शा
स्त्रनिष्पन्नमेव न तु स्वरूपनिष्पन्नं शास्त्रेण च साक्षादश्वादीनाम
मेध्यत्वं निष्पादितं व्रीहियवयोश्च मेध्यत्वं निष्पादितं तस्माद् व्या
वर्त्तकतावच्छेदकावच्छिन्नेन मेध्यपदेन व्यावर्त्यतावच्छेदका
वच्छिन्नाः साक्षादश्वादय एव व्यावृत्यन्ते अतः सर्वेषां साक्षाद
श्वादीनां मेध्यपदेन व्यावर्त्यत्वात् यज्ञविषयकमंत्रब्राह्मणादि
ष्वश्वादिशब्दैर्व्रीहियवा एव संज्ञायेते तत्संज्ञाकरणे कारणं तु
मेधस्याश्वादिषु प्रवेश एव देवकृतालभनकाले व्रीहिरूपोयं
साक्षान्मेधोश्वशरीरप्रवेशनेनाश्वत्वं प्राप्तस्तस्मादश्वमेधे मु
ख्यत्वेनाऽश्वसंज्ञया संस्क्रियमाणः सन्नालभ्यते गोप्रविष्टत्वेन गो
त्वं प्राप्तस्ततो गोमेधे गोसंज्ञया संस्क्रियमाणः सन्नालभ्यते देव

कृतानलभनात्पूर्वंपुरूषस्थितत्वेनपुरूषत्वमासीत्तस्मात्पुरूष
मेधेपुरूषसंज्ञयासंस्कुर्वन्तश्च व्रीहिंयवमेववालभन्तेएवंसोयं
साक्षान्मेधोव्रीहिरूपोजातस्तस्माद्व्रीहिसंज्ञयापौर्णमासादि
सर्वयागेषुसंस्क्रियमाणःसन्पुरोडाशत्वंप्राप्नोतितंपुरोडाशं
पृथक्पृथक्कपालेषुसंस्कुर्वन्तःसन्तःपुरोडाशसंज्ञयानिर्व
पन्तिपशुयागेषूभयोःपशुपुरोडाशयोर्विहितत्वादेकत्रस्था
नेपशुसंज्ञया संस्क्रियते अन्यत्रच व्रीहिसंज्ञयासंस्क्रियतेत
दनन्तरं मांससंज्ञया संस्क्रियमाणापिष्टंपुरोडाशेनसहजु
ह्वति अतोयत्रयत्रमेध्यपदविशिष्टा अश्वादयोदृश्यन्ते त
त्रसर्वत्रव्रीहि पशुरेवाभिप्रेतइतिबोध्यं पूर्वकालेकवषपुत्रे
णतुरेणैन्द्रेणमहाभिषेकेणाभिषिक्तः परिक्षित्पुत्रोजनमेज
यः सर्वतः पृथ्वींजयन्सन्मेध्येनैवाश्वेनेजनतुसाक्षादश्वे
न किंचधान्यभक्षकंरुक्मिणं हरितस्रजंसाक्षादश्वंलो
काचारमनुसृत्यसिंहासनसमिपेबबंध नतुयूपे नापिजघा
न तथैवभृगुपुत्रेणच्यवनेनमहाभिषेकेणाभिषिक्तः शार्यातो
मेध्येनैवाश्वेनेजेनतुसाक्षादश्वेन एवंवाजरत्नायनसोमशु
ष्मासत्राजित पुत्रंशतानीक मैन्द्रेणमहाभिषेकेणाभिषिषे
च तस्मात् शतानीकः सर्वतः पृथिवींजयन्परीयाय मे

ध्येनैवाश्वेनेजेतथापर्वतनारदाभ्याममभिषिक्तआम्बाष्ट्योमे
ध्येनैवाश्वेनेजेतथैवपर्वतनारदाभ्यामेवाभिषिक्तउग्रसेनपुत्रो
युधांश्रौष्टिर्मेध्येनैवाश्वेनेजेतथाचकश्यपेनाभिषिक्तोभुवन
पुत्रोविश्वकर्मामेध्येनैवाश्वेनेजेयस्मिन्यज्ञेविश्वकर्मणाकश्य
पायदत्तापृथिवीविश्वकर्माणंप्रत्येतदब्रवीत्हेभूवनपुत्रविश्व
कर्मन्कश्चिदपिमर्त्योमांदातुंनार्हतिएवंसत्यपियस्मात्त्वया
दत्तातस्माद्हंजलेनिमंक्ष्येतवप्रातिज्ञावृथैवेतितथावशिष्ठः
पिजवनपुत्रंसुदासंमहाभिषेकेणाभिषिषेचतस्मात्सुदाःसर्वः
पृथिवींजयन्परीयाय मेध्येमैवाश्वेनेजेतथैवांगिरसःपुत्रेण
संवर्तेनमहाभिषेकेणाभिषिक्तोऽविक्षितपुत्रोमरूत्तोमेध्येनैवा
श्वेनेजेतस्यचपूर्णकामस्यमरुत्तस्यगृहेवायवःपरिवेष्टारआ
सन्तथाचात्रिपुत्रेणोदमयेनाभिषिक्तोगोमेध्ये नैवाश्वेनेजेत
थाचस्पष्टमृग्वेदान्तर्गतैतरेयब्राह्मणाष्टमपञ्चिकायाम् ॥

हरिः ॐ एतेन ह वा ऐन्द्रेण महाभिषेकेण तुरः का
वषेयो जनमेजयं पारिक्षितमभिषिषेच. तस्मादु
जनमेजयः पारिक्षितः समंतं सर्वतः पृथिवीं ज
यन् परियायाऽश्वेनच मेध्येनेजे, तदेषाभियज्ञगा
था गीयते. आसंदीवति धान्यादं रुक्मिणं हरि

तस्त्रजं, अश्वं बबंध सारंगं देवेभ्यो जनमेजय इत्येतेन ह वा ऐंद्रेण महाभिषेकेण च्यवनो भार्गवः शार्यातं मानवमभिषिषेच.तस्मादु शार्यातो मानवः समंतं सर्वतः पृथिवीं जयन्परीयायाश्वेन च मेध्येनेजे. देवानां हापि सत्रे गृहपतिरासैतेन ह वा ऐंद्रेण महाभिषेकेण सोमशुष्मा वाजरत्नायनः शतानीकं सात्राजितमभिषिषेच. तस्मादु शतानीकः सात्राजितः समंतं सर्वतः पृथिवीं जयन्परीयायाश्वेन च मेध्येनेजे. एतेन ह वा ऐंद्रेण महाभिषेकेण पर्वतनारदावांबाष्ठ्यमभिषिषिचतुस्तस्मादांबाष्ठ्यः समंतं सर्वतः पृथिवीं जयन्परीयायाश्वेन च मेध्येनेजे एतेन ह वा ऐंद्रेण महाभिषेकेण पर्वतनारदौ युधांश्रौष्टिमौग्रसैन्यमभिषिषिचतुस्तस्मादु युदांश्रौष्टिरौग्रसैन्यःसमंतं सर्वतः पृथिवीं जयन् परियायाश्वेन च मेध्येनेजे. एतेन ह वा ऐंद्रेण महाभिषेकेण कश्यपो विश्वकर्माणं भौवनमाभिषिषेच. तस्मादु विश्वकर्मा भौवनः समंतं सर्वतः पृथिवीं जयन्परिया

याश्वेन च मेध्येनेजे. भूमिर्हं जगाविस्युदाहरंति.
न मा मर्त्यः कश्चन दातुमर्हति विश्वकर्मन् भौव
न मां दिदासिथ; निमंक्ष्ये ऽहं सलिलस्य मध्ये
मोघस्त एष कश्यपायास संगर इत्येतेन ह वा
ऐंद्रेण महाभिषेकेण वसिष्ठः सुदासं पैजवनम
भिषिषेच. तस्मादु सुदाः पैजवनः समंतं सर्वतः
पृथिवीं जयन्परीयायाश्वेन च मेध्येनेजे. एतेन ह
वा ऐंद्रेण महाभिषेकेण संवर्त आंगिरसो मरुत्त
माविक्षितमभिषिषेच. तस्मादु मरुत्त आविक्षितः
समंतं सर्वतः पृथिवीं जयन् परीयायाश्वेनच मे
ध्येनेजे. तदप्येष श्लोकौ ऽभिगीतो, मरुतः परि
वेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे आविक्षितस्य कामप्रे
विश्वे देवाः सभासद इति २१

एतेन ह वा ऐंद्रेण महाभिषिकेणोदमय आत्रेयों
गमभिषिषेच. तस्मादंगः समंतं सर्वतः पृथिवीं ज
यन्परीयायाश्वेन च मेध्येनेजे. स होवाचालोपां
गो दशनागसहस्राणि दशदासीसहस्राणि ददा
मिते ब्राह्मणोप मा ऽस्मिन् यज्ञे व्हयस्वेति तद

प्येते श्लोका अभिगीताः याभिर्गोभिरुदमयं प्रैय मेधा अयाजयन् द्वे द्वे सहस्रे बद्वानामात्रेयो म ध्यतो ददात्. अष्टाशीती सहस्राणि श्वेतान्वैरो चनो हयान्; प्रष्टिं निश्चृत्य प्रायच्छद्यजमाने पुरो हिते. देशाद्देशात्समोळ्हानां सर्वासामाढ्यदुहितॄ णां; दशाददात्सहस्राण्यात्रेयो निष्ककंठयः. द शानागसहस्राणि दत्वात्रेयो वचत्नुके; श्रांत पा रिकुटान्प्रेप्सद्दानेनांगस्य ब्राह्मणः शतं तुभ्यं श तं तुभ्यमिति स्मव प्रताम्यति; सहस्रं तुभ्यमित्यु क्त्वा प्राणान्त्स्म प्रतिपद्यत इति २२

एतेन ह वा ऐंद्रेण महाभिषेकेण दीर्घतमामाम तेयो भरतं दौष्यंतिमभिषिषेच. तस्मादु भरतो दौष्यंतिः समंतं सर्वतः पृथिवीं जयन्परीयायाश्वै रुच मेध्यैरीजे तदप्येते श्लोका अभिगीताः हि रण्येन परीवृतान्कृष्णान् शुक्लदतो मृगान्; मष्णा रे भरतो ददाच्छतं बद्वानि सप्तच भरतस्यैष दौ ष्यंतेरग्निः साचिगुणे चितः; यस्मिन्त्सहस्रं ब्रा ह्मणा बद्वशो गावि भेजिरे. अष्टासप्तति भरतो

दौष्यंतिर्यमुनामनु; गंगायां वृत्रघ्ने बध्नात्पंचपंचा
शतं हयान्. त्रयस्त्रिंशच्छतं राजाऽश्वान् बध्वा
य मेध्यान्;दौष्यंतिरत्यगाद्राज्ञो मायां मायावत्तरः
महा कर्म भरतस्य न पूर्वे नापरे जनाः; दिवं
मर्त्य इव हस्ताभ्यां नोदापुः पंच मानवा इत्ये
तं ह वा ऐंद्रं महाभिषेकं बृहदुक्थ ऋषिर्दुर्मुखा
य पांचालाय प्रोवाच. तस्मादु दुर्मुखः पांचालो
ऽराजा सन्विद्यया समंतं सर्वतः पृथिवीं जयन्प
रीयायैतं ह वा ऐंद्रं महाभिषेकं वासिष्ठः सात्य
हव्योऽत्यरातये जानंतपये प्रोवाच. तस्माद्वत्यरा
तिर्जानंतपिरराजा सन्विद्यया समंतं सर्वतः पृथि
वीं जयन्परीयाय. स होवाच वासिष्ठः सात्यह
व्यो जैषीर्वै समंतं सर्वतः पृथिवीं महन्मा गमये
ति स होवाचात्यरातिर्जानंतपिर्यदा ब्राह्मणोत्तर
कुरून् जयेयमथ त्वमु हैव पृथिव्यै राजा स्याः
सेनापतिरेव ते ऽहं स्यामिति स होवाच वासिष्ठः
सात्यहव्यो देवक्षेत्रं वै तन्नवैतन्मर्त्यो जेतुमहत्य
द्रुक्षो वै म आ ऽतः इदं दद इति ततो हात्य

राति ज्ञानंतपिमात्तवीर्यं निःशुक्रममित्रतपनः शु
ष्मिणः शैब्यो राजा जघान. तस्मादेवंविदुषे ब्रा
ह्मणायैवंचकुषे न क्षत्रियो द्रुह्येन्नेद्राष्ट्रादव पद्येय
न्नेद्रामप्राणो जहदिति जहदितिः २३

॥ तथाच शतपथब्राह्मणे ॥

हरिः ॐ एतेन हेन्द्रोतो दैवापः शौनकः । जनमेज-
यं पारिक्षितं याजयां चकार तेनेष्ट्वा सर्वां पाप-
कृत्यां सर्वां ब्रह्महत्यामपजघान सर्वां; ह वै पाप
कृत्यां सर्वां ब्रह्महत्यामपहन्ति योऽश्वमेधेन यज
ते ॥ १ ॥ तदेतद्गाथयाभिगितम् । आसन्दीवति
धान्यादं रुक्मिणं हरितस्रजम् अबध्नादश्व;
सारंगं देवेभ्यो जनमेजय इति ॥ २ ॥ एतेऽ
एव पूर्वेऽअहनी । ज्योतिरातिरात्रस्तेन भीमसेन-
मेतेऽएव पूर्वेऽअहनी गौरातिरात्रस्तेनोग्रसेनमेतेऽए
व पूर्वेऽअहनीऽआयुरातिरात्रस्तेन श्रुतसेनमित्येते
पारिक्षितीयास्तदेतद्गाथयाभिगीतं पारिक्षिता य-
जमाना अश्वमेधैः परोऽवरम् अजहुः कर्म पा-
पकं पुण्याः पुण्येन कर्मणेति ॥ ३ ॥ एतेऽएव

पूर्वे ऽअहनी । अभिजिदतिरात्रस्तेन ह पर आट्णार ईजे कौसल्यो राजा तदेतद्गाथयाभिगीतमट्णारस्य परः पुत्रोऽश्वं मेध्यमबन्धयत् हैरण्यनाभः कौसल्यो दिशः पूर्णा अमंहतेति ॥ ४ ॥ एते ऽएव पूर्वे ऽअहनी । विश्वजिदतिरात्रस्तेन ह पुरुकुत्सो दौर्गहेणेजऽऐक्ष्वाको राजा तस्मादेतदृषिणाभ्यनूक्तमस्माकमत्र पितरस्तऽआसन्त्सप्तऽऋषयो दौर्गहे बध्यमानऽइति ॥ ५ ॥ एतेऽएव पूर्वेऽअहनी । महाव्रतमतिरात्रस्तेन ह मरुत आविक्षित ईजऽआयोगवो राजा तस्य ह ततो मरुतः परिवेष्टारोऽग्निः क्षत्ता विश्वे देवाः सभासदो बभूवुस्तदेतद्गाथयाभिगीतं मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन्गृहे आविक्षितस्याग्निः क्षत्ता विश्वे देवाः सभासद इति मरुतो ह वै तस्य परिवेष्टारोऽग्निः क्षत्ता विश्वे देवाः सभासदो भवन्ति योऽश्वमेधेन यजते ॥ ६ ॥ एतेऽएव पूर्वेऽअहनी । अप्तोर्यामोऽतिरात्रस्तेन हैतेन क्रैव्य ईजे पाञ्चालो राजा क्रिवय इति ह वै पुरा पञ्चा

लानाचक्षते तदेतद्गाथयाभिगीतम् अश्वं मेध्यमालभत क्रिवीणामतिपूरुषः पाञ्चालः परिवक्रायां सहस्रशतदक्षिणमिति ॥ ७ ॥ अथ द्वितीयया । सहस्रमासन्नयुता शता च पञ्चविंशतिः दिक्को-दिक्कः पञ्चालानां ब्राह्मणा या विभेजिर इति ॥ ८ ॥ त्रिवृदग्निष्टोमः । पञ्चदश उक्थ्यः सप्तदशं तृतीयमहः सोक्थकमेकविंशः षोडशी पञ्चदशी रात्रिस्त्रिवृत्संधिरित्येषोऽनुष्टुप्सम्पन्न स्तने हैतेन ध्वसा द्वैतवन ईजे मात्स्यो राजा यत्रैतद्द्वैतवनं सरस्तदेतद्गाथयाभिगीतं चतुर्दश द्वैतवनो राजा संग्रामजिद्धयान् इन्द्राय वृत्रघ्नेऽबध्नात्तस्माद्द्वैतवनं सर इति ॥ ९ ॥ चतुर्विंशाः पवमानाः । त्रिवृदभ्यावर्तं चतुश्चत्वारिंशाः पवमाना एकविंशमभ्यावर्तमष्टाचत्वारिंशाः पवमानास्त्रयस्त्रिंशमभ्यावर्तमाग्निष्टोमसामाद्वात्रिंशान्युक्थान्येकविंशः षोडशी पञ्चदशी रात्रिस्त्रिवृत्संधिरिति ॥ १० ॥ एतद्विष्णोः क्रान्तम् । तेन हैतेन भरतो दौःष्यन्तिरीजे तेनेष्ट्वेमां व्यष्टिं व्यानशे येयं भ-

रतानां तदेतद्गाथयाभिगीतमष्टासप्ततिं भरतो दौः ष्यन्तिर्यमुनामनु गङ्गायां वृतघ्ने ऽबध्नात्पञ्चपञ्चाशतं हयानिति ॥ ११ ॥ अथ द्वितीयया । त्रयस्त्रिंशं शतं राजाश्वान्बद्ध्वाय मेध्यान् सौद्युम्नि रत्यष्ठादन्यानमायान्मायवत्तर इति ॥ १२ ॥ अथ तृतियया । शकुन्तला नाडपित्यप्सरा भरतं दधे परःसहस्रानिन्द्रायाश्वान्मेध्यान्य आहरद्विजित्य पृथिवीं सर्वामिति ॥ १३ ॥ अथ चतुर्थ्या । महदद्य भरतस्य न पूर्वे नापरे जनाः । दिवं मर्त्य-इव बाहुभ्यां नोदापुः पञ्च मानवा इति ॥ १४ ॥ एकविंशस्तोमेन । ऋषभो याज्ञतुर ईजे श्विक्नानां राजा तदेतद्गाथयाभिगीतंयाज्ञतुरे यजमाने ब्रह्माण ऋषभेजनाः अश्वमेधे धनं लब्ध्वा विभजन्ते स्म दक्षिणा इति ॥ १५ ॥ त्रयस्त्रिंशस्तोमेन । शोणः सात्रासाह ईजे पाञ्चालो राजा तदेतद्गाथयाभिगीतं सात्रासहे यजमानेऽश्वमेधेन तौर्वशाः उदिरते त्रयस्त्रिंशाःषट् सहस्राणि वर्मिणामिति ॥ १६ ॥ अथ द्वितियया । ष

ट्षट् षड्वा सहस्राणि यज्ञे कोकपितुस्तव उदी
रहे त्रयस्त्रिंशाः षट् सहस्राणि वर्मिणामिति ॥
१७ ॥ अथ तृतियया । सात्रासहे यजमाने पा
ञ्चाले राज्ञि सुस्राजि अमाद्यदिन्द्रः सोमेनातृप्य
न्ब्राह्मणा धनैरिति ॥ १८ ॥ गोविनतेन शता
नीकः । सात्राजित ईजेकाश्यस्याश्वमादाय त
तो हैतदर्वाक्काशयोऽग्नीन्नादधतऽआत्तसोमपीथाः
स्म इति वदन्तः ॥ १९ ॥ तस्य विंधा चतुर्वि
शाः पवमानाः । त्रिवृदभ्यावर्तं चतुश्चत्वारिंशाः
पवमाना एकविंशान्याज्यानि त्रिणवान्युक्थान्ये
कविंशानि पृष्ठानि षट्त्रिंशाः पवमानास्त्रयस्त्रिंश
मभ्यावर्तमाग्निष्टोमसामादेकविंशान्युक्थान्येकाविंशः
षोडशी पञ्चदशी रात्रिस्त्रिवृत्संधिः ॥ २० ॥
तदेतद्गाथयाभिगीतं । शतानीकः समन्तासु मे-
ध्यं सात्राजितो हयम् आदत्त यज्ञं काशीनां भ
रतः सत्वतामिवेति ॥ २१ ॥ अथ द्वितीयया ।
श्वेतं समन्तासु वशं चरन्तं शतानिको धृतराष्ट्र
स्य मेध्यम् आदाय सह्वा दशमास्यमश्वं शतानी-

को गोविनतेन हेज ऽइति ॥ २२ ॥ अथ चतु
र्थ्यां । महदद्य भरतानां न पूर्वे नापरे जनाः दिवं
मर्त्य-इव पक्षाभ्यां नादोपुः सप्त मानवा इति ॥
२३ ॥ अथातो दाक्षिणानाम् । मध्यं प्राति राष्ट्र
स्य यदन्यद्भूमेश्च पुरुषेभ्यश्च ब्राह्मणस्य च वित्ता
त्प्राची दिग्घोतुर्दक्षिणा ब्रह्मणः प्रतिच्यध्वर्योरुदी
च्युद्गातुस्तदेव होतृका अन्वाभक्ताः ॥ २४ ॥ उ
दयनीयायां संस्थितायाम् । एकविंशतिं वशा
अनूबन्ध्या आलभते मैत्रावरुणीर्वैश्वदेवीर्बार्हस्पत्या
एतासां देवतानामाप्त्यै तद्यत्बार्हस्पत्यान्त्या भव
न्ति ब्रह्म वै बृहस्पतिस्तद् ब्रह्मण्येवान्ततः प्रति
तिष्ठति ॥ २५ ॥ अथ यदेकविंशतिर्भवन्ति ।
एकविंशो वाऽएष य एष तपति द्वादश मासाः
पञ्चऽर्तवस्त्रय इमे लोका असावादित्य एकविं
श एतामभिसम्पदम् ॥ २६ ॥ उदवशानीया
यां संस्थितायाम् । चतस्रश्च जायाः कुमारीं प
ञ्चमीं चत्वारि च शतान्यनुचरीणां यथासमु
दितं दक्षिणां ददति ॥ २७ ॥ अथोत्तरं संवत्स

रमृतुपशुभिर्यजते । षड्भिराग्नेयैर्वसन्ते षड्भिरै न्द्रैर्ग्रीष्मे षड्भिः पार्जन्यैर्वा मारुतैर्वा वर्षासु षड् भिर्मैत्रावरुणैः शरदि षड्भिरैन्द्रावैष्णवैर्हेमन्ते ष ड्भिरैन्द्राबार्हस्पत्यैः शिशिरे षड्तवः संवत्सरः ऋतुष्वेव संवत्सरे प्रतितिष्ठति षट्त्रिंशदेते पशवो भवन्ति षट्त्रिंशदक्षरा बृहती बृहत्यामधि स्वर्गो लोकः प्रतिष्ठितस्तद्वन्ततो बृहत्यैव छन्दसा स्वर्गे लोके प्रतितिष्ठति ॥ २८ ॥

अत्रसर्वत्रव्यावर्तकतावच्छेदकविशिष्टेन मेध्यपदेन व्यावर्त्यतावच्छेदकयुक्तसाक्षादश्वव्यावृत्ति पूर्वकविशेष्य तावच्छेदकावच्छिन्नव्रीहिपशुरेवविशेष्यते आसन्दीवति धान्यादं रुक्मिणंहरितस्त्रजमश्वंबबन्धेत्यादिवाक्येषु पुनः पुनः साक्षादश्वबंधनोक्तिरपि साक्षादश्वहिंसनाभावंध्वन यति अन्यथाजघानेतिब्रूयात् अत्रेत्थंव्यवस्थेयं मेध्यश- ब्दोद्विविधो मेधवद्वाचकःपवित्रवाचकश्चेति तत्रमेधवद् वाचकःपारिभाषिकयोगरूढः पवित्रवाचकस्तुरूढएव त त्रयोगरूढोमांसवपादियज्ञसंपदर्थेदेवतृप्तिकारकोयोव्रीहि पशुः संस्क्रियतेतमेवज्ञापयतिसचपशुः यूपएवबध्यते न

त्वन्यत्र रूढस्तुविशेष्यवस्तुनः पवित्रत्वंज्ञापयतियथा मे
ध्या आपइत्यादिषुतथासतिलोकव्यवहारमनुसृत्येन्द्रमुद्दिश्य
योधान्यादःपवित्राऽश्वआनीयतेसस्त्रगादिभिःस्वलङ्कृतोय
त्रकुत्रापिस्वेप्सितस्थलेबद्धःस्पृष्टःसन्नुत्सृज्यतेनतुनिहन्यते
अतएवसिंहासनसमीपेगंगायांचबबन्धेतिनिर्दिष्टंनोचेद्यू
पेबबन्धेतिब्रूयात् अतोवायव्यं श्वेतमालभेतेत्यादिवचनेषु
श्वेतव्रीहिरेवाभिप्रेयते तथै वाग्नयेछागस्यहविषोवपायामे
दसः प्रेष्यानुब्रूहित्यादिषु छागादिशब्दैस्तत्तत्संज्ञाभिःसं
स्क्रियमाणोव्रीहिरेवबोध्यः मेदःप्रभृतिशब्दैश्च तत्तत्संज्ञा
भिःसंस्कृताः किकूनसादयोव्रीहेरवयवाएवबोध्याःनचपशु
शब्दस्य चतुष्पाज्जाति विशेषेरूढत्वात्व्रीहेःपशुत्वमयुक्त
मितिमन्तव्यंश्रुतौद्विपदांपुरुषाणां पादाद्यवयव रहितानां
पदार्थानांचपशुत्वप्रदर्शनात् तथाहि

हरि ॐ देवायद्य ज्ञंतन्वाना अबध्नन्पुरुषंपशुम्

हरि ॐ उषा वाऽअश्वस्य मेध्यस्य शिरः। सूर्यश्चक्षु
र्वातः प्राणो व्यात्तमग्निर्वैश्वानरः संवत्सर आ
त्माश्वस्य मेध्यस्य द्यौष्पृष्ठमन्तरिक्षमुदरं पृथिवी
पाजस्यं दिशः पार्श्वेऽअवान्तरदिशः पर्शव ऋ

तवोऽऽङ्गानि मासाश्चार्धमासाश्च पर्वाण्यहोरात्राणि प्रतिष्ठा नक्षत्राण्यस्थीनि नभो मांसान्यूवध्यं सिकताः सिन्धवो गुदा यकृच्च क्लोमानश्च पर्वता ओषधयश्च वनस्पतयश्च लोमान्युद्यन्पूर्वार्धो निम्लोचन्जघनार्धो यद्विजृम्भते तद्विद्योतते यद्विधूनुते तत्स्तनयति यन्मेहति तद्वर्षति वागेवास्य वागहर्वाऽअश्वं पुरस्तान्महिमान्वजायत तस्य पूर्वे समुद्रे योनी रात्रिरेन्यं पश्चान्महिमान्वजायत तस्यापरे समुद्रे योनिरेतौ वाऽअश्वं महिमानावभितःसम्बभूवतुर्हयो भूत्वा देवानवहद्वाजी गन्धर्वानर्वासुरानश्वो मनुष्यान्त्समुद्र एवास्य बन्धुः समुद्रो योनिः ॥१॥

हरि ॐ तद्यदेनान्प्राणेभ्योऽधिनिरमिमीत तस्मादाहुः प्राणाः पशवइति इत्यादि

एवंवेदेषुबहूनां पदार्थानां पशुत्वप्रदर्शनाच्चतुष्पाज्जातिविशेषेपशुशब्दोरूढोनभवतिकिंतुपारिभाषिकोयोगरूढएवतथाचस्यष्टंशतपथब्राह्मणे

हरि ॐ स एतान्पञ्चपशूनपश्यत् पुरुषमश्वं गामविम

ज्ञं यदपश्यत्तस्मादे तेपशवः ॥ २ ॥ स ए-
तान्पञ्च पशून्प्राविशत् स एते पञ्चपशवोऽभ
वत्तमु वै प्रजापतिरन्वैवैक्षत ॥ ३ ॥ स एतान्प
ञ्च पशूनपश्यत् यदपश्यत्तस्मादेतेपशवस्ते ध्वे
तमपश्यत्तस्माद्वैवैतेपशवः

एवंप्रजापतेः प्रेक्षितत्वमेव पशुशब्दस्य प्रवृत्तिनिमि
त्तं तस्माद्व्रीहावपि प्रजापतेः प्रेक्षितत्वस्यसंभवात् तत्र
पशुत्वं युक्तमेवेतिदिक् नचपूर्वपरिसंख्या ताश्वादिव्याति
रिक्ताःकेचिदप्यन्ये पशवो मेध्याःसन्तीती शंकितव्यं
सर्वेषामपिसाक्षात् पशूनामुत्क्रान्त मेधत्वादितिस्पष्टमैतरे
य ब्राह्मणे शतपथब्राह्मणे च

हरिः ॐ सर्वेषां वा एष पशुनांमेधोयद् व्रीहियवा
वित्यादि

एवं सर्वेपि साक्षात् पशवो यज्ञार्हानभवन्ति तेषां
मांसादिकंचनाशितव्यमितिदिक् सर्वथा व्रीहियवाद्यन्ना
भावकालेनुवंगस्थ प्रभृतयोऽमेध्यानपिसाक्षात् पशून्यज्ञ
श्राद्धाद्यर्थं मगस्त्याचरण मनुसृत्यहिंसन्तिगुर्जरस्थादय
स्त्वन्नाभावकाले पिसाक्षात्पशून् नैवहिंसन्ति यद्यपिवेदे

नान्नसत्वे व्रीहिपशुहिंसाप्रदर्शिता सर्वथाऽन्नाभावकाले च साक्षात्पशु हिंसाप्रदर्शिता तथा पिशिष्टास्तूभयोः कालयो रुभयविधामपि हिंसांनैव कुर्वन्ति हिंसायां दोषश्रवणात् निवृत्तौ पुण्यश्रवणाच्च विहितहिंसाया अ हिंसात्वेपि वेदेनहिंसाजन्य फलाश्रयत्वंसमूलं नैवप्रत्या ख्यातं नोचेत्तुहिंसाश्रयाणां विद्योत्सर्जन शीलानां हिं सानुरूपधूमरात्र्यादिगमनेन चान्द्रगामिनां यज्ञजन्य पु ण्येक्षीणेकथं पुनः पतनशीलत्वं प्रदर्शितं हिंसोत्सर्जन शीलानांविद्या श्रयाणां ब्रह्मलोकगामिनां कथंपुनर्नप्र त्या वर्त्तन शीलत्वं प्रदर्शितंपुण्यस्योभयत्रापिसमान शी लत्वादुभयोर्मार्गयोरपि समानशीलत्वे नैवभवितव्यंयुक्तम् अतोयज्ञकालेयज्ञजन्यफलेन यज्ञान्तर्गतहिंसाजन्यफलं प्रच्छाद्यतेनतुनिहन्यते तेनयज्ञजन्यफलेक्षीणे हिंसाजन्य फलं प्रकटीभवति तस्माद् हिंसाश्रयाणां चांद्रगामिनां हिंसाजन्यफलाश्रयत्वात् पुनः प्रत्यावर्त्तनशीलत्वं विद्या श्रयाणांतु हिंसाया अभावान्नप्रत्यावर्तन शीलत्वमितिबो ध्यम् एतदेवाभिप्रेत्य यावेदविहिताहिंसानियता स्मिश्चरा चरे अहिंसामेवतांविद्याद्वेदाद्धर्मोहि निर्बभाविथा द्यहिं

सात्वप्रतिपादकवाक्येषुपर्युदासःकृतःपर्युदासस्यहिसदृग्ग्रा
हित्वादहिंसाशब्देनहिंसाभिन्नोहिंसासदृक्कश्चित्पदार्थोगृह्य
तेसदृक्त्वंतुतद्भिन्नत्वेसतितद्गतभूयोधर्मवत्त्वंतथाचहिंसा
भिन्नत्वेसतिहिंसागतभूयोधर्मःपातनधर्मः एवंवेदविहितहिं
सायाअहिंसात्वेपितादृगहिंसायाः पातनधर्मावच्छिन्नत्वात्
तदवच्छिन्नानांचांद्रगामिनांपुनः पतनशीलत्वमितिसिद्धम्
अतएवनिरुक्तेत्रयोदशाध्याये

हरि ॐ अथये हिंसामाश्रित्य विद्यामुत्सृज्यमहत्तपस्ते
पिरेचिरेणवेदोक्तानिवाकर्माणिकुर्वन्तितेधूममभिसं
भवन्तिधूमाद्रात्रिंरात्रेरपक्षीयमाणपक्षमपक्षीयमाण
पक्षाद्दक्षिणायनंदक्षिणायनात्पितृलोकंपितृलोकाच्चं
द्रमसंचंद्रमसोवायुंवायोर्वृष्टिंवृष्टेरोषधयश्चैतद्भूत्वात
स्यसंक्षयेपुनरेवेमंलोकंप्रतिपद्यन्ते ॥ २२ ॥

हरि ॐ अथयेहिंसामुत्सृज्यविद्यामाश्रित्यमहत्तपस्तेपिरे
चिरेणज्ञानोक्तानिवाकर्माणिकुर्वन्तितेर्चिरभिसंभव
न्त्यर्चिषोऽहरन्हआपूर्यमाणपक्षमापुमाणपक्षादुदग
यनमुदगयेनाद्देवलोकंदेवलोकादादित्यमादित्याद्वै
द्युतंवैद्युतादात्मानसंमानसःपुरुषोभूत्वाब्रह्मलोकमभि

संभवन्तितेनपुनरावर्तन्तोशिष्टादंदशूकायतइदंनजा नन्तितस्मादिदंवेदितव्यमथाप्याह ॥

॥ शतपथब्राह्मणेपि ॥

हरि ॐ ये चामीऽअरण्ये श्रद्धां सत्यमुपासते तेऽर्चि रभिसम्भवन्त्यर्चिषोऽहरन्हआपूर्यमाणपक्षमापूर्यमा णपक्षाद्यान्षण्मासानुदङ्ङादित्य एति मासेभ्यो देव लोकं देवलोकादादित्यमादित्याद्वैद्युतंतान्वैद्युतात्पु- रुषो मानस एत्य ब्रह्मलोकान्गमयति ते तेषु ब्र ह्मलोकेषु पराः परावतो वसन्ति तेषामिह न पु- नरावृत्तिरस्ति ॥ १८ ॥ अथ ये यज्ञेन दानेन । तपसा लोकं जयन्ति ते धूममभिसम्भवन्ति धू माद्रात्रिं रात्रेरपक्षीयमाणपक्षमपक्षीयमाणपक्षाद्या न्षण्मासान्दक्षिणादित्य एति मासेभ्यः पितृलो- कं पितृलोकाच्चन्द्रंते चन्द्रं प्राप्यान्नं भवन्ति तां- स्तत्र देवा यथा सोमं राजानमाप्यायस्वापक्षीयस्वे त्येवमेनांस्तत्र भक्षयन्ति तेषां यदा तत्पर्यवैत्यथेम मेवाकाशमभिनिष्पद्यन्तऽआकाशाद्वायुं वायोर्वृष्टिं वृष्टेः पृथिवीं ते पृथिवीं प्राप्यान्नं भवन्ति तऽएवमे

वानुपरिवर्तन्तेऽथ यऽएतौपन्थानौ न विदुस्ते की
टाः पतङ्गा यदिदं दन्दशूकम् ॥ १९ ॥

श्रूयतेच

वेदाहमेतंपुरुषंमहांतमादित्यवर्णंतमसःपरस्तात्तमेववि
दित्वातिमृत्युमेतिनान्यःपंथाविद्यतेयनाय ॥

प्रकाशितमिदंनिगमरहस्यमहंमदाबाद
पुरेनिवसताभोलानाथेनशास्त्रिणानिगमा
र्थप्रकाशकभ्रामितचेतसांभ्रमनिवृत्यर्थम्

निगमरहस्य

विज्ञापन

ऋग्, यजुष्, सामन्, अने अथर्वन् ए चार वेद तथा इतिहास, पुराण, गाथा अने नाराशंसी एटलां महद्भूतनुं निःश्वसित एटले इश्वरनी वाणी छे, एम वेदमां कह्युंछे. तेमांथी चार वेदनुं एक पुस्तक एटले प्रथम एक वेद हतो. पण कलियुगना मनुष्योने अल्प बुद्धिनां देखी वेदव्यासे तेना चार बिभाग करीने चार ऋषिओने आप्या' ऋग्वेद पैलऋषिने, सामवेद जैमिनिने, यजुर्वेद वैशंपायनने, अने अथर्ववेद सुमन्तु ऋषिने आप्यो. अने इतिहास तथा पुराण जे पांचमो वेद कहेवायछे, ते सुतपौराणिकना पिता रोमहर्षणने आप्यो. उपर लखेला चार वेद तथा इतिहासपुराण रूपी पांचमो वेद एओनो स्त्री, शूद्रादिकने अधिकार नहि होवाथी तेमनाउपर व्यासजीए कृपा करीने भारत रच्युं. जेथी तेओने पण धर्म जाणवामां आवे. एटलाथी आत्माने संतोष थयो नहि. त्यारे केटलोक काल गया पछी नारद मुनिना उपदेशथी भगवद्गुणानुवर्णन करवा माटे तेणे श्रीमद्भागवत कर्युं.एवुं भागवतमां कहेलुंछे. मनु,अत्रि, विष्णु, हारित,याज्ञवल्क्य, उशनस्,अंगिरस्,यम,आपस्तंब,संवर्त,कात्यायन,बृहस्पति,पराशर,व्यास, शंख, लिखित, दक्ष, गौतम, शातातप अने वसिष्ठ इत्यादि स्मृतिओने धर्म शास्त्र कहेछे. ए स्मृतिओ केवल वेदार्थनेज अनुसरेछे, तेमज गौतमन्याय अने काणादन्याय ए बे प्रकारनुं न्यायशास्त्र गणायछे.

तथा पूर्वमीमांसा अने उत्तरमीमांसा ए बे प्रकारनुं मीमांसाशास्त्र गणायछे. ए रीतिए चार वेद तथा वेद रूपि पुराण, न्याय, मीमांसा, धर्मशास्त्र, शिक्षा कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंदस् अने ज्योतिष् ए चतुर्दश विद्याना अने धर्मना स्थानकछे. एम धर्मशास्त्रमां कहेलुं छे.

ए चतुर्दश विद्यामां स्त्री शूद्रादिने अधिकार नथि एवुं धर्म शास्त्रमां कहेलुंछे. एओनी यथासंभव एकवाक्यता मेळवेथी जे निर्गालित अर्थ थायछे ते शास्त्रनो सिद्धांत गणायछे. एक वाक्यता मेळववानुं कारण एछे के कोइनुं कृत्रिम अथवा खोटो अर्थ करेलो जुदो निकळी आवेछे तेमां पुराण अने स्मृति ए बेउमां कदापि कोइ ठेकाणे विरुद्ध देखाय तो पुराण करतां स्मृति बलवती गणायछे. स्मृति अने श्रुतिमां विरुद्ध जणायतो श्रुति बलवती गणायछे. कल्पना आरंभमां ब्रह्माना मुखथी मन्वादिओ वेदनुं श्रवण करेछे, माटे वेदने श्रुति कहेछे. तेमज पूर्व कल्पना धर्मोने ए मन्वादिओ स्मरण करीने कहेछे माटे धर्मशास्त्रने स्मृतिओ कहेछे. ए श्रुति स्मृतिओने कपोलकल्पितकुतर्कोथी जे अनादर करेछे तेने धर्मशास्त्र नास्तिक कहेछे. केवल प्रत्यक्ष प्रमाणथीज जगतनो व्यवहार चालतो नथि. अनुमान उपमान अथवा शाब्द प्रमाणथी अप्रत्यक्ष वस्तुनु पण ज्ञान थायछे. ए श्रुति स्मृत्यादि चतुर्दश विद्या मुख्य अनादि शाब्द प्रमाणछे. जेम कल्पना आरंभमां अनादि कालथी कर्मानुसारे करीने पूर्व कल्पमां जेवी सृष्टि हती तेवी रचायछे, तेम चतुर्दश विद्या पण अनादिकालथी पूर्वकल्पमां हती तेमज रचायछे. सृष्टि, तथा कर्मने जेओ अनादि मानता नथि ते जगत्स्रष्टा विषे निर्दयत्व, वैषम्य, कृतध्वंसकत्व अने अकृताभ्यागमकत्व प्रभृति दोष आरोपि-

मे तेने दुषित करेछे. श्रुति स्मृतिमां जे जे कह्युंछे ते सघळुं दोष रहित अने प्रमाण सिद्धछे. प्रत्येक वेदना मंत्र, ब्राह्मण, अने उपनिषद् एवा त्रण भागछे, तेमां मंत्र करतां ब्राह्मण तथा उपनिषद्मां हरेक विषय वधारे स्पष्टताथी समजाव्योछे. समग्र वेदना कर्मकाण्ड अने ज्ञान काण्ड एवा बे मुख्य भागछे. कर्मकाण्डमां वैश्वदेव, अग्न्याधान, अग्निहोत्र, दर्श पौर्णमास, चातुर्मास्य इष्टिओ, ज्योतिष्टोम, अश्वमेध, गोमेध, अने नरमेध इत्यादि अनेक प्रकारनां कर्म वरणवेलां छे. तेमज ज्ञानकाण्डमां श्रवण, मनन, निदध्यास, ध्यान, धारणा, यम, नियम, समाधि, इत्यादि ब्रह्मज्ञानना उपायो, तथा ब्रह्मनां स्वरूप, अने तटस्थ लक्षणो तथा कर्मकाण्डमां कहेला यज्ञोने ज्ञानमार्गथी करवानो प्रकार इत्यादि ज्ञान वर्णवेलु छे तेओमांथी जेने धर्म जिज्ञासा छे. ते कर्मकाण्डनो आश्रय करेछे; अने जेने ब्रह्मजिज्ञासा छे ते ज्ञान काण्डनो आश्रय करेछे. कर्मकाण्डनो आश्रय करनार धूम, त्यांथी रात्रि, कृष्णपक्ष, दक्षिणायन, पितृलोक, अने त्यांथी चंद्रलोकमां जाय छे; त्यां तेनुं पुण्य क्षीण थयेथी ते देवताओनुं अन्न थायछे; अने देवो तेनुं भक्षण करेछे. पछी वायु, वृष्टि, अने ओषधिद्वारे पुनः आ लोकमां आवी जन्म मरणादि पामेछे.

अने जे ज्ञानकाण्डनो आश्रय करेछे ते अर्चिष् त्यांथी दिवस, शुक्लपक्ष, त्यांथी उत्तरायन, देवलोक, सूर्यलोक, वैद्युत अने त्यांथी ब्रह्म लोकमां जायछे, त्यां समष्टयभिमानि पुरुषनुं सायुज्य (मोक्ष) पामेछे. ते पुनः आ लोकमां आवतो नथि.

तेमज कर्म काण्डना अन्तर्गत जे उपासना छे तेना आश्रय

करनारने पण ए धूम मार्गे करी चंद्र लोकनी प्राप्ति अने त्यांथी पुन: पतन थायछे. अने ज्ञान काण्डना अन्तर्गत जे उपासना रहेलीछे ते- नो आश्रय करनार अर्चिष् मार्गे करी ब्रह्म लोकमां जायछे त्यांथी पु- न:पतन थतुं नथि.

कर्मकाण्डना आश्रय करनारने अंधकार मार्गे जवुं, अने पुन: प- तन थवुं तेनो हेतु ए छे के तेने अज्ञान रूपी अंधकार अने हिंसा ए बेनो आश्रय करवो पडेछे,केवल प्राणिना घात करवानेज वेदमां हिंसा ग- णीछे एम नथि,वृक्ष वनस्पत्यादिना ध्वंस करवाने पण हिंसाज गणेलीछे. वेदमां जे जे ठेकाणे वनस्पत्यादिनां स्तुत्यादिक करेलां छे ते ठेकाणे जेम प्राणिनां करता होय तेमज करेलांछे, अेटलुज नहि पण जगत्- ना पृथिव्यादि सघळा पदार्थोने प्राणिना रूपकमांज वर्णवेला छे. खोदि करवामां पृथ्वी उपर जे कोदाळिनो प्रहार थाय छे. तेने क्रौर्य कर्म गणी तन्निमित्तक वेदे प्रायश्चित्त कल्पेलुं छे. सारांश के जगत्‌ना प- दार्थ मात्रने प्राणिना रूपकमां वर्णवेला छे. तेथी तेना ध्वंस विषय मां सघळे ठेकाणे हिंसा शब्दनो निर्देश करेलो छे.

सघळा यज्ञोमां समिधादिने अर्थे नानाप्रकारनी वनस्पतिओ अ- ने वृक्षादिनो ध्वंस करवो पडे छे. तेथी यज्ञोने हिंसामय यज्ञ कहेछे.

ए कर्म काण्डमां मेध्य अने अमेध्य एवा बे प्रकारना पदार्थो ग- णाय छे तेमांथी मेध्य पदार्थो यज्ञना काममां आवेछे. अने अमेध्य पदार्थो आवता नथि. हालमां जे साक्षात् पशुओ देखीए छीए तेने अमेध्य गणेलाछे तेथी ते यज्ञना काममां आवता नथि. व्रीहि तथा यव अे बे मेध्य पदार्थो गणेलाछे तेथी ते यज्ञना काममां आवेछे अे

बेउने मेध्य गणवानु कारण अेछेके देवोअे ज्यारे प्रथम पुरुषनुं आलभन (अेक जातनो संस्कार. स्पर्श) कर्युं त्यारे तेमांथी मेधे निकळीने अश्वमां प्रवेश कर्यो तेथी अश्वनुं आलभन कर्युं त्यारे अश्वमांथी पण मेधे उत्क्रमण करीने गोमां प्रवेश कर्यो तेथी तेमणे गोनुं आलभन कर्युं त्यारे तेमांथी पण निसरीने अविमां जतो रह्यो तेथी तेमणे अविनुं आलभन कर्युं त्यारे तेमांथी निकळी अजमां गयो ते अजनु पण आलभन कर्युं त्यारे पृथ्वीमां गयो त्यारे देवो तेने पृथ्वीमां खोळवा लाग्या त्यारे व्रीहि तथा यव रूपे बहार उगी निकळ्यो, तेथी ते व्रीहि तथा यव मेध्य एटले यज्ञना उपयोगमां आवे एवा थया. उपर लखेला पांच प्राणीमां मेधे प्रवेश कर्यो तेथी ते पण पशु मेध्य थया खरा पण तेमांथी मेध निसरी गयो एटले ते अमेध्य गणाया एटले यज्ञना काममां आवता नथि, पण मेधे ए पांच पशुओमां प्रवेश कर्यो. अने पोते व्रीहि तथा यव रूपे उगी निकळ्यो ते बेउ कारणथी ते व्रीहि अथवा यवना उपर ते पशुओना नामथी संस्कार करवा पडेछे जेमके अश्वमेधमां मुख्य अश्वना नामथी पुरुष मेधमां पुरुषना नामथी इत्यादि (जेम श्राद्धमां दर्भ) तेजकारण लइने याज्ञिको पिष्टपशु करेछे वळी तेज हेतु लइने ब्रह्माए पण ए पशुओनो उत्सर्ग करेलोछे तेणे सृष्टिना आरंभकालमां मन तथा चक्षुष प्रभृति पोतानी इंद्रियोथी ए पुरुषादि पांच पशुओ उत्पन्न करीनें तेओने यज्ञना उपयोगमां लेवानी लिप्सा करी त्यारे ए पांच पशुओ शोक करवा लाग्या त्यारे ब्रह्माए कह्युं हे अग्नि ! पुरुष रूपी द्विपाद पशु तथा अश्वादि चतुष्पाद पशुओनी हिंसा करवी नहि कारण के ए पशुओ अमेध्य थयेलाछे तेथी ते यज्ञना काममां आवता नथि अने

एनुं मांस भक्षण करवुं नहि एमनो मेध व्रीहि तथा यव रूपे थयोछे तेने तुं सेव. तेमज आगळ जनमेजय प्रभृति जे जे राजाओए यज्ञ करेलाछे तेमणे पण ए मेध्य वस्तुथी करेलाछे लोकाचार प्रमाणे साक्षात् पशुने माला वस्त्रादिथी शणगारी सिंहासनादि पोताना इप्सित स्थलमां बांधीने स्पर्श मात्र करेलो छे. एम वेदमां कहेलुं छे.

तेमज वरुणप्रघासा नामना कर्ममां वरुण देवताने प्रत्यक्ष पशु आपवानां कहेलां छे. ते ठेकाणे पण यवना पिष्टना पशु करीने आपवां एम वेदमां कहेलुं छे. ए मेध्य पदार्थ उपर पशुना नामथी संस्कार थायछे तेथी तेना चोखा तथा छोतरां इत्यादि अवयवोने मांस, त्वचा, रुधिर, इत्यादि गणेलांछे. अने ते उपर लखेलां पांच प्राणी तथा बीजी सघळी जातिनां प्राणि अमेध्य गणायछे तेथी तेनुं मांस भक्षण करवुं नहि एम वेदमां कहेलुछे सारांश के सघळे ठेकाणे मांस वपादि शब्दोए करीने ए व्रीहिना अवयवोज लेवायछे वेदमां व्रीहि तथा यवने पशु गणेछे एटलुंज नहि पण कोइ कोइ प्रसंगे जगत्‌ना सघळा पदार्थोने पशुना रूपकमां वर्णवेला छे. अने तेना विध्वंस करवाने वेदे हिंसा गणेलीछे. तेथी यज्ञमां पशु हिंसाछे एम कहेवायछे.

एम छतां पण पुरातन काळमां अगस्त्य नामना कोइ एक ऋषिए पोतानां वृद्ध माता पिता प्रभृतिना प्राण राखवाने अर्थे यथा विधि हिंसा करी हती,ते काल एवो हतो के यज्ञमांपुरोडाश करवानेपण व्रीहि यवादि कोइ पण अन्न हतुं नहि; तेथी तेणे शास्त्रमां गोधा कच्छपादि जे प्राणीओ भक्ष्य गणेलाछे तेना मांसना पुरोडाश कर्या हता. माटे जे कालमां व्रीहि यवादि अन्न पुरोडाश करवा जेटलुं पण मळे नहि तेवा

कालमां गोधा कच्छपादिना मांसना पुरोडाश करवा, अने यज्ञ, श्राद्ध, देवार्चन, मधुपर्क, तथा अन्न प्राशनादि शास्त्रमां देखाडेलां स्थलमां ए भक्ष्य पशुनी हिंसा करवाथी दोष नथि एम कह्युंछे. ए उपर लखेलां ठेकाणामांथी मात्र यज्ञने अर्थे जे हिंसा करवी तेने दैव विधि एटले देवने करवा योग्य विधि एम कहेलुंछे, अने बाकीनां श्राद्ध, मधुपर्क. देवार्चनादिमां पशु हिंसा करवी ते आसुर विधि एटले राक्षसने करवानो विधि एम कहेलुं छे, सारांश के सर्व प्रकारे अन्न न मळवाथी मांसना पुरोडाश करवा पडे ते कालमां मात्र यज्ञने अर्थेज हिंसा करे तो तेमां दोष गणातो नथि. एवा कालमां पण अविधिथी करे तो जेटलां पशुना शरीर उपर रुआं होय तेटलां वर्ष पर्यंत ते नरक भोगवे एम स्मृतिओमां कहेलुंछे. व्रीहि यवादि अन्न छतां मांस भक्षण करवुं तेने वृथा मांस भक्षण कहेछे ने ते करनारने पारधी करतां पण अधिक पापी गणेलोछे. एवा आपत्ति कालमां पण जे माणस मांस भक्षण तथा हिंसा करतो नथि तो तेने सो अश्वमेध करवा जेटलुं फल थायछे.

उपर जे अगस्त्यनुं दृष्टांत आपी अन्नाभावकालमां पशु हिंसा तथा मांस भक्षणनो विधि देखाड्यो ते विधिने केवल अन्नाभावकालमां बंगदेशना लोकोज अनुसरेला छे अने गुर्जरादि देशना लोको कोइ काले अनुसरेला नथि तेथी ए विधि गुर्जरादिना लोकोने उपयोगी नथी कारण के धर्म शास्त्रमां घणे ठेकाणे पोताना देशाचार तथा कुलाचार प्रमाणेज चालवुं एवुं कहेलुं छे. आ चतुर्युगनो साधारण धर्म लखेलो छे. कलियुगमां जे विशेष निषेध करेला छे ते पोतानी मेळे वांची लेवा.

सिन्धुसौवीर सौराष्ट्रांस्तथाप्रत्यंतवासिनः ॥
अंगवंगकलिंगांश्चगत्वासंस्कारमर्हति ॥ १ ॥